Special discussion on India?s Strong, Successful and Decisive ?Operation Sindoor? in response to Terrorist Attack in Pahalgam

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, हम आज आइटम नम्बर-14, पहलगाम में आतंकवादी हमले के जवाब में भारत के मजबूत, सफल एवं निर्णायक ?ऑपरेशन सिंदूर? पर विशेष चर्चा के लिए यहां उपस्थित हुए हैं। मेरा सभी माननीय सदस्यों से आग्रह है कि यह विषय अत्यंत गंभीर एवं संवेदनशील है। ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से भारत की सेना द्वारा आतंकवाद के विरुद्ध निर्णायक कार्रवाई को पूरी दुनिया ने देखा है। हम सबको, हमारी सेना के अदम्य साहस, शौर्य और पराक्रम पर गर्व है। यह सदन साक्षी रहा है, जब भी देश के अंदर गंभीर चुनौती हो, गंभीर मुद्दे हो, हमने राष्ट्रीय मुद्दे पर सदैव एकजुटता दिखाई है। आतंकवाद एक वैश्विक चुनौती है। मेरा आपसे आग्रह है कि आज राष्ट्रहित और मानवता के भाव को सर्वोपरि रखते हुए हम इस प्रकार से सारगर्भित और मर्यादित चर्चा करें कि हमारी सेना और अन्य रक्षा बलों का गौरव बढ़े। भारत की संसद से दुनिया में आतंकवाद के विरुद्ध सामूहिक संघर्ष का एक मजबूत संदेश जाए।

माननीय रक्षा मंत्री, श्री राजनाथ सिंह जी।

रक्षा मंत्री (श्री राज नाथ सिंह): अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं आपके माध्यम से सदन के सभी दलों के, जितने भी हमारे सम्मानित सदस्य हैं, उनके प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूं कि ?ऑपरेशन सिंदूर? की जो शानदार कामयाबी हासिल हुई है, उस पर चर्चा करने के लिए आज सदन पूरी तरह से तैयार है।

अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं इस सदन के माध्यम से देश के उन वीर सपूतों को, उन बहादुर सैनिकों को नमन करता हूं, जिन्होंने राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा के लिए जब भी आवश्यकता पड़ी है, तब अपना बलिदान देने में वे पीछे नहीं रहे हैं। आज भी वे तैयार हैं और आज भी वे तत्पर हैं। साथ ही, मैं उन सैनिकों की वृत्ति को भी नमन करता हूं, जिन्होंने भारत की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। मैं पूरे देश की तरफ से सेनाओं के सभी जवानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूं।

आज मैं आपकी अनुमति से ?ऑपरेशन सिंदूर? से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों और विषयों को सदन के समक्ष रखने के लिए खड़ा हुआ हूं। 6/7 मई, 2025 को भारतीय सेनाओं ने ?ऑपरेशन सिंदूर? के नाम से एक ऐतिहासिक सैन्य कार्रवाई को अंजाम दिया। यह केवल एक सैन्य कार्रवाई नहीं थी, बल्कि भारत की संप्रभुता, अस्मिता, देश के नागरिकों के प्रति जिम्मेदारी और आतंकवाद के खिलाफ हमारी नीति का एक इफेक्टिव और डिसाइसिव डिमांस्ट्रेशन था।

जैसा कि इस सदन को जानकारी है कि 22 अप्रैल, 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम क्षेत्र में एक अमानवीय और कायराना आतंकी हमला हुआ था। इस हमले में हमारे 25 निर्दोष नागरिकों सहित एक नेपाली नागरिक की जान भी गई थी। उन निर्दोष लोगों की जान उनका धर्म पूछकर ली गई और यह अपने आप में अमानवीयता का सबसे कुत्सित और घृणित उदाहरण था। यह घटना भारत की सहनशक्ति की सीमा की परीक्षा थी।

इस हमले के तुरंत बाद हमारे माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने तीनों सेनाओं के प्रमुखों की एक उच्च स्तरीय बैठक की और उन्हें छूट दी गई कि वे अपने विवेक, स्ट्रेटजिक की अंडरस्टैंडिंग और रीजनल सिक्योरिटी सिचुएशन को ध्यान में रखते हुए निर्णायक कार्रवाई करें। इसके बाद हमारे सैन्य नेतृत्व ने न केवल अपनी मेच्योरिटी दिखाई बल्कि उस स्ट्रेटजिक विसडम का परिचय दिया, जिसकी उम्मीद भारत जैसी एक रिस्पांसिबल पावर से की जाती है।

?ऑपरेशन सिंदूर? को अंजाम देने से पहले हमारी सेनाओं ने हर पहलू का बहुत ही गहराई के साथ अध्ययन किया। हमारे पास कई विकल्प थे, लेकिन हमने उस विकल्प को चुना, जिसमें आतंकवादियों और उनके ठिकानों को अधिकतम नुकसान पहुंचे और पाकिस्तान के आम नागरिकों को कोई क्षति न होने पाए। हम लोगों ने इस बात की भी चिंता की। हमारी सेनाओं द्वारा की गई वैल कोऑर्डिनेटेड स्ट्राइक्स ने नौ टेररिस्ट इंफ्रास्ट्रक्चर टार्गेट को प्रिसिजन के साथ, सटीकता के साथ हिट किया। इस सैन्य कार्रवाई में एक अनुमान के अनुसार 100 से अधिक आतंकवादी, मैं बहुत संभलकर बोल रहा हूं, हमारी फिगर गलत न होने पाए, जबकि फिगर इससे बहुत अधिक है, 100 से अधिक आतंकवादी, उनके ट्रेनर, उनके शिक्षक, उनके हैंडलर, जो लश्कर-ए-तैयबा और हिजबुल मुजाहिदीन जैसे आतंकवादी संगठनों से संबंधित हैं, ये वही आतंकी संगठन हैं, जिन्हें पाकिस्तान की सेना और आईएसआई का खुला समर्थन प्राप्त है। 7 मई, 2025 को रात्रि 1 बजकर 5 मिनट पर भारतीय सशस्त्र बलों ने ?ऑपरेशन सिंदूर? प्रारंभ किया, जिसमें पाकिस्तान और पाक ऑक्युपाइड कश्मीर में भारत के खिलाफ आतंकी गतिविधियों से जुड़े नौ स्थानों को निशाना बनाया। इसमें पीओके के मुजफ्फराबाद में सवाई नाला और सैयदना बिलाल कैम्प, कोटली में मस्जिद अब्बास, मसकर रहील शाहिद कैम्प, कोटली में बिलपुर कैम्प, भिम्बर में बरनाला कैम्प, कोटली में अब्बास कैम्प, पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में बहावलपुर, मुरिदके, सरजाल और मेहमूना जोया शामिल थे। इनमें से सात आतंकी शिविरों को भारतीय सेना ने पूरी तरह से नष्ट कर दिया। जबकि भारतीय वायु सेना ने मुरीदके और बहावलपुर को नेस्तनाबूद कर दिया, जो लश्कर-ए-तौयबा और जैश-ए-मोहम्मद के केन्द्र हैं। यह जानकार पूरे सदन को प्रसन्नता होगी कि केवल 22 मिनट के अन्दर पूरा ऑपरेशन समाप्त हो गया। हमने आतंकवादियों को उनके घर में घुसकर मारा। सशस्त्र बलों ने हमारी माताओं और बहनों की सिन्दूर का बदला लिया। प्रत्येक भारतीय इस भावना से ओत-प्रोत हो गया, मैं चाहूँगा कि एक बार पूरा सदन हमारी सेनाओं, हमारे बहादुर जवानों के शौर्य और पराक्रम के लिए उनका अभिनन्दन करे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सिन्दूर की लाली शौर्य की कहानी है, यह भारत के मस्तक पर वीरता की निशानी है।

सेनाओं ने अंधेरी रात होने के बावजूद, हमले की सफलता के स्पष्ट एविडेंस भी जुटाए हैं। हमारे पास साक्ष्य हैं। हमले के कुछ ही घंटों के भीतर एक प्रेस रिलीज और मीडिया ब्रिफिंग के माध्यम से, इन्हें जनता की जानकारी के लिए जारी कर दिया गया था।

मुझे इसकी पुष्टि करते हुए गौरव की अनुभूति हो रही है कि सशस्त्र बल अपने सभी मिशन के ऑब्जेक्टिव्स को पूरा करने में पूरी तरह से सक्षम रहे और साथ ही कामयाब भी रहे।

महोदय, 7 मई, 2025 को, एक बजकर पैंतीस मिनट पर यानी हमले के तुरंत बाद भारतीय डीजीएमओ ने हॉटलाइन संदेश के माध्यम से पाकिस्तान के डीजीएमओ यानी डायरेक्टर जनरल ऑफ मिलिट्री ऑपरेशंस से सम्पर्क किया और 13 इंफ्रास्ट्रक्चर्स के खिलाफ, हमारे हमले के रेशनल और मेथोडोलॉजी के बारे में पूरी जानकारी दी और यह तथ्य भी बताया कि ये हमले एस्केलेटरी नेचर वाले नहीं थे। इसको हम आगे नहीं बढ़ाना चाहते हैं।

?जिन्ह मोहि मारा, तिन्ह मैं मारे।?

जिस प्रकार से, प्रभु हनुमान जी ने लंका में अपनी रणनीति बनायी थी, उसी प्रकार से हमने भी उन्हीं को निशाना बनाया, जिन्होंने हमें नुकसान पहुँचाया था। हालांकि, पाकिस्तान ने इस रेशनल को समझने से इन्कार कर दिया और उसने अगले कुछ दिनों तक सिविलियन और सैन्य ठिकानों पर गोलीबारी करके, बड़े पैमाने पर सीज़फायर वायलेशन करके स्थिति को एस्केलेट करने की कोशिश की।

माननीय अध्यक्ष महोदय, 7 और 8 मई, 2025 की रात को, क्लियरली आइडेंटिफाइड आतंकवाद संबंधी ठिकानों पर हमारे सफल हमले के बाद पाकिस्तान ने स्थिति को एस्केलेट कर दिया और अनमैन्ड एरियल सिस्टम और अन्य साधनों का उपयोग करके भारतीय वायु सेना के बेसेस, भारतीय वायु सेना सेंसर नेटवर्क्स और सेना के फॉरमेशन हेडक्वार्टर से लेकर ब्रिगेडों तक पर भी उसने हमला कर दिया।

हालांकि, हमारी इंटिग्रेटेड डिफेन्स ग्रिड और काउंटर यूएएस ग्रिड ने इन हमलों को सफलतापूर्वक विफल कर दिया।

S-400, MRSAM, आकाश मिसाइल सिस्टम और एयर डिफेन्स गन्स बहुत ही प्रभावी साबित हुई हैं। इस एस्केलेशन पर हमारा जवाबी हमला स्विफ्ट, प्रोपोर्शनेट और नपातुला था। इसमें 8 मई, 2025 को केवल चुनिन्दा पाकिस्तानी एयर डिफेन्स सिस्टम और सेंसर नेटवर्क को प्रिसीजन गाइडेड मिसाइल एम्युनिशन्स के द्वारा टारगेट किया गया।

महोदय, हमारी कार्रवाई पूरी तरह से सेल्फ डिफेन्स में थी, न तो वह प्रोवोकेटिव थी और न तो एक्सपैंशनिस्ट था। पाक द्वारा ये हमले 7 मई, 2025 से लगातार चले और 10 मई, 2025 को रात के लगभग 1 बजकर तीस मिनट तक बड़े पैमाने पर भारत के ऊपर मिसाइल, रॉकेट, ड्रोन्स व अन्य लांग रेंज के वेपन्स का इस्तेमाल किया।

इसके साथ-साथ, उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर से जुड़ी टेक्नोलॉजीज का भी सहारा लिया। उनके निशाने पर भारतीय वायु सेना के अड्डे, थल सेना के एम्युनिशन डिपोज, हवाई अड्डे और मिलिट्री कैंट थे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह कहते हुए मुझे गौरव की अनुभूति हो रही है कि हमारे एयर डिफेन्स सिस्टम, काउंटर ड्रोन सिस्टम और इलेक्ट्रॉनिक इक्विप्मेंट्स ने पाकिस्तान के हमले को पूरी तरह से नाकाम कर दिया।

अध्यक्ष महोदय, पाकिस्तान हमारे किसी भी टारगेट को हिट नहीं कर पाया और हमारे किसी भी इम्पॉर्टेंट असेट्स को नुकसान नहीं हुआ है। हमारी सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद थी और हम लोगों ने हर हमले को रोका है। मैं इस चीज के लिए भारतीय सेना के बहादुर सैनिकों की जमकर सराहना करता हूं, जिन्होंने दुश्मन के हर मंसूबे पर पानी फेर दिया था। मैं अपने प्रतिपक्ष के मित्रों से भी यह कहना चाहता हूं कि एक बार फिर से भारत की सेनाओं के जवानों का कम से कम मेज थप-थपाकर अभिनंदन करिए। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय, पाकिस्तान के इस हमले के जवाब में हमारी कार्रवाई साहसिक थी, ठोस और प्रभावी थी। भारतीय वायु सेना ने वेस्टर्न फ्रंट पर पाकिस्तान के हवाई अड्डों, कमांड एंड कंट्रोल सिस्टम्स, मिलिट्री इन्फ्रास्ट्रक्चर्स और एयर डिफेंस सिस्टम को निशाना बनाया था। हमारी सेनाओं ने इस मिशन को सफलतापूर्वक अंजाम देने में कामयाबी हासिल की है।

अध्यक्ष महोदय, हमारी सेनाओं ने चकलाला, सरगोधा, रफीकी, रहीम यार खान, जैकबाबाद, सुक्कुर और भलारी जैसे बड़े एयरबेसेज़ पर प्रहार किया था और पूरी दुनिया ने भारतीय वायु सेना के शौर्य और पराक्रम की तस्वीर देखी है।

अध्यक्ष महोदय, ?ऑपरेशन सिंदूर? ट्राई सर्विसेज़ कोऑर्डिनेशन का एक बेमिसाल उदाहरण था। जब भारतीय वायु सेना ने आसमान से हमले किए थे, तब हमारी थल सेना ने जमीन पर मोर्चा संभाल लिया था। हमारे जवान नियंत्रण रेखा पर पूरी ताकत से डटे रहे और पाकिस्तान की हर हरकत का करारा जवाब दिया था।

अध्यक्ष महोदय, लोग पूछते हैं कि भारतीय नौसेना का क्या रोल था। भारतीय नौसेना ने भी उत्तरी अरब सागर में अपनी तैनाती मजबूत कर दी। भारतीय नौसैनिकों ने पाकिस्तान को यह साफ संदेश दिया कि हम समुद्र से लेकर जमीन तक पाकिस्तान के हर महत्वपूर्ण ठिकानों पर प्रहार करने में न केवल सक्षम हैं, बल्कि हम तैयार हैं।

अध्यक्ष महोदय, इस ऑपरेशन का मकसद टेररिस्ट कैंप्स और उनके सपोर्टर्स को टारगेट करना, उन्हें नेस्तनाबूद करना था और उन्हें एक साफ संदेश देना था कि भारत आतंकवाद के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस रखता है। भारत ने कार्रवाई इसलिए रोकी, क्योंकि कॉन्फ्लिक्ट के पहले और उसके दौरान जो भी पॉलिटिकल और मिलिट्री ऑब्जेक्टिव्स तय किए गए थे, उसे हम पूरी तरह से हासिल कर चुके थे। इसलिए यह कहना, यह मानना कि यह ऑपरेशन किसी दबाव में रोका गया था, यह बेबुनियाद है और सरासर गलत है। ? (व्यवधान) मैं इस सदन को फिर से आश्वस्त करना चाहता हूं कि मैंने अपने राजनैतिक जीवन में ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन को आश्वस्त करना चाहता हूं कि अपने राजनैतिक जीवन में जान-बूझकर कभी भी असत्य न बोलूं, मैंने इसकी भरपूर कोशिश की है, चाहे वह सदन हो अथवा सदन के बाहर हो। ?

(व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन को यह भी अवगत कराना चाहता हूं। ? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : कृपया आप बैठ जाइए। आप क्यों खड़े हो गए?

? (व्यवधान)

श्री राज नाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन को यह भी अवगत कराना चाहूंगा कि सीमा पार करना या वहां की टेरिटरी कैप्चर करना, इस ऑपरेशन का उद्देश्य नहीं था। ?ऑपरेशन सिंदूर? प्रारंभ करने का मकसद उन टेरर नर्सरीज़ को खत्म कर देना था, जिन्हें पाकिस्तान ने वर्षों से पाला-पोसा हुआ था।

यह ऑपरेशन उन मासूम परिवारों को न्याय दिलाने के लिए लॉन्च किया गया था, जिन्होंने पाक स्पॉन्सर्ड टेररिस्ट अटैक्स में अपने प्रियजनों को खोया था। हमारी सेनाओं ने सिर्फ उनको टारगेट किया था, जो इन आतंकियों को सपोर्ट करते हुए भारत पर हमला करने की कोशिश में लगातार शामिल थे।

अध्यक्ष महोदय, ?ऑपरेशन सिंदूर? का ओवरऑल पॉलिटिको-मिलिट्री ऑब्जेक्टिव यह था कि आतंकवाद के रूप में प्रॉक्सी-वॉर लड़ रहे पाकिस्तान को सजा दी जाए। इसी वजह से आर्म्ड फोर्सेज़ को पूरी आजादी दी गई थी कि वे अपने टार्गेट खुद चुनें और करारा जवाब दें। ? (व्यवधान) इस ऑपरेशन का उद्देश्य कोई भी युद्ध छेड़ना नहीं था, बल्कि फोर्स के डिमॉन्सट्रेटिव यूज़ से एडवर्सरी को झुकने के लिए मजबूर करना था। ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, 10 मई की सुबह, जब भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान की मल्टिपल एयरफील्ड्स पर करारा प्रहार किया, तो पाकिस्तान ने हार मान ली और हॉस्टैलिटीज़ रोकने की कोशिश की। ? (व्यवधान) अब रोक दीजिए, महाराज। ? (व्यवधान) उन्होंने यह कोशिश की, हमारे डीजीएमओ से बात की कि महाराज, अब रोक दीजिए, बहुत हो गया। ? (व्यवधान) यह पेशकश इस ?कैविएट? के साथ स्वीकार की गई थी कि ? (व्यवधान)

श्री राहुल गांधी (रायबरेली) : तो आपने क्यों रोकी? ? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपको बोलने का मौका मिलेगा।

? (व्यवधान)

श्री राज नाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, यह क्यों रुका, इसका पहले ही मैं पूरी तरह से वर्णन कर चुका हूं। ? (व्यवधान) मैं नेता, प्रतिपक्ष से बहुत सम्मान से कहना चाहता हूं कि कृपया एक बार मेरा पूरा भाषण सुन लें। आपको प्रश्न पूछने की पूरी आजादी है, आप प्रश्न पूछ सकते हैं, मैं उनका उत्तर दूंगा। ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, 10 मई की सुबह, जब भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान की मल्टिपल एयरफील्ड्स पर करारा प्रहार किया, तो पाकिस्तान ने हार मान ली और उन्होंने हॉस्टैलिटीज़ रोकने की पेशकश की। ? (व्यवधान) हम लोगों के

द्वारा यह पेशकश इस ?कैविएट? के साथ स्वीकार की गई कि यह ऑपरेशन केवल पॉज़ किया गया है, स्थगित किया गया है। ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, यह ऑपरेशन समाप्त नहीं हुआ है। ? (व्यवधान) अगर पाकिस्तान की ओर से भविष्य में कोई भी मिसएडवेंचर हुआ, तो अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन को आश्वस्त करना चाहता हूं कि यह ऑपरेशन दोबारा प्रारंभ होगा। ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, भारतीय वायु सेना के जबरदस्त हमलों, नियंत्रण रेखा पर थल सेना की मजबूत जवाबी कार्रवाई और नौसेना के हमलों के डर ने पाकिस्तान को झुकने के लिए मजबूर कर दिया। ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, पाकिस्तान की हार उनकी एक सामान्य विफलता नहीं थी, बल्कि यह उसके सैन्य बल और मनोबल, दोनों की एक हार थी। ? (व्यवधान) 10 मई को पाकिस्तान के डीजीएमओ ने भारत के डीजीएमओ से संपर्क किया और सैन्य कार्रवाईयों को रोकने की अपील की। ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, मैं सदन में यह बात फिर से दोहराना चाहूंगा कि पाकिस्तान के डीजीएमओ ने भारत के डीजीएमओ से संपर्क किया और सैन्य कार्रवाईयों को रोकने की अपील की। ? (व्यवधान) 12 मई को दोनों देशों के डीजीएमओ के बीच औपचारिक संवाद हुआ और दोनों पक्षों ने सैन्य कार्रवाईयों पर विराम लगाने का निर्णय लिया। ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, हमारे सैनिकों का जो मनोबल है, मातृभूमि की रक्षा करने का जो उनका समर्पण है, ?ऑपरेशन सिंदूर? के दौरान उसका दर्शन 140 करोड़ से अधिक भारतवासियों ने देखा। ? (व्यवधान) मुझे खुद भी और प्रधानमंत्री जी को भी सीमावर्ती क्षेत्रों में जाकर हमारे जवानों से मुलाकात करने का अवसर मिला है। ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, श्रीनगर के मिलिट्री बेस पर, भुज के एयर बेस पर, उधमपुर के कॉमन सेंटर पर, हर जगह मैंने प्रत्यक्ष रूप से अपनी आंखों से देखा कि हमारे सैनिकों का मनोबल अपनी पूरी बुलंदी पर था। ? (व्यवधान) उनकी आंखों में विश्वास है और उनका संकल्प अडिग है। ? (व्यवधान) वे न केवल भारत की सीमाओं की रक्षा कर रहे हैं, बल्कि हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान की भी रक्षा कर रहे हैं। ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, किसी भी देश में जनता सत्तापक्ष को और विपक्ष को अलग-अलग दायित्व सौंपती है और हैल्दी डेमोक्रेसी में तो यह स्वाभाविक ही है। ? (व्यवधान) सत्तापक्ष का काम होता है जनता के हितों को ध्यान में रखते हुए कार्य करना और विपक्ष का काम होता है सरकार से जनता के मुद्दों से संबंधित जरूरी प्रश्न पूछना। ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, ?ऑपरेशन सिंदूर? क्यों शुरू किया गया, इसकी जानकारी पहले भी दी गई है और आज भी मैंने यह जानकारी सदन को दी है। ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, कभी-कभी हमारे प्रतिपक्ष के लोग यह पूछते रहे हैं कि हमारे कितने विमान गिरे? मुझे लगता है कि उनका यह प्रश्न हमारी राष्ट्रीय जन-भावनाओं का सही से प्रतिनिधित्व नहीं कर रहा है। ? (व्यवधान) ऐसा मुझे लगता है। ? (व्यवधान)

उन्होंने एक बार भी हमसे यह नहीं पूछा है कि हमारी सेनाओं ने दुश्मन के कितने विमान मार गिराए। यदि उन्हें प्रश्न पूछना ही है, तो उनका प्रश्न यह होना चाहिए कि क्या भारत ने आतंकवादी ठिकानों को तबाह किया, तो उसका उत्तर है - हां। मैं विपक्ष के सम्मानित साथियों से कहना चाहता हूं कि अगर आपको प्रश्न पूछना है, तो यह प्रश्न पूछिए कि क्या ?ऑपरेशन सिंदूर? सफल रहा, तो इसका उत्तर है - हां। अगर आपको प्रश्न पूछना है, तो यह प्रश्न पूछिए कि जिन आतंकियों ने हमारी बहनों, हमारी बेटियों का सिंदूर मिटाया, क्या हमारी सेनाओं ने ?ऑपरेशन सिंदूर? में उन आतंकियों के आकाओं को मिटाया, तो इसका उत्तर है - हां। अगर आपको प्रश्न पूछना है, तो यह पूछिए कि इस ऑपरेशन में क्या हमारे जांबाज सैनिकों को कोई क्षति हुई, तो उसका उत्तर है - नहीं।

अध्यक्ष महोदय, जब लक्ष्य बड़े हों, तो अपेक्षाकृत छोटे मुद्दों पर हमारा ध्यान नहीं जाना चाहिए। लक्ष्य बड़े हों, तो अपेक्षाकृत जो छोटे मुद्दे होते हैं, कम्पैरेटिवली उन पर ध्यान नहीं जाना चाहिए, क्योंकि छोटे मुद्दों पर ही ध्यान देते रहने से देश की सुरक्षा और सैनिकों के सम्मान व उत्साह जैसे बड़े मुद्दों से ध्यान हट सकता है, जैसा कि विपक्ष के हमारे कुछ साथियों के साथ हो रहा है। चूंकि, विपक्ष के मित्र ?ऑपरेशन सिंदूर? को लेकर उचित प्रश्न नहीं पूछ पा रहे हैं, तो मैं उन्हें क्या बताऊं? मैं लगभग चार डिकेड्स से अधिक समय से राजनीति में हूं। सत्ता पक्ष हो या विपक्ष हो, अपनी पार्टी हो या दूसरी पार्टी, कभी भी किसी के साथ दलगत राजनीति को मैंने शत्रुतापूर्ण तरीके से जिंदगी में नहीं देखा है। आज अगर विपक्ष प्रश्न पूछने में असफल है, तो मैं विपक्ष को इस काम में उसकी मदद करना चाहता हूं। मैं विपक्ष के अपने सम्मानित साथियों से यह कहना चाहता हूं कि अगर आज हम लोग सत्ता पक्ष में हैं, तो ऐसा नहीं है कि हमेशा सत्ता पक्ष में ही रहें। यह आवश्यक नहीं है और किसी के लिए आवश्यक नहीं है। एक लंबे समय तक हमने विपक्ष का काम किया है, एक लंबा समय हमने सरकारों से सवाल पूछने में लगाया है। जनता ने जब हमें विपक्ष में रहने का दायित्व सौंपा था, तो हमने विपक्ष में रहकर विपक्ष की भूमिका को बड़े ही सकारात्मक तरीके से निभाया है। विपक्ष में रहकर हमने कैसे प्रश्न पूछे, इसके कुछ उदाहरण मैं यहां रखना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय, वर्ष 1962 में चीन के साथ हुए युद्ध में जब दुखद परिणाम आया, तो हमने उस समय की सरकार से प्रश्न पूछे थे। वह प्रश्न यह था कि हमारे देश की धरती पर दूसरे देश का कब्जा कैसे हुआ? हमने यह प्रश्न पूछा था कि हमारी सेना और हमारी जनता अपमानित क्यों हुई? हमने यह प्रश्न पूछा था कि बड़ी संख्या में हमारे सैनिक हताहत कैसे हुए? हमने यह प्रश्न नहीं पूछा था कि हमारे टैंक, हमारी मशीनें, हमारी बंदूकें क्यों ध्वस्त हो गईं? यह प्रश्न हमने नहीं पूछा था। मशीनों और तोपों की चिंता न करके, हमने देश की टेरिटरी की चिंता की, हमने देश के सैनिकों की चिंता की। इसी तरह वर्ष 1971 के युद्ध में हमने पाकिस्तान को सबक सिखाया था। मैं उस समय की सरकार को बधाई देना चाहता हूं। हमने अपने राजनीतिक और सैन्य नेतृत्व की प्रशंसा की। हमने यह नहीं देखा कि किस दल की सरकार है, किस

विचारधारा की सरकार है। हमने इसकी चिंता नहीं की थी। हमारे नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संसद में खड़े होकर उस समय के नेतृत्व की प्रशंसा की थी। हमने इस बात की खुशी जाहिर की कि हमने अपने शत्रु को सबक सिखाया। हमने उस दौरान यह प्रश्न नहीं पूछा कि सबक सिखाने के दौरान भारत के कितने प्लेन्स गिरे? भारत के कितने इक्वीपमेंट्स बर्बाद हुए? उस समय हम लोगों ने यह प्रश्न नहीं पूछा था।

अध्यक्ष महोदय, यदि मैं इसे और भी प्रेक्टिकल तरीके से समझाऊं, तो किसी भी परीक्षा के परिणाम में रिजल्ट मैटर करता है। अगर किसी परीक्षा में कोई बच्चा अच्छे मार्क्स लेकर आ रहा है तो हमारे लिए उसके मार्क्स मैटर करने चाहिए। हमें इस बात का ध्यान नहीं रखना चाहिए कि एग्जाम के दौरान उसकी पैंसिल टूट गई थी या उसका पैन खो गया था। अल्टीमेटली रिजल्ट मैटर करता है और रिजल्ट यह है कि ?ऑपरेशन सिंदूर? के दौरान हमारी सेनाओं ने जो लक्ष्य निर्धारित किया था, उन लक्ष्यों को पूर्ण रूप से प्राप्त करने में हमने कामयाबी हासिल की।

अध्यक्ष महोदय, भारत हमेशा से पाकिस्तान सहित अपने पड़ोसी देशों से मित्रता और सहयोगपूर्ण संबंध का सदैव इच्छुक रहा है। इसके लिए भारत की सभी सरकारों ने ईमानदारी से प्रयास भी किए। वे चाहे आदरणीय लाल बहादुर शास्त्री जी हों या अटल बिहारी वाजपेयी जी हों या स्वर्गीय मनमोहन सिंह जी हों या प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हों, सभी ने हमेशा चाहा है कि इस इलाके में शांति और समृद्धि बनी रहे। ? (व्यवधान) सभी ने यह चाहा है। यह बात हमारी सिविलाइजेशनल वैल्यूज़ के साथ मेल खाती है, इसलिए ऐसा हुआ।

अध्यक्ष महोदय, पूरा विश्व जानता है कि पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने शांति का संदेश लेकर वर्ष 1999 में लाहौर बस यात्रा की थी। वह सिर्फ एक यात्रा नहीं थी। वह यात्रा भारत की संस्कृति और शांति की प्रतीक थी। यह हमारे भारत की प्रकृति थी। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने लाहौर पहुंच कर मीनार-ए-पाकिस्तान पर विजिटर्स बुक में जो लिखा था, आज भी लोग जिसका जिक्र करते हैं। उन्होंने लिखा था कि मैं चर्चा करता हूं। उन्होंने लिखा था कि ?मीनार-ए-पाकिस्तान से मैं पाकिस्तान की जनता को यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि भारत स्थायी शांति और मित्रता का आकांक्षी है।? मैंने पहले भी कहा है और फिर भी कहता हूं कि एक स्थिर और समृद्ध पाकिस्तान भारत के हित में है। इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। यह हमारी सोच थी। यह हमारी शांति की पहल थी। हमारी यह पहल हजारों साल पुरानी सांस्कृतिक चेतना, नैतिक शक्ति और सभ्यता के उन मूल्यों से निकली थी, जो शांति को शक्ति मानते हैं। लेकिन हमारे शांति के प्रयास को हमारी उदारता या सरलता समझ लिया गया। जब हम शांति के लिए कदम बढ़ा रहे थे तो उसी वक्त पाकिस्तान कारगिल में घुसपैठ की साजिश रच रहा था। हम दोस्ती की राह पर थे, तो वह षड्यंत्र की राह पर था। जब मामला खुलकर सामने आया तो हमारे वीर सैनिकों ने घुसपैठ के खिलाफ कार्रवाई करना प्रारम्भ किया। जब भारत की जीत सामने दिखाई दे रही थी तो पाकिस्तान ने परमाणु युद्ध की धमकी दे डाली। तब हमारे तत्कालीन प्रधान मंत्री आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था? ?पाक सेना के परमाणु हमले से भारत का तो कुछ नहीं बिगड़ेगा, लेकिन पाकिस्तान दूसरे दिन का सूरज नहीं देख पाएगा।? यानी अटल जी शांति का जो पैग़ाम लेकर गए थे, वही अटल जी शक्ति का भी परिचय देने में तनिक भी नहीं हिचके। यही भारत है।

अध्यक्ष महोदय, यह सामर्थ्य का उद्घोष था। यह एक स्पष्ट संदेश था कि भारत शांति चाहता है, लेकिन अगर कोई हमारी संप्रभुता को चुनौती देगा तो उसका जवाब भी उतनी ही दृढ़ता से दिया जाएगा। जब वर्ष 2015 में हमारे प्रधान मंत्री मोदी जी ने लाहौर जाकर नवाज शरीफ से मुलाकात की तो भारत ने फिर से दोस्ती का हाथ बढ़ाया। ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, वाकई में हम शांति की राह पर चलना चाहते हैं।?(व्यवधान) क्योंकि हमारी मूल प्रकृति बुद्ध की है, युद्ध की नहीं है। हमारी सरकार ने भी पाकिस्तान के साथ शांति स्थापित करने के अनेक प्रयत्न किए लेकिन बाद में हमने वर्ष 2016 में सर्जिकल स्ट्राइक से, वर्ष 2019 में बालाकोट में एयर स्ट्राइक से और वर्ष 2025 के ऑपरेशन सिंदूर से शांति स्थापित करने का दूसरा रास्ता अपनाया है।

अध्यक्ष महोदय, अब हमारे प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और हमारी सरकार का स्टैंड बिल्कुल क्लियर है कि टेररिज्म एंड टॉक्स, ये दोनों साथ नहीं चल सकते। सभ्य मुल्कों के बीच बातचीत होती है, लोकतांत्रिक देशों में बातचीत होती है, पर, एक ऐसा देश जिसके वजूद में लोकतंत्र का एक कतरा भी न हो और सिर्फ रिलिजियस फैनेटिसिज्म, टेररिज्म और हेट्रेड अगेनस्ट इंडिया हो, उसके साथ संवाद किसी भी सूरत में नहीं किया जा सकता। अध्यक्ष महोदय, टेररिज्म की जो भाषा होती है, वह खून, डर और नफरत है, संवाद नहीं। गोलियों की आवाज में संवाद की आवाज दब जाती है। अध्यक्ष महोदय, जहां पर खून बहता है, वहां पर बातचीत की गुंजाइश नहीं बचती।

अध्यक्ष महोदय, अब पाकिस्तान की वर्तमान स्थिति जगजाहिर है। जिस देश ने आतंक को अपनी विदेश नीति का औजार बना लिया है, वह अंतत: अपने ही जाल में फंस जाता है। पाकिस्तान की नीति और चरित्र को लेकर कोई भ्रम नहीं रहना चाहिए। यह एक ऐसा देश है जो वैश्विक आतंकवाद की नर्सरी है और उन्होंने इसको अपनी स्टेट पॉलिसी का भी एक आधार बनाया हुआ है।

अध्यक्ष महोदय, ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पूरी दुनिया ने देखा है कि पाकिस्तान में सरकार आतंकवादियों के लिए स्टेट फ्यूनरल का इंतजाम कर रही है और सैन्य अधिकारी भी आतंकवादियों के जनाजे में भाग लेते हैं। यह वही देश है, जो सीमा पर सैनिकों से लड़ने का साहस नहीं जुटा पाता, इसलिए निर्दोष नागरिकों, बच्चों और तीर्थयात्रियों को आतंकवाद का निशाना बनाता है। पाकिस्तान की सेना और आईएसआई आतंकवाद को एक प्रॉक्सी वार के रूप में इस्तेमाल करती हैं और उसके सहारे वे भारत को डिस्टैब्लाइज करने का सपना देखती हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं लोकतंत्र के मंदिर में खड़े होकर यह बात कह रहा हूं कि भारत को थाउजैंड कट्स देने का सपना पालने वालों को नींद से जग जाना चाहिए। यह मोदी जी के नेतृत्व वाला नया भारत है, जो आतंकवाद के खिलाफ किसी हद तक जा सकता है।

अध्यक्ष महोदय, आप भारत का इतिहास जानते हैं। देखिए, हमने कभी भी किसी की एक इंच जमीन पर आज तक कब्जा नहीं किया। हम यह भी जानते हैं कि युद्ध अपनी बराबरी वालों से करना चाहिए। ऐसा गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि नीति ऐसी ही होनी चाहिए। प्रीति और वैर बराबरी वाले से ही करनी चाहिए। यदि शेर मेढकों को मारे तो उसका बहुत अच्छा संदेश नहीं जाता है।

अध्यक्ष महोदय, हमारे देश की सेना शेर है। अध्यक्ष महोदय, पाकिस्तान जैसा देश जो साइज, सामर्थ्य, शक्ति और समृद्धि में हमारे आस-पास भी नहीं है, उस मुल्क से कैसा मुकाबला। जो मुल्क अपने अस्तित्व के लिए दूसरों पर आश्रित हो उसके मुकाबले का मतलब है, अपना स्तर कम करना। हमारी नीति है - आतंकवाद के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई करना। हमारा पाकिस्तान विरोध उनकी आतंकवाद की नीति के कारण है। इसलिए पाकिस्तान से हमारा विरोध है।

अध्यक्ष महोदय, अगर हम शांति की आशा के लिए हाथ बढ़ाना जानते हैं, तो अशांति फैलाने वाले हाथों को उखाड़ना भी जानते हैं।

अध्यक्ष महोदय, अगर हम शांति के प्रयास करना जानते हैं, तो दुष्टों को जो भाषा समझ में आए, उसी भाषा में समझाना भी जानते हैं। 'शठे शाठ्यं समाचरेत' अर्थात् दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करना पड़ता है। हमने भगवान कृष्ण से सीखा है, शिशुपाल की सौ गलतियां माफ की जा सकती हैं, किन्तु अंत में धर्म की रक्षा के लिए सुदर्शन चक्र उठाना ही पड़ता है। हमने पार्लियामेंट पर अटैक सहा है, 2008 में मुंबई का अटैक सहा है, अटैक झेला है। लेकिन अब हमने कह दिया है कि ?enough is enough?. अब हमने सुदर्शन चक्र उठा लिया है। हमारी प्रवृत्ति भगवान राम और भगवान कृष्ण से प्रेरित है, जो हमें शौर्य भी सिखाता है और धैर्य भी सिखाता है। इस सीख को हम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व विदेश और रक्षा नीति में सीधा प्रयोग कर रहे हैं। आज भारत पहले दोस्ती का हाथ बढ़ाता है लेकिन अगर कोई देश धोखा दे तो हम उसकी कलाई भी मरोड़ना जानते हैं।

अध्यक्ष महोदय, हमारी नीति एकदम स्पष्ट है। हमने पाकिस्तान से एक समय लाहौर बस यात्रा की भाषा में बात की थी, लेकिन पाकिस्तान ने हमारी उस भाषा को नहीं समझा, अब हम उन्हें बालाकोट एयर स्ट्राइक की भाषा में जवाब दे रहे हैं। भारत के लिए शांति हमारी प्राथमिकता है और हमारी शक्ति उसका आधार है। यह शक्ति हमारे सामर्थ्य से पैदा हुई है और यह शक्ति ग्यारह साल में कई गुना बढ़ गई है। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि पहले नहीं था लेकिन पहले से कई गुना बढ़ गया है। आज भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, अभी मॉर्गन स्टेनली की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2028 तक विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर भारत चल पड़ा है।

अध्यक्ष महोदय, आर्थिक उन्नति के साथ-साथ भारत रक्षा के क्षेत्र में वर्ष 2014 से उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है, रिमार्केबल चेंज आया है। आज का भारत डिफेंस सेक्टर में आत्मनिर्भरता, सेल्फ रिलाएंट और स्वदेशी उत्पादन की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। आज हम हर दृष्टि से सामर्थ्य और सक्षम हैं। मैं सदन को जानकारी देना चाहता हूं, जब

सारे चीफ और सीडीएस से प्रश्न पूछा गया कि क्या आप ऑपरेशन के लिए तैयार हैं? सभी ने क्षण भर की देर नहीं लगायी, उन्होंने कहा, ?Yes, Sir?.

अध्यक्ष महोदय, ऑपरेशन सिंदूर हमारी सामर्थ्य का ही प्रतीक है, जिसमें हमने दिखा दिया कि अगर कोई हमारे नागरिकों को मारेगा तो भारत चुप नहीं बैठेगा। भारत की आत्मरक्षा के लिए हमारा राजनीतिक तंत्र और नेतृत्व बिना किसी दबाव के काम करेगा। हमारी मिसाइल्स फिजिकल सीमाएं लांघेंगी, हमारे वीर सैनिक दुश्मन की मकर तोडेंगे।

अध्यक्ष महोदय, हम आतंकवाद को उसके हर रूप और स्वरूप में पूरी तरह से समाप्त करने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध हैं। इस संदर्भ में हमें एक महत्वपूर्ण बात समझनी होगी, Pakistan sponsored terrorism is not random madness. There is a method in this madness. यह एक सुनियोजित रणनीति है, यह एक फंडामेंटल रेज है।

प्रसिद्ध लेखक वी.एस.नॉयपाल ने सही कहा था, पाकिस्तान में होना एक ऐसी अल्टरनेट और कंट्रास्टिक रियलिटी है, where war is peace; freedom is slavery; and ignorance is strength. यानी यहां युद्ध ही शांति है, गुलामी ही स्वतंत्रता है और जहालत, अज्ञानता ही ताकत है।

अध्यक्ष महोदय, पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद पागलपन नहीं है, यह सोची-समझी साजिश का हिस्सा है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जो आतंकवाद को एक पॉलीटिकल टूल की तरह इस्तेमाल करता है। यह सिर्फ आतंकवाद नहीं है, यह एक टूलकिट है, एक ऐसा टूलकिट, जिसे पाकिस्तान की सेना और उसकी एजेंसियां एक नीति के तहत अपनाये हुए है। This toolkit is in opposition to civilised code of conduct that the rest of the world prefers to abide by.

यानी यह टूल किट उस सिविलाइज्ड कोड ऑफ कंडक्ट के खिलाफ है, जिसे दुनिया का हर जिम्मेदार देश मानता है। यह एक ऐसी कट्टरपंथी सोच की उपज है, जिसमें सहिष्णुता के लिए कोई जगह नहीं है। हमारा पाकिस्तान के साथ कोई सीमा का संघर्ष नहीं है, बल्कि सभ्यता बनाम बर्बरता का संघर्ष है। पाकिस्तान के हुक्मरान जानते हैं कि उनके सैनिक युद्ध के मैदान में भारत से नहीं जीत सकते हैं इसलिए वे आतंक को पालते हैं। वे केवल आतंकवाद को पालते ही नहीं है, बल्कि प्रशिक्षण भी देते हैं और फिर दुनिया के सामने खड़े होकर निर्दोष बनने की कोशिश करते हैं।

अध्यक्ष महोदय, पाकिस्तान दोहरे मापदंड और झूठ की बुनियाद पर खड़ा हुआ एक ऐसा देश है, जो अब फेल्ड स्टेज के तौर पर देखा जा रहा है। भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के जरिए पूरी दुनिया को दिखा दिया है कि हम इस आतंकवाद के गंदे खेल को जड़ से समाप्त करने का संकल्प ले चुके हैं। जब अटल जी प्रधान मंत्री थे, तब पाकिस्तान के साथ कम्पोजिट डायलॉग के लिए भारत की शर्त थी कि पाकिस्तान अपनी जमीन का उपयोग भारत के खिलाफ आतंकवाद फैलाने के लिए नहीं करेगा। पाकिस्तान के साथ कम्पोजिट डायलॉग के लिए भारत की यह शर्त थी। इसे पाकिस्तान ने भी मान लिया लेकिन दुर्भाग्य से वर्ष 2009 में शर्म अल शेख में तत्कालीन सरकार ने एक बड़ी भूल की।

जब कम्पोजिट डायलॉग प्रोसेस से पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद को डिलिंक कर दिया गया, यानी बातचीत जारी रखने के लिए पाकिस्तान द्वारा अपनी जमीन को आतंकवाद के लिए प्रयोग न करने की शर्त को ही डायल्यूट कर दिया। मैं मानता हूं कि यह भारत की स्ट्रेटेजिक पोजिशनिंग को कमजोर करने वाला एक कदम था।

अध्यक्ष जी, ऐसी ही एक और गंभीर चूक तत्कालीन सरकार द्वारा वर्ष 2006 में हवाना में हुई थी, जब पाकिस्तान को आतंकवाद का विक्टिम माना गया था और एक जाइंट एंटी टेरेर मैकेनिज्म बनाने पर सहमति भी हुई थी। यह सोचने वाली बात है कि जो देश आतंक को पैदा करता है, आतंकवाद को पालता है, उस देश को ही आतंक से पीड़ित मान लेना कितना बड़ा स्ट्रेटेजिक ब्लंडर है। आतंकवाद के खिलाफ हमारी लड़ाई केवल सीमा पर ही नहीं बल्कि वैचारिक मार्चों पर भी लड़ी जा रही है। इसी उद्देश्य से प्रधान मंत्री जी ने कई हाईलेवल डेलिगेशन्स का गठन किया था, जिसमें हमारे लगभग सभी अधिकांश दलों के सम्मानित सदस्य शामिल थे। उनमें विभिन्न राजनीतिक दलों के रिप्रेजेंटेटिव्स शामिल थे और सचमुच इन डेलिगेशन्स ने वैश्विक मंचों पर जाकर भारत की बात बहुत ही प्रभावी तरीके से रखी और आतंकवाद के विरुद्ध वैश्विक समर्थन को उन्होंने मजबूत किया।

अध्यक्ष जी, मैं उन सभी डेलिगेशन्स के सम्मानित सदस्यों के प्रति शीश झुकाकर आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिन्होंने भारत का आतंकवाद के खिलाफ स्टैंड तथा जीरो टालरेंस की पालिसी और ऑपरेशन सिंदूर के बारे में दुनिया के देशों को सही तरीके से अवगत कराया, प्रभावी तरीके से अवगत कराया। ऑपरेशन सिंदूर को लेकर सर्वदलीय बैठक भी हुई। I am very happy to tell the House that during Operation Sindoor, all the political parties of the country kept aside all ideologies and differences and showed solidarity with the nation, with the soldiers and with the Government. मैं एक बार फिर इसके लिए आभार व्यक्त करता हूं। मुझे लगता है कि यही इस देश के लोकतंत्र की खूबसूरती है। जैसा कि हमारे प्रधान मंत्री मोदी जी ने भी कहा है कि ऑपरेशन सिंदूर अभी रुका है, समाप्त नहीं हुआ है। यदि आवश्यकता पड़ी, यदि पाकिस्तान फिर किसी नापाक हरकत की कोशिश करता है, तब हम और भी कठोर तथा निर्णायक कार्यवाही करने के लिए तैयार हैं।

अध्यक्ष महोदय, ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से पाकिस्तान के मन में भारत को लेकर जो बहुत बड़ी गलतफहमी थी, वह हमने दूर कर दी है। यदि थोड़ी-बहुत गलतफहमी बची भी होगी, तो उसे भी हम दूर कर देंगे। मुझे राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर जी की कुछ पंक्तियां याद आती हैं-

?क्षमाशील हो रिपु-समक्ष तुम हुए विनत जितना ही,

दुष्ट कौरवों ने तुमको कायर समझा उतना ही॥??

अध्यक्ष महोदय, भारत ने न केवल अपनी सैन्य क्षमता का प्रदर्शन किया, बल्कि अपनी राष्ट्रीय दृढ़ता, नैतिकता और राजनीतिक कुशलता का भी परिचय दिया। भारत अब किसी भी आतंकी हमले का निर्णायक और स्पष्ट उत्तर देगा।

हमने एक नई लक्ष्मण रेखा खींच ली है। अब आतंकवाद को आश्रय और समर्थन देने वालों को कोई शरण नहीं मिलेगी। भारत किसी भी तरीके से, किसी भी तरह के न्यूक्लियर ब्लैक-मेलिंग या अन्य दबावों के आगे अब झुकने वाला नहीं है। ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से हमने जो किया और उससे पहले सर्जिकल व एयर स्ट्राइक के जरिए जो संदेश दिया, वह बहुत पहले ही हो जाना चाहिए था, परन्तु जो होता है, समय पर ही होता है।

अध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार ने आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति को दुनिया के मंच पर पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया है और हम उस पर कोई समझौता किसी भी सूरत में नहीं करेंगे। अभी कुछ हफ्ते पहले मुझे शंघाई को-ऑपरेशन ऑर्गेनाइजेशन की रक्षा मंत्रियों की मीटिंग में जाने का अवसर मिला। वहां जो डिक्लेरेशन तैयार किया जा रहा था, उसमें आतंकवाद पर भारत का स्टैंड डायल्यूट हो रहा था। हमने साफ कह दिया कि जब तक आतंकवाद के मुद्दे पर भारत का स्टैंड नहीं रखा जाएगा, हम किसी ज्वाइंट स्टेटमेंट पर साइन नहीं करेंगे। इस वजह से वहां कोई ज्वाइंट स्टेटमेंट नहीं आया।

अध्यक्ष महोदय, इसका परिणाम भी आया। हमारे प्रधान मंत्री जी ब्रिक्स की बैठक में ब्राज़ील गए और उन्होंने करिश्मा किया। चीन की मौजूदगी में जो ज्वाइंट डिक्लेरेशन आया, उसमें जम्मू-कश्मीर में हुए आतंकी हमले को कंडेम भी किया गया। यह प्रधान मंत्री जी का करिश्मा था, यानी भारत की बात अंततः मानी गई और ब्रिक्स सम्मेलन के इतिहास में यह पहली बार हुआ जब जम्मू-कश्मीर में हुई किसी आतंकी हमला को खुलकर कंडेम किया गया। मैं इस सदन को याद दिलाना चाहता हूं कि वर्ष 2008 में मुंबई में इतनी बड़ी आतंकी घटना हुई, परन्तु उस समय की सरकार को कोई प्रभावी कार्रवाई करनी चाहिए थी, जो नहीं हो पाई। उसमें सबसे दुखद और आश्चर्य की बात यह है कि कई वर्ल्ड व इंटरनेशनल फोरम पर इसका जो कंडेम्नेशन होना चाहिए था, वह भी जितना होना चाहिए, नहीं हो सका। यदि आप उस घटना के बाद हुए ब्रिक्स सम्मेलन के दस्तावेज उठाकर देखें, तो मुंबई आतंकी हमले का कहीं जिक्र भी नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, जब केंद्र में प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में सरकार बनी, तब जाकर हालात कुछ बदलने शुरू हुए। वर्ष 2017 में हुए ब्रिक्स सम्मेलन में पहली बार आतंकवाद से लश्कर और जैश जैसे आतंकवादी संगठनों को जोड़ा गया। यह भी अपने-आप में करिश्माई काम है। यह परिस्थिति इसलिए बनी, क्योंकि इसके ठीक एक साल पहले ?उरी? की घटना के कारण भारतीय सेनाओं ने सीमा पर जाकर सर्जिकल स्ट्राइक की थी। हमने दुनिया को बताया कि आतंकवाद के खिलाफ हम सरहद के इस पार भी मारेंगे और जरूरत पड़ी तो आतंकियों के घर में घुसकर भी मारेंगे। यह बदलाव प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में हुआ।

अध्यक्ष महोदय, यह वही नीति है, जो पहले की सरकारों को भी अपनानी चाहिए थी। उन सरकारों को, जिनके शासनकाल में भारत ने सबसे भीषण आतंकी हमलों का सामना किया। इनमें वर्ष 2008 का मुंबई हमला आज भी हर हिंदुस्तानी के ज़ेहन में बैठा हुआ है। वह हमला एक न भूलने वाली त्रासदी के रूप में अभी भी जिंदा है। श्री प्रणब मुखर्जी जी ने अपनी किताब *The Coalition Years* में लिखा है : ?India had evidence that the terrorists came from

Karachi Port.? पाकिस्तान के नॉन-स्टेट एक्टर्स के बहाने को पूरी दुनिया में कोई मान नहीं रहा था। प्रणब दा ने लिखा है और मैं कोट करता हूँ : ?In a heated debate within the Cabinet, there was a demand for military intervention which I rejected.? यह उन्होंने लिखा है, मैंने नहीं लिखा है।

महोदय, भारतीय विदेश सेवा के एक वरिष्ठ अधिकारी ने भी अपनी किताब में इस बात की पुष्टि की, जिनका नाम अजय बिसारिया है, वे शायद फॉरेन सेक्रेटरी थे, कि मुम्बई हमले के तुरन्त बाद एक उच्च स्तरीय बैठक हुई थी, जिसमें तत्कालीन विदेश मंत्री प्रणब दा ने पूछा : What should be done? विदेश सचिव शिवशंकर मेनन जी ने सुझाव दिया कि भारत मुरीदके में लश्कर-ए-तैयबा के मुख्यालय पर क्रूज मिसाइल से हमला कर सकता है। यह सुनकर प्रणब दा ने चश्मा उतारकर साफ किया और सभी अधिकारियों को धन्यवाद देकर बैठक समाप्त कर दी।

महोदय, उस समय की सरकार ने जो सही समझा, वह किया, लेकिन मैं मानता हूँ कि अगर तब की सरकार ने भी वर्ष 2016 की सर्जिकल स्ट्राइक, वर्ष 2019 की एयर स्ट्राइक जैसे निर्णायक और कठोर कदम उठाये होते तो पाकिस्तान की स्ट्रेटेजिक कैलकुलस बदल सकती थी।? (व्यवधान) एक पावरफुल और डिसाइसिव एक्शन पाकिस्तान और उनकी सेना के द्वारा स्पॉन्सर्ड टेररिस्ट आर्गेनाइजेशंस के लिए बड़ा डिसइंसेंटिव साबित हो सकता था।

महोदय, वर्ष 2008 में मुम्बई हमलों के बाद उस समय की सरकार ने सिर्फ बातचीत का मार्ग चुना। मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ, यह कोई आलोचना नहीं है, न उस सरकार की, न उस समय के प्रधानमंत्री की और न ही उन नेताओं की, उस समय की लीडरशिप को जो सही लगा, उन्होंने वह निर्णय लिया।

महोदय, मैं बस इतना ही कहना चाहता हूँ कि आज का भारत अलग सोचता है और अलग तरीके से काम करता है। हमारा मानना है कि यदि आपका प्रतिद्वंदी आतंक को रणनीति बना चुका हो और बातचीत की भाषा नहीं समझता हो, तो standing firm and being decisive के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता है।

महोदय, आज हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में भारत वह देश नहीं रहा, जो पहले था। Today, dossier has been replaced by decisive action, आज भारत सहता नहीं है, भारत जवाब देता है। आज भारत आतंक की जड़ तक जाता है और उसे उखाड़ फेंकने का सामर्थ्य रखता है।

महोदय, मैं इस सदन और देश की जनता को यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि हमारी सरकार, हमारी सेनाएँ और हमारी लोकतांत्रिक संस्थाएँ, सब मिलकर, हम और ये, सारे लोग, सभी मिलकर देश की एकता, अखंडता और सुरक्षा के लिए जो भी कदम उठाना आवश्यक होगा, वह कदम उठाएंगे और उसके प्रति हम पूरी तरह कमिटेड हैं।

महोदय, अंत में, मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि यह समय एकजुट होकर अपनी सुरक्षा, संप्रभुता और आत्म सम्मान की रक्षा के संकल्प को और अधिक मजबूत करने का है। हमें यह याद रखना होगा कि हमारी सामाजिक और राजनैतिक एकता ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है।

महोदय, आतंकवाद को समर्थन देने वालों को यह स्पष्ट संदेश चला गया है कि भारत अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए पूरी तरह से संकल्पबद्ध है। आइए हम सभी दलगत भाव से ऊपर उठकर ?संगच्छध्वं संवदध्वं? के मंत्र से प्रेरणा लेकर एक साथ खड़े हो जाएं और हम इस राष्ट्रीय संकल्प को मजबूत करें। यही हम सबका राष्ट्रीय दायित्व है।

इन्हीं शब्दों के साथ, महोदय, आपने मुझे अपने विचार रखने का अवसर दिया, मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करते हुए और अपने सभी सम्मानित सदस्यों के प्रति धन्यवाद व्यक्त करते हुए अपना निवेदन समाप्त करता हूँ। सबने शांतिपूर्वक मेरी बात सुनी है। धन्यवाद।

श्री गौरव गोगोई (जोरहाट) : महोदय, धन्यवाद। आज हम इस विशेष चर्चा में भाग लेने के लिए खड़े हुए हैं और यह चर्चा इसलिए हो रही है, क्योंकि हाल ही में जो युद्ध हुआ, वह एक सूचना का युद्ध था। एक प्रकार से हम पड़ोसी देश और दुनिया भर को सच्चाई की सूचना देना चाहते थे।

15.00 hrs

कुछ ऐसी ताकतें थीं, ऐसी शक्तियां थीं, जो भ्रम की सूचना सारे देश में, सारी दुनिया में फैला रही थीं और इस चर्चा की विशेष मांग इसलिए है कि आज सच्चाई सदन में आनी चाहिए। पहलगाम हमले की सच्चाई आनी चाहिए, ऑपरेशन सिंदूर की सच्चाई आनी चाहिए, विदेश नीति की सच्चाई आनी चाहिए। आज यहां हम जो सूचना के युद्ध की बात कर रहे हैं, वह आज हमने आदरणीय राज नाथ सिंह जी के भाषण में सुनी। उन्होंने बहुत-सी सूचनाएं दीं, बहुत-सी जानकारियां दीं, लेकिन रक्षा मंत्री होने के नाते यह नहीं कहा कि पहलगाम में दहशतगर्द कैसे आए, यह नहीं कहा कि बैसरन में जहां पर हजारों लोग जाते हैं, खुशियां मनाते हैं, कैसे पांच दहशतगर्द वहां जाकर 26 लोगों को गोलियों से छलनी करते हैं? यह सूचना रक्षा मंत्री जी ने नहीं दी है। यही है सूचना का युद्ध कि इतनी जानकारी देते हैं कि कभी-कभी सवाल पूछना भी भूल जाते हैं। आज हमारे विपक्ष का यह कर्तव्य है कि हम देशहित और राष्ट्रहित में सवाल पूछेंगे। आज देश यह जानना चाहता है कि वे पांच दहशतगर्द कैसे घुसे? उन दहशतगर्दों का भी कुछ मकसद था। पाकिस्तान से आए हुए उन दहशतगर्दों का क्या मकसद था? उनका मकसद जम्मू-कश्मीर की अर्थव्यवस्था को तबाह करना, उसका विनाश करना था। उनका मकसद भारत देश में एक सांप्रदायिक वातावरण को जन्म देना था। उनका मकसद यह था कि भारत और पाकिस्तान का एक हाइफेनेशन हो। यह था उनका मकसद, लेकिन मुझे दुख है कि आज राज नाथ सिंह जी ने सैनिकों की बात तो की, लेकिन हमारे भारत की जो आवाम है, जो जनता है, पाकिस्तान के दहशतगर्दों की जो पूरी मंशा है, उसको उन्होंने पूरा नकारा। हम एकजुट रहे और मुझे भारतीय होने पर गर्व है। हमने बैसरन में देखा कि किस प्रकार से जम्मू और कश्मीर के लोगों ने पूरे देश से आए हुए पर्यटकों की मदद की। हमने यह देखा कि किस प्रकार से देश भर के जो पर्यटक जम्मू-कश्मीर में थे, उन्होंने जम्मू-कश्मीर के अपने भाइयों को धन्यवाद दिया। हमने यह भी देखा कि कैसे एक विधवा हिमांशी नरवाल ने कहा कि मैं नहीं चाहती कि मेरे पति को लेकर आज जो राजनीति हो रही है, उसके शव पर देश में हिंदू-मुसलमान की राजनीति हो। यह हमारे देश की संस्कृति है और यह पाकिस्तान की मंशा थी। मैं यह भी गर्व

महसूस करता हूं कि हम सारे विपक्षी राजनीतिक दल, हम सब एकजुट होकर, जैसा कि राहुल गांधी जी ने साफ-साफ कहा कि हम सरकार के साथ हैं और सरकार को पाकिस्तान के खिलाफ एक ठोस, मजबूत कदम उठाना ही पड़ेगा, लेकिन देश यह भी जानना चाहता है कि वे 26 लोग, जिनके परिवारों में आज कोई गुजर गया, वे यह भी जानना चाहते हैं कि 100 दिन गुजर गए और उन पांच दहशतगर्दों को सरकार पकड़ नहीं पायी। ? (व्यवधान) वे लोग यह भी जानना चाहते हैं कि ये जो पांच दहशतगर्द आए, उनको निश्चय ही किसी ने पनाह दी, उनको निश्चय ही किसी ने जानकारी दी, उन्होंने पूरे एक घंटे जो गोलीबारी की और उसके बाद ये फरार हो गए, तो उनके फरार होने में भी निश्चय ही किसी ने उनकी मदद की है। इस घटना को 100 दिन हो गए हैं और आज भी सरकार के पास कोई जवाब नहीं है।

आज आपके पास ड्रोन है, आपके पास पेगासस है, आपके पास सैटेलाइट है। वहां पर सी.आर.पी.एफ. है, वहां पर बी.एस.एफ. है, वहां पर सी.आई.एस.एफ. है। वहां कुछ दिन पहले ही आदरणीय गृह मंत्री जी पूरा रिव्यू लेने के लिए गए थे और आप किसी को पकड़ नहीं पाए, यह कैसा बन्दोबस्त है?

आपने कहा कि आर्टिकल-370 के चले जाने के बाद जम्मू-कश्मीर सेफ है, जम्मू-कश्मीर में आइए। लोग आए, लोगों ने अपने आपको सुरक्षित महसूस किया, लेकिन बैसरन में देखा कि वे कितने निहत्थे थे, कितने असहाय थे कि एक एम्बुलैंस को उनके पास पहुंचने में लगभग एक घंटा लगा। अगर आर्मी भी आई तो चलकर आई।

सर, मैं वह नज़ारा भूल नही सकता कि एक माँ और एक बेटी चलकर नीचे आ रही थी। उन्होंने भारत के एक सिपाही को देखा और सिपाही को देख कर वे रो पड़ीं, खुशी से नहीं, डर से रो पड़ीं, क्योंकि उन्हें लगा कि वे दहशतगर्द, जिन्होंने सिपाहियों का यूनिफॉर्म पहन कर वहां पर लोगों को मारा, आज वे ही दहशतगर्द पहाड़ से नीचे उनका इंतज़ार कर रहा है। भारत के उस सिपाही को उनसे यह कहना पड़ा कि ?मैं भारतीय हूं, तुम डरो मत?, ?मैं भारतीय हूं, तुम सेफ हो, सुरक्षित हो।? ऐसी दहशत उन्होंने महसूस कीया। आदरणीय राज नाथ सिंह जी, इस दहशत के ऊपर, इस डर के ऊपर आप एक शब्द तो कहते! राज नाथ जी, यह आपकी भी जिम्मेदारी है, रक्षा मंत्रालय की भी जिम्मेदारी है।

सर, हम यह बार-बार देख रहे हैं कि आदरणीय गृह मंत्री जी जाते हैं और कहते हैं कि बहुत अच्छा बन्दोबस्त हो गया है, टेररिज्म की हमने ?रीढ़ की हड्डी? तोड़ दी है, लेकिन तब भी ?उरी? होता है, तब भी ?पुलवामा? होता है, तब भी ?पहलगाम? होता है। अन्त में इसकी जिम्मेदारी कौन लेता है - जम्मू-कश्मीर के लेफ्टिनेंट गवर्नर। नहीं, अगर किसी को इसकी जिम्मेदारी लेनी पड़ेगी तो आदरणीय गृह मंत्री जी, आपको लेनी पड़ेगी। इसकी नैतिक जिम्मेदारी आपको लेनी पड़ेगी। आप लेफ्टिनेंट गवर्नर के पीछे नहीं छिप सकते, लेफ्टिनेंट गवर्नर के पीछे यह केन्द्र सरकार नहीं छिप सकती, क्योंकि उसके कुछ ही हफ्ते पहले गृह मंत्री खुद वहां पर थे, उन्होंने खुद वहां की सिक्योरिटी रिव्यू की थी। क्या आपके पास जानकारी नहीं थी?

सर, यह सरकार इतनी कमजोर है, यह सरकार इतनी ? * है कि आज उन्होंने इसका दोष अगर किसी को दिया तो टूर ऑपरेटर्स को इसका दोष दिया कि टूर ऑपरेटर्स बिना अनुमति के, बिना लाइसेंसेज़ के, लोगों को बैसरन ले जा रहे

थे, हमें तो यह पता ही नहीं था ? यह है इसका कारण, ये यह बताना चाहते हैं। यही तो दु:ख की बात है कि कहीं न कहीं सरकार में एक अहंकार आ चुका है। इंटेलिजेंस और सिक्योरिटी का जो फ्रेमवर्क है, एस्टैब्लिशमेंट है, जो लोग इंटेलिजेंस और सिक्योरिटी के बारे में निर्णय लेते हैं, आज उनमें एक अहंकार आ गया है कि चाहे जितनी भी बड़ी गलती हो, उन पर कोई सवाल नहीं उठा सकता है। लेकिन, आज हम सवाल उठा रहे हैं। आज हम सवाल उठाएंगे।

प्रधान मंत्री मोदी जी, आप सऊदी अरब में थे। आप जब वापस आए, तो आपका पहला नैतिक कर्तव्य था कि आप पहले पहलगाम जाते, लेकिन आप पहलगाम नहीं गए, बल्कि एक सरकारी कार्यवाही के लिए आप बिहार गए और आपने चुनावी भाषण दिए ।? (व्यवधान) देश के मुखिया सऊदी अरब में थे। सम्पूर्ण कार्यक्रम उन्होंने पूरा किया, वापस आए और वे पहलगाम भी नहीं जा पाए और बिहार में जाकर चुनावी भाषण दे रहे थे ।? (व्यवधान) अगर पहलगाम में कोई गया तो हमारे नेता राहुल गांधी गये। पहलगाम में लोगों की जो मृत्यु हुई, उनके लिए शहादत की मांग अगर कोई कर रहा है तो हमारे दल के नेता राहुल गांधी कर रहे हैं ।? (व्यवधान)

Sir, the House is not in order. ? (*Interruptions*) हाउस को ऑर्डर में लाइए ।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: हाउस ऑर्डर में रहेगा, लेकिन आप तथ्यों पर बोलें। आप सदन में गलत सूचनाएं नहीं दें।

? (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई : सर, आप हाउस ऑर्डर में लाइए ।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्षः सदन में आप गलत तथ्य नहीं रख सकते हैं।

? (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, अब बात ?ऑपरेशन सिंदूर? की आती है, आज मैं राज नाथ सिंह जी का भाषण सुन रहा था ।? (व्यवधान) मुझे पता नहीं चल रहा था कि राज नाथ सिंह जी जो भाषण दे रहे थे, वे किस समय का उजागर कर रहे थे ।? (व्यवधान) वर्ष 2016 के बाद क्या उन्होंने यह नहीं कहा था कि हम घुस कर मारेंगे और पाकिस्तान में उनका जो भी टेररिस्ट इंफ्रास्ट्रक्चर है, उसको खत्म कर देंगे। वही बातें उन्होंने तब कही थीं। वही बातें पुलवामा के बाद कहीं। पुलवामा के बाद हमारे लड़ाकू जहाज गए थे। अब पाकिस्तान कभी भी भारत पर अंगुली नहीं उठा सकता है। उसके बाद भी आज वह दोबारा यही बातें कह रहे हैं कि हम घुस कर मार रहे हैं। वह अब भी कह रहे हैं कि ?ऑपरेशन सिंदूर? कंप्लीट नहीं हुआ है। यह अभी अधूरा है। क्योंकि, कल पाकिस्तान ऐसा दोबारा कर सकता है। वह खुद ऐसा कह रहे हैं ।? (व्यवधान) वह खुद कह रहे हैं कि कल फिर से पाकिस्तान ऐसा कर सकता है। तब यह ऑपरेशन सफल कैसे हुआ? आज वह खुद कह रहे हैं कि हमारा मकसद युद्ध का नहीं था। हम पूछना चाहते हैं कि क्यों नहीं उनका ऐसा मकसद था? ऐसा मकसद होना चाहिए था। आज उन्होंने खुद कहा कि हमारा मकसद जमीन लेने का नहीं था। ऐसा मकसद क्यों नहीं था? पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर अगर आज नहीं लेंगे तो कब लेंगे? ? (व्यवधान) उन्होंने खुद कहा

कि हमारा मकसद टेररिस्ट के इंफ्रास्ट्रक्चर पर आक्रमण करना था। क्या हमने उरी के समय नहीं किया, क्या हमने पुलवामा के समय नहीं किया? लेकिन, उसके पश्चात भी पाकिस्तान का इतना साहस कि आज उन्होंने पहलगाम में हमला किया। पिछले 20 वर्षों के दौरान हमारे भारत के नागरिकों पर अगर सबसे दर्दनाक हमला हुआ है तो वह आपके समय में हुआ है। आपके समय में उरी हुआ, आपके समय में पुलवामा हुआ और आपके समय में आज पहलगाम हुआ है। मैंने कुछ बातों को उजागर किया है और कुछ किताबों का भी उजागर किया है। ? (व्यवधान)

सर, यह एक नई प्रक्रिया है। हर चर्चा में भाजपा के आदरणीय नेता एक किताब उठा लेते हैं, फिर कुछ पंक्तियां वहां से पढ़ते हैं। मैं इतिहास की पंक्तियों को नहीं पढ़ना चाहूंगा। आज हमारे भारतीय सेना के जो बड़े ऑफिसर्स हैं, मैं उनकी बात पढ़ना चाहूंगा।

सर, दुख की बात तो यह है कि ये वैसी बातें हैं, जिन्हें हमें भारत के अंदर सुनना चाहिए था। अगर हमने पहली बार सीडीएस को सुना तो शांगरी-ला डायलॉग सिंगापुर में सुना। वह हमें जानकारी नहीं दे रहे थे, बल्कि ब्लूमबर्ग को जानकारी दे रहे थे। उन्होंने क्या जानकारी दी? मैं बिना एडिट के पूरा पढ़ देता हूं- ??What is important??? मैं हिन्दी में अनुवाद करने की कोशिश भी करता हूं।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप मत कीजिए।

श्री गौरव गोगोई : ??क्या यह जरूरी नहीं कि जेट गिरे, पर क्यों गिरे, क्या गलतियाँ हुईं, वह महत्वपूर्ण है, संख्या महत्वपूर्ण नहीं है।??

सर, देश में 37 ही राफेल हैं। अगर उनमें से कुछ गिरें भी तो मुझे लगता है कि बहुत बड़ी क्षति हुई। 35 राफेल में से कुछ गिरें तो मुझे लगता है कि कुछ क्षति हुई। आपको लगता है कि 35 राफेल काफी हैं। अगर कुछ गिरें तो वह भी जरूरी है। उसके बाद उन्होंने यह कहा कि ये बातें अच्छी हैं कि हमने अपनी गलतियों को समझा, उसको सुधारा और दो दिन बाद अपने जेट को उड़ाया। हमने दूर से आक्रमण किया।

सर, मैं थोड़ी जानकारी चाहूंगा। हमें संदेश मिलता है कि दुनिया के सबसे बढ़िया और बेहतरीन लड़ाकू जहाज हमारे पास हैं, सबसे बेहतरीन पायलट हमारे पास हैं, तो सीडीएस को ऐसा क्यों कहना पड़ा? ऐसी क्या परिस्थितियां आईं कि हमारे लड़ाकू जहाज क्लोज़ रेंज में नहीं जा सकते? उनको दूर से ही फायर करना पड़ता है, ये क्या बात है? ऐसी क्या पाबंदी है कि सीडीएस यह कह रहे हैं कि हमारे लड़ाकू जहाज ने पहले दिन गलतियां कीं, गलतियां हमने सुधारीं और दूर से हमने आक्रमण किया। क्या हम पास से आक्रमण नहीं कर सकते, ये जानकारी हमें दें। हम यह जानना चाहते हैं कि लेफ्टिनेंट जनरल राहुल आर सिंह ने सदन के अंदर नहीं, सांसदों को नहीं, राजनीतिक दलों के फ्लोर लीडर्स को नहीं, सिक्किम में जाकर कहा। क्या कहा, उसका भी मैं हिन्दी में अनुवाद करता हूं कि पाकिस्तान तो सिर्फ फ्रंट पर था।

पाकिस्तान के पीछे चाइना उसे पूरी तरीके से समर्थन कर रहा था। ऐसी कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए, क्योंकि पिछले पांच वर्षों में लगभग 80 प्रतिशत मिलिट्री हार्डवेयर पाकिस्तान को सिर्फ चाइना से मिल रहा है।

सर, मैं आज आदरणीय राजनाथ सिंह जी से पूछना चाहूंगा कि जो सरकार चीन को लाल आंख दिखाने की बात करती है, लेकिन एक बार भी आपने चीन का उल्लेख अपने भाषण में क्यों नहीं किया? आर्मी कहती है कि आज सिर्फ चीन और पाकिस्तान का यह टू फ्रंट नहीं, अब चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश को लेकर तीन फ्रंट भी हो सकता है, कन्वर्जन्स हो सकता है। लेकिन मैं सरकार का याद दिलाना चाहूंगा कि जो टू फ्रंट की बात थी, इस बात की शुरुआत किसने की थी? इस बात की चेतावनी किसने दी थी? इस बात की चेतावनी इसी सदन में हमारे दल के नेता राहुल गांधी जी ने दी थी। यही हम जानना चाहते हैं कि आज जो युद्ध हुआ, इसमें पाकिस्तान को चीन से कितना समर्थन मिल रहा है? हम सेना से नहीं, आज हम आदरणीय राजनाथ सिंह जी और प्रधानमंत्री मोदी जी से जानना चाहते हैं।

सर, इंडोनेशिया में जो डिफेंस एटैशे है, उसने तो ताज्जुब की बात कह दी। उसने क्या कहा? इंडिया डिफेंस एटैशे ग्रुप कैप्टन शिव कुमार ने जो कहा, उसका हिन्दी में दोबारा अनुवाद करता हूं कि ?भारत ने लड़ाकू जहाज खोये, तो खोये इसीलिए क्योंकि कुछ मिलिट्री टारगेट्स पर आक्रमण करने पर पाबंदी थी। क्यों और क्या पाबंदी थी? ऐसे क्या राजनैतिक कन्सट्रैंट्स थे? आपने कहा कि नौ टारगेट्स पर हमने आक्रमण किया। लेकिन हमें यह जानकारी भी सूत्रों से मिली और मीडिया में भी आया है। लेफ्टिनेंट जनरल राहुल सिंह ने खुद कहा कि पहले 21 टारगेट्स चुने गए थे और 21 से फिर नौ हुए। क्यों हुए? आज मैं यह जानना चाहता हूं कि पिछले बीस वर्ष में सबसे घातक आक्रमण हमारी महिलाओं पर हुआ, हमारे बच्चों पर हुआ, भारत की आत्मा पर हुआ। हम सबने उस दहशत को अनुभव किया, हम सब एकजुट हुए। हमने पूरी तरीके से समर्थन प्रधानमंत्री मोदी जी को दिया कि आप जाइएगा। एक ऐसा माहौल बन चुका था कि देश कोई भी कीमत चुकाने के लिए तैयार था। पूरा देश प्रधानमंत्री मोदी जी के साथ था। विपक्ष प्रधानमंत्री मोदी जी के साथ था और अचानक 10 मई को हमारे राष्ट्रदूत कहते हैं कि हम पाकिस्तान पर हमला करेंगे और 10 मई की शाम को सूचना आती है कि पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध को हम विराम दे रहे हैं। सीजफायर हो गया। क्यों हुआ? हम आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी जी से जानना चाहते थे कि अगर पाकिस्तान वाकई में अपने घुटने टेकने के लिए तैयार था, तो आपने क्यों रोका? आप क्यों रुके और किसके सामने आप झुके? किसके सामने आपने सरेंडर किया?

अमरीका के राष्ट्रपति, जो आज तक 26 बार कह चुके हैं कि व्यापार को ले कर उन्होंने भारत और पाकिस्तान को सतर्क किया और दोनों को मजबूर किया कि वे इस जंग को छोड़ें। आज राष्ट्रपति ट्रंप खुद कहते हैं कि पांच-छह जेट गिरे हैं। एक-एक जेट करोड़ों-करोड़ों, अरबों-अरबों रुपये का है, मिलियंस एण्ड मिलियंस का है। इसलिए हम जानना चाहते हैं। आदरणीय राज नाथ सिंह जी आज हमें स्पष्ट रूप से बताएं। देश पर विश्वास करें। देश में सच्चाई सुनने का साहस है। आज आप बताएं कि कितने लड़ाकू जहाज़ गिरे थे? हममें वह साहस है, क्योंकि यह सूचना, यह सच्चाई सिर्फ देश के नागरिकों के लिए नहीं है, यह सूचना और यह सच्चाई हमें देश के जवानों को भी देनी है। आज उनसे भी झूठ कहा जा रहा है। उनके बीच में भी भ्रम फैलाया जा रहा है। हम उनकी सच्चाई को आज हम सदन के अंदर लाना चाहते हैं।

सर, बात की जाती है, विदेश नीति की और किस मुँह से हम कहें कि हमारी विदेश नीति सफल हुई है। आदरणीय राजनाथ सिंह जी, किस मुहँ से कहें कि शांगरी-ला में जो डायलॉग हुआ, उस डायलॉग में जो ड्रॉफ्ट आया, जिसको भारत सरकार ने नकारा, उस ड्रॉफ्ट को बनाने में हमारे ही कुछ सहयोगी देश थे, जिनका नाम मैं नहीं लेना चाहूंगा। लेकिन ऐसे देश, जिनको हम परंपरागत दोस्त मानते हैं, ट्रेडिशनल एलाइज़ मानते हैं, आज उन्होंने भी इंडिया और पाकिस्तान को हाइफनेट कर दिया है और आप इन शब्दों के खेल से खुश हैं कि ब्राज़ील के डॉक्यूमेंट में, जम्मू-कश्मीर का, पकिस्तान का भी नहीं, ब्राज़ील के डॉक्यूमेंट में, जम्मू-कश्मीर में जो दहशतगर्दी हुई, उसी की निंदा हुई, पाकिस्तान की निंदा नहीं हुई । पर आप उससे खुश हैं। अगर आप उससे खुश हो तो मैं जानना चाहूंगा कि जो एक बिलियन डॉलर की आर्थिक सहायता आईएमएफ ने पाकिस्तान को दी, उस पर आपको क्या कहना है? हम जानना चाहेंगे कि एडीबी - एशियन डेवलमेंट बैंक से जो आठ सौ मिलियन की आर्थिक सहायता पाकिस्तान को मिलेगी, आज भारत का उस पर क्या रवैया है? वर्ल्ड बैंक से चार मिलियन डॉलर्स आ रहे हैं। सर, यह पैसा किसको जाएगा? पाकिस्तान का नेतृत्व उनकी जनता या उनकी चुनी हुई सरकार नहीं करती है, पाकिस्तान की सरकार का जो रिमोट कंट्रोल है, वह पाकिस्तान की सेना के पास है और यह सारा पैसा वहीं जाएगा, जहां पर हमने मिसाइल गिराए हैं। क्या इतना भी हम नहीं कर पाए? क्या इतनी भी ताकत नहीं है? क्या इतना भी विश्वास लोगों का विश्व गुरू में नहीं है, अंतर्राष्ट्रीय नेताओं का विश्वास नहीं है कि आईएमएफ की ऐड पाकिस्तान के पास न जाए, वर्ल्ड बैंक की ऐड न जाए। पाकिस्तान के पास, एडीबी की ऐड न जाए। आप में इतनी भी ताकत नहीं कि एक भी देश ने पाकिस्तान को टेररिस्ट स्टेट का दर्जा नहीं दिया। एक देश ने भी एफएटीएफ ? फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स में पाकिस्तान का विरोध नहीं किया, जिससे बहुत नियंत्रण पाकिस्तान पर पड़ता था। आज उससे वर्ष 2022 में पाकिस्तान ग्रे-लिस्ट से बाहर निकल आया। क्या वह दोबारा पाकिस्तान को ग्रे-लिस्ट में डालेंगे? इसीलिए आज हम यह मांग करते हैं कि सरकार, आप डरिए मत। सच्चाई से डरिए मत। उस दिन भी देश सरकार के साथ दहशतगर्दी के खिलाफ खड़ा था, विपक्षी दल सरकार के साथ खड़े थे और आज भी दहशतगर्दी के खिलाफ, सच्चाई के पक्ष में देश और विपक्ष आज सरकार के साथ हैं। आप हमें अपना दुश्मन न समझें। हम सरकार के दुश्मन नहीं है। हम अपने देश के पक्ष में बोल रहे हैं, जवानों के पक्ष में बोल रहे हैं। पर आप हमें कृपया सच्चाई बताने का सम्मान दीजिए। सच्चाई सुनने का हमारा अधिकार है। जितनी बार आप झूठ और भ्रम फैलाएंगे, हम उतनी बार आपसे पूछते जाएंगे कि आपने क्या किया है।

इसीलिए, मैं आज बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ। मैंने बहुत अपेक्षा की थी कि आज पहलगाम का विषय उजागर होगा। आदरणीय गृह मंत्री जी अपनी नैतिक जिम्मेवारी लेंगे। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अपनी नैतिक जिम्मेवारी लेंगे और प्रधान मंत्री मोदी जी बताएंगे कि उन्होंने ?ऑपरेशन सिंदूर? बीच में क्यों खत्म किया? हमें तो मीडिया में सुनते हुए ऐसा लगा कि हम कराची में उठेंगे। हमारे देश की मीडिया, जिनको आपसे ही सूचना मिलती है, उनको सुनने में लगा कि आज तो हम फतेह करके ही रहेंगे, लेकिन पता चला कि नहीं, कहीं न कहीं हमारे पैर डगमगा गए और हम अंतिम परिणाम से पीछे हट गए। हमें पीछे नहीं हटना है। हमें सच्चाई के साथ, लोकतंत्र के पक्ष में आगे बढ़ना है।

मैं इन्हीं बातों के साथ अपनी बात को समाप्त करता हूँ।

श्री रमाशंकर विद्यार्थी राजभर (सलेमपुर) : अध्यक्ष जी, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। देश और उत्तर प्रदेश में पीड़ितों की आवाज की बदौलत, पीडीए के नेता, हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय अखिलेश यादव जी की बदौलत और हमारे संसदीय क्षेत्र सलेमपुर की जनता की बदौलत मुझे यहां पर इतने महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का आज अवसर मिला है।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं सबसे पहले उन बहनों से माफी मांगता हूँ, जिन बहनों के सुहाग उजड़े और पहलगाम में हम उनको बचा नहीं पाए। मैं अपनी सेना के पराक्रम पर गौरव और घमंड करता हूँ। इस घटना में जो निर्दोष पर्यटक मारे गए हैं, उनको मैं नमन करता हूँ। हमारी सेना के जो जवान शहीद हुए हैं, उनको भी मैं नमन करता हूँ।

माननीय अध्यक्ष जी, हमारे पूर्वांचल में एक कहावत है:-

?आकाश बांधो, पाताल बांधो,

लेकिन पहले कम से कम अपनी टाटी तो बांध लो।?

यह सरकार आकाश बांध रही है, पाताल बांध रही है, लेकिन अपनी टाटी नहीं बांध रही है। यह सब साबित करता है कि अगर टाटी बंधी होती तो सैकड़ों मीलों दूर से आतंकवादी हमारे घर में नहीं आता, पर्यटकों को नहीं मारता और यहां से भाग भी नहीं जाता। हमारे नेता एवं पूर्व रक्षा मंत्री स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव जी थे और सुभाष चन्द्र बोस के बाद देश में किसी एक नेता को ?नेताजी? कहा गया तो वे स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव जी ही थे।

<u>15.27 hrs</u> (Shrimati Sandhya Ray *in the Chair)*

सभापति महोदया, उन्होंने कहा था कि भारत को किसी के दबाव में नहीं, बल्कि अपने स्वाभिमान के बल पर चलना चाहिए। चाहे अमेरिका हो, चीन हो या पाकिस्तान हो, भारत को झुकना नहीं चाहिए। अमेरिका के साथ हमारे रणनीतिक रिश्ते हैं, लेकिन हमें यह ध्यान रखना होगा कि सहयोग की कोई बात, सहयोग की कोई भी शर्त, बराबरी, आत्मसम्मान और पारदर्शिता के आधार पर ही होनी चाहिए।

यह जो कुछ हुआ है, उन्हीं सवालों पर मैं कुछ कहना चाहता हूँ। हमारी घरेलू नीति और विदेश नीति कैसी होनी चाहिए? जवान की सीमा सुरक्षित हो, किसान का खेत सुरक्षित हो और गरीब का पेट सुरक्षित हो, ये हमारी नीतियां होनी चाहिए, लेकिन हुआ क्या? हमारे सामने जो सवाल आएं, उन पर मैं कहना चाहता हूँ कि माननीय रक्षा मंत्री जी ने इसी सदन में कहा है कि हमने 100 आतंकवादियों को मारा है। इस बात का स्वागत है, लेकिन उन 100 आतंकवादियों में से वे चार आतंकवादी मारे गए या नहीं मारे गए, जिन्होंने पहलगाम की घटना को अंजाम दिया था? यह सवाल यहां पर नहीं आया है। उनका नाम कब तक आएगा, देश यह जानना चाहता है।

सभापति महोदया, पहलगाम की घटना 22 अप्रैल को होती है और ऑपरेशन सिंदूर 17 दिन बाद होता है। शायद कोई परिस्थिति रही होगी। देश क्या चाहता था, आतंकवादियों की मंशा कितनी खराब थी? उनकी मंशा यह थी कि हम धर्म पूछ कर मारेंगे और भारत में दंगा भड़केगा। पूरे देश के लोगों को मैं बधाई देता हूं कि आतंकवादियों के मंसूबों को नाकाम किया और हिन्दू-मुस्लिम सब लोगों ने मिल कर आतंकवादियों के इस नापाक इरादे पर लगाम लगाया। मैं कहना चाहता हूं कि आज आतंकवादियों ने जिस तरह की घटना की, उस घटना के सवाल पर सरकार का जो पक्ष आया, जिसका जिक्र अभी हमारे दूसरे वक्ता भी कर रहे थे। हमारे नेता स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव जी ने दुनिया के सामने समर्पण की कोई बात कभी नहीं की थी। 22 अप्रैल को हमला होता है और 17 दिन बाद 7 मई को ऑपरेशन सिंदूर किया जाता है। देश की मंशा क्या थी? देश में इतना गुस्सा था कि वह तीसरे दिन से ही यह चाह रहा था कि ऑपरेशन सिंदूर नहीं, बल्कि ऑपरेशन तंदूर चलाया जाए और जो आंतकवादी घटना में शामिल थे, उनको लाकर उसी तंदूर में डाल दिया जाए। लेकिन 17 दिन बाद शुरू हुआ ऑपरेशन सिंदूर का हमला तीन दिन में ही बंद हो गया। 7 मई को ऑपरेशन शुरू हुआ और 10 मई को समाप्त हो गया। किस भारतीय को इस बात पर घमंड नहीं होगा कि हमारे देश के प्रधानमंत्री विश्वगुरु हों, लेकिन उस घमंड का क्या हुआ? हम लोग जिसे विश्वगुरु समझ रहे थे, पता चला वह विश्वगुरु तो व्हाइट हाउस में बैठा है। विश्वगुरु ने जो कहा, वह मैं कहना चाहता हूं। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने सार्वजनिक रूप से और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर 26 बार कहा कि उन्होंने भारत-पाकिस्तान का युद्ध-विराम कराया है। उन्होंने कई बार अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर कहा कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच एक बड़े न्यूक्लियर युद्ध को टालने के लिए व्यापार समझौता ऑफर किया है। हाल ही में ट्रम्प ने यह भी दावा किया कि पांच फाइटर जेट गिराये गए थे, जिसमें सीडीएस के बयान की ओर भी इशारा किया गया। ट्रम्प ने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री मोदी शुरु में असहयोगी थे और संकट को कम करने के लिए अमेरिका की मध्यस्थता जरूरी थी। ये सभी दावे गंभीर और वैश्विक सुर्खियां बटोर चुकी हैं, लेकिन भारत सरकार इस पर चुप है।

महोदया, प्रधानमंत्री मोदी और ट्रम्प की घनिष्ठता और मित्रता के बावजूद अमेरिका ने पाकिस्तान को आईएमएफ से ऋण दिलाने के पक्ष में मतदान किया। आखिर इसका क्या मतलब था? पहलगाम हमले के कुछ ही हफ्तों बाद राष्ट्रपति ट्रम्प द्वारा पाकिस्तान के सेना प्रमुख असीम मुनीर को आमंत्रित करना, एक आतंक समर्थक संस्था को वैश्विक वैधता देने जैसा था, जबकि भारत सरकार राष्ट्रीय शोक के समय भी पाकिस्तान को अलग-थलग करने में विफल रही।

महोदया, पहलगाम में धर्म के आधार पर हुई हत्याओं के बावजूद भारत न तो इस्लामिक देशों के संगठन और ओआईसी में झूठे नैरेटिव को चुनौती दे सका और न ही मुस्लिम दुनिया से एकजुटता हासिल कर सका, जबकि ये देश भारत के करीबी सहयोगी थे। पूरे विश्व की सुर्खियां ट्रम्प के दावे और संस्करण से भरी रहीं, जबकि भारत एक सुसंगत और मुखर अधिकारिक पक्ष अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में पेश करने में विफल रहा।

महोदया, क्वाड जैसे मंचों पर अहम भागीदार होने और रणनीतिक साझेदारी के बावजूद भारत, अमेरिका को पाकिस्तान की सैन्य लीडरशिप को वैश्विक वैधता देने से नहीं रोक सका। अंत में मेरे कुछ सवाल हैं।

अंत में, अब मेरे कुछ सवाल हैं। पहलगाम एक संवेदनशील इलाका माना जाता है और बैसरण में प्रतिदिन सैंकड़ों पर्यटक आते हैं। इसके बावजूद आतंकवादी वहां खुलेआम घूमते रहे। धार्मिक पहचान के आधार पर लोगों को चिन्हित किया गया और दिनदहाड़े निर्मम हत्याएं की गयीं। घटनास्थल पर किसी भी प्रकार की पुलिस व सुरक्षाबलों की मौजूदगी नहीं थी। दुर्भाग्य की बात है कि वहां के महामहिम ने तीन महीने बाद अपने बयान में कहा कि इसमें चूक हो गयी, सुरक्षा में चूक हो गयी।

महोदया, जो आतंकवादी इस हमले के जिम्मेदार हैं, उन्हें अब तक क्यों गिरफ्तार नहीं किया गया? जब सरकार बहु-एजेंसी ऑपरेशन, ड्रोन निगरानी और हवाई नियंत्रण का दावा कर रही है तो फिर ये आतंकवादी जिलों में लगातार कैसे घूम रहे हैं? क्या सरकार जमीनी स्तर पर लोकेशन नेटवर्क और स्लीपर सेल्स को रोकने में नाकाम रही?

महोदया, भारत ने हमेशा यह स्पष्ट किया है कि पाकिस्तान के साथ हमारे मसले द्विपक्षीय हैं और किसी तीसरे की मध्यस्थता स्वीकार नहीं की जा सकती। ट्रंप का दावा यह दर्शाता है कि मोदी सरकार ने अमेरिका को हस्तक्षेप की अनुमति दी जो वर्ष 1972 के शिमला समझौते के बाद से भारत की स्थायी नीति के खिलाफ है।

महोदया, अगर ट्रंप की बात सही है तो इसका मतलब भारत ने अपने सैन्य और कूटनीतिक फैसलों की स्वतंत्रता खो दी है। क्या भारत ने अमेरिका के कहने पर युद्धविराम स्वीकार किया?

महोदया, मैं अंत में कहना चाहता हूं कि क्या युद्ध विराम में अमेरिका की कोई भूमिका थी? क्या वास्तव में फाइटर जेट गिराए गए थे? भारतीयों को ये बातें अपने प्रधान मंत्री से क्यों सुनने को नहीं मिलीं, ट्रंप से सुनने को क्यों मिलीं?

महोदया, ट्रंप ने कहा कि हालात युद्ध के कगार पर पहुंच गए थे, जबकि सरकार कहती है कि यह सामान्य सैन्य बातचीत थी। दोनों बातें एक साथ सही नहीं हो सकती हैं। या तो ट्रंप झूठ बोल रहे हैं या यह सरकार सच्चाई छुपा रही है?

महोदया, ट्रंप की टिप्पणियां हमारी सेना की पेशेवर योग्यता को कम करके आंकती हैं। ऑपरेशन सिंदूर को गलत रूप से पेश करती है। अगर वास्तव में कोई जेट गिराए गए तो जनता को बताया जाना चाहिए। अगर ऐसा नहीं हुआ है तो सरकार रिकॉर्ड ठीक क्यों नहीं कर रही है?

महोदया, ट्रंप की भाषा और बयानबाजी ने भारत और पाकिस्तान को एक बार फिर से एक सथ जोड़ दिया। इसलिए, मैं अंत में कहना चाहता हूं कि सब कुछ हो जाने के बाद अगर हमारा हमला सही था तो फिर दुनिया के 32 देशों में 59 प्रतिनिधिमंडल क्यों भेजे गए? अगर हमारा ऑपरेशन सही था तो हम दुनिया में क्यों गए थे? अगर गए थे तो उससे क्या लाभ हुआ? यह मैं आपसे जानना चाहता हूं। इन्हीं शब्दों के साथ आपने समय दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI KALYAN BANERJEE (SREERAMPUR): Honourable Chairperson Madam, On behalf of my party- All India Trinamool Congress, I would like to first pay my respect and salute to all our

armed forces personnel, soldiers from the Army, Air Force, and Navy. From May 7 to May 10, we pay our respect and bow to all BSF, CISF, and other soldiers who were martyred during Operation Sindoor. Indian missile attacks aimed at destroying the terrorist infrastructure of the Jaish-e-Mohammed and Lashkar-e-Taiba groups in Pakistan-occupied Kashmir (PoK). Madam, I also pay my respect to Hawaldar Jhantu Ali Sheikh, whose home is in Krishnanagar, who died in a terrorist encounter in Udhampur on April 23. If our soldiers had not fought with all their might for those four days, Operation Sindoor would never have been successful. All the credit for this operation goes to our three brave armed forces. This credit cannot be shared with anyone else.*

The credit goes to the soldiers of our country. The credit cannot be divided. No one can take away the credit except for the soldiers.

*If we go back a little, we will see that on April 22nd, 26 Indians were killed in an attack by four terrorists, armed extremists in Pahalgram, Jammu and Kashmir. It has deeply saddened all their families, local residents, and the entire nation. Out of those 26, 3 were from our state-Bitan Adhikari from Patuli, Kolkata, Sameer Guha, Behala, Kolkata, Manush Ranjan Mishra from Jhalda, Purulia. The surprising thing is-how did these terrorists manage to enter that day? How did four terrorists kill 26 people and then escaped? Then what was our BSF doing, what was our CISF doing? Don't we have them? What was our Hon?ble Home Minister Amit Shah doing? The entire department was stunned. Today, 26 people have lost their lives due to their negligence and the negligence of BSF and CISF. And 4 terrorists walked back to Pakistan, and our BSF, KSF jawans sat and watched in silence. Amit Shahji has left, Nityanandaji is still sitting. ... *

Madam, who will take responsibility for the absence of the soldiers? The Prime Minister and the Home Minister will have to take responsibility for this. Please apologize to the 140 crore people of India with folded hands, and acknowledge that 26 people died due to your negligence. You cannot even catch one terrorist, yet you claim to have killed 100 terrorists. Where did those four terrorists go? Tell me their names. You think, only delivering speeches is enough? What was our Intelligence Department doing during those days?**

What are we doing? What logic is that?

**You have practically branded them. What was the intelligence department doing? It was certainly a failure. Why is that person still retained? He has failed as an intelligence officer. ... The Indian Army carried out air strikes on nine militant hideouts in Pakistan and Pakistan-occupied Kashmir late at night on May 6, conducting operations in various places including Balakot, Muzaffarabad, and Sialkot. No Pakistani military personnel or civilians, or people in general, were harmed in these attacks by India.

I accept this statement which has been made by our hon. Defence Minister. I take it at its face value.

No civilian was targeted during the attack and no civilian was injured. Pakistan did not report any civilian deaths. Our best wishes and respect go to the Indian Army. India?s actions in Operation Sindoor were very precise and restrained.. However, Pakistan also inflicted damage on our civilian areas in Jammu and Kashmir, Punjab. People have seen that damage. Incidentally, a few days later, I went to Jammu. Even 100?150km away from Jammu, people were still in the grip of terror. This cannot be denied. What is truth, should be accepted. Pakistan claims that during the military standoff, they shot down six Indian Air Force fighter jets, but I have not seen any proof of this yet. Let me be very clear. We, the All India Trinamool Congress, have always supported the India government?s foreign policy decisions. However, if you have shortcomings or make mistakes, we will definitely point them out. 140 crore Indians were waiting from May 7 to May 10. We are getting one news after another. It is heard that they are blowing them up. And 140 crore Indians of the whole India are saying, "come on. do it. blow them up. This is the best chance. Beat Pakistan." On the 10th, I was at the Calcutta High Court for some cases and was busy all day. Occasionally, I would check the news. I was excited, thinking, 'Go on, strike back at Pakistan. This is the time.? We are all with the Prime Minister. Everyone is eagerly waiting that we will snatch Pakistan occupied Kashmir from Pakistan by today. Suddenly, at 3:30, I heard there was a ceasefire. What is this! It is like someone scoring 90 runs, standing on the verge of a century, declaring the innings, and saying, 'I won't play anymore". He is retreating.

कभी सुना है, सेंचुरी के नाम पर एक्सट्रा रन? 90 रन हो गए, कोई बोलेगा कि इनिंग्स डिक्लेयर हो गई? आपने कभी सुना है? एक मोदी जी ही कर सकते हैं और कोई नहीं कर सकता है? मोदी जी आप कृपा करके कभी क्रिकेट के मैच

में मत घुसियेगा, तब तो देश का पूरा चला जाएगा। 100 रन होने की बात थी, 90 रन हो गए।

Our heads bowed in shame. We still don't know what was going on. At 3:30 PM, Donald Trump posted on X:

?After a long night of talks mediated by the United States, I am pleased to announce that India and Pakistan have agreed to a full and immediate ceasefire.
Congratulations to both countries on using common sense and great intelligence.
Thank you for your attention to this matter.?

Can there be anything more shameful than this? The President of America is deciding for us? Where I, as an opposition member, am saying, we are with you. You have full support. We will fight by your side. 140 crore Indians are saying that you should fight. Did you stop the war after listening to the President of America? Later, statements were made here and there. That, it was not done on the advice of the President of America. We did it after a mutual discussion and agreement. Narendra Modi, Prime Minister Sir, why didn't you post on X once?

Why even once have you not posted on your ?X? handle saying that, ?No, you are incorrect, Mr. American President. What you have said is incorrect.?? You could not show your courage to do that to that extent.

Tell me, what happens to you? ...

When all the people of India are with you, we consider the sudden declaration of ceasefire a grave mistake. We wanted to see a decisive result against terrorism. All 140 crore Indians mourned the sudden loss of those 26 lives.

"What have you done to my favourites? you have destroyed my home. Can I ever forget that in this life or after my death?

If I were someone from primitive violent humanity, I would raise your pyre in the same crematorium."

You should have had this spirit. But you have stifled the desire of everyone. History will never forgive you.

"My voice is shut today, the flute has lost its music,

Who has destroyed my world under the nightmare of the new moon,

That is why I cleanse you with tears,

Those who poisoned your air, extinguished your light,

Have you forgiven them, have you loved them right?"

Today you need to answer us all. I am Bengali. I will speak in Bengali. You arrest me outside, I don't care, but Rabindranath, Nazrul is in my heart. You started not only a symbol but also a political narrative by naming it Operation Sindoor. Before this, no organizational branding was seen during Uri in 2016 or Balakot in 2019. ...

It is nothing but that. We have seen a perfect example of the branding of the Prime Minister in the war with Pakistan.

After gaining independence in 1947, India has successfully overcome many critical military attacks including the wars of 1965, 1971, 1999. Even after the Mumbai attacks in 2008, the then Prime Minister Manmohan Singh-led team kept Pakistan under pressure at the international level. During the rule of Indira Gandhi, and under the military leadership of Field Marshal Manekshaw, India achieved complete dominance over Pakistan in 1971 and divided Pakistan into two. ... From 1979 to 2024, there were 66,872 record-breaking terrorist attacks worldwide. Where the number of deaths was 249,941. In the last 78 years since India became independent, there have been 12,813 terrorist attacks in this country where 20,909 people were killed and 31,452 injured. Only from July 2014 to July 2025, that is, during Narendra Modi's tenure, there have been 4,276 terrorist attacks and the number of deaths was 8,163. In these 6 months of this year, 68 people have died in 22 incidents in Jammu and Kashmir. And in the last 10 years, 2,850 people have been killed in 1,392 attacks, of which ,632 were Indian soldiers. The Indian government's own statistics show that retaliatory surgical strikes can never create lasting resistance. When Modiji was the Chief Minister of Gujarat during the UPA government, he demanded accountability from the then Prime Minister Manmohan Singh after the terrorist attacks. Didn?t you demand accountability then? You did. So how do terrorists keep entering

Indian territory despite the presence of border forces, intelligence, and tight central control? This was the question of the then Chief Minister Narendra Modi. Today, we have that question for Prime Minister Narendra Modi.

How can the terrorists enter into the territory of India while there is Border Security Force, while there is CISF, while there is intelligence? This question was raised by Shri Narendra Modi, the then hon. Chief Minister, to the then Prime Minister Dr. Manmohan Singh. I am raising the same question today to Shri Narendra Modi during his regime as the hon. Prime Minister. Give the answer. You have to give the answer.

Just playing to the gallery while delivering speeches will not suffice. You have to work. Why were we 15 days late in going on this campaign? Another MP has already raised a question about this, so I don't want to talk much about it. The interesting thing is that on April 22, apart from the incident across India, there were 9 more extremist/terrorist attacks across Punjab, Manipur and Telangana on that day. Even during the 4 days of the war, extremist attacks took place in 34 places in Assam, Manipur, South India, Rajasthan and Punjab. What steps did you take?

What steps have you taken? You have not taken any steps.

However, long before government aid arrived in Pahalgam on April 22, the actions of Kashmiri Muslims were a remarkable example of humanity. It was Muslim residents who rescued and sheltered the victims that day. Those who shout 'Jai Shri Ram' did not help, but those who cried 'Allahu Akbar' did. They carried tourists to the hospital on their shoulders. A section of the country's media and Sangh-supported cells were busy blaming those Kashmiri Muslims. Under this pretext, harassment and threats against Kashmiris increased across the country. Even BJP leaders forbade people from going to Kashmir. The opposition leader of our state, and your leader, said that none of you should go to Kashmir. I asked him to tell Modiji this first. Forbid Naddaji from going to Kashmir. What is the use of telling us? This is the culture of BJP. The biggest question is that there is a shadow of international pressure behind this operation. Modern warfare is no longer just about weapons, but also about information, stories and public opinion. In 2016, you gave one of the reasons for demonetisation as counter-terrorism. What was the

benefit? One of the reasons you gave when you abrogated Article 370 in 2019 was to take final steps to counter terrorism. What was the benefit? What benefit did you bring? Demonetisation is for counter-terrorism, Article 370 was abrogated to counter-terrorism. What was the benefit, terrorism still remains? Do you know why it remains? Your failure. The failure was not due to Article 370, the failure is entirely yours. You cannot provide security, so the failure is yours. India closed the check posts while severing diplomatic relations with Pakistan as well.*

He raised five questions. I will repeat those questions. These questions were raised on 16th June. The first question is this. It has been over 55 days since the Pahalgam terror attack. It is deeply concerning in a democracy that

neither the mainstream media, Members of the Opposition, nor the judiciary have stepped forward to raise these five crucial questions before the Government of India.

The first question is regarding border breach and civilian casualties.

16.00 hrs

How did four terrorists manage to infiltrate the border and launch an attack that killed 26 innocent civilians? Where is the accountability for this massive breach in national security?

My second question is regarding intelligence failure and the IB Chief ? (*Interruptions*) If this was an intelligence failure, why was the Chief of Intelligence Bureau granted one-year extension? What is the status of the terrorists? Where are these four terrorists? You are making a gossip that a hundred terrorists have been killed. Where are these four terrorists? Give us the evidence. Ceasefire was compromised. Indians nicknamed Pakistan Occupied Jammu and Kashmir as PoJK. Why have the Government officials not responded to the US President?s claim that he has persuaded India and Pakistan to agree to a ceasefire with the promise of trade? It is global diplomacy and hypocrisy. After reaching out to 33 countries post Pahalgam in the last one month, how many extended explicit support to India? Give this answer. We need to hear this answer ? (*Interruptions*)

We want to see you reclaiming back the Pakistan Occupied portion of Kashmir. We support you fully on this. As you had earlier wished, we have fully supported you since 22nd

April. You fight, we are right behind you. 140 crore people are right behind you. In my speech, I didn't raise questions on how many fighter jets you have lost. My only demand is to fight and I want to know why you came to an understanding for the ceasefire? Why, why ceasefire? Go and fight, we all are with you.

"Tired of the great rebel war, I will be at peace on that day,

When the cries of the oppressed will no longer echo in the sky and air-"

I want to make it clear to Pakistan from this ?House?, you can't hinder India's progress with terrorism. These terrorists can't stop the Indian citizens. India runs at its own pace. All our 140 crore citizens stand together with the country in this fight. You can't break their morale. In the words of Rabindranath Tagore, I would like to send this message to Pakistan,

"In the last rays of the approaching evening

Stand at the door of that disgraced woman;

Say ?forgive me? ?

Amidst the violent delirium

Let that be the last virtuous message of your civilization."

SHRI LAVU SRIKRISHNA DEVARAYALU (NARASARAOPET): Thank you Madam for allowing me to speak on India?s strong, successful and decisive Operation Sindoor. I wish the Opposition has taken this spirit and expressed it. Before I start my speech, let me quote from *Kautilya's Arthashastra*-

?When a righteous king is attacked without a cause, he must retaliate with all his might to protect his people.?

16.04 hrs (Shri Krishna Prasad Tenneti *in the Chair*)

These are the words from the *Arthashastra*. These are not just ancient wisdom. They are our responsibility today; responsibility to act, to lead, and to defend.

On 22 April, 2025, in Pahalgam, Kashmir has seen what happened, India has seen what happened, and the world has seen what happened. Twenty-six civilians were killed and 20 others were injured. It was more than violence. It was an assault on the soul of India. Tourists were held at gunpoint and asked about their religion. Based on that, they were shot dead. They were shot dead in front of their children and wives. This is not war; it was slaughter. I was in Kashmir just 10 days before this incident happened. Kashmir was thriving and tourists were everywhere, and it took almost one-and-a-half-hours for me to travel 30 kms. When I asked a taxi driver, he told me that in the last four years or so the tourists were flocking to Kashmir and economy was thriving. But this Pahalgam attack has changed everything overnight.

India responded on 7th May, 2025. Operation Sindoor was not just a retaliation, but it was a statement of restraint, a statement of precision, and a statement of resolve. We did not act in anger. We acted in accuracy. We did not just act with emotion, but we acted with ethics. Our actions were grounded in Article 51 of the UN Charter, which guarantees the inherent right of self-defence when a nation is attacked. When the terror crosses borders, self-defence is not just a right, but it becomes a duty.

India has sent a very strong message with Operation Sindoor. The message was very clear that India will wait, but India will never forget. This is not aggression. This is assertive deterrence, and behind it stood our armed forces -- men and women of unmatched courage. They fought with discipline, precision and honour. On behalf of a grateful nation, I salute our Army, Navy, Air Force, and Special Forces. Jai Hind to every uniform that stood between India and terror.

This clarity of action and this moral assertiveness was possible because of the bold leadership of Prime Minister, Narendra Modi ji. Under his leadership, India moved from reactive to resolute, and from strategic silence to strategic sovereignty. We have seen it with Uri surgical strikes and we have seen it with Balakot air strikes, and under the watch of Raksha Mantri Rajnath Singh ji, Operation Sindoor was executed with both tactical brilliance and moral clarity. Moral clarity is the need of the hour.

India?s defence now is not just strong, but it was swift, smart and it was surgical. But we did not stop at the battlefield. We took the truth to the world with seven delegations covering 32 nations. I had the honour of representing India in Qatar, Ethiopia, South Africa and Egypt. It was led by an hon. Member from the Opposition side, Supriya Sule ji. The Members in this delegation came from all political parties, but when we were overseas, we were all talking in one voice in this delegation. What we witnessed there -- when we went there -- was not just diplomacy, but we saw solidarity. The world stood with India not in sympathy, but in shared conviction. They saw what we stand for and what Pakistan stands for. India has a thriving democracy whereas on the other side Pakistan is literally an Army-owned State. It has not had a Prime Minister who has completed a five-year term after its independence.

The world has also witnessed what India has given. India has given non-violence and Gandhi ji. Pakistan has given the world terrorist-training camps. We have given refuge to Dalai Lama and Pakistan has given refuge to Osama Bin Laden. We exported teachers, technology and trust whereas Pakistan exported terror. The world understands this and stands with us, and that solidarity was not accidental. It was earned by our External Affairs Minister, Jaishankar ji and our diplomats who worked tirelessly across the continents.

Our diplomats have positioned India as a voice of clarity, responsibility and of resolve for the divided world. But when we reflect on Pahalgam, on Operation Sindoor and the diplomacy that followed, three urgent truths emerge. The first action point is that it is time that the United Nations defines terrorism. For over 30 years India?s proposed Comprehensive Convention on International Terrorism has been ignored. Terrorism has taken so many lives. Let us not just debate about terror. Let us start defeating it. A terrorist is not a freedom fighter. He has no religion. He has no political ideology. A terrorist is a terrorist. We call upon the Government to lead a global campaign for this long overdue definition to give the world moral clarity and legal tools to act because I believe that only India can lead this campaign.

The second action point is that we must work actively with like-minded nations to ensure Pakistan is re-listed on the Financial Action Task Force. India must ensure that sponsors of terror are held accountable. UN Security Council Resolution 1373 passed after 9/11 requires every nation to deny financing, sheltering and supporting terrorists. But across our borders, terrorists

are not just shielded, they are celebrated. Their names are painted on the billboards, their hate is shouted in public squares.

Pakistan's impunity has cost Indian and global lives. We have gone across every country which has faced terror. Definitely in the terrorist activity, Pakistani fingerprint is very much visible and the world can no longer look away. We call upon the Government to use India's growing global influence to build a coalition for counter-terror finance and to ensure Pakistan's duplicity is exposed and punished.

The third action point is this. Sovereignty is no longer just about land. It is not just about geography. It does not stop at the border. It flows through every policy, every innovation, every byte. It is about future readiness, digital, economic, energy and more importantly, defence. We have seen the example with regard to what is happening in the Russia and Ukraine war. Both the countries are waging a war for a very long time, but none of them is able to move an inch forward because technology is advancing so fast that both the countries cannot really catch up.

India has been the largest importer of defence equipment in the world in 2014, but that has changed in the last 10 years. Now 60 per cent of weapons and equipment are indigenised and domestically manufactured. But it is high time India created a DARPA-style innovation agency, agile, autonomous and outcome driven to lead breakthroughs in defence technology mainly, because in this era, technology is the new territory. If you do not claim it, someone else will.

Sovereignty must be designed, coded and manufactured in India. I want to give you the example of Marut ? it was designed by HAL ? the first fighter jet, designed and built in Asia outside the Soviet Bloc in 1960s. It was here in India, a fighter jet which was designed, manufactured and delivered in India. It has seen the action in 1971 Indo-Pak war also. But when it was there in 1960s, it should have actually gone in the right direction wherein we should have had much better fighter jets. But somehow it has decreased and we are not able to deliver that. Unless we have a great vision, unless we have a strong leadership, it will not happen. So, I request the Government to actually look at it in such a way that this defence technology gets enough funding so that Indian manufacturing, Indian defence technology can be on par. Going

forward, our sovereignty depends on how much and how well we can innovate, how much and how fast we can innovate in this country.

Operation Sindoor showed what India can do in critical hours. Now let us show what we can do in transformational decades. Sovereignty is not just about the LOC, it is in our labs, our codes, our skies, and our chips. Let us not just defend India, let us define the future not just by power of strength, but with force of foresight. This is India's moment. I believe that it is rooted in our Constitution, aligned with the international laws, protected by our armed forces, led by our bold leadership in the form of our Prime Minister Narendra Modi and driven by the will of 1.4 billion Indians.

Thank you. Jai Hind!

पंचायती राज मंत्री; तथा मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री (श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह) : सभापति महोदय**,** 22 अप्रैल को जम्मू और कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादी घटना हुई**,** जिसमें 26 पर्यटक मारे गए। उस घटना के बाद आतंकवाद के खिलाफ इस देश में जो निर्णायक **?**आपरेशन सिंदूर**?** चलाया गया**,** उस पर आज चर्चा हो रही है।

सभापति महोदय**,** हमने अभी मुख्य विपक्षी दल से श्री गौरव गोगोई जी का भाषण सुना। हमको लगा कि बहुत विस्तार से उन्होंने कुछ अध्ययन किया होगा और वे कुछ बोलेंगे। लेकिन**,** वे एक शब्द काम की बात नहीं बोले। ?(व्यवधान) उन्होंने एक भी शब्द इस देश की सेना की वीरता पर, पराक्रम पर और उसके अदम्य साहस पर नहीं बोला। ?(व्यवधान)

आप देशभक्ति की बात करते हैं। इस देश की सेना पर पूरे देश के लोगों को गर्व है, लेकिन आप एक बार भी उसकी प्रशंसा नहीं कर रहे हैं। आप केवल यह बता रहे हैं कि कितने जहाज गिरे, कितनी मिसाइलें गिरीं और आप इसी पर चर्चा कर रहे हैं। इस देश के सैनिकों का आपकी नज़र में कोई महत्व नहीं है। आप इस देश में आतंकवादी घटनाओं की बात कर रहे थे। क्या आतंकवादी घटनाएं आज की हैं? आपके यूपीए सरकार के शासनकाल में वर्ष 2004 से वर्ष 2014 तक इस देश में आतंकवाद पनपा, उसको जगह मिली और उसको पनाह भी मिली थी। उस समय देश में आतंकवाद की कितनी घटनाएं हुईं, कहां हुईं, कितने नागरिक मारे गए, कितनी महिलाएं विधवा हुईं, कितने बच्चे मारे गए? क्या आपने इसके बारे में कभी सोचा है और कभी आपने देखा है? जब यूपीए की सरकार सत्तापक्ष में थी, तो मैं उस समय सदन का सदस्य था। मैंने देखा है और चर्चा भी हुई है, लेकिन आप क्या करते थे? वर्ष 2004 से वर्ष 2014 तक यूपीए के शासनकाल में आतंकवादी घटनाओं में इस देश के 615 लोग मारे गए थे। आप आतंकवाद की बात करते हैं। आतंकवाद तो आपके शासनकाल में पनपा है। आपके समय में 615 लोग मारे गए और 2006 लोग घायल हुए। दिनांक

11.07.2006 को मुंबई ट्रेन हादसा हुआ था। उसमें कितने लोग मारे गए थे? उस हादसे में 209 लोग मारे गए और 800 लोग घायल हुए। यूपीए के शासनकाल में क्या किया और क्या कार्रवाई हुई? उस समय कुछ नहीं हुआ।

महोदय, दिनांक 26.11.2008 को पूरा मुंबई महानगर आतंकवादियों के कब्ज़े में था। उस समय आतंकवादी कैसे आए? आप आज सवाल पूछ रहे थे कि पहलगाम में आतंकवादी कैसे आए? आपको यह बताना चाहिए कि मुंबई महानगर में आतंकवादी कैसे घुसे? उस आतंकवादी घटना में महाराष्ट्र पुलिस के दो अधिकारी मारे गए थे। उस 26.11.2008 की घटना में 175 लोग मारे गए और 300 घायल हुए थे। आपने क्या किया? उनमें 29 विदेशी नागरिक भी थे, जो मारे गए थे। मुंबई पुलिस के दो अधिकारी, संयुक्त पुलिस आयुक्त भी मारे गए थे। आपने क्या किया था? आप घड़ियाली आंसू बहा रहे थे। आपने सदन में चर्चा करके घड़ियाली आंसू बहाकर, उस समय के गृह मंत्री को विदा करके नया गृह मंत्री बैठा दिया, मुख्यमंत्री को विदा कर दिया और आतंकवाद को पूरे देश में पनपने के लिए जगह देने का काम किया था। आप यही तो काम कर रहे थे। आप आतंकवाद की बात कर रहे हैं। यूपीए सरकार में आतंकवाद के ख़िलाफ लड़ाई लड़ने का न साहस था, और न दम था कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ते। आप खानापूर्ति करते थे और घड़ियाली आंसू बहाने का काम करते थे।

महोदय, मैं यह भी बताना चाहता हूं कि मुंबई की घटना का जो मुख्य कर्णधार था, वह अमेरिका में छिपा हुआ था। आपके अंदर उसको लाने का साहस नहीं हुआ, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने उसे इस देश में लाकर उस पर मुकदमा चलाने का काम किया। आज यह जरूर है कि भारत ने पहली बार आतंकवाद के खिलाफ लड़ने का जो संकल्प लिया और जो संकल्प दिखाया, वह वर्ष 2016 में शुरू हुआ था। इस देश के प्रधानमंत्री ने कहा कि हम अपने देश की धरती पर आतंकवाद को पनपने नहीं देंगे। हम निर्णायक लड़ाई लड़ेंगे और आतंकवादियों को उनके घर में घुसकर मारने का काम करेंगे। यह संकल्प प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने दिखाया था।

वर्ष 2016 में उरी की घटना हुई, जिसमें 25 सैनिक मारे गए। उरी में 25 सैनिक मारे जाने के बाद देश के प्रधानमंत्री ने निर्णायक लड़ाई लड़ते हुए सर्जिकल स्ट्राइक की और पाकिस्तान की सीमा में घुसकर पाक आतंकवादियों को समाप्त करने का काम किया। प्रधानमंत्री ने इस संकल्प के साथ काम किया। आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ने का काम किया। सर्जिकल स्ट्राइक में आतंकी प्रशिक्षण केन्द्र समाप्त हुए। सैकड़ों आतंकवादी मारे गए। आतंकवादियों ने दोबारा साहस किया और दिनांक 14 फरवरी, 2019 को पुलवामा में आतंकी घटना हुई। पुलवामा में सीआरपीएफ की गाड़ी पर आत्मघाती हमला हुआ और उस हमले के बाद आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार ने अपने संकल्प को फिर दोहराया और एयर स्ट्राइक करके पूरे प्रशिक्षण केन्द्रों को तबाह किया। जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा के सारे प्रशिक्षण केन्द्रों को तबाह करने का काम किया। आप मोदी जी को सिखा रहे हैं? आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ने के बारे में आप मोदी जी को सिखा रहे हैं? आप आतंकवाद के खिलाफ क्या लड़ाई लड़े थे? इतने दिन देश में शासन किया, आजादी के बाद से तो सबसे ज्यादा शासन आप ही लोगों ने किया है, तो आपको बताना चाहिए था कि हमने यह-यह काम किया था। आप तो कुछ नहीं किए। आप तो जीरो बट्टे सन्नाटा हैं, तो जीरो बट्टे सन्नाटा में

क्या कहियेगा? अभी बोल रहे थे कि पहलगाम में आतंकवादी किन उद्देश्यों के साथ आए। उसका भी व्याख्यान आप ही कर रहे थे कि इन-इन उद्देश्यों के साथ आतंकवादी पहलगाम में घुसे थे। क्या वे लोग आपसे पूछकर घुसे थे? आपको कैसे जानकारी है कि वे लोग किस उद्देश्य के साथ घुसे थे। ऐसी बात मत कीजिए। कम से कम देश की एकता और अखंडता के साथ मजाक मत कीजिए। देश की सरकार के साथ खड़ा रहने का काम कीजिए, नहीं तो कोई नहीं, विश्वसनीयता तो प्रतिदिन समाप्त हो ही रही है। यह भी जान लीजिए कि आने वाले समय में कोई पूछेगा भी नहीं। प्रधानमंत्री जी ने एयर स्ट्राइक की। पुलवामा की घटना के बाद 26 अप्रैल को बालाकोट में घुसकर एयर स्ट्राइक करके आतंकवादियों के प्रशिक्षण केन्द्रों को समाप्त करने का काम किया। यह प्रधानमंत्री जी का संकल्प था, यह मोदी जी का संकल्प था। यूपीए सरकार के किसी प्रधानमंत्री ने यह संकल्प नहीं लिया था। यह काम मोदी जी ही कर सकते हैं, दूसरा कोई नहीं कर सकता है। अब ?ऑपरेशन सिंदूर? पर आइये। दिनांक- 22 अप्रैल को पहलगाम में जब घटना हुई, तो? (व्यवधान) अरे जाओ न यार, वहां बड़ा जाली वोटर बनवाए हो, उधर जाकर देखो? (व्यवधान)

माननीय सभापति : कृपया आप बैठे-बैठे बात मत कीजिये। उनको बोलने दीजिए।

? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप बैठिये। आप बैठिये। प्लीज आप बैठिये।

? (व्यवधान)

श्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह : नस पकड़ी गई है। असली नस पकड़ी गई है। देखिए, आपको एक चीज बता देते हैं। अगर असली बीमारी पकड़ी जाती है, तो उसका इलाज भी परफेक्ट होता है। अगर डायग्नोसिस सही हुआ तो उसका ट्रीटमेंट भी सही होगा? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप बैठियेगा। प्लीज, आप बैठियेगा।

? (व्यवधान)

श्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह : अगर डायग्नोसिस सही हुआ है तो ट्रीटमेंट भी पक्का होगा। आपकी बीमारी समाप्त हो जाएगी, चिंता मत कीजिए ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : नहीं-नहीं। आप बैठियेगा।

? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप बैठिये। जब हम आपको बोलने का मौका देंगे, तभी आप बोलिए। Please address the Chair directly.

श्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह : सभापति महोदय, दिनांक- 22 अप्रैल को पहलगाम में घटना हुई। हमारे पूरे देश के पर्यटक परिवार के साथ वहां घूमने गए थे। छुट्टियां मना रहे थे। आतंकवादियों ने हमला किया और 26 लोग मारे गए। हमारे देश के प्रधान मंत्री जी की आत्मा, जो इस देश में बसती है, इसको महसूस करना चाहिए। उन्होंने विदेश की यात्रा स्थगित करके देश में तत्काल वापस आने का काम किया। इसलिए कि उनको इस बात का दर्द था। ? (व्यवधान) आप सुन लीजिए। आप बैठिये। आप प्रवचन मत दीजिए।? (व्यवधान) आप तमाशा कर रहे हो।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप बैठे-बैठे मत बोलिये। आप टिप्पणी मत कीजिए। आप बैठिये। उनको बोलने दीजिए।

? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप जो भी बोल रहे हैं, वह रिकॉर्ड में नहीं जाएगा। आप बैठ जाइये।

? (व्यवधान) ?

श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह : सभापति महोदय, कश्मीर तो वे गए, जिनको तफरीह करनी था। इस देश के प्रधान मंत्री जी को एक्ट करना था। जिनको कश्मीर तफरी करने जाना था, वे गए। इन्होंने एक्शन लिया और एक्ट किया। जो एक्ट किया, आपको वही बात बता रहे थे। लेकिन आपके दिमाग में बात नहीं घुसेगी और काम की बात ऊपर से निकल जाती है। 22 अप्रैल को घटना हुई और प्रधान मंत्री जी वापस आए। अभी गौरव गोगोई जी कह रहे थे कि चुनाव प्रचार में गए थे। वे चुनाव प्रचार में नहीं गए थे। आप अपने को करेक्ट कीजिए। आप बोलें तो करेक्ट करके बोलिये। उस दिन पंचायती राज दिवस था। प्रधान मंत्री जी हर साल पंचायती राज दिवस में किसी न किसी राज्य में जाकर पंचायत के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हैं। 24 अप्रैल को भी प्रधान मंत्री जी बिहार के मधुबनी में पंचायती राज दिवस के दिन गए थे। लेकिन उन्होंने वहां जाकर पहलगाम की घटना पर पहली बार जो कहा, उन्होंने एक शब्द कहा कि मैं घटना से मर्माहात हूं और इसका जवाब कल्पना से परे पाकिस्तान को मिलेगा। यह एक लाइन में उनकी संकल्प शक्ति का दृष्टिगोचर हो रहा था कि उनके दिमाग में क्या है? मधुबनी में आतंकवाद के खिलाफ लड़ने का उनका जो संकल्प था, मैंने वर्ष 2014 से आज तक देखा कि प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने कुछ देर अंग्रेजी में भाषण दिया। वह इसलिए दिया कि पूरी दुनिया को, विश्व को उन्होंने संदेश दिया कि हम आतंकवाद के आगे झुकने वाले नहीं हैं। हम आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़ेंगे। उन्होंने इसके माध्यम से विश्व को अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति का संदेश दिया और उन्होंने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई का संकल्प लिया।

अभी रक्षा मंत्री जी ने विस्तार से बताया। वह सब बात तो आपके दिमाग में घुसी नहीं होगी और ऊपर से निकल गई होगी। अभी रक्षा मंत्री जी ने बताया कि वहां से आने के बाद वे लगातार अपनी तीनों सेनाओं और चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ के साथ बैठक करते रहे। उन्होंने सभी की पूरी बात और चर्चा सुनी। उन्होंने एक बात स्पष्ट तौर पर पूरे देश को बताई कि मैंने अपनी सेना को खुली छूट दी है। उसे डेट तय करने, समय तय करने और क्या एक्ट करना है, यह तय

करने की पूरी छूट दी है। हमारे सैनिकों ने 6-7 मई की मध्य रात्रि को 9 आतंकवादी ठिकानों को ध्वस्त कर देने का काम किया और उसमें सैकड़ों आतंकवादी मारे गए। आप सब ने टीवी पर देखा होगा। बहुत से लोग, जो आतंकवादियों के आका थे, वे रो रहे थे। मसूद अज़हर, हाफिज सईद ? ये रो रहे थे कि मेरा सारा परिवार मर गया। काश, मैं भी मर जाता। उन्होंने सारे आतंकवादियों को ध्वस्त करके संदेश दिया कि अब इस देश में और पाकिस्तान की धरती पर आतंकवाद को हम बर्दाश्त नहीं करेंगे।

उन्होंने यह संकल्प पूरा करने का काम किया। 100 से ज्यादा आतंकवादी मारे गए। सेना प्रमुख से लेकर पूरे पाकिस्तान के जितने बड़े अधिकारी थे, सब आतंकवादियों के जनाजे में गए। आपने पाकिस्तान की तो एक बार भी आलोचना नहीं की। गोगोई जी, आपने पाकिस्तान को एक बार भी कन्डेम नहीं किया कि पाकिस्तान के जो सेना प्रमुख थे, वे गए। आपने तो आलोचना नहीं की। आप नहीं करिएगा, वह मालूम है। आप वोट के लिए राजनीति करते हैं और मोदी जी देश के लिए राजनीति करते हैं। अंतर यहां है। लेकिन 6 और 7 मई को ?ऑपरेशन सिंदूर? की जो घटना हुई, उससे पाकिस्तान हक्का-बक्का रह गया। पाकिस्तान को यह उम्मीद नहीं थी। जो सबसे बड़ी उपलब्धि थी, वह यह थी कि जो 9 प्रशिक्षण शिविर ध्वस्त किए गए, उनमें एक भी नागरिक को खरोंच तक नहीं आई। पाकिस्तान के किसी नागरिक को खरोंच तक नहीं आई। हम लोगों ने सैटेलाइट इमेज पर देखा कि जो ध्वस्त प्रशिक्षण शिविर हैं, उनके बाहर पाकिस्तान के लोग वीडियो बना रहे हैं। वे पूरा वीडियो बना रहे थे और मजा ले रहे थे। यह मोदी जी का कमाल था। पाकिस्तानी सेना की किसी भी जगह पर हमारे सैनिकों ने हमला नहीं किया। हमारा संकल्प, मोदी जी का संकल्प आतंकवाद के खिलाफ लड़ने का था। इसलिए उन्होंने आतंकवादी प्रशिक्षण शिविर को टारगेट बनाया। इसके बाद जवाब में क्या हुआ? उसके जवाब में पाकिस्तान ने हमारे सैनिक ठिकानों, हमारे एयरबेस, हमारे नागरिक स्थलों, हमारे जम्मू और कश्मीर की यूनिवर्सिटीज़, गुरुद्वारे और धार्मिक स्थलों पर हमला करने का प्रयास किया। उनकी जितनी मिसाइलें थीं, हमारे देश में निर्मित रक्षा प्रणाली ने उनका जवाब दिया। यह हम सब लोगों ने और पूरे देश ने टेलीविजन पर देखा। आप कितने ही भाषण दे दीजिए, उनका कोई असर नहीं होने वाला है।

सभापति महोदय, हम दिवाली में बोतल में रॉकेट बम डालते थे और उसमें नीचे से आग लगाते थे। जब वह ऊपर जाकर फटता था, तो फुलझड़ी की तरह सब गिरता था। इसी तरह पाकिस्तान की जितनी मिसाइलें थीं, वे हवा में फुलझड़ी की तरह ध्वस्त हो गईं। यह नजारा पूरे देश ने देखा। यदि आपको नहीं दिखता है, तो हम क्या करें? या तो आप चश्मा लगा लीजिए या फिर चश्मा बदल लीजिए। यह पूरे देश ने देखा, परंतु आपको नहीं दिखा। जब पूरे देश में वाह-वाही हो रही थी, तब आपको नहीं दिखा। सारी मिसाइलें फुलझड़ी की तरह उड़ गईं। कहीं कोई नुकसान नहीं हुआ।

यह रक्षा मंत्री जी से पूछ रहे थे। यदि रक्षा मंत्री की पूरा भाषण आप पूरे ध्यान से सुनते, तो रक्षा मंत्री जी ने बताया कि हमारी कोई हानि नहीं हुई, हमारा कोई जहाज नहीं गिरा। इसके बाद भी आप पूछ रहे हैं कि कितने जहाज गिरे थे। उनकी सारी मिसाइलों को हवा में ध्वस्त कर दिया गया। उसके बाद जब भारत ने जवाब देना शुरू किया, तो हमारे देश की सेनाओं ने पाकिस्तान के पूरे रडार सिस्टम और रक्षा प्रणाली पर हमला करके लाहौर और गुजरांवाला में सारे सिस्टम

को ध्वस्त कर दिया। पाकिस्तान की पूरी रडार और रक्षा प्रणाली ध्वस्त हो गई। हमने उनके कमांड और कंट्रोल को ध्वस्त कर देने का काम किया और हमारी वायु सेना ने उनके 11 एयरबेस को ध्वस्त कर देने का काम किया। यह हमारी उपलब्धि थी। क्या आपको ?ऑपरेशन सिंदूर? की उपलब्धि नहीं दिखी? आपको दिखेगी भी नहीं, लेकिन पाकिस्तान भी चालाकी कर रहा था। यह आपने देखा होगा, यह पूरे देश ने देखा। जब ?ऑपरेशन सिंदूर? चल रहा था, तो पाकिस्तान अपने नागरिक विमान का भी परिचालन कर रहा था। वह नागरिक विमान का परिचालन इसलिए कर रहा था कि अगर इंडिया ने एक भी नागरिक विमान को ध्वस्त किया तो उसमें विदेशी नागरिक भी पैंसेजर्स होंगे लेकिन हमारे देश की सेना ने और हमारे नेतृत्व ने उनकी इस चालाकी को समझा और एक भी नागरिक विमान पर खरोंच नहीं आई, फिर भी हमने उनके कमांड और कंट्रोल को समाप्त किया। हम लोगों ने उनके एयरबेस को समाप्त करने का काम किया। ऑपरेशन सिंदूर की हमारी यह उपलब्धि थी और आप बात कर रहे हैं कि क्यों रोक दिया गया? प्रधान मंत्री जी ने पहले ही बता दिया कि हम युद्ध नहीं करना चाहते हैं। हमारी लड़ाई आतंकवाद के खिलाफ है और अगर आतंकवादियों और आतंकवाद का प्रश्रय पाकिस्तान की धरती पर मिलेगा तो हम वहां पर घुस कर हमला करेंगे और आतंकवाद को समाप्त करेंगे।

दोनों देशों के डायरैक्टर जनरल मिलिट्री ऑपरेशन ने बैठ कर यह तय किया और यह कहा कि हमें युद्ध रोकना है, युद्ध रोक दीजिए। पाकिस्तान घुटने के बल बैठ गया। उनके सारे एयरबेस, रडार सिस्टम और रक्षा प्रणाली ध्वस्त हो गये। उनको कुछ दिखाई ही नहीं पड़ रहा था कि भारत से कौन-सा जहाज किधर से आ रहा है और कहां हमला करके चला जा रहा है। अब उनके पास क्या चारा था? उन्होंने घुटना टेक दिया और घुटना टेकने के बाद सीजफायर।

सीजफायर होने के बाद इस देश के प्रधान मंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी ने राष्ट्र के नाम सम्बोधन में यह कहा कि हम आतंकवाद को कभी बर्दाश्त नहीं करेंगे, हमारा ऑपरेशन सिंदूर बंद नहीं हुआ है, स्थगित हुआ है। जब भी हमारे देश की तरफ आंख उठा कर देखोगे, तो हम घुस कर मारेंगे और आतंकवादियों को समाप्त करेंगे। हमारी लड़ाई आतंकवाद के खिलाफ है। हमारी लड़ाई किसी देश के खिलाफ नहीं है। ये सारे काम हुए हैं, लेकिन गोगोई जी को नहीं दिखा।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता, प्रधान मंत्री के कुशल नेतृत्व की क्षमता, सैनिकों के पराक्रम, वीरता, अदम्य साहस एवं आत्मनिर्भर भारत के तहत निर्मित रक्षा प्रणाली का परिणाम पूरी दुनिया ने देखा है और सिर्फ देखा ही नहीं बल्कि उसको सराहा भी है। पूरी दुनिया ने हमारे ऑपरेशन सिंदूर को सराहा और समर्थन करने का काम किया है। ऑपरेशन सिंदूर ने पूरे विश्व के सामने एक संदेश दिया कि भारत एक सशक्त देश है जो अपनी रक्षा करने में सक्षम है और अपनी रक्षा करने के लिए वह पूरी तरह स्वतंत्र है। पूरी दुनिया ने भारत की ताकत को ऑपरेशन सिंदूर में देखा, लेकिन आपने नहीं देखा, आप नहीं देखना चाहते हैं, तो मत देखिए। पूरे देश ने देखा है, पूरी दुनिया ने देखा है, पूरी दुनिया ने उसको सराहने का काम किया है।

आप बार-बार अमेरिका के राष्ट्रपति की बात कहते हैं। माननीय विदेश मंत्री जी यहां बैठे हुए हैं। इन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके बता दिया कि कोई नहीं हुआ। पूरे देश ने देखा है कि ब्रिक्स सम्मेलन में आदरणीय प्रधान मंत्री जी कनाडा गए थे। जब उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति से बात की, उसको उन्होंने क्लैरिफाई कर दिया, यह भी पूरे देश में छपा, उसके बाद भी आपको जानकारी नहीं है, तो आपका मामला दूसरा है। पूरे देश ने तो देखा लेकिन आपका दुर्भाग्य है। इस देश का दुर्भाग्य है कि इस देश की विपक्षी पार्टियों को प्रधान मंत्री और ऑपरेशन सिंदूर की सफलता दिखाई नहीं पड़ती है, जिसको पूरी दुनिया ने देखा है।

आप बार-बार कहते हैं कि प्रधान मंत्री जी बोलते नहीं हैं, प्रधान मंत्री जी को बोलना चाहिए। प्रधान मंत्री जी बोलते नहीं हैं, प्रधान मंत्री एक्ट करते हैं और एक्ट करके अपनी ताकत दिखाते हैं। चाहे सर्जिकल स्ट्राइक हो, एयर स्ट्राइक हो या ऑपरेशन सिंदूर हो, उन्होंने एक्ट करके पूरी दुनिया को दिखाया कि हम एक्ट करते हैं, हम बोलते नहीं है। यह आपका काम है। जो विपक्षी पार्टियां हैं, खासकर जो मुख्य विपक्षी पार्टी है, उसका आदर्श गोएबल्स है। जर्मनी की एक कहावत है, मैं गोएबल्स का कहावत पढ़कर आपको सुना देता हूं। गोएवेल्स की एक थ्योरी है कि एक ही झूठ को बार-बार बोलने से वह सच हो जाता है, यह एक प्रसिद्ध कहावत है, लेकिन यह सच नहीं है। यह विचार, जिसे गोएबल्स की राजनीति है या बड़ा झूठ कहा जाता है कि प्रचार मंत्री उस पर विश्वास करें। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यह एक दुष्प्रचार रणनीति है न कि सच्चाई। झूठ चाहे कितनी ही बार दोहराई जाए, सच नहीं बन जाता। आप बार-बार दोहराते हैं कि अमेरिकी राष्ट्रपति के दबाव में इन्होंने ऑपरेशन सिंदूर बंद किया, अमेरिका के राष्ट्रपति के दबाव में बंद किया, क्यों बंद किया? यह बार-बार झूठ बोलने से सच नहीं होगा। सच यही है कि भारत किसी के दबाव में नहीं आता है। भारत अपना निर्णय स्वयं करता है, भारत अपना निर्णय करने में सक्षम है।

सभापति महोदय, इनको ऑपरेशन सिंदूर की सफलता दिखायी नहीं पड़ती है, ऑपरेशन सिंदूर एक सफल ऑपरेशन था जो आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई का था। पूरी दुनिया और देश ने इसे सराहा है और इसे स्वीकार किया है। इस देश का दुर्भाग्य है, सारी विपक्षी पार्टियों को चाहिए कि इस घड़ी में सरकार का साथ दें, देश की एकता के साथ, देश की अखंडता के साथ, देश में फैल रहे आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में सरकार के साथ रहते, नहीं रहे। ? (व्यवधान) हम आज भी कहेंगे, दलगत राजनीति से ऊपर उठिए, दलगत राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्र हित के सवाल पर नरेन्द्र मोदी के साथ खड़ा होइए और देश से आतंकवाद को समाप्त करने में उनके कंधा से कंधा मिलाकर चलने का काम कीजिए।

अंत में, देश के सैनिकों की वीरता, पराक्रम और अदम्य साहस के लिए उनको सलाम करते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अरविंद गणपत सावंत (मुम्बई दक्षिण): आदरणीय सभापति महोदय, हमारी सेना ने ऑपरेशन सिंदूर में जो पराक्रम और साहस दिखाया, आज उस पर चर्चा शुरू हुई है।

सभापति जी, मैं भारतीय सेना के पराक्रम, अनुशासन, अद्वितीय रणनीति क्षमता को नमन करता हूं। खास कर हमारे सत्ता पक्ष के जो बड़बोले लोग हैं, वे सुन लें कि सेना के प्रति गौरव गोगोई जी ने अपने भाषण के शुरू में कहा था और मैं भी अपने भाषण के शुरूआत में ही कह रहा हूं कि मैं सेना की शौर्यता, वीरता, पराक्रम और साहस को नमन करता हूं, प्रणाम करता हूं लेकिन ऑपरेशन सिंदूर की जब बात शुरू करते हैं, तो बात यहां से शुरू होती है कि ऑपरेशन सिंदूर क्यों करना पड़ा? ऑपरेशन सिंदूर इसलिए करना पड़ा क्योंकि पहलगाम हादसा हुआ।

सभापति जी, मैं कुछ समय के लिए मंत्री था और मैं जब कश्मीर में इलेक्ट्रिक बसों की लाँचिंग करने के लिए गया था, तब चप्पे-चप्पे पर पुलिस और जवान खड़े रहते थे। पचास-पचास गज की दूरी पर सशस्त्र जवान खड़े रहते थे। ऐसा क्यों हुआ कि उस दिन पहलगाम में कोई सशस्त्र जवान नहीं था या पुलिस नहीं थी। हमारे टूरिस्ट्स वहां आए हुए थे। किसने आदेश दिया था कि वहां जवान तैनात नहीं रहेंगे, जांच यहां से शुरू होनी चाहिए। पहलगाम में बहुत बड़ा ग्राउंड है। हमारे बीच के भी बहुत लोग वहां गए होंगे, मैं भी सैलानी के तौर पर वहां गया हूं और मंत्री रहते हुए भी गया था। वहां बहुत ज्यादा पुलिस रहती थी, बड़ी तादाद में जवान तैनात रहते थे लेकिन उस दिन सारे जवान कहां थे? हमारी इंटेलिजेंस क्या कर रही थी? वहां से पाकिस्तान कितनी दूर है? क्या आतंकवादी नेपाल से वहां आए थे? यह मत भूलिए कि पहलगाम से पहले भी कुछ हादसे हुए हैं। हाल ही में मुम्बई में बम्ब हादसे के बारे में उच्च न्यायालय का आदेश आया है। पहले जिन लोगों को आतंकवादी समझकर पकड़ा गया था, नीचे की कोर्ट ने पांच लोगों को मृत्यु दंड दिया था, उन लोगों को उच्च न्यायालय ने रिहा कर दिया। यदि वे लोग बम्ब कांड में शरीक नहीं थे तो 19 साल उन्हें जेल में बंद क्यों किया गया? इसका मतलब यह भी निकलता है कि आज तक हम उन आतंकवादियों को पकड़ नहीं पाए हैं।

सभापति जी, कश्मीर के राज्यपाल श्री सत्यपाल मलिक थे। कश्मीर में पुलवामा की घटना हुई। उधर के लोग जो बात कह रहे हैं कि जवानों के बारे में उनके मन में बहुत आदर हैं और उनकी शौर्य वीरता के लिए प्रणाम करते हो, उन जवानों के लिए, उन सीआरपीएफ जवानों के लिए सत्यपाल जी ने बार-बार केंद्र सरकार को कहा कि कुछ गड़बड़ है, इसलिए इन जवानों के लिए हवाई जहाज दे दो लेकिन आपने हवाई जहाज नहीं दिया। वे बार-बार प्रधान मंत्री जी से बात करना चाहते थे, लेकिन प्रधान मंत्री जी कार्बेट पार्क में थे। इतना बड़ा हादसा हुआ, लेकिन वे नहीं आए। वे वहां से दिल्ली आए और किसी दूसरे कार्यक्रम में गए। आप देखिए कि घड़ियाली आंसू कौन बहाता है? आप हमें कहते हैं, आप हमें पूछते हैं, आप याद करो पुलवामा की घटना के समय सत्यपाल मलिक जी आपकी पार्टी के थे, वे उस समय गवर्नर थे, उनका बयान याद करो। उनके बार-बार कहने पर भी आपने जवानों को रास्ते से भेजा। जैश-ए-मोहम्मद ने हमला किया और 40 जवान शहीद हुए। आज तक जांच चल रही है और वे आतंकवादी आज तक पकड़े नहीं गए हैं। आप ऑपरेशन सिंदूर नाम देते हैं और लोगों की भावना से खेलते हैं। किसका सिंदूर छीना गया, हमारी बहनों का सिंदूर छीना गया। जिन्होंने सिंदूर छीना, वे आतंकवादी आज तक नहीं पकड़े गए। आतंकवादियों को टार्गेट करके हमले किए गए। हमने जनता को टार्गेट करके हमले नहीं किए, इसकी हम सराहना करते हैं और इसके बावजूद भी जब आतंकवादियों को पकड़ा नहीं जाता, तो आपके दिल में क्या कुछ नहीं आता है? आप ढोल बजाते हैं। आप अमरीका से आए। बिहार में

जाकर राजनीतिक भाषण किया और वह भी अंग्रेजी में दिया क्योंकि दुनिया को समझाना था। आपको पता है कि आजकल टेलीप्रोम्टर से अंग्रेजी में भाषण दिया जाता है। वे पहलगाम नहीं गए लेकिन बिहार चले गए। आज तक मणिपुर में नहीं गए हैं। आपकी संवेदना इससे पता चलती है कि आप आज तक मणिपुर में नहीं गए हैं। क्या आपको दुख नहीं होता है, दर्द नहीं होता है, नहीं आती है, बुरा नहीं लगता है। हम अपनी सेना के लिए ढोल बजाएंगे, आपके लिए नहीं बजाएंगे।

आपकी उसमें क्या शूरवीरता थी? अगर आपने सेना को फ्रीडम दिया था और फ्रीडम देने के बाद पाकिस्तान के डिफेंस अधिकारी गिड़गिड़ा रहे थे, तो बिना शर्त युद्ध आपने क्यों समाप्त कर दिया? अमेरिका का प्रेसिडेंट तो ? करता ही है। उनकी तो ?आज भी चालू है। वे कहते हैं कि मैंने रुकवाया, मैंने रुकवाया। बिना शर्त आपने युद्ध क्यों बंद किया? अगर पाकिस्तान के अधिकारी गिड़गिड़ा रहे थे, तो वे शरणार्थी थे। अगर वे शरणार्थी थे, तो उन पर शर्तें लगानी चाहिए थीं। आपने क्या शर्तें लगाईं? उसके बाद भी युद्ध चलता रहा। हमारे जम्मू-कश्मीर पर हमले होते रहे। नागरिकों की बस्तियों पर हमले होते रहे। क्या हम देखते रहते?

सभापति जी, हमारी सबसे बुरी बात यह है कि सार्क, नेपाल व हमारे इर्द-गिर्द जो राष्ट्र हैं, एक भी राष्ट्र हमसे बात नहीं करता। हम तो विश्व गुरु हैं। हम विश्व गुरू हैं और हम पूरी दुनिया में घूमते हैं। वे दो सौ राष्ट्रों में गए हैं और पाकिस्तान के आतंकवाद के बारे में बात करते हैं तथा कहते हैं कि आतंकवाद के साथ हम कॉम्प्रोमाइज़ नहीं करेंगे। हां, हमें काम्प्रोमाइज़ नहीं करना चाहिए। मैं प्रधान मंत्री जी को इसके लिए धन्यवाद भी देता हूं, लेकिन माननीय प्रधान मंत्री जी, आपके साथ तो पूरे विश्व का एक राष्ट्र भी नहीं खड़ा रहा। ? (व्यवधान) हम यहां टीका-टिप्पणी के लिए यहां नहीं खड़े हैं। एक भी राष्ट्र आपके साथ खड़ा नहीं रहा, क्या उस टाइम नेतन्याहू खड़े रहे? ईरान के खिलाफ हम खड़े रहे। जो ईरान आपको तेल देता है और पैसे बाद में दे दो, चलेगा, लेकिन तेल ले लो। ईरान के साथ भी हमारा रिश्ता बिगड़ गया। यह हमारी राष्ट्र नीति है।

सभापति जी, केवल पहलगाम की बात नहीं है, इससे पहले कारगिल में भी हमने ऑपरेशन विजय किया था। उसके बाद गलवान-गलवान होता रहा। सीमा पर घुसपैठ चालू है, चीन घुस रहा है। किसने-किसने इस युद्ध में पाकिस्तान को मदद की? चीन तो कर ही रहा था, तुर्की ड्रोन देकर मदद कर रहा था। तीनों राष्ट्र एक साथ मिलकर खड़े थे। हमें अंतर्मुख होकर आत्म-परीक्षण करने की आवश्यकता है कि आखिर एक भी राष्ट्र हमारे साथ क्यों नहीं खड़ा रहता? हमने क्या बुरा किया है? क्या हम गलत हैं? ऐसा नहीं कि इन्होंने प्रयास नहीं किया। मैं इनकी सराहना करता हूं। ये बार-बार कह रहे थे कि पाकिस्तान को पैसा मत देना, मदद न करना, क्योंकि वह पैसा आतंकवाद के लिए इस्तेमाल होगा। इतना कहने पर भी युद्ध के समय इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड पाकिस्तान को पैसा देता है। कमाल हो गया। इससे पता चलता है कि भारत की विश्व में क्या स्थिति है, यूएन में क्या स्थिति है, सिक्योरिटी काउंसिल में क्या स्थिति है? पाकिस्तान के खिलाफ कोई नहीं बोलता। असीम मुनीर को ट्रंप ने बुला लिया। आपको कनाडा में भी नहीं बुलाया था, यह मत भूलना। जी-7 में भी आपको नहीं बुलाया, बाद में मेहमान के रूप में आपको बुलाया। ? (व्यवधान)

कनाडा में मेहमान के रूप में जाने के बाद ट्रंप हमारे प्रधान मंत्री जी को फोन करके कहते हैं कि इधर आ जाओ, पाकिस्तान का हीरो हमसे मिलने आया है। अरे वाह, ट्रंप की जो आदत है, उसे पूरा विश्व देख रहा है, परन्तु हम आपके साथ हैं। पूरा राष्ट्र आपके साथ खड़ा रहा। आदरणीय उद्धव ठाकरे साहब, शिवसेना के पक्ष-प्रमुख ने हमें आदेश दिए कि यह वक्त बुरा है। यह राजनीति खेलने का वक्त नहीं है। हम प्रधान मंत्री के साथ डटकर खड़े रहेंगे। पूरा विपक्ष डटकर खड़ा रहा। आपने सभी के दल बना दिए और सात राष्ट्रों में टीमें भेज दीं। इसका परिणाम क्या हुआ? क्या उन राष्ट्रों में सम्मान हुआ? क्या एक भी ज्वाइंट प्रेस कांफ्रेंस हुई? क्या उन्होंने सोचा कि भारतीय सदस्यों की टीम आई है और राष्ट्र के फॉरेन अफेयर्स मिनिस्टर भी बैठे हैं। क्या वे देश प्रेस कांफ्रेंस में कह रहे थे कि इनके साथ हम भी आतंकवाद के खिलाफ हैं?

सर, हमारे साथ कोई नहीं आया, सब विफल है।? (व्यवधान) वहाँ कोई नहीं गया।? (व्यवधान) यह हमारा दुख है, यह हमारा दर्द है। हम आपके साथ हैं।? (व्यवधान) आप राष्ट्र की बात करते हो, हम साथ में रहेंगे। आज हैं, कल भी रहेंगे। आप यह मत भूलना। मैं दो-तीन चीजें आपको याद दिलाना चाहता हूँ। जैसे कारगिल का युद्ध भूल नहीं सकते हैं, वैसे ही और भी कई चीजें हैं, उन्हें भूलना चाहिए। अमेरिका के राष्ट्र अध्यक्ष बार-बार बोलते हैं। ये अभी कह रहे थे कि वे बार-बार बोलते हैं। हाँ-हाँ, वे बार-बार बोलते हैं, लेकिन हमने कब उनको कहा कि हमने आपकी बात सुनकर युद्ध नहीं रोका है। हमने कब कहा कि पाकिस्तान हमारे सामने गिड़गिड़ा रहा था, तब जाकर हमने युद्ध रोका है। आप ऐसा कोई एक भी बयान मुझे बताइए।? (व्यवधान) मैं वह बयान पढ़कर खुश होऊँगा।? (व्यवधान) आपको ट्रंप के नाम से बयान देने की आवश्यकता है।? (व्यवधान)

Sir, you spoke very late, तभी तो कुछ नहीं हुआ।? (व्यवधान) हमारे सीडीएस, चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ क्या बोलते हैं? उन्होंने कहा कि हमें आत्मनिर्भर होने की आवश्यकता है। इस एक शब्द में सब कुछ आ गया। यह तो हमारा डायलॉग है। उन्होंने कहा कि हमें आत्मनिर्भर होने की आवश्यकता है। इसका मतलब यह है कि आज भी हमारे साथ जो कुछ है, वह परिपूर्ण नहीं है। यह आत्म परीक्षण की बात है। यह आलोचना की बात नहीं है। यह टीका-टिप्पणी की बात नहीं है। राष्ट्र के रूप में हम सब एक हैं। राष्ट्र की एकता, अखंडता, संप्रभुता, सुरक्षा सबसे अहम है, सबसे महत्वपूर्ण है। मैं आपको दो-तीन चीजों और याद दिलाना चाहता हूँ।

महोदय, जब ये नवाज शरीफ को मिलने गए थे। किसने बुलाया था, ये बिन बुलाये गए थे, आपको याद है। बिन बुलाये गए थे, इनको याद नहीं होगा। जब अभी आदरणीय राजनाथ सिंह जी ने लाहौर की ट्रेन की बात की, वंदनीय हिन्दू हृदय सम्राट शिव सेना प्रमुख बालासाहेब ठाकरे जी ने उस वक्त कहा था कि यह समझौता एक्सप्रेस ट्रेन मत चलाइए। पाकिस्तान साँप जैसा है, उसे कितना भी दूध पिलाओ, लेकिन वह जहर ही उगलेगा। उनके शब्द आज खरे उतरकर आए हैं। उसके लिए कितना भी करो, पहलगाम का हमला होने के बाद उसने क्या कहा, उसने कहा कि यह तुम्हारा अंदरूनी मामला है और इससे हमारा कोई संबंध नहीं है। आपने 200 लोगों को पकड़ा था, बाद में दो रखे। उन्होंने सबको खाना-पीना खिलाया, उसके लिए भी अच्छा कहो कि वक्त पर जो लोग दौड़कर आए, वे हिन्दुस्तान की बहनों के

लिए आए। हमारी बहनों का सिंदूर पौंछने के बाद में जो लोग दौड़कर आए, वे भी तो हमारे हैं। आपको इसकी याद दिलाने की आवश्यकता है।

सर, मैं इतना ही कहूँगा कि ये जितने भी घोटालों की बात कर गए, आपने कहा कि शांति और शक्ति, अरे, आपकी बीजेपी के समय, हम भी उनके साथ थे। ये कहते थे कि पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर लेकर रहेंगे। भईया, यही तो वक्त था, पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर लेने का यही तो वक्त था। आपको किसने मना किया? हम युद्ध नहीं चाहते, बुद्ध, अरे वाह, युद्ध नहीं चाहते, बुद्ध। भईया, यह आपने कब सीख लिया? कल तक तो आप कहते थे कि हम पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर लेंगे। अब तो वक्त आया था, पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर लेने के लिए आपको किसने मना किया? किसी अननोन अड्डे पर हमला करके यह मत सोचो कि आपने बहुत बड़ा कुछ हासिल किया है। सेना को फ्रीडम दे दो, आपने कहा कि हमने दिया है, तो फिर रोका क्यों, रोकने के लिए आप क्यों बीच में पड़े? सीडीएस को कहना था कि हम रोकेंगे या नहीं रोकेंगे, उनको आगे जाने देना था। यह तो वक्त था, यही तो वक्त था, पाकिस्तान को एक बार सबक सिखाना था, जैसे इंदिरा गाँधी जी ने सबक सिखाया था, दोबारा से वही सबक सिखाने की आवश्यकता है।? (व्यवधान) यह उसे सबक सिखाने का वक्त था।? (व्यवधान) उन्होंने बांग्लादेश का निर्माण किया, उसी तरह से इस वक्त भी कर सकते थे। पूरा पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर कब्जे में ले सकते थे, प्रधानमंत्री जी को सर पर लेकर हम नाचते। हम कहते कि आपने पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर ले लिया, हम आपकी सराहना करके अभिनन्दन करते हैं।? (व्यवधान) मैं बस इतना ही कहता हूँ।? (व्यवधान) जो घुसकर मारने वाली बात है, ओसामा बिन लादेन को कैसे मारा, वैसे घुसकर मारना होता है।? (व्यवधान)

17.00 hrs

सर, मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूं, एक वाक्य कहकर खत्म करता हूं। ओसामा बिन लादेन को कैसे मारा गया? उसे कहते हैं - घुसकर मारना।

महोदय, अन्त में, मैं एक ही विनती करता हूं कि पाकिस्तान के साथ क्रिकेट खेलना बंद कीजिए। जो पाकिस्तान आपके साथ इस तरह का बर्ताव करता है, उस पाकिस्तान के साथ आप क्रिकेट खेलने जा रहे हैं। मैं विनती करता हूं कि ऐसे पाकिस्तान के साथ क्रिकेट मत खेलो। जो आपके मन में है, उसके लिए जवानों को ताकत देने का काम कीजिए।

धन्यवाद। जय हिन्द, जय भारत।

SHRI AMAR SHARADRAO KALE (WARDHA): Hon?ble Chairman, thank you very much for giving me this opportunity to participate in a very important discussion.

At the outset, I would like to pay homage to those who have lost their lives in Pahalgam terrorist attack. I have heard many speakers but I would like to mention an important aspect

which has been ignored by others. A tourist guide at Pahalgam named Sayyad Adil Hussain Shah has also lost his life while saving the lives of tourists there. So, I would also like to salute him for sacrificing his life. I also want to congratulate and salute our Armed Forces for a successful Operation Sindoor.

Sir, I have been listening to the speeches of Members of Parliament and it lacks the quality and depth unfortunately. It was such a fatal terrorist attack that resulted in 26 deaths. It was expected that serious and productive discussion would take place, but unfortunately it is a kind of a political debate without any seriousness and that is why it pains me.

BJP talks about the ?Nation first Slogan? but the reality is quite different. Every party commits mistakes whether it is BJP or Congress, but we need to correct them. Today, one honourable BJP Member was referring to the 26/11 terrorist attacks, and asking about the preparedness of the then UPA Government. But, I want to highlight that a terrorist called Ajmal Kasab was caught alive for the first time. His arrest helped us to prove the Pakistan sponsored terrorism in India. We, as a government, can commit mistakes, but it must be accepted.

During discussion, many MPs have expressed their feelings and opinions. So, I would also like to ask few questions to our Hon?ble Prime Minister Shri Modiji. It was the biggest terrorist attack in the recent times and 26 innocent people were killed. It was a gang of five terrorists and they are still scot-free even after three months of this terrorist attack. It was a complete intelligence failure and we must take it seriously. During Kargil War, the communities called Gujar and Bakarwal of Jammu and Kashmir played a very important role as they helped our Army by providing valuable inputs about infiltrators. So, I would ask this BJP Government whether these communities helped us this time too. If not, have we hurt them? So, I expect a clarification regarding this in Hon?ble Minister?s reply.

Today, in this situation, I am compelled to compare this event with the 1971 war. Smt. Indira Gandhi was the Prime Minister of India and Pakistan dared to attack our airbases. But, Indira Gandhi gave a befitting reply to Pakistan. The 1971 war continued for 13 days and 94000 Pakistani soldiers had to surrender. We secured victory in that war and Bangladesh was formed on 16th December.

It is pertinent to mention here that the then President of America Mr. Richard Nixon tried to pressurize India to stop that war, but she withstood the pressure and refused to withdraw her decision.

Today, when we refer our Prime Minister Shri Narendra Modi as a Vishwaguru, we have a lot of expectations from him. So, the people of this country want to ask him few questions. He has visited many countries many times since 2014. He visited America 9 times, China 5 times, Japan 8 times, Nepal 5 times, Australia and European countries 15-20 times. So, now I want to ask you what is wrong with our foreign policy? Why is it failed? You visited America 9 times and still America is supporting Pakistan. American President invited the Army Chief of Pakistan for dinner after Pahalgam attack. This is irony and unfortunate tragedy.

श्री अमर शरदराव काले : सभापति महोदय, मेरी पार्टी का समय 14 मिनट है। मैं अपनी पार्टी से अकेला बोलने वाला हूँ ।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आपकी पार्टी से बालने वाले एक और स्पीकर हैं। आप दोनों को मिला कर 14 मिनट का समय दिया गया है।

? (व्यवधान)

माननीय सभापति : मैं आपको बोलने के लिए तीस सैकेंड का समय दे रहा हूँ। आप अपनी बात कनक्लूड कीजिए।

? (व्यवधान)

श्री अमर शरदराव काले : सभापति महोदय, मेरी पार्टी के 14 मिनट हैं। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : अब आप अपनी बात कनक्लूड करें। मैं आपको ऑलरेडी समय बता चुका हूँ।

SHRI AMAR SHARADRAO KALE : Our Prime Minister Modi ji visited China five times and still China?s External Affairs Minister commented that we have a steel like strong bonding with Pakistan. So, our External Affairs Minister should clarify why and where our foreign policy has been failed.

Whether it is IMF, ADB or World Bank, Pakistan has received 44 billion dollars of financial aid from these institutions just after Pahalgam attack. Hence, I expect a clarification from our Hon?ble Prime Minister in this regard.*

माननीय सभापति : माननीय श्री बैजयंत पांडा जी।

SHRI BAIJAYANT PANDA (KENDRAPARA): Sir, I rise to speak on the Pakistani-sponsored terror attack in Pahalgam, followed by Operation Sindoor. ? (*Interruptions*)

माननीय सभापति : काले जी, आपकी बात रिकॉर्ड में नहीं जा रही है। आप बैठ जाइए।

? (व्यवधान)

SHRI BAIJAYANT PANDA : Sir, I must say that this marks a new low even by Pakistan?s standards despite its long-standing history of fostering terrorism and its infamy as the global epicentre of terror. The terrorists, as has been widely reported, identified the victims based on their religion before executing them. At the same time, this event also marks a new normal and a milestone in teaching Pakistan a lesson.

Sir, this saga has been going on for the past 78 years since Independence when Pakistan has been sending terrorists across the border. Over the decades, multiple efforts have been made. Many measures ? some conciliatory in nature ? have been tried: agreements over water sharing, the return of captured land, and even the repatriation of tens of thousands of prisoners of war.

These steps have seen many different aspects. We have seen the ?bus diplomacy?. We have seen many different efforts. Prime Minister Shri Narendra Modi, from the very beginning of 2014, tried to have an understanding with Pakistan to fight against poverty together.

Right in the beginning, he invited his counterpart, the Prime Minister of Pakistan to his swearing-in ceremony. He even made an unannounced, unarmed visit to Lahore only with good intention and courage. But that was repaid with more terror attacks on our soil: more Indian lives were taken due to the training and sponsorship of terrorism by Pakistan.

सर, भारत ने हर बार शांति का हाथ बढ़ाया है, लेकिन पाकिस्तान ने हर बार आतंक का रास्ता अपनाया है। This is the hard reality of our experience with cross-border terrorism. But this time, we have responded and it is important to point out the new normal, which is now in place.

We responded first with the surgical strikes. They did not relent. The Pakistanis still kept sponsoring, training, financing and sending terrorists across. We then responded with the Balakot air strikes and the air strikes are a message which have continued till today. No one who kills an Indian will sleep peacefully, not across the border, not even in the safety of their homes. They will be tracked down and they will be killed inside their own homes. But this time, in Pahalgam, it is a new low which was achieved and it required Operation Sindoor. They attacked tourists and we attacked terrorists. We did not target Pakistan?s civilians. Our response through Operation Sindoor was precise. It was measured and it targeted terrorist sites and only when Pakistan escalated, did we hit back at many more sites. This is not a reaction, this is a doctrine. This is the Modi Doctrine, this is the new normal which Pakistan has now understood.

Let me say this clearly, Sir, that the India of today is not the India of 2008. This is very important because this turnaround, this new normal, is because of our changed policies. We must give full credit to our armed forces. The hon. Defence Minister has pointed out their bravery, their sacrifices for the nation. One question was asked: What about China? I have several things to say about China, but let me point out that when the hon. Defence Minister said that the Indian Air Force bypassed and jammed the air defence systems of Pakistan in 22 minutes, those were Chinese supplied air defence systems that were neutralized in just 22 minutes.

Sir, one thing which we must acknowledge is that the entire country stood united on Operation Sindoor. I am glad that even some friends across the aisle, across the other benches today, reiterated that. But sometimes, some hon. Members have been taking this issue into domestic politics. I will come to that. One of the aspects that did not get talked about is that in this Operation 11 air bases of a nuclear armed country were hit. This is perhaps a first that 11 armed bases of a nuclear armed country were hit by India and it destroyed 20 per cent of Pakistan?s air force assets. This is something that is worth remembering. The nine bases of terrorists, their camps which were neutralized involved those of the Jaish-e-Mohammed, those of the Lashkar-e-Taiba, those of the Hizbul Mujahideen, all proscribed terror organisations which have long targeted India with the support of Pakistan. They are Pakistan-based, they are Pakistani.

Sir, we have talked about more than 100 terrorists being eliminated in Operation Sindoor?s hit on Pakistan. It is also important to point out that at least five of them were very infamous

names known around the world - Mudassar Khadiyan Khas, senior operator of LeT was the person who was given a guard of honour by the Pakistani military; Khalid alias Abu Akasha, another Lashkar-e-Taiba commander; Mohammad Yousuf Azad, wanted in the IC814 hijack terror attack; Hafiz Mohammad Jameel, brother-in-law of Maulana Masood Azhar; and Mohammad Hasan Khan, Jaish-e-Mohammad commander. These are very significant names. These are very significant achievements in eliminating these terrorists. On the other hand, Pakistan?s attempt to retaliate failed and it pains me that friends in the Opposition have questioned India, have questioned the successes achieved by the Indian armed forces, have not pointed out these failures of Pakistan nor have they asked these questions of Pakistan.

Pakistan attacked the Jammu University. It attacked the UN field station in Kashmir. These were neutralized, as the hon. Defence Minister pointed out, by the U.S. unmanned aerial system grid. India?s actions were purely to counter terrorism and hit terrorists, decoupling the issue from any other disputes.

If we look at the ?new normal? that I have been talking about, it is important to understand what the past was. In the past, on a regular basis, almost on a daily basis, Pakistani-sponsored terrorists were attacking India and killing Indians. If I give you a short list of the pervious terror attacks and our responses, you will understand ? and I hope all our friends will understand ? that the ?new normal? indeed is very dramatically different. In 2005, there were Delhi serial blasts. A dossier was sent to Pakistan. In 2006, were Varanasi bombings. India raised the issue in the Indo-Pak talks. There was Mumbai attack in 2008 when so many people were killed and the then Government decided not to retaliate. What is most shameful is that retaliation was considered, retaliation was planned by our Armed Forces, but the then Government did not permit retaliation. It is on record that the then senior-most officials of the Government, whether it was the Foreign Secretary, whether it was the then NSA, took a decision not to hit back at Pakistan. This is what is really shocking. There were 2006 Mumbai terror bombings. It is also important to point out that after the Mumbai attacks, seven months after that, the then Prime Minister met the Pakistani President on the sidelines of the SCO Summit in Russia and decided that India and Pakistan would continue dialogue. We kept appeasing them. Our Governments of the day, over decades, kept appeasing them putting no pressure on them to stop their terror funding, terror organizing.

In 2006, two months after the Mumbai train bombings, the then Prime Minister met Pakistani President Musharraf on the sidelines of the NAM Summit in Havana and again agreed to maintain the peace process. The so-called peace process was no peace process at all. It was only peaceful for Pakistan. Indians in large numbers were sacrificed. India was attacked repeatedly and a large number of Indians were harmed and killed. Worst of all, in 2009, within eight months of the Mumbai terror attack, the then Prime Minister met his Pakistani counterpart at Sharm el-Sheikh in Egypt and agreed to again continue the cooperation with Pakistan. For a country that for 78 years has been attacking India ceaselessly, our approach in the past was only to cooperate, only to talk, not to retaliate, not teach them a lesson. The worst part of this at Sharm el-Sheikh was a reference to Balochistan, which can be interpreted as if India and Pakistan are equated, as if India does similar things to Pakistan, whereas the issues are entirely different. There are no terror camps in India training terrorists and sending them to Balochistan. There is no equation at all. There is no comparison at all and yet our Government of the day had no compunction in granting such a hyphenation with Pakistan. This can go on and on. There are many, many different such examples and I will come to some of them.

One question has been raised as to whether there was pressure on India to conclude the hostilities. There was absolutely no pressure on India. This has been pointed out again and again.

Sir, any country can call and make suggestions. Anybody can do that. We, as Members of Parliament, can call up our counterparts when they are in the midst of hostilities, and we can give them suggestions. That is not how the hostilities ended. India has pointed out very, very clearly that this is a bilateral issue and we have no intention of escalating. We would stop hostilities if Pakistan requested, and until and unless Pakistan directly requested India, we would not stop the hostilities. It had no relation and no connection to any request by anybody else until Pakistan directly requested India. I asked my friends in the Opposition. This has not been contradicted by anyone. Has anyone contradicted India?s assertion that we insisted that it had to be a Pakistani request that we will respond to, and Pakistan finally came to its knees and requested and that is what we responded to. Now, it is shameful that many in our country keep questioning the Indian

Armed Forces and keep questioning the Indian Government, and do not question what Pakistan stands for and what Pakistan says.

Sir, I want to point out what Pakistan has said. They have made absurd claims. Pakistan has made a claim to an international TV channel on 7th May. The Pakistan?s I&B Minister Attaullah Tarar said that there are no terrorist camps in Pakistan. Has anyone of our friends in the Opposition questioned that? Many of them have been quoted repeatedly in international media. Has anyone of them questioned that? Pakistan, where the most infamous terrorist in memory, the Al-Qaeda Chief, was sheltered next to an Army base, is claiming that it does not have terror camps. And terror camps have been pointed out in satellite imaginary. Not only terror camps have been pointed out, because of the efforts of our Government, many terrorist organisations and many individual terrorists have been proscribed by a variety of multilateral organisations including the United Nations itself.

Sir, I would like to point out that when the hon. Congress Member from Assam talked about certain things, I think, it does deserve a response. I compliment him and others who said that they stand with the Government of India. But the questions and the accusations against the Government cannot go unanswered. It was amusing when he asked when the PoK would be got back. It was amusing when he referred to the number of Rafales and the China question. I would like to point out that he used the point and he said that India bowed down. And his Leader, whom he cited today in relation to the China question, has often used the word ?surrender?. I think, it is important for this House to point out how many times, over the decades, the Congress has surrendered India?s interest. Please have the patience to listen to this.

In 1948, Pakistan illegally occupied 78,000 square kilometres, the same PoK that my friend was referring to. When our Armed Forces wanted just a little bit more time to conclude the armed operations and take it back, the then Prime Minister took the matter to the UN. Surrender number one started from day one.

In 1949, the Congress ignored the Kabaw Valley, which was leased to Burma by the UK. Manipur had received rent until 1949. The Congress did nothing about it. It surrendered that. It was surrender number two.

In 1954, our then Prime Minister conceded India?s rights in Tibet, accepting China?s annexation without gain, withdrawing our military escorts and services. It was a very major surrender, which was number three.

In 1958, under the Noon-Nehru Pact, Berubari was transferred to East Pakistan despite severe opposition. It was another surrender.

Sir, I will lose count of the number of surrenders. But there are a quite a lot. Please allow me to point out a few more. If I list all the surrenders that the Congress did of India?s national interest, then, the 16 hours that the hon. Speaker has granted us will not be enough. But I will point out a few more.

Sir, in the 1950s, our then Prime Minister rejected the proposal for a UN Permanent Seat for India in the Security Council and surrendered to China. It was a surrender.

In 1960, India conceded the Sarja Marja, Rakh Hardit Singh, Pathanke, Suleimanke, Chak Ladheke from Punjab to Pakistan. It was another surrender.

Sir, our then Prime Minister played down the Valley of Aksai Chin in 1959 calling it barren and uninhabited when, in fact, it is full of mineral resources, dismissing conflicts with China. It was another surrender.

Sir, I can just go on and on and on. In 1963, Pakistan conceded more than 5,000 square kilometres in POK to China. India stayed silent. It was also a surrender.

I can just keep going on. In 1965, India returned Haji Pir Pass to Pakistan under the Tashkent Agreement. It was another surrender.

Sir, under the 1971 Simla Agreement, India returned 5,000 square miles to Pakistan while Pakistan retained 30,000 square miles, and 93,000 Pakistani soldiers were released while at the same time, 56 Indian soldiers died in Pakistani jails.

There are so many other surrenders, Sir. If I keep listing all the surrenders, then, as I said, the whole time will be taken up. I can tell you that there are many more surrenders that the Congress Party did of Indian interests. Since the issue of China was raised, I think it is important

to point out one thing. Is it not the Leader of the Opposition who on social media was seen praising China?s capabilities and China?s drones? Has he ever complimented the Indian Armed Forces and the Indian indigenous technologies? Has it happened?

Sir, let me point out what others are pointing this out. Others are saying that India has done very well on this front. International experts are pointing this out but our Opposition Members are refusing to take a stand on this. मज़ा कैसे आएगा? ये बहुत कठिन बातें हैं। There are many others if I start listing them. मज़ा तो तब आता जब आप भी फ्री हैंड देते। आपके कई ऐसे नेता हैं जो बहुत अच्छा बोल सकते हैं। ? (व्यवधान) मैं तो सुन रहा था। ? (व्यवधान) मेरे मित्र माननीय शशि थरूर जी बहुत अच्छा बोलते हैं, हालांकि यह अलग बात है कि अभी कुछ दिनों से उनकी पार्टी की तरफ से उनको बोलने नहीं देते हैं। ? (व्यवधान) सुन लीजिए। ? (व्यवधान) लेकिन मुझे बहुत अच्छा लगा कि उनको देश के हित में बोलने के लिए कोई रोक नहीं सका। ? (व्यवधान) मज़ा तो उसमें आता है। ? (व्यवधान)

Sir, I would request my friends on the other side that before they raise issues about China, as they talk about candour, they must speak with candour about any MoUs that they might have with the Chinese Ruling Party. Does the Indian public not have a right to know what is the understanding that the Congress Party has with the Chinese Communist Parties? Does it not raise questions when they keep raising points and rebuttals and issues which are constantly aimed against the Armed Forces, which are constantly against the Government of India? But as I said, in many appearances before the global media, I have not seen them raising questions about China but seen them praising China?s technologies and drones. I have not seen them questioning Pakistan for all the absurd, and false claims that it makes.

Sir, I said earlier that globally, experts are recognizing India's indigenous capacities. I will just point out two experts, and then I will start coming to my conclusion. John Spencer, who is the Chair of the Modern War Institute in the US, said last year in 2024:

> ?Make in India has transformed the country's defense landscape from meeting 32 per cent of the Army's ammunition needs domestically in 2014. In 2024, India meets 88 per cent of its ammunition needs domestically.?

Another expert, Tom Cooper, who is a military historian and an aviation analyst, says this right after Operation Sindoor's attack on Pakistan:

?The world knew about India's capability, but it had not been demonstrated before, and all of a sudden, within 24 hours, India showed that it can hit Pakistan hard.?

Sir, the reality is, all the statistics that I have been citing about hitting Pakistani airbases, about hitting Pakistani terrorist sites, are backed up. They are backed up by satellite imagery, they are backed up by recordings, whereas the Pakistani claims against India are fake. They are fake news. They are propaganda. Sadly, some of our friends, while ostensibly standing with India, standing with the Government, standing with the people of India on Operation Sindoor, have fallen into supporting that narrative of Pakistan, the unsubstantiated claims against India. Ultimately, the objective of the Pakistan?s narrative is to demoralize our Forces. It is certainly not to encourage them for all these successes that they have had.

As I come to the close of my speech, I would like to point out a few other things. One of the allegations that some friends in the Opposition keep making is that our position is not supported around the world; that India does not have friends; and that India has not made its message clear. Nothing could be farther from the truth. Let me point this out. Sir, post-Pahalgam, post-Operation Sindoor, India has received 61 messages from Heads of State, Heads of Government, and Vice Presidents. India has received 35 messages from foreign ministers. These are all in support. India has received 38 messages from Members of various Parliaments, former Heads of State and Government, Leaders of Opposition from various countries, and 43 messages from heads of various diplomatic missions. I would like to cite just a few of them. The United States has made it very clear: ?India has a sovereign right to combat terrorism.? This is all post-Operation Sindoor. France said: ?Unwavering solidarity, and stands firmly with India.? Armenia said: ?Terrorism cannot be condoned and must be condemned. Countries have the right to defend themselves against terrorism.? Russia said: ?This brutal crime has no justification whatsoever, and its perpetrators will face a deserved punishment.? The United Kingdom said: ?India has every right to be outraged by the Pahalgam killings.? Saudi Arabia said: ?Strongly denounced the terrorist attacks in Pahalgam, reaffirmed firm stance against terrorism and extremism.? Sir, I can go on and on. I think, one of my friends in the Opposition mentioned that Iran, from whom we buy certain petro-products, has not condemned it. Sir, that is not true. The President of Iran directly called up our Prime Minister, Modi ji, and conveyed in the strongest

words the support to India. Sir, multilateral agencies like BRICS and QUAD, and even the FATF have all condemned the Pahalgam attack. Nobody has condemned India's right to defend itself. Nobody has opposed it. That used to be the case in the past. Nobody has said, ?India should not be defending itself and implementing the decisions taken by the CCS?. The proof of the pudding remains in the final information that comes out.

Even as we were debating this issue today, some of us must have seen in the news that Operation Mahadev is being conducted in Jammu and Kashmir, targeted at terrorists, and it appears that, at least, one of those eliminated today was involved in the Pahalgam attack.

Now, one of the important developments that have taken place is that for two years now, India has been giving detailed information to the UN, to the US and other countries about this outfit called the TRF, The Resistance Front. The TRF is a front organization of the LeT, Lashkar-e-Taiba. Sir, as terrorist organizations get proscribed, have limitations and do not have as much freedom to move money and have training camps, they come up with all these new names and new structures. I think our friends, who for several weeks now have been going around saying that India has not been succeeding in taking its message around the world, should acknowledge that just a few days ago, the United States has proscribed the TRF as a terrorist organization, as a global terrorist threat. India has been succeeding. It is not enough to just stand with the people of India ? of course, you must stand with the people of India because otherwise you get completely sidelined ? it is also important to celebrate India's successes. It is also important to boost the morale of our Armed Forces, to boost the morale of our scientists and technologists who have developed these indigenous equipment and indigenous armaments.

I would like to just point out two things. With your indulgence, I would like to paraphrase a line from a Hindi film of about four years ago. The film was ?Sardar Udham? and it had a dialogue ? ?दुश्मन को दर्द का अहसास हो, जवाब तभी पूरा होता है? । मैं इस संदर्भ में कहना चाहता हूं कि ?ऑपरेशन सिंदूर? वह जवाब था, जिसमें दर्द भी था और संदेश भी था ।?

Those who are still wanting to test Bharat's will, the willpower of the Indian Government and the Indian people will be in a very sorry situation. I must also point out that when we sent out seven delegations to different countries, I was part of one of them, and the experience that we

had was very clear. All these nations unequivocally understood and supported India's stance. All these nations reiterated that India had the right to self-defence and to hit back against terror. Every one of them condemned the Pahalgam terror attack.

Many of these countries have given their highest honours to Prime Minister Modi. Of the countries that we visited, more than 11 have given their highest honours. What is important is that these are not just personal honours for our Prime Minister. Of course, we are all personally proud that the Prime Minister of India has been given the highest civilian and military honours in so many different countries. We went to four countries ? Saudi Arabia, Kuwait, Bahrain and Algeria. Three out of those four countries have given their highest honours. It is important for the nation. It is not just a personal recognition. When we went, our group experienced the impact of India's foreign policy and of the Modi Government on all these nations. We perceived that strength and that support.

In conclusion, those who are still wanting to test India's will, let them know, we are a people of peace, but we are not prisoners of it. Let them know, we do not seek conflict, but we will not fear it. Let them know, we never start fights, but we never lose them either.

Jai Hind! Jai Bharat!

श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा (रोहतक) : सभापति महोदय, पहलगाम आतंकी हमले में शहीद हुए देश के 26 नागरिकों को श्रद्धांजलि देने के साथ सर्वप्रथम मैं हिंदुस्तान की फौज को नमन करना चाहूंगा। ? (व्यवधान) देश की फौज के पराक्रम को कोटि-कोटि नमन करना चाहूंगा। मैं देश की फौज को धन्यवाद देना चाहूंगा। दुनिया की सबसे बेहतरीन फौज अगर कहीं की है, तो वह भारतवर्ष की फौज है, जिसने हमेशा तिरंगे को ऊपर रखने का कार्य किया। ? (व्यवधान)

सभापति महोदय, देश की फौज का पराक्रम कोई चर्चा का विषय भी नहीं है। बार-बार सत्तापक्ष की तरफ से देश की फौज के पराक्रम को लेकर बात कही जा रही है। इसमें हम सब शामिल हैं। आप देश की फौज के पराक्रम को नमन करने का प्रस्ताव लाइए, हम सब आपका साथ देंगे। नहीं तो हम प्रस्ताव रखते हैं, आप हमारा साथ दीजिए। यह चर्चा का विषय नहीं है, चर्चा का विषय यह है कि फौज ने तो अपना काम किया, लेकिन सत्तापक्ष में बैठे हुए नेताओं ने अपना काम किया या नहीं किया, यह चर्चा का विषय है। ? (व्यवधान)

सभापति महोदय, चर्चा का विषय यह है कि ?ऑपरेशन सिंदूर? के समय सत्तापक्ष की कार्य प्रणाली क्या रही? हमारा देश एक लोकतंत्र है, जिसमें विपक्ष की जिम्मेदारी है कि यदि सत्तापक्ष अपनी जिम्मेदारी में कहीं कमी छोड़ता है, तो

विपक्ष की जिम्मेदारी है कि वह उस कमी को, उस खामी को देश की जनता के सामने रखे। इस प्रजातंत्र में यह हमारी जिम्मेदारी है। विपक्ष ने अपनी जिम्मेदारी उस समय निभाई, जब पहलगाम पर आतंकी हमला हुआ। हमने कहा कि हम आपके साथ हैं। हमने कहा कि दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब दो, पूरा देश आपके साथ है, विपक्ष आपके साथ है। लेकिन, आपने क्या किया? आपने सर्वदलीय बैठक रखी, लेकिन सर्वदलीय बैठकों में प्रधानमंत्री जी नहीं शामिल हो पाए। उनकी व्यस्तता दिखाई गई। अगर उन दिनों में उनकी व्यस्तता थी, तो दिन बदले जा सकते थे और अगर दिन में व्यस्तता थी, तो यदि आप रात के बारह बजे भी सर्वदलीय बैठक रखते, तो हमारे नेता, देश के विपक्ष के नेता, सब लोग आने को तैयार थे। इससे दुनिया में भारत के लोकतंत्र की एक शक्ति प्रदर्शित होती कि सब एक हैं, लेकिन आप वह मौका चूक गए।

बहरहाल, ?ऑपरेशन सिंदूर? में हमारी फौज ने अपना पराक्रम दिखाया, अपना लोहा मनवाया। 9 तारीख के बाद एक ऐसा समय आया, जब दुनिया यह मानने लगी कि हिंदुस्तान की फौज का अपर-हैन्ड है, हम एडवांटेजियस पोजीशन में हैं, हम दुशमन के गले के नजदीक हैं। लेकिन, दस तारीख को यकायक सीज़फायर? ? (व्यवधान) देश की भावना थी कि पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दिया जाए, निर्णायक जवाब दिया जाए, जैसा कि तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा जी के समय वर्ष 1971 में हमारे देश की फौज ने पाकिस्तान के दो टुकड़े करके दिखाया था। पाकिस्तान को ऐसा जवाब दिया जाए।

आप बार-बार पाकिस्तान ऑक्युपाइड कश्मीर की बात बोलते थे। अब आगे किस मुंह से आप देश के सामने पाकिस्तान ऑक्युपाइड कश्मीर की बात रखेंगे? आपके सभी वक्तव्यों में यह कहा गया है कि पाकिस्तान घुटनों पर था। आप ही यह कह रहे हैं। अगर पाकिस्तान घुटनों पर था, तो जिस सीज़फायर को आपने स्वीकृति दी, आप कह रहे हैं कि हमने सीज़फायर को माना, अगर पाकिस्तान घुटनों पर था, तो सीज़फायर का क्या जस्टिफिकेशन है? मगर, दुख तो तब हुआ, देश के दिल में दुख हुआ कि देश की जो भावनाएं थी, उन भावनाओं पर युद्ध विराम, पाकिस्तान की ईंट से ईंट बजाने की भावनाओं पर विराम अमेरिका के एक ट्वीट ने आपके युद्ध विराम की घोषणा से पहले की। ? (व्यवधान) मैं इस विषय पर भी आऊंगा, लेकिन इस सीज़फायर की क्या शर्तें थीं, उन्हें आपको देश के सामने रखना चाहिए। ? (व्यवधान)

इन शर्तों के साथ-साथ युद्ध विराम से पहले भी एक रणनीतिक चूक हुई। आज श्री राज नाथ सिंह जी कह रहे थे कि कांग्रेस के समय पाकिस्तान को लेकर यह रणनीतिक चूक हुई। आदरणीय विदेश मंत्री जी यहां बैठे हैं। सबसे बड़ी रणनीतिक भूल उस समय हुई, जब इन्होंने टेलीफोन करके कहा कि हम केवल आतंकी ठिकानों को निशाने पर ले रहे हैं, हम किसी मिलिट्री या सिविलियन ठिकानों को निशाने पर नहीं ले रहे हैं।

जब यह कहा गया और आपने स्वीकार किया, तो एक तरीके से पाकिस्तान की आर्मी और सरकार को क्लीन चिट दे दी। आपने अलग-अलग दृष्टि से देखा। आपके सारे स्पीकर्स कह रहे हैं, मान रहे हैं, देश मानता है और दुनिया को पता है कि पाकिस्तान की सरकार, पाकिस्तान की आर्मी और इन आतंकियों ने कोई भेद नहीं किया जा सकता है। ये एक हैं। आपने स्वयं टेलीफोन करके अलग-अलग दृष्टि से देखने का काम किया। यह रणनीतिक भूल हुई है। इतिहास में

हमेशा यह बात रहेगी कि पाकिस्तान को आपने कहने के लिए मौका दिया। देश में विदेश मंत्रालय की क्या भूमिका रहती है? विदेश मंत्री का काम कोई स्कूल, कॉलेज या सड़क बनाना नहीं होता है। विदेश मंत्रालय का काम होता है - दुनिया में अपने दोस्त मुल्कों की संख्या बढ़ाना। विदेश मंत्रालय और विदेश नीति की 11 साल की सच्चाई तब सामने आई, जब ये टकराव की स्थिति पैदा हुई। आपके साथ आकर कितने देश खड़े हुए और कितने देशों ने खुलकर पाकिस्तान का साथ दिया? यह दुनिया ने देखा है। यह बात अलग-अलग देशों की तरफ आई और मेरे मित्र जय पांडा भी कह रहे थे तथा पढ़ रहे थे कि उस-उस देश ने आतंकी हमले की निंदा की है। मैं पूछना चाहता हूं कि एक देश का नाम बताओ, जिसने आतंकी हमले की निंदा भी की हो और यह भी कहा हो कि पाकिस्तान इसके पीछे है तथा हम पाकिस्तान की भी निंदा करते हैं। एक देश ने भी पाकिस्तान की निंदा नहीं की।

महोदय, दूसरी तरफ पाकिस्तान का साथ देने वाले देशों में चीन, टर्की, अजरबैजान, मलेशिया जैसे देश हैं, लेकिन आपके साथ एक देश ने भी बयान नहीं दिया। यह बात आपको भी पता है कि 11 साल की आपकी विदेश नीति में प्रधानमंत्री जी ने दुनिया में भ्रमण किया, विदेश मंत्री जी ने भ्रमण किया, बाकी अधिकारियों ने किया, लेकिन उसका सच तब सामने आया, जब इस घटना के बाद आपको सांसदों पर अपना विश्वास व्यक्त करते हुए सांसदों के प्रतिनिधिमंडल भेजने पड़े। आप 11 साल से दुनिया में चप्पे-चप्पे में घूमकर क्या कर रहे थे कि आपको सांसदों पर आना पड़ा? इस बात का दुख है। आपकी विदेश नीति की दूसरी बड़ी कमी यह है कि बहुराष्ट्रीय संस्थाओं ने उस एक महीने में जिस तरीके से पाकिस्तान का साथ दिया, लेकिन आप उसको रोकने में असफल साबित हुए। जब टकराव चल रहा था, उस समय शायद दुनिया के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ होगा कि आईएमएफ ने एक बिलियन डॉलर का सैंक्शन किया। आपने उसका विरोध भी किया, लेकिन आपके विरोध को आईएमएफ ने नहीं सुना। वर्ल्ड बैंक ने 40 बिलियन डॉलर के निवेश का प्रस्ताव पारित किया और उसी महीने एडीबी ने मई के महीने में 800 मिलियन डॉलर का लोन पाकिस्तान के लिए स्वीकृत किया। दूसरी तरफ यूनाइटेड नेशंस सिक्योरिटी काउंसिल के अंदर पाकिस्तान को काउंटर टैरेरिज्म ग्रुप का को-चेयरमेन बनाया गया। डकैत के हाथ को थानेदार बनाया गया, लेकिन आप रोक नहीं पाए।

महोदय, एफएटीएफ (फाइनेंशियल ऐक्शन टास्क फोर्स) में वर्ष 2011 में पाकिस्तान को ब्लैक लिस्ट किया और ग्रे लिस्ट में डाला गया था। वर्ष 2022 में एफएटीएफ से ग्रे लिस्ट और ब्लैक से पाकिस्तान बाहर निकला, लेकिन आप उसको रोक नहीं पाए। आपकी विदेश नीति में दूसरी कमी वहां हैं, जब दुनिया के मुल्कों ने और अमेरिका तथा रूस जैसे मुल्कों ने हिंदुस्तान और पाकिस्तान को बराबर तौल दिया। यह कैसे संभव है? हम इसको कैसे मान सकते हैं? एक मुल्क आतंकवाद को पोषित करने वाला मुल्क है और दूसरा मुल्क आतंकवाद से पीड़ित मुल्क है। हम अंतर्राष्ट्रीय ऑर्डर की लड़ाई लड़ रहे हैं, लेकिन आपने देखा कि बार-बार सभी मुल्कों ने बराबर तौल दिया। आपकी विदेश नीति की तीसरी बड़ी असफलता अमेरिका को लेकर है।

महोदय, हमारे इतिहास में समय-समय पर जब अमेरिका को आंख दिखाने की बात आई, तो हमने आंख भी दिखाई और जब हाथ मिलाने तथा मधुर संबंधों की बात आई, तो पिछले दो दशकों में अमेरिका से संबंधों में सुधार भी

हुआ। हमने अमेरिका से संबंधों में उतार-चढ़ाव देखा है। वर्ष 1971 में जब अमेरिका ने आंख दिखाई थी कि आप बांग्लादेश के अंदर अपनी फौज मत भेजिए, तो इंदिरा जी ने मुंहतोड़ जवाब दिया था और बांग्लादेश के अंदर हमारी फौज गई थी। हमने आंख दिखाई थी। जब परमाणु परीक्षण की बात आई, तो वह चाहे इंदिरा जी के समय में परमाणु परीक्षण हुआ हो, चाहे अटल जी के समय में परमाणु परीक्षण हुआ हो, जब अमेरिका ने उसे रोकने की कोशिश की, तो हिंदुस्तान ने आंख दिखाई और अमेरिका के दबाव को नहीं माना। यह वही अमेरिका है। जब अमेरिका से हाथ मिलाने की बात आई और आप सपोर्ट की बात कर रहे थे, तो जय पांडा जी सपोर्ट का लैटर पढ़ रहे थे। जब मित्रता की बात आई और मुंबई में 26/11 हुआ था, तो राष्ट्रपति ओबामा वाशिंटन से दिल्ली आए थे। ज्वॉइंट संसदीय सेशन में मैं भी एक सांसद था और जय पांडा जी भी एक सांसद थे।

राष्ट्रपति ओबामा ने कहा कि पाकिस्तान के अंदर टेररिस्ट के सेफ-हैवन को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यह साथ देने और निभाने की बात है। हमने हाथ भी मिलाया और आंख भी मिलाई। आज आपको यही नहीं पता कि अमरीका के साथ आप हाथ मिलाना चाहते हो या उनको आंख दिखाना चाहते हो। अमरीका के राष्ट्रपति ने 28 बार कहा कि सीज-फायर हमने करवाया। उन्होंने उससे भी चिंतनीय बात कही। उन्होंने व्यापार की धौंस दिखाई। आतंकवाद पर वार की बात थी और व्यापार पर आ गई। अमरीका के राष्ट्रपति केवल व्यापार तक नहीं रुके। उन्होंने कहा कि 5-5 जहाज गिरे। वह केवल जहाज तक भी नहीं रुके। अमरीका के राष्ट्रपति जी ने कश्मीर का भी नाम लिया कि कश्मीर में अमरीका की बात हुई है।

दु:ख की बात यह है कि कश्मीर के मामले में और विदेशी हस्तक्षेप के मामले में, क्योंकि इस बात पर आरएसएस का भी एक स्टैंड रहा है। क्या आरएसएस की भी विदेश नीति बदल गई है? क्या आरएसएस को भी स्वीकार्य है कि अमरीका हस्तक्षेप कर रहा है? एक दु:ख की बात और है। दु:ख की बात यह है कि 28 बार अमरीका के मुखिया ने अपने मुंह से यह बात कही और लगातार कह रहे हैं। लेकिन हमारे देश के मुखिया ने एक बार भी उसका खंडन नहीं किया कि अमरीका के राष्ट्रपति झूठ बोल रहे हैं, गलत बोल रहे हैं। अमरीका को भी चुनना होगा कि अमरीका को हिन्दुस्तान के साथ संबंध कैसे चाहिए? हिन्दुस्तान दुनिया की एक शक्ति है। अमरीका भारतवर्ष की पाकिस्तान से बराबरी नहीं कर सकता है। अमरीका को भी चुनना होगा और मैं आपसे भी कहना चाहता हूं कि आपको भी रास्ता चुनना होगा या तो आंख दिखाओ या हाथ मिलाओ, या तो बातचीत करके अमरीका से संबंध सुधारो और डोनाल्ड ट्रंप को ?* । डोनाल्ड ट्रंप का ?*, नहीं तो हिन्दुस्तान में मैकडोनाल्ड को बंद कराओ। अमरीका को दोनों घोड़ों पर सवार होकर चलने का अधिकार नहीं है।

आपकी विदेशी नीति की तीसरी बड़ी असफलता चीन को लेकर है। मैं याद दिला दूं कि आसिम मुनीर अमरीका के अंदर लंच कर रहे थे। उनको भोजन दिया जा रहा था और वह कह रहे थे कि डोनाल्ड ट्रंप को नोबल पीस प्राइस दिया जाए। जब वह यह कह रहे थे तो उसी दिन इत्तेफाक से चीन के अंदर ट्राइलैटरल बातचीत चल रही थी। चीन,

पाकिस्तान और बांग्लादेश की उस दिन ट्राइलैटरल बातचीत चल रही थी। हमारे नेता राहुल गांधी जी ने चीन को लेकर आपको बार-बार आगाह किया और इसी सदन में किया है, लेकिन उनकी बात को आपने हल्के में लिया। आज चीन को लेकर हमारी फौज आगाह कर रही है। हमारी फौज के डिप्टी चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ राहुल सिंह जी हैं। उनका बयान आया कि यह जो युद्ध था, इसमें सर्वेलांस, सैटेलाइट, इक्वीपमेंट, फ्लेटफार्म और नेटवर्क में पूरे तरीके से पाकिस्तान का साथ चीन दे रहा था। पाकिस्तान के डीजीएमओ की बात आई। जब लड़ाई चल रही थी तो पाकिस्तान में जो चीन के एम्बेसडर हैं, वह एमओ रूम में बैठे थे। पाकिस्तान के आर्मी के हैडक्वार्टर्स में बैठे थे। यह पाकिस्तान के डीजीएमओ ने कहा है। लेकिन आपका क्या रिस्पोंस रहा? आपने चीन के एम्बेसडर को अभी तक दिल्ली में तलब करने की कार्रवाई नहीं की। जब टर्की ने पाकिस्तान का साथ देने के लिए अपना बेड़ा भेजा तो आपने टर्की के दुश्मन मुल्क साइप्रस में प्रधान मंत्री जी गए। यह अच्छा संदेश गया। मगर जो असली दुश्मन चीन था, अगर आपको संदेश देना था, तो प्रधान मंत्री जी ताइवान जाते और चीन को संदेश देते। चीन को भूल गए। जब 6 जुलाई को जनरल राहुल सिंह जी ने कहा कि चीन इसके पीछे है तो आपका क्या जवाब रहा? विदेश मंत्री जी, आप 10 जुलाई को बीजिंग चले गए। आप ताइवान नहीं गए, बल्कि बीजिंग चले गए। आपका ट्विट आया, आपका वक्तव्य आया कि चीन की जो एससीओ की अध्यक्षता है, उसका भारत समर्थन करता है और हमारे संबंधों में सुधार हो रहा है। किस बात का दबाव है? भारत एक स्वतंत्र देश है, जिसको आज हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए।

रक्षा मंत्री जी बोल रहे थे। मैं डिफेंस प्रिपेयर्डनैस को लेकर भी कुछ कहना चाहूंगा। हमने देखा कि आर्मी वालों ने क्या कहा, एयर फोर्स वालों ने क्या कहा? आर्मी और एयर फोर्स ने क्या कहा, मैं उसे पढ़ना चाहता हूं। आपको सुनना पड़ेगा कि वह क्या कह रहे हैं? रक्षा मंत्री जी आपकी 11 साल की जो रक्षा नीति है, उसकी जो रिपोर्ट कार्ड है, हम जो बात कहें, आप उसे नहीं मानना।

<u>18.00 hrs</u>

मगर, डिप्टी चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ, लेफ्टिनेंट जनरल राहुल सिंह जी ने कहा है। राहुल सिंह जी की स्टेटमेंट चीन को लेकर आई। उन्होंने कहा है कि

> ?The equipment that was supposed to be received in January has not been delivered yet. We still depend on a lot of things from outside and if all that equipment were made available, the story may have been a little different. ?

उन्होंने यह कहा है। एयर मार्शल अमर प्रीत सिंह जी पर हमें गर्व है, उन्होंने कहा है कि not a single project that I can think of has been completed on time. Why should we promise something which cannot be achieved?? ? *Interruptions*) एयरफोर्स और आर्मी कह रही है।?(व्यवधान)

माननीय सभापति : हुड्डा जी, एक सेकेंड के लिए रुक जाइए। हुड्डा जी, आपकी पार्टी से आज की लिस्ट में बहुत सारे नाम आए हैं, इसलिए आप अपना भाषण जल्दी से खत्म कीजिए।

?(व्यवधान)

विधि और न्याय मंत्रालय के राज्य मंत्री; तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अर्जुन राम मेघवाल) : माननीय सभापति जी, हाउस का समय बढ़ाना है।?(व्यवधान)

माननीय सभापति : हुड्डा जी, आप एक सेकेंड के लिए रुक जाइए।

?(व्यवधान)

माननीय सभापति : यदि सभा की सहमति हो तो सभा की कार्यवाही आज रात 12 बजे तक के लिए बढाई जाए।

अनेक माननीय सदस्य : जी हां।

माननीय सभापति : धन्यवाद। आप अपना भाषण कनक्लूड कीजिए।

? (व्यवधान)

श्री अर्जुन राम मेघवाल : सबके लिए भोजन की भी व्यवस्था है।?(व्यवधान)

श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा : आदरणीय रक्षा मंत्री जी, केवल उन्होंने ही नहीं कहा है, बल्कि आपकी सरकार संसदीय कमेटी की रिपोर्ट पर भी ध्यान नहीं देती है। वर्ष 2018 की रिपोर्ट और वर्ष 2023 की रिपोर्ट आपको क्या कह रही थी? आप लगातार रक्षा बजट को घटा रहे हैं, जो सही नहीं है। आप रक्षा बजट को बढ़ाइए। एज ए जीडीपी, इन 11 वर्षों में आप रक्षा बजट को 2.5 प्रतिशत से घटाकर 1.9 प्रतिशत पर लेकर आए हैं। एज ए जीडीपी के प्रतिशत में आप रक्षा बजट को वर्ष 1962 के युद्ध के बाद सबसे नीचले स्तर पर लेकर आए हैं। आपको स्टैंडिंग कमेटी कह रही थी कि यह सही नहीं है। आपने रक्षा बजट कम किया है।

आप अग्निवीर जैसी योजना लेकर आए हैं। हमें फौज पर गर्व है, उसके लिए यह सही नहीं है। एक और दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि आपने रक्षा बजट में एयरफोर्स मॉडर्नाइजेशन के बजट में भी कटौती की है। हमारे नेता राहुल जी बार-बार इस बात को लेकर आगाह कर रहे हैं कि आज हमारे देश में 60 स्क्वाड्रन्स की जरूरत है, जिनके बारे में एयर मार्शल कह रहे हैं। वर्ष 2011 में 41.1 स्क्वाड्रन्स हमारे यूपीए के समय मंजूर हुए थे, लेकिन आज धरातल पर एयरफोर्स के मात्र 31 स्क्वाड्रन्स हैं। इन 31 स्क्वाड्रन्स में से भी कई स्क्वाड्रन्स ऐसे हैं, जिनमें जगुआर जैसे जहाज हैं। ?(व्यवधान)

माननीय सभापति : हुड्डा जी धन्यवाद।

माननीय श्रीमती शांभवी जी ।

श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा : ये वही जगुआर जहाज हैं ।? (व्यवधान) पिछले छ: महीनों में तीन जहाज क्रैश हुए हैं, जिनमें हमारे हरियाणा के दो पायलट्स थे ।?(व्यवधान) उन्होंने जगुआर के साथ अपनी शहादत दी ।?(व्यवधान)

श्रीमती शांभवी (समस्तीपुर) : सभापति महोदय, आपने बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर मुझे बोलने का अवसर दिया है, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूं ।?(व्यवधान) मैं विशेष रूप से अपनी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के प्रति आभार प्रकट करना चाहती हूं ।?(व्यवधान)

श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा : सभापति महोदय, हमारी यही मांग है कि आज आप मेरा सुझाव मानें कि हमारी फौज और एयरफोर्स को आधुनिकता से लैस किया जाए, बजट को बढ़ाया जाए ।

आज टू फ्रंट्स-थ्री फ्रंट्स वार की बात चल रही है । आज पाकिस्तान 82 प्रतिशत हथियार चीन से ले रहा है, बांग्लादेश 71 प्रतिशत हथियार चीन से ले रहा है । ऐसे में नेटवर्क- प्लेटफॉर्म्स को आधुनिकता से लैस किया जाए । आप कह रहे हैं कि ?ऑपरेशन सिंदूर? जारी है । आप ऑपरेशन सिंदूर के साथ क्रिकेट जारी मत करें । आप देश की फौज को मजबूत करें, हम इसमें आपका साथ देंगे । धन्यवाद ।

श्रीमती शांभवी (समस्तीपुर) : सभापति महोदय, आपने मुझे ?ऑपरेशन सिंदूर? जैसे विषय पर बोलने का अवसर दिया है, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूं । मैं विशेष रूप से अपनी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान जी के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूं । आज मैं इस चर्चा में पहली महिला सांसद हूं, जो ऑपरेशन सिंदूर पर अपना पक्ष रख रही हूं, ऑपरेशन सिंदूर के फेवर में बोल रही हूं ।

हमें गर्व होता है कि आज हमें ऑपरेशन सिंदूर पर बोलने का अवसर मिला क्योंकि इतिहास में ?ऑपरेशन सिंदूर? को स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा । विश्व स्तर पर इसने भारत के लिए एक न्यू नार्मल को स्थापित किया है, न्यू नार्मल की जो नींव है, सदियों पहले रामचरित मानस में लिख दी गई थी ।

बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति ।

बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति॥

इसका अर्थ है कि विनय और धैर्य जरूर ही महत्वपूर्ण गुण है, लेकिन जब धैर्य का बांध टूट जाता है तो भय के बिना उसका कोई उपचार नहीं बचता । हमारी सरकार के दृढ़ संकल्प और सेनाओं के अदम्य शौर्य की वजह से आज एक नये भारत को विश्व स्तर पर स्थापित किया गया है । यह नया भारत क्या है? नया भारत वह है जो शांति के लिए गौतम बुद्ध और महावीर जी के दिखाये हुए पथ पर चलता है, किंतु अगर राष्ट्र सुरक्षा और राष्ट्र हित की बात हो तो प्रभु श्रीराम के धनुष को और श्रीकृष्ण के सुदर्शन चक्र को भी उठाना जानता है ।

18.06 hrs (Kumari Selja *in the Chair*)

आज इस चर्चा के दो भाग हैं। पहला भाग है, पहलगाम पर अटैक और दूसरा ?ऑपरेशन सिंदूर?। पहलगाम पर जिस तरह से आतंकवादियों ने अटैक किया, वह नागरिकों पर नहीं, बल्कि मानवता पर अटैक था। आतंकवादियों ने धर्म पूछकर उनकी पत्नी के सामने, माँ के सामने, परिवार के सामने, बहनों के सामने, उनको मार दिया। देश वह चित्र कैसे भूल सकता है जब एक नवविवाहित महिला लाल चूड़ी पहन कर अपने पति के शव के बगल में बैठी थी। इस दृश्य ने पूरे देश को झंझोर कर रख दिया। लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि आज भी हमारे देश में ऐसे लोग हैं जिनको पहलगाम से ज्यादा दुख फिलिस्तीन के लिए होता है क्योंकि यह उनकी राजनीति को फायदा नहीं देता।

जहां राजनीति के लिए कई लोग चुप्पी साध लिए, वहां यशस्वी प्रधनमंत्री ती ने राष्ट्र धर्म निभाया। उन्होंने महिलाओं के आंसुओं को ही नहीं पोंछा, महिलाओं के स्वाभिमान को पुर्नस्थापित किया। हम बता देना चाहते हैं कि यह एक नया भारत है। आतंकवादी हमले के बाद भारत मोमबतियां नहीं जलाता, दुश्मनों की चिता को जलाता है। वह शांति चाहता है लेकिन शांति अपनी शर्तों पर चाहता है। अगर शर्त को पूरा नहीं किया जाए तो वह डिप्लोमेसी से डिस्ट्रक्शन का भी रास्ता जानता है। इसी बात पर हम एक शेर कहना चाहते हैं।

खतों का दौर गया, फरमान भेजे जाते हैं,

जो करते हैं भारत की आत्मा पर वार,

वह सीधे कब्रिस्तान भेजे जाते हैं।

मैं अभी कांग्रेस के साथियों की बात सुन रही थी कि 1971 में इंदिरा गांधी ने ये किया, इंदिरा गांधी ने वो किया, किंतु वह कभी भी 1971 का क्रेडिट बिहार के बेटे जगजीवन राम जी को नहीं देते हैं, जो उस समय के रक्षा मंत्री थे। बांग्लादेश ने उनको 1971 का हीरो डिक्लेयर किया। रक्षा मंत्री रहते हुए जंग के बाद भी उन्होंने सैनिकों के रिहैबिलिटेशन के लिए काम किया। कांग्रेस पार्टी कभी भी रिकोग्नाइस नहीं करेगी क्योंकि उनको दलित नेतृत्व से समस्या है। वह सिर्फ उनके साथ रहना चाहते हैं, जो बाबा साहब के चित्र को अपने पैर पर **र**खते हैं।

अगर हम ?ऑपरेशन सिंदूर? की बात करें तो सिर्फ टेरर लांच पैड को ही धवस्त नहीं किया बल्कि पूरी तरह से पाकिस्तान के हौसले को भी ध्वस्त कर दिया। लेकिन एक आश्चर्य की बात है, आश्चर्य की बात यह है कि हमारे दुश्मन देश में युवा नेता हैं, एक युवा नेता हमारे विपक्ष में हैं। दुश्मन देश का सदन अलग है, हमारे देश का सदन अलग है, वहां के नेता अलग हैं, यहां के नेता अलग हैं। इनका सवाल एक ही है, विपक्ष का सवाल और दुश्मन देश के नेता का सवाल एक कैसे हो सकता है? मैं विपक्ष के साथियों को चुनौती देती हूं, कभी अपनी राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्र हित के लिए सोचना चाहिए, अगर सरहद पर सेना लड़ रही है तो उनसे सवाल नहीं पूछा जाता है, उनको सलामी दी जाती है।

सभापति महोदया, अगर सुबह से विपक्ष की बात को ध्यान से सुनें तो वे यही कहते जा रहे हैं कि सरकार ने सरेंडर कर दिया है। सरेंडर से इनका विशेष लगाव इसलिए भी है क्योंकि इतिहास गवाह है कि इन्होंने कितने साल विश्व के सामने भारत का सिर झुका दिया। वर्ष 1962 में नेहरू जी ? 14500 वर्ग मील जमीन पर चीन ने कब्जा कर लिया था। अमरीका के तब के राष्ट्रपति ने कहा था कि भारत हमसे भीख मांगते हुए आया था। वर्ष 1971 में वेस्टर्न मीडिया ने प्रधान मंत्री के बारे में जो भी कहा हो लेकिन हमारे देश भारत के बारे में कहा कि भारत एक धोखेबाज देश है और भारत के नागरिक धोखेबाज हैं। भारत की यह इमेज आपके शासनकाल में थी। वर्ष 1985 में सीआईए की क्लासिफाइड रिपोर्ट यह है कि विदेशी तंत्र भारत की सरकार चलाती थी, इनसे जवाब मांगिए। वर्ष 2001 विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के मंदिर पर हमला हुआ और ये लोग चुप बैठे रह गए। वर्ष 2008 में मुम्बई अटैक द्वारा बुरे तरीके से देश को झकझोर दिया गया लेकिन इन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। आज यदि हमारी सरकार ने आतंकवादियों को जवाब दिया है तो वह हमारे यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने दिया है। कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष कहते हैं कि ?ऑपरेशन सिंदूर? एक छोटा-मोटा ऑपरेशन था। यह इनकी विचारधारा की समस्या है। इनको लगता है कि ?ऑपरेशन सिंदूर? एक छोटा-मोटा आपरेशन था लेकिन यह इनकी गलती नहीं है। इनकी विचारधारा यह कहती है कि अगर हिंदू धर्म को आगे लेकर जाओ या हिंदू धर्म के पक्ष में बोलो तो वह सैफरन टैरेराइजेशन है लेकिन इनकी राजनीति के लिए ये कहते हैं कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता है। इनका यह दोहरा चरित्र क्यों है? आतंकवादियों ने धर्म पूछकर मार दिया। हम उन्हें कहना चाहते हैं कि जिस सनातन को मुगल की तलवार खत्म नहीं कर पाई, जिस सनातन को अंग्रेजों की तोप खत्म नहीं कर पाई, उस सनातन को इनकी छोटी-मोटी राजनीति क्या खत्म करेगी। आतंकवादियों ने जब हमारे भाइयों को मारा तो उन्हें मारने से पहले बोला कि कलमा पढ़कर सुनाओ। उन नागरिकों की बहन होने के नाते, देश की बेटी होने के नाते मैं उन आतंकवादियों को महाभारत सुनाना चाहती हूं। महाभारत सत्य और धर्म की लड़ाई जरूर है लेकिन महाभारत द्रौपदी के प्रतिशोध का भी प्रतीक है। द्रौपदी का बदला महाभारत है और हमारी संस्कृति में है कि यदि हमारे नारी सम्मान में त्रुटि होगी तो फिर से महाभारत रची जाएगी। महाभारत में लिखा है कि ?धर्मो रक्षति रक्षित: ।? जो धर्म की रक्षा करते हैं, धर्म भी उन्हीं की रक्षा करता है।

महोदया, विशेष रूप से हम अपने यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का धन्यवाद करना चाहते हैं जिन्होंने ?ऑपरेशन सिंदूर? का नाम रखकर दुनिया को बता दिया है कि एक चुटकी सिंदूर की कीमत क्या होती है और जिसने इस देश की बेटियों और बहनों के सिंदूर को उजाड़ा है, उन्हें हमारी सरकार और हमारी सेना ने मिट्टी में मिला दिया है। मैं अपनी वाणी को विराम देने से पहले एक पंक्ति पढ़ना चाहती हूं।

?अगर उसूल पर आ जाए तो टकराना जरूरी है

अगर जिंदा हो तो जिंदा नज़र आना जरूरी है ।?

भारत एक जिंदा देश है और उसकी रगों में अखंडता और एकता का खून दौड़ रहा है। जब-जब भारत की अखंडता और एकता पर प्रहार होगा, भारत एकजुट होकर मुहंतोड़ जवाब देगा। जय हिंद, जय बिहार, भारत माता की जय।

श्री अभय कुमार सिन्हा (औरंगाबाद) : सभापति महोदया, मैं देश के सैनिकों के पराक्रम, साहस और शौर्य को सलाम करता हूं। पहलगाम में आतंकी हमले में मारे गए सभी पर्यटकों को मैं नमन करता हूं और ऑपरेशन में शहीद जवानों को सैल्यूट करता हूं। मैं पहली बार जीत कर आया हूं और सदन में हो रही चर्चा को जब मैं देखता हूं तो पाता हूं कि जिस तरह से कई बार टीका-टिप्पणी की जाती है, वह सदन की गरिमा के खिलाफ है। मैं टीका-टिप्पणी न करते हुए सरकार से एक-दो सवाल करना चाहता हूं कि यह हमला धार्मिक नफरत के आधार पर हुआ है। हमलावारों ने नाम पूछे, शरीर की तालाशी ली और निशाना सिर्फ हिंदू लोगों को बनाया गया, जैसा कि चश्मदीदों ने बताया।

महोदया, ऐसे समय में वहां के एक स्थानीय मुस्लिम समुदाय के घुड़सवार सैय्यद आदिल जी की शहादत हमें याद दिलाती है कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता है लेकिन उसका मकसद जरूर धार्मिक विभाजन पैदा करना होता है। मैं स्पष्ट रूप से कह सकता हूं कि देश में जो आतंकवाद होता है उसका उद्देश्य यही होता है कि इस देश में धार्मिक उन्माद बढ़े और इस चीज को बढ़ावा देने के लिए हमारे देश के लोग भी उसी रूप में बह जाते हैं, यह मुझे ताज्जुब लगता है। जब यह घटना घटी, उस समय मैं और बहुत सारे लोग पहलगाम गए। वहां पुलिस-प्रशासन नहीं था। क्या इसकी जांच कराई गई कि वहां पर सुरक्षा व्यवस्था क्यों नहीं थी? जब यह घटना घटी, तो उस जगह पर सुरक्षा व्यवस्था किन वजहों से नहीं थी, क्या इसकी सरकार ने जांच कराई? इस घटना के दोषी कौन हैं, इस पर क्या सरकार ने अपना जवाब दिया? नहीं दिया। हम चाहेंगे कि पहलगाम में हुए हमले और वहां सुरक्षा-व्यवस्था न होने की निश्चित तौर पर स्पष्ट जांच करके सरकार को जवाब देना चाहिए।

महोदया, नतीजा क्या हुआ? कश्मीर का पर्यटन उद्योग चौपट हो गया। 50 परसेंट पर्यटक यानी करीब 3 हजार 337 पर्यटक उसी दिन कश्मीर से निकलकर अपने घर चले गए। हमारे गृह मंत्री जी कहते रहे कि कश्मीर आइए, घूमिए, किसी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं है। यहां स्थिति पूरी तरह से सामान्य है। देश को अपने संबोधन में गृह मंत्री जी ने बताने का काम किया, जिससे हमारे देश के पर्यटक वहां पर भारी संख्या में पहुंचे। मैं समझता हूं कि सरकार की तरफ से सुरक्षा की यह बड़ी चूक है, बहुत बड़ी गलती है। जिस तरह से इन्होंने कुंभ मेले का आयोजन किया और उसका प्रचार-प्रसार किया, लेकिन कुंभ मेले में लोगों की सुरक्षा की व्यवस्था नहीं की, जिस कारण कई श्रद्धालुओं को अपनी जान गंवानी पड़ी, उसी तरह से कश्मीर के बारे में सरकार ने देश के लोगों को बताया कि कोई दिक्कत नहीं है, आप कश्मीर आएं और घूमें। इस कारण लोग निर्भय होकर वहां गए और इतनी बड़ी घटना घट गई।

महोदया, मैं निश्चित तौर पर कहूंगा कि इस ओर सरकार को देखने की आवश्यकता है। इसमें मीडिया की भूमिका के बारे में बताना चाहूंगा। जिस तरह से यह घटना घटी और जिस तरह से ?ऑपरेशन सिंदूर? चला, तो मैं सरकार से यह जानना चाहता हूं कि हाशिम मूसा जैसे लोग, जो हमले के असली सूत्रधार हैं, वे आज भी जिंदा हैं। सरकार इस बात को

स्पष्ट करने की कोशिश करे। ? (व्यवधान) हम तो जाएंगे ही, लेकिन आने वाले समय में आप लोग भी जाएंगे। ? (व्यवधान) देश की जनता सब समझ चुकी है कि किस तरह से आप लोग जुमला फैलाने का काम करते हैं।

महोदया, हम सरकार से एक आग्रह करना चाहेंगे कि क्या ऐसी परिस्थिति में सत्य और विवेक की बजाय मीडिया की टीआरपी की होड़ चलनी चाहिए। क्या मीडिया की स्वैच्छिक आचार संहिता नहीं होनी चाहिए? हम सरकार से एक माँग करना चाहते हैं कि संसद एक सर्वदलीय समिति गठित करे, जो राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर मीडिया के लिए स्वैच्छिक दिशा-निर्देश तैयार करे, न सेंसरशिप हो, न दमन हो। यह हमारी सरकार से माँग है। हम चाहते हैं कि एलओसी पर निगरानी बढ़ायी जाए। पर्यटन स्थलों की सुरक्षा के लिए सीआईएसएफ का विशेष दस्ता बनाया जाए। पीड़ित परिवारों को सम्पूर्ण राहत, मृतकों के परिजनों को मुआवजा, नौकरी और मानसिक परामर्श दिया जाए।

महोदया, मैं एक आग्रह और करना चाहता हूँ कि सैयद आदिल हुसैन शाह जैसे नायकों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिलना चाहिए। उनके परिवार को उचित सम्मान देने का प्रयास किया जाए, ताकि आने वाले समय में वहाँ के लोगों को लगे कि उन्होंने अच्छा काम किया, इसलिए देश ने भी उन्हें पुरस्कृत करने का काम किया है।

महोदया, आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI Y. S. AVINASH REDDY (KADAPA): Thank you, Madam Chairperson.

The YSR Congress Party strongly reaffirms its commitment to India?s national security. The Operation Sindoor, launched on 7th May, 2025, was a focussed, intelligence-led response to the horrific Pahalgam terror attack in which 26 innocent people lost their lives. The TRF, a known proxy of Lashkar-e-Taiba, claimed the responsibility for the attack, further confirming the continued threat of Pakistan-backed proxy warfare in Jammu and Kashmir.

India?s response was one of necessary deterrence, not retaliation. With remarkable precision and restraint, the Armed Forces avoided civilian and military zones to strike nine identified terrorist facilities, reflecting India?s adherence to international norms even under severe provocation from Pakistan. In a sharp contrast, Pakistan responded with indiscriminate shelling along the LoC leading to civilian deaths in Poonch and Rajouri.

Madam, we applaud the Indian Armed Forces for their precise execution of Operation Sindoor, made possible by the integration of cutting-edge technology. The use of night vision drones, satellite tracking, and modern-guided weaponry ensured that every strike was swift, deliberate, and accurate. The entire mission was completed in less than half an hour, catching

Pakistani air defence systems completely clueless. This Operation represents a defining moment in India?s defence capabilities. While Pakistan relied on drone swarms, India responded with superior unmanned systems that delivered focussed strikes on strategic targets.

Madam, another alarming front of aggression has been the surge in cyberattacks originating from Pakistan. In the immediate aftermath of the Pahalgam attack, India faced coordinated digital offensive targeting critical infrastructure, municipal portals, and defence-linked portals. Over 1.5 million intrusion attempts were recorded with malicious actors attempting to breach sensitive networks, deploy malware, spoof GPS signals, and deface official websites. While the majority of these attacks were neutralised, a small number did succeed. So, these events serve as a stark reminder that cyber warfare is active and evolving, and hence, the Government of India must now invest not only in conventional defence but also in digital resilience.

Our YSR Congress Party extends its heartfelt solidarity to the citizens of Jammu and Kashmir. After years of instability, the region has shown promising signs of democratic revival. The April 2025 Pahalgam terror attack was a significant setback but the resilience of the Kashmiri people remains undeterred.

Notably, the newly launched Vande Bharat train service has had a remarkably positive impact. Also, the phased reopening of most parks and tourist destinations that were closed following the attack signals not only restored confidence but also the region?s collective determination to move forward.

Madam, finally, we must take note of an admission made by Pakistan?s own leadership. In a televised interview with journalist Yalda Hakim, Pakistan?s Defence Minister openly acknowledged that Pakistan for decades funded and supported terrorist groups.

Madam, this is not speculation. It is a public confession by the Government of Pakistan. Such a statement confirms what India has long maintained, that terrorism sponsored by Pakistan is not a rogue phenomenon but a State facilitated strategy. This should further strengthen international resolve to hold Pakistan accountable and reject any attempts to deflect blame or obscure the facts.

Thank you for this opportunity.

Jai Hind!

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (DR. SUBRAHMANYAM JAISHANKAR): Hon. Chairperson, I rise to apprise this august House of the foreign policy dimension of our response to the Pahalgam Terrorist Attack going into the preparations for Operation Sindoor and how foreign policy was handled during Operation Sindoor.

As all the hon. Members would appreciate, it was important to send a clear, strong and resolute message after the Pahalgam attack. Our red lines had been crossed and we had to make it very apparent that there would be serious consequences. As a result, the first step which was taken was that a meeting of the Cabinet Committee on Security took place on the 23rd April and that meeting decided few things.

One, the Indus Waters Treaty of 1960 will be held in abeyance with immediate effect until Pakistan credibly and irrevocably abjures its support for cross border terrorism.

Two, the integrated check post at Attari would be closed with immediate effect.

Three, Pakistani nationals who are travelling under SAARC visa exemption scheme will no longer be allowed to do that.

Four, the defence ? naval and air - advisors of the Pakistani High Commission would be declared *persona non grata;* and five, the overall strength of the High Commission would be brought down to 30 from the number of 55.

18.28 hrs (Hon. Speaker *in the Chair*)

It was very clear hon. Speaker Sir that after these first set of steps approved by the Cabinet Committee on Security that India?s response to the Pahalgam attack will not stop there. Our task from a diplomatic perspective and from our foreign policy approach was to shape the global understanding of the Pahalgam attack. What we tried to do was to bring out to the international community Pakistan?s long-standing use of cross-border terrorism. We highlighted

the history of terrorism in Pakistan and how this particular attack was meant to target the economy of Jammu and Kashmir and to sow communal discord among the people of India.

Our messages were two. One, zero tolerance of terrorism and two, the right to defend our people against terrorism. So, in all the interactions with the diplomatic briefings, we called all the embassies for briefings. We interacted with the media. All of this was aimed at these two objectives ? zero tolerance of terrorism and the right to defend ourselves, that is, right to defend our people of India against cross border terrorism.

Now, the focus for our diplomacy was understandably the UN Security Council. Hon. Speaker Sir, the challenge for us was that at this particular point, Pakistan is a Member of the Security Council. We are not. So, we had to achieve our objectives in a Security Council where Pakistan is a Member. Now, our goals in the Security Council were two ? one, to get an endorsement from the Security Council of the need for accountability, and two, to bring to justice those who perpetrated this attack. I am glad to say, Speaker, Sir, and I hope that this is appreciated and recognized by the House. If you look at the Security Council?s statement of 25th April, the Members of the Security Council condemned in the strongest terms the terrorist attack. They affirmed terrorism in all its forms and manifestations constitute one of the most serious threats to international peace and security. And most important, the Council underlined the need to hold the perpetrators, organizers, financiers, and sponsors of this reprehensible act of terrorism accountable and bring them to justice.

I highlight this, Speaker Sir, because this statement of the UN Security Council resonated throughout the international community. So, when many honourable Members asked today where was the world on Pahalgam, I think, the answer is there. The answer is there in a Security Council statement, which says hold them accountable, bring them to justice, and that is exactly what we did through Operation Sindoor.

Now, I also want, hon. Speaker Sir, through you, to bring to the attention of the House a very interesting development pertaining to the TRF, The Resistance Front. When the Security Council was debating this on the 25th of April, and TRF had twice claimed responsibility for the Pahalgam attack, Pakistan defended the TRF. Pakistan tried to get any mention of TRF

excluded, and, in fact, the Pakistani Foreign Minister told his Parliament that this is a great diplomatic achievement. Now, I mention it because today, again, thanks to our diplomacy, the TRF has been designated as a global terrorist organization by the US Government, and the same Pakistani Foreign Minister, who took so much pride saying: ?I defended the TRF?, says: ? Well, now, if the US has done this, we accept it.? So, that is where the Security Council issue stood. If I could then, Sir, move on to the diplomacy, from 25th of April till the commencement of Operation Sindoor, during this period, there were obviously a number of phone calls, a number of conversations. At my level, there were 27 calls. At Prime Minister?s level, I think, almost 20 calls were there. About 35 to 40 letters of support came in. What we tried to do was to create a narrative, prepare the diplomacy for the launch of Operation Sindoor, and the result of that diplomacy ? hon. Speaker, Sir, there are 193 members of the United Nations ? is that only three, apart from Pakistan, opposed Operation Sindoor, only three. If you look through this period, and I would be very happy to share with the House the exact positions of various Governments, overwhelmingly, there was recognition that terrorism is unacceptable, that a country which has been attacked has a right to defend itself, and that India was doing exactly that.

Now, when Operation Sindoor was launched, we spelled out our objectives. There was a statement. Hon. Raksha Mantri ji referred to it in his statement, where we put out for the benefit of our own people, for the international community, that Operation Sindoor was hitting the terrorist infrastructure in Pakistan and Pakistan-occupied Jammu and Kashmir, from where terrorist attacks had been planned and launched. We highlighted that nine sites had been targeted. We said that our actions are focused, measured, and non-escalatory in nature.

We were living up to the commitment that those responsible for this attack will be held accountable. This was a commitment which was endorsed by the UN Security Council, thanks to our diplomacy. It was a commitment made by the Prime Minister to the people of India that we would hit those symbols, those sites, and those planning places. Today, when I hear many questions from across the aisle, I want to say, which one of you imagined that Bahawalpur and Muridke would be brought down the way they were? Which one of you thought that? When did you even think of it during your tenure? Did it even cross your mind? In fact, on the contrary, you ruled it out after 26th November. So, I think our objectives are very clear. We wanted to send a

message to the terrorists. We wanted to send a message to Pakistan ?do not continue this support for terrorism?. And I think on the morning of 7th May, that message went home loud and clear.

Now, during this period, when the operations were on, when the conflict was on, and when the activities were on, the operation was still continuing, a number of countries, a number of their leaders, Ministers, and others called out. And they called out because people wanted to know what was happening. People wanted to know what was the thinking of India. People wanted to understand what we were doing. And I would like to share with the House, through you, that to everybody, we gave a common message. The common message was ?India is exercising its right to defend itself against terrorism?. Number two, the targets which were hit on the 7th of May are known terrorist headquarters and infrastructure. Number three, there will be no mediation. Anything between us and Pakistan is bilateral. Number four, we will never bow down to nuclear blackmail. Number five, we are responding to Pakistani military attacks because after Operation Sindoor was launched, they had started targeting our military facilities. And we will continue to hit the Pakistani military. If the fighting is to stop, Pakistan must request it. And that request must come through the designated channel of DGMO. This was a common message that we had given to many people who had called us during that period. Our position was very, very clear in how we were approaching the progress of Operation Sindoor.

Sir, many hon. Members asked, some out of genuine curiosity, some perhaps less, what was the international support? How much international understanding was there of India's position? I would like to share with you a sample. So, let me start with countries which are known to be partners of India ? QUAD. The QUAD gave a statement:

> ?The QUAD unequivocally condemns all acts of terrorism and violent extremism in all its forms and manifestations including cross-border terrorism. We condemn in strongest terms the terrorist attacks in Pahalgam on 22nd April and call for perpetrators, organizers and financiers of this reprehensible act to be brought to justice without any delay.?

This is the QUAD. Now, let us look at a different grouping ? BRICS. Now, BRICS has China as a member, and also Russia, Iran, Brazil, South Africa, and Egypt. BRICS also condemned the 22nd April attack. It reaffirmed its commitment to combating terrorism, again, including cross-border terrorism.

Now, I would like the hon. Members of this House to understand, if there is a terrorist attack on India and a country says we condemn cross-border terrorism, I think it is obvious to everybody what that cross-border terrorism is.

I then move on to the Central Asia. The Central Asian countries opposed providing safe haven, using terrorist proxies for cross-border terrorism and for terror financing. I can cite statements from the Indian Ocean Rim Association. For example, President Putin wrote to our President and said:

> ?This brutal crime has no justification whatsoever, and its perpetrators will face a deserved punishment.? ? (*Interruptions*)

The President of Paraguay has said that he expresses solidarity and recognized India's legitimate right to self-defence. So, the common thread which I would like to bring out is that the cross-border terrorism across the board has been recognized in all its forms and manifestations, opposition to condemnation of Pahalgam Terrorist Attack, and the right of India to bring people to justice.

Sir, in addition to that, I would particularly like to mention two or three other developments. One is the American designation of TRF. On the 17th of July, the Department of State designated TRF as a Foreign Terrorist Organization and a Specially Designated Global Terrorist. Now, this comes in the wake of the extradition of Tahawwur Rana, who was involved in the 26/11 attack. When people ask today, how successful our foreign policy is, where our diplomacy is, I want to say that Tahawwur Rana, which many of you tried for so long to get, is finally here because of us. I want to say that TRF was designated as a Global Terrorist Organization not because somebody out there made a remark, but because our diplomacy persuaded another country to do that. Now, our strong stance has resonated across the world.

Some time ago, I was in Germany, and standing next to me, the German Foreign Minister said, ?India has every right to defend itself against terrorism and Germany will support this fight against terrorism.? Similar position has been taken by France and also by the European Union. So, what I would like to highlight is this. Today, as far as ?Operation Sindoor? is concerned, the world sees what it is about. The world realizes that this is a fight against terrorism. It is felt that India has acted responsibly but firmly.

Now, I would like to address one particular aspect because some Members have brought it up, and this is regarding the US activity during this period. I would like to inform the House that on the 9th of May, the Vice President of US, Mr. J.D. Vance called the hon. Prime Minister, warning him of a massive Pakistani attack in the next few hours. Hon. Prime Minister, in his response, made it very clear that if such an attack happens, it would meet with an appropriate response from our side. ? (*Interruptions*) That attack took place and was foiled by our Armed Forces. I think, the House should collectively appreciate the performance of the Armed Forces in foiling what was a massive attack on the 9th and 10th of May. Now, our response, which the hon. Prime Minister promised, was delivered, and delivered with devastating effect. I do not have to say anything. Every Member must have seen satellite pictures of Pakistani airfields. You can see from the state of those airfields, which is shown by the pictures, what our answer was. Now, on the 10th of May, we received phone calls sharing the impression of other countries that Pakistan was ready to cease the fighting. Our position was, if Pakistan was ready, we needed to get this as a request from the Pakistani side through the DGMO channel. That is exactly how that request came.

Now, I want to make two things very clear. One, at no stage in any conversation with the United States was there any linkage with trade and what was going on. *....(Interruptions)* Two, there was no call between the Prime Minister and President Trump from the 22nd of April, when President Trump called up to convey his sympathy and the 17th of June, when he called up Prime Minister in Canada to explain why he could not meet. मैं इसको दोहराता हूं। ? (व्यवधान) 22 अप्रैल से 17 जून तक ? (व्यवधान)

गृह मंत्री; तथा सहकारिता मंत्री (श्री अमित शाह) : माननीय अध्यक्ष जी, मेरी एक बात पर आपत्ति है ? (व्यवधान) मेरी इस बात पर आपत्ति है कि भारत सरकार में शपथ लिया हुआ विदेश मंत्री यहां स्टेटमेंट कर रहा है, उस पर उनको भरोसा नहीं है। उनको किसी और देश पर भरोसा है। मैं समझ सकता हूं कि उनकी पार्टी में विदेश का महत्व क्या है? मगर इसका मतलब यह तो नहीं है कि पार्टी की सारी चीजें यहां, सदन में, आकर थोपें! भारत के विदेश मंत्री पर भरोसा नहीं करेंगे! यहां पर ओथ लिया हुआ व्यक्ति बोल रहा है। He is a responsible person. माननीय अध्यक्ष जी, इसीलिए ये लोग वहां बैठे हैं और, और 20 साल तक वहां बैठने वाले हैं। ? (व्यवधान)

DR. SUBRAHMANYAM JAISHANKAR: Hon. Speaker, Sir, in the course of the debate today, some points were made by the Members of the Opposition. I would like to respond to some of them. We were asked, ?Why did you stop at this time? Why did you not go further?? Please see who is asking this question. This question is being asked by people who, after 26/11, felt that the best action was inaction. Now, I would like to read it out because one hon. Member said that nowadays BJP Members like reading from books. You get the truth in books. Sometimes you do not like what we read in books. So, let me read out two excerpts from a book called *Choices: Inside the Making of India's Foreign Policy* by the National Security Advisor of the UPA Government. There is a Chapter on the 26/11 attack and India?s decision thereafter. He says,

> ?On sober reflection and in hindsight, I now believe the decision not to retaliate militarily but to concentrate on diplomatic, covert, and other means was the right one for that time and place.?

This is what he says. But did he even do that? The terrorist attack of 26/11 happened in November of 2008. What was the reaction? The reaction was Sharm El-Sheikh. Was that diplomatic? Was it covert? Was it military?

Now, what did Sharm El-Sheikh do? In Sharm El Sheikh, the then Government and the Pakistani Prime Minister agreed that terrorism is a main threat to both countries. *....(Interruptions)* Now, today, people are saying that America is hyphenating you, Russia is hyphenating you. That is what I heard Deepender Hooda ji says. Hello, you are hyphenating yourself. *....(Interruptions)* I mean, you did not need a foreign country to say, please link India to Pakistan. Your own Government was saying that terrorism is a main threat to both countries, and then they said that terrorism should not be linked to the composite dialogue. And, worst of all, they accepted a

reference to Balochistan in that. Now, here is a country reeling after 26/11, and you are equating Balochistan and what happened in Mumbai on 26/11? You are saying that the perpetrator and the victim both have got a problem. Now, you are asking me, ?Why did you not go further?? People who did nothing are asking a Government which did so much, ?Why did you not do more??

Sir, you might think that this is a one-off. But this is a habit because this is the thinking in that part of the House. If you remember, there was the Mumbai train bombing some years back. The Mumbai train bombing happened in July of 2006. In September of 2006, three months after the Mumbai train bombing, at Havana the UPA Government with its Pakistani counterpart condemns all acts of terrorism, as though we are both again equal, and agrees that it is a scourge that we need to effectively deal with together. Then, they again directed resumption of dialogue. ? (*Interruptions*) So, what I want to highlight is that for people who did nothing, to have the temerity and the gumption today to ask a Government -- which did so much, which brought down Bahawalpur and Muridke -- why did you not do more? I think it is extraordinary. ? (*Interruptions*)

Now, we also heard from one of the early speakers saying that we are now facing a two-front and that the Leader of Opposition has been warning us about two-front. Now, all I can is that the person who said it and may be the Leader of Opposition must have missed their history lessons in school. I will tell you why. It is because I would like to walk you through the history of this two-front. ? (*Interruptions*) The two-front started because of something called POK. POK was created in 1948-1949 by the Government of this country by not completing the job of what was to be done. ? (*Interruptions*)

Now, the House should note these dates. The two-front started in 1963 when the Shaksgam Valley was ceded by Pakistan to China as a result of an agreement. Then, in 1966, the Karakoram Highway was agreed upon, which took 20 years and was completed in 1986.

References were also made to China-Pakistan military collaboration. When did this collaboration start? I will give you the year. It was in 1966. In 1966, the first Chinese military supplies went to Pakistan. When did nuclear collaboration start? It was in 1976 when Bhutto

arranged for China-Pakistan to get together on this. In 1980s, when Prime Minister Rajiv Gandhi was visiting China and Pakistan, was when the nuclear collaboration was at its height. ? (*Interruptions*)

Now, let me go further. You will say: ?Why am I talking history??. So, let me bring this further up. ? (*Interruptions*) In 2005, Pakistan-China Treaty of Friendship and Cooperation; in 2006, Pakistan-China Free Trade Agreement; in 2013, handing over of Gwadar Port to China; and in May, 2013, announcement of China-Pakistan Economic Corridor happened. So, we were getting warnings of a Pakistan-China collaboration when this collaboration has been going on for 60 years.

Let me also address two other points. ? (*Interruptions*) There was a reference made to IMF that ?why did you not stop?? ? (*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, यदि आपने सवाल उठाया है, तो आपको जवाब भी सुनना पड़ेगा।

? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपके उपनेता ने सवाल उठाया है। अब आप जवाब सुनिए। आप जैसे सवाल करेंगे, आपको वैसे जवाब सुनने पड़ेंगे।

? (व्यवधान)

DR. SUBRAHMANYAM JAISHANKAR: Sir, the IMF loan which was given was approved in September, 2024. ? (*Interruptions*) It was an extended fund facility of $7 billion.

Now, the House should know that Pakistan is a serial borrower from the IMF. I think it is 16 or 17 times that they have taken IMF loan. ? (*Interruptions*) There is a very interesting comparison. In 2008, Pakistan got a standby arrangement of $9.70 billion. In 2013, it got another one of $5.9 billion. So, the very people who are concerned today at a $7 billion package should remember that a $15 billion package went through for Pakistan during their tenure. ? (*Interruptions*)

Now, a reference was made to FATF. ? (*Interruptions*) I want to say that the longest period that Pakistan has been under FATF grey list has been under the tenure of the Modi Government.

During the Modi Government from 2018 to 2022, for 1,576 days, Pakistan was in the Grey List. Yes, they were in the Grey List earlier also. I am not denying that. It was for a shorter period. But I again want the House to appreciate that the FATF meeting in May 2025 has kept Pakistan in the enhanced follow-up category, recognizing that the compliance of Pakistan is only partial.

Now, Sir, I have spoken so much for Pakistan. Some Members also raised issues pertaining to China. So, I would like to spend a few minutes on that. I would first like the House to appreciate this fact because today we are getting these lectures saying ?China is a great danger, China-Pakistan are together, we are warning you.? So, what does the Congress Party really think about China? Do not go by what they say. Let us see what they did.

In 2005, China was designated as a ?Strategic Partner? during Prime Minister Wen Jiabao's visit to India. There is a concept, a very famous concept called ?Chindia?, a belief that China and India have common interests, and the main proponent of ?Chindia? is the Party Spokesman of the people opposite. Now, some mention was made about visits, including my visit. Yes, I went to China. I went to China to make our position very clear about de-escalation, about trade restrictions and about terrorism. ? (*Interruptions*) I did not go to China for the Olympics. ? (*Interruptions*) I did not go to China for secret agreements. ? (*Interruptions*) Sir, the House should know that people were watching Olympics when China was issuing stapled visas for the people from Arunachal Pradesh and Jammu and Kashmir. ? (*Interruptions*) This is the reality of China. ? (*Interruptions*) Let me really tell you, Sir, how the relationship with China is. ? (*Interruptions*)

श्री अमित शाह : माननीय अध्यक्ष जी**,** आपको मंत्री जी को संरक्षण देना चाहिए। जब उनके स्पीकर बोल रहे थे तो हम पूरे धैर्य से सुन रहे थे। मैं बताउंगा कि कितनी असत्य बातें बोली गईं फिर भी असत्य को हम हलाहल समझकर पी गए। अब ये सत्य भी नहीं सुन पा रहे हैं?

माननीय अध्यक्ष जी**,** मुझे लगता है कि आपको प्रोटेक्शन देना चाहिए। सबको बैठे**-**बैठे टोकाटाकी करनी आती है**,** ऐसा नहीं है कि हमें नहीं आता है**,** मगर इतने गंभीर विषय पर जब चर्चा हो रही है तो क्या विपक्ष को सरकार के प्रमुख विभाग के मंत्री को बोलते हुए बैठे**-**बैठे टोकना शोभा देता है**?**

मान्यवर**,** आपको उनको बिल्कुल आग्रह से कहना चाहिए वरना हम भी अपने मैम्बर्स को बाद में समझा नहीं पाएंगे ।? (व्यवधान)

DR. SUBRAHMANYAM JAISHANKAR: Sir, we heard today a lot about what was supposed to be the thinking?? (*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष: आप बैठिए। आपको इज़ाजत नहीं दी गई है।

? (व्यवधान)

DR. SUBRAHMANYAM JAISHANKAR: Sir, we heard about warnings about China, cautions about China, China is planning this, China is planning that. But Sir, I want to remind this House that Doklam crisis was on and the Leader of Opposition decided to get a briefing from whom? It was not from the Government, not from the MEA, but from the Chinese Ambassador. ? (*Interruptions*) He took his briefing from the Chinese Ambassador when our military was confronting the Chinese military in Doklam. ? (*Interruptions*) This is a political thing. Let me tell you the economic thing.

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य, आप बैठे-बैठे टिप्पणी मत कीजिए। यह गलत है।

? (व्यवधान)

DR. SUBRAHMANYAM JAISHANKAR: Sir, I want to illustrate my points with facts. I spoke about political facts. I spoke about border facts. Let me give you an economic fact.

19.00 hrs

What is the economic thinking of the Congress Party regarding China? In 2006, the Congress Party agreed to do a regional trade arrangement with China. This was finalised during President Hu Jintao?s visit. A task force was set up, and it gave a positive recommendation. However, due to the efforts of various people, this agreement ultimately did not materialise.

Let me now speak about the technology side. The very individuals who today warn us about China are the same ones who allowed 3G and 4G technologies to come from China. It is this Government that ensured 5G was made in India.

Finally, we keep speaking about the border whether it is the border with Pakistan or China or any other border. Our military today is able to hold its ground. The massive deployments we

witnessed on the China border post-2020 became possible because our border infrastructure budget has gone up four times. Our capabilities in tunnelling, road construction, and bridge building have doubled or tripled. This is a far cry from the period when the thinking was not to develop the border because then the Chinese cannot come. We had 60 years of neglect of the border. Today, in the last 10 years, that neglect has been reversed. There is still much to be done.

I think people need to understand this. It is not just India. We have just returned from the Maldives. I hear comments about foreign policy. Day before yesterday, our Prime Minister was the guest of honour at the Independence Day of Maldives. This is the same country which, during their time, forced an Indian company out of an airport project. That very country has now invited India to build a new airport. Take Sri Lanka as another example. The Hambantota Port, built between 2005 and 2008, was then justified as having no impact on Indian interests.

So, I urge the House to recognise that those who are now portraying themselves as guardians of national security and giving us warnings should be judged by their own track record while in office.

Now, allow me to return to Operation Sindoor. I want to conclude by saying that the threat of cross-border terrorism continues. But Operation Sindoor marks a turning point. We have now a new normal. This new normal rests on five key principles: One, terrorists will no longer be treated as proxies. Two, Cross-border terrorism will get an appropriate response. Three, terror and talks cannot go hand in hand and we will only engage in talks on terror. Four, we will not bow to nuclear blackmail. Five, terrorism and good neighbourliness cannot coexist. Blood and water cannot flow together. This is our position.

Let me conclude by acknowledging the important role this House and the Upper House have played during this period in explaining our national position and our national interests on Operation Sindoor. We sent seven parliamentary delegations to 33 countries. Some remarks have been made about those delegations.

I must tell the hon. Member, Arvind Sawant ji that he is entirely misinformed. These delegations were received with great respect. In many nations, the Foreign Ministers personally

welcomed them. Please look at the tweets of people sitting next to you. That itself will tell you the whole thing.

माननीय अध्यक्ष : ये अपने बगल वालों से जानकारी ले लें।

DR. SUBRAHMANYAM JAISHANKAR: These seven delegations led by Ravi Shankar Prasad ji, Shashi Tharoor ji, Baijayant Panda ji, Sanjay Kumar Jha ji, Kanimozhi ji, Supriya Sule ji, and Dr. Shrikant Eknath Shinde ji made the nation proud. Every hon. Member ? Members from Opposition side, Members from Government side, public-spirited citizens, retired diplomats ? all of them were able to explain to the whole world our posture of zero tolerance against terrorism.

I would like to end my remarks with the hope that on an issue as important as the struggle against terrorism, we can only succeed in ensuring zero tolerance against terrorism if we have a united voice in this country against terrorism. There must not be any division of opinion on this matter. The way the parliamentary delegations behaved abroad, I hope the same solidarity will permeate the proceedings of the House. Thank you.

श्री मियां अल्ताफ अहमद (अनन्तनाग-राजौरी) : महोदय, मैं उस पार्लियामानी हलके से हूं, जहां पर यह पहलगाम का वाकया हुआ है। बदकिस्मती की बात है कि 26 बेगुनाह लोग उस हमले में मारे गए हैं। मेरे पास अल्फाज़ ही नहीं हैं कि मैं इस बुजदिलाना, अहमकाना और क्रूर अटैक का बयान कर सकूं। इसकी जितनी भी मज़म्मत की जाए, वह कम है और इसके लिए अल्फाज़ ही नहीं हैं। पूरी दुनिया इस वाक़िया से परेशान है। पूरी दुनिया में इस वाक़िया के बाद खौफ तारी हो गया है। पूरा जम्मू-कश्मीर भी बगैर किसी कॉल और प्रोग्राम के इस वाक़िया के खिलाफ खड़ा हुआ और उसकी मज़म्मत की है।

कई घर ऐसे भी हैं, बल्कि बहुत से घर ऐसे हैं, जहां उस दिन लोगों ने खाना भी नहीं खाया था और जहां उस दिन लोग सोए भी नहीं थे। यह जो वाक़िया हुआ है, उनके परिवारजन हमें टेलीविजन पर देख रहे होंगे, आज उनके ज़ख्म फिर ताजा हो रहे होंगे। हमें उन्हें यह भरोसा दिलाना है, हमें उन्हें यह बताना है कि हम उनके साथ हैं। यहां पर गृह मंत्री जी बैठे हुए हैं। मुझे यकीन है कि उन कातिलों को जरूर सजा मिलेगी, जिन्होंने यह काम किया है। हमारा आपसे यही मुतालबा है कि उन लोगों को सख्त से सख्त सजा दी जाए, ताकि पूरी दुनिया के साथ-साथ उनके खानदान के लोग भी यह देख सकें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस तस्वीर का दूसरा रुख़ भी है। जब दो मुल्कों के दरमियान लड़ाई हुई थी, जब यह ऑपरेशन शुरू हुआ था, तो राजौरी और पुंछ भी मेरे संसदीय हलके में आता है, बदकिस्मती की बात थी कि राजौरी और

पुंछ की सीमाओं पर दूसरी तरफ से गोलाबारी की गई, बाद में पाकिस्तान की तरफ से अटैक भी किया गया था, तो उस अटैक में 17 कीमती जानें चली गई थीं। उनमें बच्चे भी शामिल थे, उनमें बूढ़े भी शामिल थे और उनमें नौजवान भी शामिल थे।

पुंछ का शहर एक तारीख़ी शहर था और एक तारीख़ी शहर भी है। एक जमाने में वह एक रियासत थी। वहां पर सन् 1947 में भी जंग हुई थी, 1965 में भी जंग हुई थी और 1971 में भी जंग हुई थी, लेकिन आज पहली बार उस पुंछ के शहर पर बम के गोले गिरे थे। पुंछ के सारे शहर की पूरी आबादी वहां से चली गई। जब कोई आदमी वहां पर जाता था, तो वहां पर बहुत खौफ था। मैं उस अटैक के बाद वहां गया था, तब मैंने वहां देखा कि लोग अपनी जान बचाने के लिए अपने घरों में सामान और घरों को छोड़कर भाग गए थे।

इसी तरह राजौरी शहर में अटैक हुआ था, जिसमें 3 बेगुनाह लोग मारे गए। एडीशनल डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेंट कमिश्नर मिस्टर थापा, जो कि बेहतरीन और ऑनेस्ट ऑफिसर थे, जिन्होंने इस ?ऑपरेशन सिन्दूर? में सबसे अच्छा काम किया था, बदकिस्मती की बात थी कि उनके सरकारी मकान पर भी मिसाइल गिरी और उनकी जान भी चली गई। राजौरी शहर में कई मकानें, दुकानें, कारोबारी-इज़ारे और माल-मवेशी भी तबाह हुए। जब पुंछ में अटैक हुआ, तब होम मिनिस्टर साहब वहां गए थे। मैं होम मिनिस्टर साहब से कहना चाहता हूं कि जब वे पुंछ गए तो उन्होंने खुद वहां की

हालत देखी। वहां गुरुद्वारों पर भी अटैक हुआ, मस्जिदों पर भी अटैक हुआ और मकानों पर भी अटैक हुआ। वहां कितनी तबाही थी, कितना खौफ था और कितनी दहशत थी। हम अल्लाह-ताला से सिर्फ यही दुआ कर सकते हैं कि दोबारा से इन बॉर्डर एरियाज़ में ऐसी आफ़त न आए। बॉर्डर के लोगों ने हमेशा मुसीबतें देखी हैं, हमेशा प्रॉब्लम्स देखी हैं और हमेशा तकलीफ़ें देखी हैं। जिनका बहुत ज्यादा नुकसान हुआ है, उनको मुआवज़ा तो सरकार ने दिया है, लेकिन उन लोगों को और भी मुआवज़ा देने की जरूरत है, जिनको जानी नुकसान हुआ है। इनमें खासतौर से मकान वालों, दुकानदारों और बिज़नेसदारों को बहुत बड़ा नुकसान हुआ है।

माननीय अध्यक्ष जी, तीन दिन पहले जम्मू में एक 20 साल का परवेज़ नाम का लड़का पुलिस की फायरिंग में मारा गया। वह गुर्जर कम्युनिटी का लड़का था। मैं यह चाहता हूं कि इस तरह की जो भी इनोसेंट किलिंग्स हो रही हैं, होम मिनिस्टर साहब उनका नोटिस लें। उन लोगों के खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए, जो दिन-दहाड़े 20 साल के एक बच्चे को गोली मार देते हैं। अगर कानून उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं करेगा, तो लोगों का कानून से ऐतबार उठ जाएगा। यह वाक़या भी मैं आपके सामने इसलिए बयान करना चाहता हूं, क्योंकि कश्मीर में ऐसे वाक़यात होते हैं और फिर उन पर कार्रवाई नहीं होती है। होम मिनिस्टर साहब से मैं यह भी कहूंगा कि पहलगाम अटैक के बाद, ?ऑपरेशन सिंदूर? के बाद जो इनोसेंट लोग पकड़े गए हैं और यदि वे जेलों में हैं, तो उनके मामलों को दोबारा देखा जाना चाहिए। यह बहुत जरूरी बात है। जो लोग बेगुनाह हैं, वे बंद नहीं रहने चाहिए। इसके साथ ही साथ, जो बॉर्डर के एरियाज़ हैं, जहां पहले भी जंग ने

नुकसान किया है और आज भी बहुत बड़ा नुकसान हुआ है, वहां बुलेटप्रूफ एंबुलेंसेज़ होनी चाहिए और बंकर्स बनने चाहिए । यह सबसे बड़ी डिमांड थी। जो कोई भी वहां गया था, उसने इस बात की डिमांड की थी।

रेलवे मिनिस्टर साहब यहां पर मौजूद हैं। आज ट्रेन कटरा तक चल रही है। वह ट्रेन कटरा से कश्मीर तक भी चल रही है। नेशनल इंट्रेस्ट में यह होना चाहिए कि राजौरी और पुंछ में भी रेल लाइन बने, क्योंकि राजौरी और पुंछ में हजारों की तादाद में फौज के नौजवान रहते हैं, बीएसएफ के लोग रहते हैं, सीआरपीएफ के लोग रहते हैं। इससे वहां के रहने वाले मुकामी लोगों को एक सहूलियत मिल सकती है। इसके साथ ही साथ मेरी यह गुजारिश है कि उन इलाकों में, जहां ये वाक़यात हुए हैं, वहां पर कुछ न कुछ ऐसे इंतजामात किए जाएं, जिससे आइंदा अगर ऐसे वाक़यात हों, तो जो मुकामी आबादी है, जो निहत्थे लोग हैं, जो शरीफ लोग हैं और जो बेगुनाह लोग हैं, वे इसकी ज़द में न आ जाएं।

बहुत-बहुत शुक्रिया।

श्री छोटेलाल (राबर्ट्सगंज) : अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद।

मैं समाजवादी पार्टी की ओर से हमारे नेता, पीडीए के मसीहा, देश-प्रदेश के करोड़ों युवाओं के प्रेरणास्रोत और देश के भविष्य माननीय श्री अखिलेश यादव जी के आदेश से आज एक बेहद गंभीर विषय ?पहलगाम आतंकी हमला? पर बोलने के लिए सदन में खड़ा हुआ हूं।

अध्यक्ष महोदय, पहलगाम में हमारे पर्यटकों पर आतंकी हमला हुआ, जो सिर्फ एक आतंकी हमला नहीं था, अपितु यह हमारे राष्ट्रीय सम्मान पर एक घिनौना प्रहार था। परंतु, इससे भी अधिक दुखद घड़ी वह थी, जब देश के सम्माननीय प्रधानमंत्री जी इस घटना पर बिना कुछ बोले दूसरे ही दिन बिहार में सभा को संबोधित करने चले गए। जब देश जल रहा हो, जब राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे के सम्मान पर आंच आई हो, तब देश के प्रधानमंत्री जी बिना कुछ बोले शांत रह जाते हैं। यह दुर्भाग्य नहीं, बल्कि देश के मुंह पर तमाचा है।

सेना के शहीदों पर चुनावी भाषण देने वाले प्रधानमंत्री जी अब इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना पर मौन क्यों बैठे हैं? इस घटना में मारे गए पर्यटकों के परिवारजन पूछ रहे हैं कि जब कैमरे होते हैं, तब आंसू बहाते हैं, लेकिन, जब जवान शहीद होते हैं, तब सत्ता में बैठे लोग ईवेंट मैनेजमेंट में लगे रहते हैं और फोटो खिंचवाते हैं।

अध्यक्ष महोदय, यह वही सरकार है, जिसने पुलवामा के नाम पर चुपचाप शूटिंग जारी रखी और यह वही सरकार है, जब मणिपुर जलता रहा, तब भी यह मौन धारण किए रही। प्रयागराज में कुंभ मेले के दौरान हुई भगदड़ की घटना में मारे गए लोगों और घायलों का कोई आंकड़ा प्रस्तुत नहीं किया गया। न ही रेलवे स्टेशन पर हुई घटना के पूर्ण आंकड़े प्रस्तुत किए गए। वैसे ही पाकिस्तान के चारों आतंकियों का आंकड़ा पेश नहीं किया गया, जो आतंकी आए थे और पर्यटकों को मारकर चले गए, वे मारे गए या नहीं मारे गए, इसका कोई आंकड़ा पेश नहीं किया गया।

<u>**19.16 hrs**</u> (Kumari Selja *in the Chair*)

सभापति महोदया, आज मैं आपके माध्यम से सदन से पूछना चाहता हूं कि क्या यही न्यू इंडिया है, जहां प्रधानमंत्री जी शोक पर भी राजनीति करेंगे, सभा करेंगे? क्या यही है अमृतकाल, जहां देश के मुखिया सदन से भाग रहे हैं और विदेश जा रहे हैं? क्या प्रधानमंत्री जी सिर्फ ?मन की बात? करेंगे? क्या वे देश की बात नहीं करेंगे, किसानों की बात नहीं करेंगे?

सभापति महोदया, जब वे सदन में नहीं रहेंगे, सदन में माननीय सदस्यों की बात नहीं सुनेंगे, तो कैसे जवाब दे पाएंगे? आप 11 सालों में विदेशों में घूमे हैं, लेकिन जब भारत को सपोर्ट करने का समय आया, तो किसी देश ने आपका साथ नहीं दिया। ? (व्यवधान) इसलिए, आपको कमजोर प्रधानमंत्री माना गया। 200-300 किलोमीटर दूर बहुत ही खतरनाक हथियार एके-47 और एम-4 कारबाइन साथ लेकर चार आतंकी बॉर्डर पार करके भारत चले आए और हमला करके चले गए। आम नागरिकों, पर्यटकों की क्रूरतापूर्वक हत्या करके आसानी से चले गए।

महोदया, पाकिस्तान बॉर्डर से भारत के बीच के बहुत ही बड़े शहर जैसे अमृतशहर, गुरदासपुर, पठानकोट, कठुआ, जम्मू, उधमपुर, पटनी टॉप, रामबन, बनीहाल, अनंतनाग हैं। इन जगहों को पार करके आतंकी पर्यटक स्थल पहलगाम तक कैसे पहुंचे? सारी सुरक्षा एजेंसियां क्या कर रही थीं? यह भारतीय सुरक्षा के संदर्भ में बहुत बड़ा सवाल है। हमारे प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि हमें युद्ध नहीं चाहिए, बुद्ध चाहिए। इसी कारण पाकिस्तान, चीन इत्यादि देश इन्हें कमजोर प्रधानमंत्री समझकर बराबर हमारे देश पर आतंकी हमला करते रहते हैं। भाजपा की सरकार के दौरान ही अधिकतर हमले चुनाव के आसपास होते रहते हैं।

मित्रों, आपसे मैं सवाल करना चाहता हूं कि हमारे प्रधानमंत्री जी चुप क्यों बैठते हैं? वे सदन में क्यों नहीं आते हैं? याद करनी चाहिए वर्ष 1965 की लड़ाई, याद करनी चाहिए वर्ष 1971 की लड़ाई और वर्ष 1857 को भी याद करना चाहिए, जब देश गुलाम था और गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई भारत मां कराह रही थी। हमारे देश के क्रांतिकारी, रण बांकुरे, जाबांज सिपाहियों ने इस वतन की बल वेदी पर आत्म आहुति देकर इस देश को आजाद करवाया था। वहीं पश्चिम बंगाल की धरती से नेता सुभाष चन्द्र बोस ने ललकारा था ? ऐ हिंदुस्तानियों, तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा। झारखंड और बिहार की धरती से नीलांबर, पीतांबर, खरवार की धरती से तलवार चमक रही थी कि ऐ अंग्रेजों, भारत छोड़ो, वर्ना पिस्तौल की ये गोलियां तुम्हारे जबड़े में उतार दी जाएंगी। ?हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, आपस में हैं सब भाई-भाई?, इस तरह इन सबने मिलकर देश को आजाद करवाया, तो क्या ऐसे आतंकी हमले होने के लिए देश को आजाद करवाया?

जब हमारे देश के जवान पाकिस्तान में घुसकर मार रहे थे, तो क्या कारण था कि ट्रंप ने सीज़फायर करवा दिया? इसलिए, मित्रों, आपसे मेरा कहना है कि ?

यह कसम है जवानी की, जागो जवानों,

जरा गर्व से सिर उठाना तो सीखो,

जो तीर तुम पर चलाया है जालिम,

वही तीर उस पर चलाना तो सीखो।

अब पहलगाम के संदर्भ में भी वही चुप्पी साधे हैं। हमारे पीडीए के नेता माननीय अखिलेश यादव जी, विपक्ष के नेता माननीय राहुल गांधी जी, अन्य सभी विपक्षी पार्टियों के नेताओं द्वारा संसद के मुख्य मार्ग पर लगातार धरना-प्रदर्शन दिए जाने के बाद अब सदन में चर्चा हो रही है। अब स्वीकार किया गया कि सदन में चर्चा होगी, अन्यथा लोग चर्चा भी नहीं करते हैं। ये देश के प्रति और मारे गए लोगों के परिवारों के प्रति कितने संवेदनशील हैं? मेरा आपसे कहना है कि क्या माननीय प्रधानमंत्री जी सिर्फ चुनाव जीतने के लिए कार्य करते हैं? क्या प्रधानमंत्री जी की संसद के प्रति कोई जिम्मेदारी नहीं है? क्या शहीदों के प्रति उनकी संवेदना नहीं है? भाजपा को सत्ता चाहिए, लेकिन जवाबदेही नहीं है। इसलिए भारतीय जनता पार्टी से मेरा आग्रह है कि आप जवाबदेह बनें और सदन में आकर जवाब दें। उन्होंने राष्ट्रवाद का चोला ओढ़कर सेना की शहादत को भी प्रचार को जरिया बना डाला। धन्यवाद। नमस्कार। प्रणाम। जय भीम, जय समाजवाद।

श्री अर्जुन राम मेघवाल : माननीय सभापति महोदया, मुझे एक अनाउंसमेंट करना है। माननीय मंत्री और संसद सदस्यों के लिए रात्रि भोज की व्यवस्था एमपी डाइनिंग रूम फर्स्ट फ्लोर पर संसद भवन में की गई है। कृपया, माननीय सदस्यगण सुविधा के अनुसार आज सांय 8 बजे के बाद सुरुचि भोज का आनंद लें।

श्री तेजस्वी सूर्या (बंगलौर दक्षिण) : मैडम, थैंक्यू। आपने मुझे इस महत्वपूर्ण चर्चा में बात करने का मौका दिया। मैं सबसे पहले पहलगाम अटैक में जितने भी लोगों की शहादत हुई है, उन सबके प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं। उनमें तीन लोग कर्नाटक से थे और मेरे संसदीय क्षेत्र से दो लोग थे। उन सभी परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं।

Madam Chairperson, the Operation Sindoor led by the Indian Army showed the world that no terrorist is safe anywhere in Pakistan. वे जहां भी हों, भारत उनको ढूंढेगा और न्यूट्रलाइज करेगा। This was the resolve that Bharat Sarkar under the leadership of Narendra Modi displayed during Operation Sindoor. ?ऑपरेशन सिंदूर? का जो मिलिट्री एक्शन था, वह इससे पहले के सभी मिलिट्री एक्शन से बहुत अलग था। इसमें और उन सब मिलिट्री एक्शन में बहुत फर्क था। This action was a new-generation warfare unlike all earlier warfare, which were more conventional. In this, we had foreign-supplied drones, unmanned aerial vehicles, precision-guided missiles, electronic warfare, a deceptive information warfare. ये सब चल रहा था। And the strength of the Indian Armed Forces was proved to be second to none in the world because 80 per cent of Pakistani weapons are imported from China and it

was India?s air defence systems that had the ability to pierce through these Chinese defence systems and we could reach our intended targets in a precise manner.

The world today has accepted that India?s military action through Operation Sindoor is a comprehensive and a total military success. It was precise. It was non-escalatory. But at the same time, it had devastating effects on the enemy.

All of these years, no cost was paid by Pakistan for their misadventures. But since 2014, the new normal has changed, and if Pakistan dares to attack India, they will have to not bear the brunt of one eye for both the eyes, not one tooth for another tooth; but both the eyes for one eye, the whole jaw for one tooth. This is the new normal that Bharat has established.

इससे पहले जब भी भारत ने मिलिट्री एफर्ट के माध्यम से अचीवमेंट हासिल किए थे। Diplomatically on the discussion table, हमने उसको गंवा दिया। इतिहास में कई उदाहरण हैं, जिनका उल्लेख वर्ष 1948 में कई बार आया है। Our armed forces had breached the LoC and all of what is known today as Pakistan Occupied Kashmir was in our control. It was this Congress Party and its leadership of that time that surrendered all of Pakistan Occupied Kashmir, and what military achievement we had gained, we squandered on the diplomatic table. वर्ष 1965 में भी वही हुआ, 1971 में भी वही हुआ, but the difference this time is the military achievement that we achieved in ?Operation Sindoor? was crystalized and strengthened through our diplomatic onslaught that was led by the multi-party delegations and effectively led by the Prime Minister and the External Affairs Minister. मैं आपको एक उदाहरण देना चाहता हूं। आज यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका ने टीआरएफ को designated terrorist organization के रूप में प्रिसक्राइब कर दिया है। शशि जी के नेतृत्व में मैं उस डेलिगेशन का हिस्सा था, जिसमें शशांक जी भी मेरे साथ थे। हम कोलंबिया में थे। Colombia had given a statement in support of Pakistan. After our intervention, Colombia withdrew its statement and gave a statement in favour of India. Every country in the world which matters has stood with India, this is the diplomatic strength that has been gained. मुझे परशुराम जी की एक युक्ति याद आ रही है। उन्होंने कहा था ?

?अग्रतुष चतुर्वेदा: पृष्ठत: सशरं धनु: ।

इदं ब्राह्मं इदं क्षात्रं शापादपि शरादपि ।?

उसी प्रकार से आज भारत डिप्लोमेटिक्ली और मिलिट्रली, दोनों युद्ध में तैयार है, and we are ready to win at the diplomatic front and we are ready to win at the military front. आज हमने कांग्रेस के जितने भी साथियों के भाषण सुने हैं। मुझे बहुत अजीब लग रहा था, क्योंकि कांग्रेस पार्टी के नेता बदलते हैं, लेकिन कांग्रेस पार्टी की नीति वही है। वर्ष 1947 से लेकर आज तक कांग्रेस पार्टी की जो कंसिस्टेंट पॉलिसी है वह भारत और भारत के सशस्त्र बल को सिस्टमेटिक्ली और डेलिबरेटली कमजोर करने की एक पॉलिसी है। मैं इसका उदाहरण देना चाहता हूं। At the very beginning of our independence, at the dawn of this nation as an independent country, पंडित नेहरू जी की एक स्प्लिटेड पॉलिसी थी कि भारत को आर्मी की जरूरत ही नहीं है। जनरल लॉकहार्ट के पास बैठकर कहते हैं कि ?Rubbish, total rubbish. No plan of modernization of Army is required. India?s policy is *Ahinsa,* we do not need the Army. Police will do its job.? यह नेहरू जी की सरकार की स्प्लिटेड पॉलिसी थी and this did not remain isolated in 1947. When Shri A K Antony was the Defence Minister, it was the stated policy.

Madam, my party has allotted me 15-20 minutes time, please give me the time given by my party. Madam, they had a deliberate policy of not building border infrastructure और देश की आर्मी में जाति की गणना का काम भी कांग्रेस पार्टी ने किया था। मैं बेंगलुरू से आता हूं और बेंगलुरू की एचएएल हो, डीआरडीओ हो, ऐसे कई सारे इंस्टीट्यूशंस को इन लोगों ने डेलिबरेट्ली कमजोर किया है। दस साल पहले एचएएल के पास ऑर्डर बुक्स नहीं थीं। आज एचएएल के पास एक लाख करोड़ रूपये से ज्यादा ऑर्डर बुक मेक इन इंडिया, नरेन्द्र मोदी जी के मेड इन इंडिया की वजह से है। It was a deliberate, consistent strategy to weaken the Armed Forces. राफेल की बात हो रही थी। The country remembers how the Leader of the Opposition in an extremely irresponsible fashion tried to derail the acquisition of the all important Rafale and they also tried to derail the acquisition of Tejas into the Armed Forces. If it was not our Defence Minister Shri Manohar Parrikar, today LCA Tejas would not have been a reality in this country. They had tried to kill all of these ?Made in India? defence projects.

मैडम, तीन साल पहले जनरल विपिन रावत जी ने एक बहुत महत्वपूर्ण कार्यक्रम में देश को बताया था that India should be ready to face the 2.5 front war. मैं आज इस देश को इस महत्वपूर्ण सदन से बताना चाहता हूं कि जो द जीरो पॉइंट फाइव फ्रंट है, वह कांग्रेस पार्टी और इसके इको-सिस्टम है, जो भारत के अंदर से भारत को खोखला करने के लिए काम कर रहा है। मैं बहुत जिम्मेदारी से यह बात कह रहा हूं। मैं तथ्य के साथ इसको प्रूव करूंगा।

मैडम, आज कांग्रेस पार्टी टेररिज्म की बड़ी-बड़ी बातें कह रही थीं। But what has been the consistent policy of Congress Party towards terrorism? मैं एक ही उदाहरण देना चाहता हूं। वर्ष 2004 में जब इनकी सरकार सत्ता में आई तो what was the first step that they took? It was to repeal the POTA Act. वर्ष

2001 में पार्लियामेंट अटैक के बाद भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में देश को सुदृढ़ बनाने के लिए, टेररिज्म को खत्म करने के लिए for the first time in this country, we introduced a legislative framework. ...

HON. CHAIRPERSON : Now, I am in the Chair.

? (*Interruptions*)

SHRI TEJASVI SURYA: Madam, I want to remind you. ? (*Interruptions*) Madam, when Rajiv Gandhi ? (*Interruptions*) राजीव गांधी जी की डेथ का ट्रायल चल रहा था। ? (व्यवधान) राजीव गांधी जी की टेररिस्ट से हुई डेथ का ट्रायल चल रहा था। The trial court said that ?we do not have exclusive terror legislations to prosecute?. This was the state of affairs in this country. वर्ष 2001 के बाद हमने पोटा कानून लागू किया, लेकिन आपने सरकार में आते ही सबसे पहले पोटा को रद्द किया। You removed POTA. आपने क्यों किया? आपने वोट बैंक के कारण पोटा को बंद किया और उसके बाद 10 साल तक देश में हर दिन टेररिस्ट अटैक रूटीन बन गया था। मैं आपको एक लिस्ट बताना चाहता हूं। आप देखिये। पोटा को खत्म करने की वजह से इस देश में किस प्रकार से नुकसान हुआ? 05 जुलाई, 2005 को अयोध्या में राम जन्म भूमि में टेररिस्ट अटैक हुआ। आपने क्या किया, निंदा की। 28 जुलाई, 2005 को जौनपुर में श्रमजीवी एक्सप्रेस पर अटैक हुआ। 15 से अधिक लोगों की मृत्यु हुई। आपने क्या किया, निंदा की। 29 अक्टूबर को दिल्ली में अटैक हुआ, दिसंबर, 2005 में बेंगुलरु के आईआईएससी में अटैक हुआ, फरवरी, 2006 में गुजरात के अहमदाबाद स्टेशन पर अटैक हुआ। मार्च, 2006 में वारणसी के कंटोनमेंट स्टेशन पर अटैक हुआ। 11 जुलाई, 2006 को मुम्बई महाराष्ट्र ट्रेन पर अटैक हुआ। 300 से अधिक लोगों की मृत्यु हुई। मालेगांव, महाराष्ट्र में 2006 में अटैक, पानीपत, हरियाणा में 2007 में अटैक, वर्ष 2007 में हैदराबाद में मक्का मस्जिद में अटैक, अगस्त, 2007 में हैदराबाद में फिर से लुम्बिनी गार्डन के गोकुल चाट पर अटैक हुआ। लखनऊ में अटैक हुआ। वर्ष 2008 में रामपुर, उत्तर प्रदेश में अटैक हुआ। 27 सितंबर, 2008 को दिल्ली के करोल बाग में अटैक हुआ। इस प्रकार से लिस्ट बहुत लम्बी है। In just ten years of the UPA Government between 2004 and 2014, more than 8,000 civilians were killed because of terrorist attacks in this country. आपने एनआईए को वीक किया। जो कानून था, आपने उस कानून को ध्वस्त किया। आप सुनिये। ? (व्यवधान) मैं आपको बताता हूं कि हमने कैसे एनआईए को मजबूत किया?

Madam, it was this deliberate ploy of weakening this country from within, by deliberately weakening the institutions of this country, that led to 8,000 innocent civilians being killed because of terrorist attacks and this was also the position in Kashmir. Every Friday, there were incidents of stone-pelting. Every Friday, there was a plan for the next calendar of terrorist attacks. It was

only after Amit Shah ji introduced the Constitution Amendment Bill to remove Article 370 that, I have seen a great decline of terrorist attacks in Jammu and Kashmir. It happened in our Government.

Madam, in 2004, when Congress repealed POTA, what were Governments of the world doing? वर्ष 2001 में 9/11 के अटैक्स हुए थे। 9/11 के अटैक्स के बाद विश्व में हर देश अपने लेजिस्लेटिव फ्रेमवर्क को टेररिज्म के खिलाफ अपने फाइट को और ताकत दे रहा था। But, here, we had a Government in India, unfortunately, that deliberately chose a State policy to weaken the fight against terrorism. There is only one political party in the whole world which chose deliberately and very thoughtfully to repeal an anti-terror legislation, and the infamy of that happens to the Congress party. The history of the country will remember it.

मैडम, आज सरेंडर के बारे में बात हो रही है। एक-दो दिन पहले मैं देख रहा था कि कांग्रेस के पूर्व गृह मंत्री एक इंटरव्यू में बोले हैं। वर्ष 1965 में, जब शास्त्री की सरकार थी, तब सोवियत यूनियन के इंटरवेंशन के साथ हमने सीजफायर किया था। उन्होंने बोला कि हम एक्सेप्ट कर रहे हैं। He said that ?we are accepting that the Soviet Union had actually created the ceasefire. Why are you not doing it?? I want to remind the Congress Party that the Bharatiya Janata Party and the leadership under Narendra Modi is not habituated like you to perform actions for the country on the behest of foreign forces.

In 2008, there was a very interesting speech of Arun Shourie ji. ? (*Interruptions*) Madam, I will conclude in three minutes. There is a very interesting speech of Arun Shourie ji. आजकल अरुण शौरी जी के कई सारे स्टेटमेंट्स ये लोग क्वोट कर रहे हैं। अरुण शौरी जी जब राज्य सभा में बात कर रहे थे, तब उन्होंने बताया था that the Government should stop running to mummy. By mummy, he meant the United States. I want to remind again today, that the Congress Party, especially under its present leadership, should stop running to mummy क्योंकि मम्मी तक जाना, मम्मी पर निर्भर होना इस पार्टी के नेताओं की परंपरा बन गई है। This is a country that will stand on its own feet and respond in its own right.

मैडम, मैं आपको यह भी बताना चाहता हूं कि देश के प्रधान मंत्री जी की विदेश नीति के ऊपर बहुत बड़ा प्रश्न आज विपक्ष ने उठाया है। In a very ... manner, in a very irresponsible manner, the Leader of the Opposition is using and coining the word ?surrender and surrender?. Madam, I want to tell you, Narendra Modi ji is the defender of India, and they are the surrendering forces of the country.

मैडम, आप 30 सेकेण्ड्स दीजिए, मैं कन्क्लूड कर रहा हूं। जब उरी अटैक हुआ था या जब बालाकोट अटैक हुआ, तब हमने पाकिस्तान को घर के अंदर घुसकर मारा। Narendra Modi showed, he is the defender of India. वर्ष 1965 में, जब आपने सोवियत यूनियन के दवाब में सीजफायर घोषित किया था, you had surrendered. That is surrender, and this is defender. ये फर्क है। पीएम मोदी ने राफेल खरीदे।

माननीय सभापति : दो मिनट्स हो चुके हैं।

श्री तेजस्वी सूर्या : मैडम, प्लीज 30 सेकेण्ड्स दीजिए।

माननीय सभापति : आपको दो मिनट ज्यादा मिल चुके हैं। आप अपनी बात खत्म करिए।

श्री तेजस्वी सूर्या : मैडम, हमने तेजस को इंडक्ट किया। This is defender. आपने विदेशी शक्तियों के सामने भारत को सरेंडर किया। This is your history.

Madam, PM defended India's interest by providing indigenous strength to India's defence sector through Make in India. You surrendered it to China and other adversaries, including important emerging technologies like 3G and 4G. This is the surrender of the Congress Party.

मैं कनक्लूड कर रहा हूं।? (व्यवधान) The Congress Party?s thinking has not changed. वर्ष 2001 में पार्लियामेंट में टेररिस्ट अटैक होने के बाद, कांग्रेस पार्टी के पूर्व गृह मंत्री पी. चिदम्बरम जी ने कहा था। ?(व्यवधान) I will give a benefit of doubt to Afzal Guru and I doubt if he was involved in the terrorist attack.? (व्यवधान)

माननीय सभापति : प्रणिती जी, आप बोलिए।

सुश्री प्रणिती सुशीलकुमार शिंदे (शोलापुर) : सभापति महोदया, मैं आज इस सदन में क्रोध, वेदना और अपमान की भावना लेकर खड़ी हूं। अपमान उन सिपाहियों का जिनको सीजफायर की ऑर्डर अपने देश के प्रधान मंत्री से नहीं बल्कि एक विदेशी से मिला। वेदना उन परिवारों की जिन्होंने पहलगाम के आतंकी हमले में अपने परिजनों को खो दिया और क्रोध इस सरकार पर जो आज पहलगाम के आतंकी हमलावरों को न पकड़ पाई है और न ही उनके कुछ सुराग ढूंढ पाई है। ऑपरेशन सिंदूर नाम सुनने में देश भक्ति का लगता है, लेकिन असल में यह सिर्फ मीडिया पर किया सरकार का एक ? था। कोई नहीं बता रहा है कि इस ऑपरेशन में हासिल क्या हुआ? कितने आतंकी पकड़े गए? हमारे कितने फाइटर जेट्स गिराए गए? इसके लिए कौन जिम्मेदार है, किसकी गलती है? इसका हिसाब देने का दायित्व इस सरकार का है। मगर देश में सवाल पूछने पर ही पाबंदी है, क्योंकि यह सरकार सवाल सुनना ही नहीं चाहती है, बल्कि यह सरकार जवाबदेही से ही भागती है।

सभापति महोदया, आज की परिस्थितियों को देखकर मुझे रोम में बनी कोलोसियम की याद आती है। विश्व की सबसे अविस्मरणीय और पुरानी इमारतों में एक है। रोम में बनी कोलोसियम मध्य एशिया की कलाकृति और निर्माण क्षमता एक अभूतपूर्व मिशाल है। पर, इसके अलावा वह एक गंदी और घिनौनी राजनीति का भी प्रतीक है। कहा जाता है कि इसका निर्माण उस समय की जनता को खेल और मनोरंजन में उलझाए रखने के लिए किया गया था ताकि जनता का मूल मुद्दों पर से ध्यान भटक जाए। कुछ ऐसा ही आज हमारे देश की सरकार करती प्रतीत हो रही है। पर, अब खेल और मनोरंजन ही काफी नहीं है - किसी महत्वपूर्ण इलेक्शन के पहले आतंकी हमला और फिर सरकार की जवाबी कार्रवाई। आतंकी कहां से आए, कहां गए, यह सरकार को कुछ नहीं पता और हमें पड़ोसी देश पर आक्रमण करना है और उसके आधार पर वोट बटोरना है।

पहलगाम के आतंकी हमले मारे गए बेगुनाहों की अभी चिता भी ठंडी नहीं हुई थी कि देश के प्रधान मंत्री जी बिहार में चुनावी रैली सम्बोधित करने गए। कोई जिए, कोई मरे, इनको कुछ फर्क नहीं पड़ता है। ये 24/7 चुनावी मोड में रहते हैं। फिर साहब की मार्केटिंग की तरकश से नया तीर आया ? ऑपरेशन सिंदूर। मुझे हमारी सेना की बहादुरी और वीरता पर बिल्कुल संदेह नहीं है। पर, इस सरकार की दुर्जनता की सीमा देखिए कि सेना के जवानों को लड़ने जरूर भेजती है, पर हमला होने के पहले दुश्मनों को अगाह भी कर देती है। हां, ये हमारे परराष्ट्र मंत्री जी का ब्यान था। क्या यही कारण था कि हमारे जेट्स दुश्मन के द्वारा गिराए गए? क्या यह हमारी सेना के जवानों के साथ खिलवाड़ नहीं थी? खैर, जो इंसान मानता हो कि इस सेना की जवान की तुलना में एक व्यापारी ज्यादा खतरा मोल लेता है, उससे हम और क्या अपेक्षा करें?

यह मूर्खता है या देशवासियों को मूर्ख बनाया जा रहा है। ?ऑपरेशन सिंदूर? से देश को क्या हासिल हुआ? अमेरिका के दबाव में किया गया एक शर्मनाक सीजफायर। फॉरेन पॉलिसी ऐसी कि मित्र देशों ने आतंकवाद की निंदा तो की, पर पाकिस्तान की नहीं।

सभापति महोदया, प्रधान मंत्री जी कहते हैं कि ?ऑपरेशन सिंदूर? का जश्न मनाने का पर्व है। प्रधान मंत्री जी किस बात का जश्न मनाएं? हमले के पहले आपके विदेश मंत्री दुश्मन को हमले की पूर्व सूचना देते हैं, उसका जश्न मनाएं? इसी का असर यह था कि हमारे जेट्स गिराए गए, क्या इसका जश्न मनाएं या फाइटर जेट्स जो क्षतिग्रस्त हुए हैं, उनके पायलट्स का क्या हुआ?

इस देश को अभी तक उसकी जानकारी नहीं है, क्या हम उसका जश्न मनाएं, सीज फॉयर का ऐलान इनके कथित मित्र ट्रम्प करते हैं। इससे हमारी देश की तीनों सेनाओं का मानसिक खच्चीकरण हुआ, क्या उसका जश्न मनाएं। पहलगाम के आतंकवादियों का अभी तक कोई सुराग नहीं मिला, क्या इसका जश्न मनाएं? इंटरनेशनल कम्युनिटी में भारत की इतनी कमजोर स्थिति अब तक कभी नहीं हुई थी।

मोदी जी, हर चीज को इवेंट मत बनाइए, अपने मन की बात छोड़कर देशवासियों के सवाल का जवाब देने की भी हिम्मत दिखाइए। याद आती है, जब इंदिरा गांधी के सामने पाकिस्तान ने सरेंडर किया था, हार्ड लाइनर रिचर्ड निक्सन जैसे राष्ट्रपति को भी इंदिरा गांधी जी की बात सुननी पड़ी थी। विदेश नीति की हालत तो और भी शर्मनाक है। हमारे पड़ोसी देश नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका जो कभी भारत के सबसे करीबी थे, आज हमारी पीठ पीछे चीन से हाथ मिला रहे हैं। एक समय था, जब भारत के पास नेबरहुड फर्स्ट की नीति थी, लेकिन आज हमारे पड़ोसी हमें लास्ट प्रायोरिटी मानते हैं।

चेयरपर्सन मैडम, विदेश जाकर इंडियन डायसपोरा के साथ तस्वीर खिंचवाना ही विदेश नीति बन गई है। सरकार प्रश्नपत्र भी खुद बनाती है और उत्तर भी खुद तय करती है। जनता से कोई संवाद नहीं, पार्लियामेंट में कोई ट्रांसपरेंसी नहीं, यह सरकार केवल प्रचार की मशीन बन कर रह गई है, पहलगाम के शहीदों के परिवारों को जवाब कौन देगा? सरकार की कूटनीतिक असफलता का जवाब कौन देगा? चीन की बढ़ती घुसपैठ और पड़ोसी देशों की बेरुखी का जवाब कौन देगा? अगर सरकार जवाब नहीं देती है तो सरकार को सत्ता में बने रहने का कोई अधिकार नहीं है। विपक्ष का हर सांसद लोगों के सवालों को उठाता रहेगा। अगर सरकार सवालों से डरती है तो कुर्सी छोड़ो, यह कुर्सी और पद जवाबदेही का है, सिर्फ इवेंट सेलिब्रेशन का नहीं है।

अंत में, मैं इतना ही कहना चाहूंगी,

आवाज न सुनी हमारी कुछ गम नहीं,

मजलूमों की चीखें तो सुन लीजिए,

मन की बातें बहुत कर ली साहब,

वक्त मिले दो देशवासियों की गुहार भी सुनी लीजिए।

थैंक्यू स्पीकर मैडम, जय हिन्द।

SHRI SUNIL DATTATREY TATKARE (RAIGAD): Hon?ble Chairperson, I would like to thank you for giving me this opportunity to speak on the special discussion on Operation Sindoor through which we have given a befitting and direct reply to Pakistan. I also take this opportunity to thank this government and Prime Minister Modiji for the inclusion of Chhatrapati Shivaji Maharaj?s Raigad Fort in Unesco World Heritage sites list. We celebrated Kargil Vijay Divas too days ago and we have been discussing Operation Sindoor today.

I have heard the speechs of opposition leaders and also came to know about the hatred and malice they are holding against Prime Minister Modiji and Shri Amit Shah. In the year 1993, when there was a serial bombblast in Mumbai a very tragic incident took place and, our then Home Minister did not visit the site. But, after the Pehalgam attack of 22 April in which 26 people were killed, our Home Minister Shri Amit Shahji visited Pehalgam. Hon?ble Sharad Pawarji once visited this kind of site after the Mumbai Stock Exchange Building was demolished. No other Home Minister has ever visited the Bomb attack site.

While criticizing each others, we should keep in our minds that already many terrorist attacks have taken place in our country, In the year 1993, 2006, and on 26/11, the terrorists attacked Mumbai city which is the financial capital of India.

Our Hon?ble Prime Minister Narendra Modi, Home Minister Amit Shah and Defence Minister Rajnath Singhji and our Military leadership demonstrated maturity and strategic wisdom through Operation Sindoor and destroyed the terror camps in Pakistan territory. I have no words to express my feelings.

The earlier government were completely failed to counter and control terrorist attacks but our Prime Minister Narendra Modiji?s strong leadership has made it clear that this new India can go to any extent against Terrorism. We have emerged as a new military power. Earlier, we used to import military equipments and weapons, but today we are not only manufacturing it in our country but also exporting it to other countries. While discussing Operation Sindoor, we must also keep all these things in our minds.

One more thing, I would like to mention here. Shri Atal Bihari Vajpayeeji once appreciated Indira Gandhiji for 1971 war victory. But today, the opposition leaders are not ready to recognize the contribution of our Prime Minister. We must consider the importance of sovereignty and integrity of our country and also the constitution of India written by Dr. Babasaheb Ambekarji. We are growing stronger day by day and we all should come together to give impetus to it.

The Union Government under the leadership of Prime Minister Modiji has highlighted and showcased the military action taken under Operation Sindoor worldwide through the All-Party

delegation led by our two dynamic women leaders Smt. Kanimozhi and Smt. Supriya Sule. Under PM Modi?s leadership, we have given a clear message to Pakistan that India will not tolerate, but respond. Our neighboring countries would not dare to take any action as we have destroyed the terrorists camps.*

आतंकी को एक बार कामयाब होना है और सुरक्षा बलों को हर बार कामयाब होना है। कई बार हम बहुत आसानी से सुरक्षा बलों के ऊपर उंगली उठाते हैं और इंटेलीजेंस को सवाल करते हैं। भारत की धरती पर कोई आतंकी हमला हो तो हमारा खून खोलना स्वाभाविक है लेकिन हमें भूलना नहीं चाहिए कि सीमा पार से आने वाले आतंकी को सिर्फ एक बार कामयाब होना है और हमारे जवानों को हर बार कामयाब होना है।

Our military leadership is very strong and capable to face any kind of threat and challenge.

झूठ के बल पर कोई कितना उछल ले, उसकी उड़ान बहुत छोटी होती है। ऑपरेशन सिंदूर को लेकर बहुत झूठ फैलाया गया, दुनिया के बड़े-बड़े चैनलों और अखबारों से फैलाया गया, लेकिन सबूत मांगने पर सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।

I am also proud of being NDA ally and Shri Narendra Modi ji for becoming second longest-serving PM in consecutive terms. We are ready to confront with the foreign powers but at the same time, we should be careful about the internal challenges. During Lok Sabha Elections, the opposition parties tried to misguide the people of India and started preaching that our constitution would be amended if NDA came to power. But, this Government is trying to strengthen our democratic setup through the powers enshrined in our constitution. Modi Government and our military leadership has done a commendable job and we have to stand with them while forgetting our all the differences The opposition parties are not ready to understand it and this is very unfortunate. I am sure, in the coming years, we will be more strong and no country in the world dare to harm us. We are going to become the third largest economy very soon.

Lastly, I would like to thank Hon?ble Prime Minister, Home Minister, Chief of Army Staff and External Affairs Minister for conducting Operation Sindoor successfully.

Jai Hind. Jai Maharashtra.

SHRIMATI SUPRIYA SULE (BARAMATI): Thank you very much, Madam. I would like to start my speech by complimenting and saluting the achievements of the Indian Forces, the J&K Police, and the Security Forces, whoever were present in this entire time of crisis that we have all been in the last 90 days.

Before I speak about Pahalgam attacks, I would like to add the names of Rajouri and Poonch districts also because they have also had huge setbacks during these last few days.

Unfortunately, Tejasvi Surya ji is not here. I cannot see him in the House. But I would like to tell him and put it on record because I have this document which I can table. He said in his opening speech that Pt. Jawaharlal Nehru, the first Prime Minister of India, never encouraged the Defence Forces, and we have never done anything. This is the first time that India has done extraordinarily well in terms of action by the Armed Forces. He has insulted thousands and lakhs of Indian Army personnels and their families who have stood so that you and I can be safe. I object to the statement that he has made. *....(Interruptions)*

I would like to read out what he said in his speech. He said, ?Oh, Indo-Pak War, the first war, was a failure.? उनके लिए फेलियर होगा। आप हमें इतिहास पढ़ने के लिए बोल रहे थे, आप खुद इतिहास पढ़ें। आपने शायद इतिहास नहीं पढ़ा होगा, यह मैं बता देती हूं।

Indo-Pak War, the first time we won. Operation Polo, September 1948, annexation of Hyderabad into Indian Union, was a success of the Indian Army; Operation Vijay, December 1961, was a military action to liberate the Portuguese enclaves of Goa, Daman, and Diu, completing India's territorial integration; Indo-Pakistan War, August-September 1965, successfully defended Indian borders, preventing Pakistan from achieving its strategic objectives; Bangladesh Liberation and Indo-Pakistan War, 1971, a decisive victory of Indian Army along with Mukti Bahini, liberated Bangladesh in 13 days, leading to surrender of 90,000 Pakistani troops. तेजस्वी सूर्या जी, आपने यदि इतिहास नहीं पढ़ा है, तो मुझसे लेकर पढ़ लीजिए।

We may have political differences, like what Sunil Tatkare ji said. He is absolutely right about this. जब देश का सवाल आता है, तो सबसे पहले देश, उसके बाद राज्य, उसके बाद पार्टी और उसके बाद फैमिली। सबसे पहले देश आता है। कनीमोझी जी यहां हैं और मैं भी यहां हूं।

20.00 hrs

जब हमें किरेन रिजिजू जी का फोन आया था, किरेन जी ने मुझे सिर्फ फोन पर कहा कि सुप्रिया तुमको देश के लिए 10 दिन देने पड़ेंगे। मैंने सोचा कि मैं देश के लिए क्या कर सकती हूँ, किरेन जी आप दस दिन क्या बोल रहे हैं, यह माननीय प्रधानमंत्री जी का बड़प्पन था कि हम सारे अपोजिशंस को उन्होंने लीड करने का जो विश्वास दिखाया है, यही एक सशक्त लोकतंत्र है। यह जो तेजस्वी सूर्या की छोटी सोच है, वह छोटी सोच हम नहीं रखते हैं। जो अच्छा है, वह अच्छा ही है और जब देश की बात आती है, शैलजा जी आप नहीं थीं, लेकिन ऑल पार्टी मीटिंग में जब हम गए थे तो पहले कांग्रेस पार्टी ही बोली थी और उन्होंने कहा था कि यह वक्त तू-तू, मैं-मैं का नहीं है, कांग्रेस पार्टी और सारा अपोजिशन नरेन्द्र मोदी जी की सरकार के साथ पूरी ताकत से खड़ा रहेगा, हम आपके साथ हैं, आप जो भी निर्णय लें, युद्ध करें, कुछ भी करें, हम आपके साथ खड़े रहेंगे। तेजस्वी सूर्या को यह पता नहीं है। ये जो नए लोग आकर पता नहीं क्या-क्या हमें सुनाकर जाते हैं और गलत इतिहास बनाते हैं, रिकॉर्ड पर गलत लाते हैं, उसके लिए मुझे उनका भाषण सुनकर दुख हुआ। इन्हीं लोगों के लिए अंधभक्त शब्द कहा जाता है। वे एनआईए के बारे में बोल रहे थे। एनआईए किसने शुरू किया? यह तू-तू, मैं-मैं का वक्त नहीं है। अभी इस देश की सुरक्षा की चर्चा हो रही है। मैं नहीं कहूँगी कि हमने किया, अच्छा ठीक है, हमने किया, आपने आगे किया, यह अच्छी बात है, बट उन्होंने एनआईए में भी गलती निकाली। मुझे विश्वास है कि यह बीजेपी की लाइन नहीं होगी, यह तेजस्वी सूर्या जी की लाइन होगी, क्योंकि जब से हम सबको उन्होंने बुलाया था और जो अभी मंत्री जी, डॉ. जयशंकर जी बोले, मैं उनकी तहे दिल से हम सबकी तरफ से आभारी हूँ कि हम सबको उन्होंने चुना और विश्वास के नाते हमें परदेस में भेजा। मैं सिर्फ जयशंकर जी से दो-तीन छोटे सवाल करना चाहती हूँ। उन्होंने बहुत अच्छा भाषण दिया। मैं सिर्फ दो-तीन सवाल बड़ी विनम्रता से उनसे पूछना चाहती हूँ, क्योंकि ये सवाल देश के बारे में हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया ने हमें सपोर्ट किया। आतंकवाद में तो सब सपोर्ट करते हैं और करना ही चाहिए। मैं एक चीज बड़ी विनम्रता से उनसे कहना चाहती हूँ, जहाँ हम भी गए, आप दुनिया का रिकॉर्ड भी देखिए, हम लड़े इसलिए किसी ने हमारी तारीफ नहीं की, लेकिन जब हमने डी-एस्केलेशन किया तो सबने हमारी बहुत प्रशंसा की। सारी दुनिया ने डी-एस्केलेशन के बारे में भारत के लिए बहुत अच्छा भी बोला। जब इनके बाकी के सांसद कहते हैं कि अभी घुसकर मारेंगे और वह सब भाषा का उपयोग करते हैं, वह सब ठीक है, वह कहने में बहुत अच्छा भी लगता है, लेकिन इस दुनिया में जब लड़ाई होती है, आप भी एक महिला हैं, मैं जानती हूँ, आप संवेदनशील महिला हैं, आप मुझे बताइए कि जब हल्ला होता है तब क्या होता है। सिर्फ विधवा महिलाएँ रहती हैं और बच्चे रहते हैं। किसी को क्या मिलता है, तो मेरे ख्याल से डायलॉग, स्टॉक्स, ये सब बातें हम कहकर आये हैं कि टेररिज्म, ब्लड एंड वाटर कैन नॉट फ्लो टूगेदर।

20.03 hrs (Shrimati Sandhya Ray *in the Chair*)

अनुराग जी, यहाँ हैं। वे रोज बोलते थे, हम 10 दिन घूम रहे थे कि अक्रॉस बॉर्डर टेररिज्म, टेरर एंड टॉक्स कैन नॉट टूगेदर। हम उस समय साथ में थे। मेरे ख्याल से किसी ने और जब ऑल पार्टी मीटिंग में हम गए थे तब हमने कहा था कि अगर आप युद्ध करेंगे तो हम भारत के साथ रहेंगे, जो भी आप करेंगे। जिस तरह से उन्होंने बोला है और बीजेपी के

एक अन्य वक्ता ने कहा कि हमने अटैक किया और पहले वाली सरकार ने कुछ नहीं किया। मैं पूछना चाहती हूँ कि क्या आपका ऑब्जेक्टिव था? तेजस्वी सूर्या जी कह रहे थे कि इतने साल कांग्रेस ने कुछ नहीं किया, वे तो इतिहास को भूल गए कि क्या-क्या किया, लेकिन मैं बड़ी विनम्रता से उनसे पूछना चाहती हूँ कि डी-एस्केलेशन तो एक-डेढ़ दिन में ही हो गया, तो व्हाट वाज दी ऑब्जेक्टिव ऑफ दी वार व्हेन ही सेड, क्योंकि बहुत सारे लोग मुम्बई के अटैक के बारे में बोले। वे बोले कि कांग्रेस ने कुछ नहीं किया। मैं बोलना चाहती हूँ कि आपको पता नहीं है कि दुख क्या होता है, 26/11 के मुम्बई के अटैक में 10 पुलिस वाले शहीद हुए हैं। ओम्बले जी पुलिस में थे। उन्होंने कसाब को जिन्दा पकड़ा था।? (व्यवधान) तब उन्हें पेट में गोली लगी थी।? (व्यवधान) उनके पेट में गोली लगी थी।? (व्यवधान) आतंकवादी को तब जिन्दा पकड़ा था।? (व्यवधान) मैं नहीं कहती, उसे पकड़ने के लिए हमारी सरकार नहीं गई थी, वहाँ इस देश की पुलिस थी। मैं नहीं कहूँगी कि कांग्रेस ने किया, मैं कभी नहीं कहूँगी कि वहाँ एनसीपी-कांग्रेस की सरकार थी, हमने उसे पकड़ा, हम नहीं पकड़ने गए थे, वह जो पुलिस वाला था, ओम्बले जी ने अपनी जान दी थी, उन्होंने उसे पकड़ा है। मैं कभी इस मामले में क्रेडिट नहीं लूँगी। इतनी तो इंसानियत रखो। नवम्बर 2021 में उसको फाँसी हुई थी। मैं आपको हिसाब देती हूँ। पहले वर्ष 2010 में कन्विक्ट हुए, उसके बाद मुम्बई हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट, मर्सी पिटीशन, एग्जीक्यूशन कैरीडआउट और नवम्बर 2021 में पूना में कसाब को फाँसी हुई थी।

क्या यह काम हमने किया है? यह हमने नहीं किया है, सभी ने मिलकर किया है। तब इन्होंने भी साथ दिया था। जो सच है, वह सच है। अब मैं पहलगाम, पुंछ और राजौरी पर भी आऊंगी। किसी ने यहां नहीं बोला, लेकिन मैं जम्मू-कश्मीर की सरकार और वहां के मुख्य मंत्री के बारे में जरूर बोलना चाहती हूं कि उमर अब्दुल्ला जी ने तुरंत असेंबली में सभी विधायकों, चाहे वे किसी भी पार्टी के हों, उनको बुलाया। मैं उनकी तहेदिल से आभारी हूं कि सभी ने सर्वसम्मति से निंदा की कि यह अटैक नहीं होना चाहिए था। यह सब के लिए मैं आभारी हूं कि वहां कभी पार्टी के तू-तू मैं-मैं में नहीं गिरे। मैं इस सरकार से कुछ सवाल पूछना चाहती हूं। आप सबके बारे में बहुत लोगों ने कहा है, लेकिन आपने इस वक्त का हिसाब-किताब किया। मैं पूछना चाहती हूं कि 11 सितंबर, 2016 को पुंछ अटैक हुआ, 18 सितंबर, 2016 को उरी अटैक हुआ, 14 फरवरी, 2019 को पुलवामा अटैक हुआ और 22 अप्रैल, 2025 को पहलगाम अटैक हुआ। अब जब अटैक हुआ तो पुंछ और राजौरी में भी 16 लोग शहीद हुए हैं और 60 लोगों को अस्पताल लेकर गए हैं। जैसे पहलगाम में अटैक हुआ, उसके बाद भी 16 लोग इस देश के लिए शहीद हुए हैं। इसके बारे में भी हमें सबको सोचना चाहिए और रिकॉर्ड में उन्हें भी श्रद्धांजलि देनी चाहिए। यह सब जो हो रहा है, मैं उसके बारे में आज आरोप लगाने के लिए खड़ी नहीं हुई हूं, बल्कि मैं सिर्फ उन 26 लोगों की वेदना के लिए खड़ी हुई हूं। जैसे तेजस्वी सूर्य जी ने कहा, उनके निर्वाचन क्षेत्र से कई लोग हैं, तो मेरे भी निर्वाचन क्षेत्र से कई लोग हैं। मैं पुणे राज्य से आती हूं, वहां के दो परिवारों की एक छोटी सी स्टोरी मैं आपको बताऊंगी। वहां के संतोष जगदाले और कौस्तुभ गणबोटे, संतोष जगदाले की बेटी आशावरी, उनकी बीवी प्रगति और संगीता गणबोटे, ये तीनों साथ में थे। उस लड़की से जब भी मैं मिलती हूं तो वह एक ही सवाल पूछती है, ताई, मराठी में बड़ी बहन को ?ताई? कहते हैं, ये आशावरी मुझसे बस एक सवाल करती रहती है कि ताई ये सब ठीक हुआ, ?ऑपरेशन सिंदूर? हुआ, आप गए, अटैक हुआ, आप लोग परदेस गए, सब ठीक हुआ, लेकिन मेरे बाबा को न्याय कब

मिलेगा? मेरे बाबा का मेरी आंखों के सामने जिन्होंने खून किया, उनको न्याय कब मिलेगा? अभी पता नहीं कि वे चार थे, पांच थे या छह लोग थे। पहले फोटो भी आई, उसके बाद एनआईए की न्यूज आई कि ये चार लोग वे नहीं हैं, कोई और ही हैं, तो कौन हैं, वे चार लोग? कैसे आए, कहां गए? किसी को पता नहीं है। मैं दो मिनट में सिर्फ उनकी वेदना आपको बताना चाहती हूं। उनका सवाल सिर्फ इतना है कि वे कब आए और कैसे गए? उनकी मां का एक इंटरव्यू है, उसे आपको देखना चाहिए। मैं उसे सदन के पटल पर रखूंगी। सब को यह देखना चाहिए। उनकी बीवी उनके साथ खड़ी थी। वह बोलती है कि अभी तीन महीने हुए हैं, यानी 90 दिन, लेकिन आज भी जब आंख बंद करती हूं तो वही घिनौना चेहरा उनके सामने आता है और खोलती हूं तो लगता है, फिर वही आएगा और खून करके जाएगा। उनकी क्या गलती थी, मुझे बताइए। आपको पता है, उसके फादर क्या कह रहे थे। पहलगाम के लिए पहली बार प्लेन में फैमिली बैठी थी और उसको चिढ़ा रहे थे कि देखो, अभी तुम्हारा ग्रेजुएशन हो गया, अभी तुम्हारी शादी करेंगे, अगली बार मैं तुम्हें कश्मीर नहीं लाऊंगा, अपने पति के साथ आना। वह लड़की कहती है कि ताई, मैं सोच रही थी कि कश्मीर स्वर्ग है, लेकिन मेरे लिए और मेरी मां के लिए वह नरक बन गया है। कोई इसका जवाब दे। मैं उस बेटी को क्या जवाब दूं? आप बताइए। सरकार ने 50 लाख रुपये दे दिए और महाराष्ट्र सरकार ने वायदा भी किया था कि आशावरी को नौकरी मिलेगी, लेकिन आज तक नौकरी नहीं मिली। बस कागज पर कागज, फाइल पर फाइल भरे जा रहे हैं, लेकिन कुछ नहीं हो रहा है। दुख की बात यह है कि मध्य प्रदेश के बीजेपी के एक एमएलए ने कर्नल सोफिया कुरैशी के खिलाफ बोला। विक्रम मिश्री की बेटी को ट्रोल किया। बेचारी हेमंत जी की विडो को ट्रोल किया गया और जहां-जहां देश में जम्मू-कश्मीर के बच्चे पढ़ रहे थे, उनको भी पीटा गया ऐसे कैसे चलेगा? हम यहां किसी पर टीका-टिप्पणी करने के लिए नहीं आए हैं, क्योंकि मुझे बहुत सारी उम्मीदें थीं और मुझे अमित शाह जी से बहुत सारी अपेक्षाए हैं। हम उनको एक असर्टिव नेता के रूप में एक असर्टिव होम मिनिस्टर के रूप में देखते हैं। हमारी उनसे बहुत सारी अपेक्षाएं हैं। मुझे होम मिनिस्ट्री पर विश्वास है। इन चारों को न्याय कब मिलेगा? Operation Sindoor is not complete or Operation Sindoor is not a success till you find those terrorists. हमने एक-दूसरे की पीठ थपथपा दी कि सब अच्छा चल रहा है, परंतु अच्छा नहीं चल रहा है, हम जब तक उन आतंकवादियों को नहीं पकड़ेगे, तब तक न्याय नहीं होगा। We cannot celebrate. I think we owe it to those families.

मैं एक छोटा-सा लास्ट प्वायंट बोल कर अपनी बात समाप्त करूंगी कि एक चीज सबको पता होनी चाहिए क्योंकि यह हमारे देश के लिए बहुत बड़ी बात है। अभी तेजस्वी सूर्या एक आँख, दो आँख और पता नहीं क्या-क्या तोड़ने की बातें हो रही थीं। इसी सरकार का बड़प्पन है कि मुझे चार देशों में भेजा था। हम सब मिलकर गए थे। अनुराग भैया भी उस टीम में थे। उन्होंने भी यह सुना है। चार लोगों के बारे में हर देश ने हमसे पूछा। जहां-जहां हम गए, सब हमसे एक ही बात कह रहे थे कि आप महात्मा गांधी के देश से आते हैं, आप पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के देश से आते हैं, आप इन्दिरा जी के देश से आते हैं, आप मोदी जी के देश से आते हैं। यह जो हमारी सबकी विरासत है, इसी विरासत के कारण बहुत सारी अपेक्षाओं के साथ आज लोग भारत की तरफ देख रहे हैं। मेरी सरकार से विनम्र विनती है। ये जो लोग हमें नहीं मिल रहे हैं, तो हमारा जो विपक्ष है, वह अपनी सारी लड़ाई बंद कर देगा और अगर आपको ?ऑपरेशन सिन्दूर? को

सही मायने में लेकर जाना है तो उन चार-पाँच जितने भी आतंकवादी हैं, वे मिलने चाहिए। जैसे करगिल में अटल जी ने एक रिपोर्ट बनायी थी, वैसे ही इस सरकार से मैं विनम्र विनती करती हूं कि ?ऑपरेशन सिन्दूर? की एक रिपोर्ट बनायी जाए। जैसे करगिल में अटल जी ने किया था, वह पार्लियामेंट में टेबल किया था। इसलिए जो किया है, वह सबको पता चलना चाहिए।

धन्यवाद। जय हिन्द।? (व्यवधान)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर (हमीरपुर) : आदरणीय सभापति जी, आज मैं राष्ट्र हित, राष्ट्र सुरक्षा और राष्ट्र स्वाभिमान के एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर बोलने के लिए उपस्थित हुआ हूं। मैं अपनी पार्टी के प्रति आभार प्रकट करता हूं कि उन्होंने मुझे बोलने का अवसर दिया।

मैं जो कहने जा रहा हूं, वे केवल मेरे व्यक्तिगत विचार नहीं हैं, मेरी पार्टी या मेरी सरकार के ही केवल विचार नहीं हैं, बल्कि 140 करोड़ भारतीयों की, जनमानस की यह भावना है। सबसे पहले तो हम पूरे सदन की ओर से भारतीय सेना के वीर सैनिकों की वीरता, पराक्रम और उनके अदम्य साहस को सैल्यूट करते हैं। यही नहीं, भारत ने लगातार, माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी ने, हर बार शांति का प्रयास और शांति का हाथ बढ़ाया, लेकिन पाकिस्तान ने हर बार आतंक का रास्ता अपनाया। वर्ष 2014 में शपथ लेते समय पाकिस्तान के प्रधान मंत्री को भी निमंत्रण दिया था। उसके बाद भी माननीय प्रधान मंत्री जी लाहौर गए, बगैर किसी सुरक्षा के गए। वे साहस और सही इरादों के साथ शांति के लिए गए थे, लेकिन बदले में क्या मिला - बार-बार आतंकी हमले।

22 अप्रैल, 2025 को पहलगाम में जो हुआ, उसका उल्लेख करते हुए, विपक्ष की तरफ से अभी तक जितने भी सांसदों ने यहां बोला है, उनमें से किसी भी एक सांसद ने खड़े होकर यह नहीं कहा कि इस आतंकवादी हमले में धर्म पूछा गया, कलमा पढ़ने के लिए बोला गया, पैंट उतार कर देखा गया, फिर मौत के घाट उतारा गया। इतना बोलने में विपक्ष के सांसदों को क्या दर्द था? जब रक्षा मंत्री जी भारतीय सेना की उपलब्धियों की चर्चा कर रहे थे, तब कोई मेज नहीं थपथपा रहे थे। आज भी अगर मैं कहूं कि निहत्थे और निर्दोष नागरिकों को धर्म पूछ कर मारने का, अगर पहली बार ऐसा काम हुआ है, तो वहां हुआ है। वे धर्म के नाम पर देश को बांटने, देश में दंगे फैलाने की सोच को लेकर चले, लेकिन नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 140 करोड़ भारतीय एकजुट होकर खड़े रहे, पूरा भारत एक साथ खड़ा रहा। उस शाम भारत के घरों में दीये नहीं जले। यहां तक कि रात में घरों के चूल्हे भी ठंडे पड़े रहे। लश्कर के उन आतंकियों ने हमारी बहनों के सिन्दूर को मिटाया है, हमारे देश, हमारे लोकतंत्र, 140 करोड़ भारतीयों को चुनौती दी, और हमारी सशक्त सरकार, हमारी सशक्त सेना को एक तरह से चुनौती देने का दुस्साहस किया। प्रधान मंत्री मोदी जी ने कहा था कि भारत पहलगाम के साजिशकर्ताओं को उनकी कल्पना से परे सजा देगा। ?ऑपरेशन सिन्दूर? में हमने देखा कि भारतीय सेना की जो शक्ति है, जिसमें एकता और संकल्प एक प्रतीक बन चुका है, यह शक्ति आतंक के साये को कुचल कर भारत के गौरव को विश्व पटल पर उजागर कर रही है।

माननीय सभापति जी, मैं इतना ही कहूंगा-

कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन, दौर-ए-ज़माँ हमारा।।

7 मई को हमने इन दुश्मनों को जवाब दिया। भारतीय सेना ने पाकिस्तान के अंदर आतंकी ठिकानों पर अचूक और निर्णायक प्रहार किया। भारतीय सेना ने ऐसा प्रहार किया, जिसका दर्द आज तक पाकिस्तान को हो रहा है। 25 मिनट में नौ आतंकी ठिकानों पर प्रहार करके हमारी सेना ने 100 से अधिक आतंकी ठिकानों को ध्वस्त करने का काम किया। हमारी सेना ने एक ही झटके में उन्हें जमींदोज करने का काम किया। यह भारत की त्रि-शक्ति जल, थल और नभ का एक संगम था। हमने विश्व को साफ शब्दों में बता दिया कि भारत के विरूद्ध अगर कोई आतंकवाद की किसी घटना को अंजाम देगा तो वह भारत पर हमला माना जाएगा। वह भारत के खिलाफ युद्ध माना जाएगा और इसे भारत अपने तरीके से निबटेगा। हमारे देश ने इसका करारा जवाब भी दिया। हमारे देश के ऊपर जो आंख उठा कर देखेगा, उसको ऐसा दर्द दिया जाएगा, जिससे उसकी आने वाली पीढ़ियों को भी दर्द महसूस होता रहेगा। यह भारत का आतंकवाद के विरूद्ध शंखनाद था। मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि अब भारत डोजियर नहीं, बल्कि डोज देगा। अब भारत सबूत नहीं, बल्कि आतंकी आकाओं को ताबूत भेजेगा। यह नया भारत है। This is the new normal of new India. This is PM Modi?s zero tolerance policy towards terrorism.

जब पाकिस्तान ने दूसरे दिन भारतीय सेना और हमारे सिविलियन ठिकानों पर हमला करने का प्रयास किया तो हमारी भारतीय सेना ने एक बार फिर पाकिस्तान के 11 एयरबेसेज पर हमला करते हुए उनको नेस्तनाबूद कर दिया। This was a strike on 11 Pakistani airbases and it made a graveyard of military of Pakistan. अगर आपको मौका मिले तो आप अपने पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान से पूछ लें कि भारतीय मिसाइलों ने कैसा कहर ढाया था। ढाई महीने बाद भी रहीम यार खान एयरबेस बैलगाड़ी चलाने लायक नहीं बचा है। आपने भी सुना होगा कि वे कहते थे कि भारत से हजारों साल तक हम जंग लड़ते रहेंगे। वे गजवा ए हिंद के मंसूबे पाले बैठे थे। वे लोग ब्लिड इंडिया विद थाउजेंड कट्स के मंसूबे पाले बैठे थे। ऐसे मंसूबे पालने वाले 48 घंटे भी भारतीय सेना का मुकाबला नहीं कर पाए। भारतीय सेना ने उनको ऐसा दर्द देने का काम किया है।

मैं विपक्ष के लोगों को कहना चाहता हूं। आप राहुल जी तक यह संदेश जरूर पहुंचा देना। भारतीय सेना वहां पर मारती है, जहां सबसे ज्यादा दर्द होता है। The Indian Army strikes the enemy where it hurts the most, in mind, in might and on their map. उधर पाकिस्तान के जनरल जेहादी बंकर में छिप गये थे। उन्होंने यहां तक कह दिया था कि पाकिस्तान में भूकंप आ गया है। अगर आपको शक हो तो आप अपने प्रिय पाकिस्तान से पूछ कर देख लेना, जिसके कसीदे आप दिन-रात पढ़ते रहते हैं। अगर मुझ पर विश्वास नहीं तो आप उनके उप प्रधानमंत्री के बयान देख लेना। उनके उप प्रधानमंत्री मुहम्मद इशाक डार ने क्या बोला था, उसका मैं यहां पर कोट करना चाहता हूं। उन्होंने कहा था

कि ?भारत की सेना हमें मार रही थी। हम बेवश थे। हमारे सामने सीजफायर की भीख मांगने के अलावा और कोई चारा नहीं था।? यह किसी और का नहीं, बल्कि पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री का कोट है। We launched precision missile attacks on their safe houses, bunkers and training camps. They targeted our tourists, but we attacked terrorists. We did not strike civilians, we struck the very heart of terror military nexus. We did not escalate, we have neutralized with precision, purpose and power. This is not a reaction; this is the doctrine and this is the new normal.

मैं इतना ही कहूंगा कि भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की टेररिज्म के खिलाफ जीरो टॉलरेंस पॉलिसी आज पूरी दुनिया भर के लिए कड़ा संदेश है। भारतीय सेना के हमलों में लश्कर-ए-तैयबा हो, जैश-ए-मोहम्मद हो, हिजबुल मुजाहिद्दीन हो, इनके ट्रेनिंग सेंटर पर कड़ा प्रहार किया गया। यहां तक कि पाकिस्तान की जो हवाई सुरक्षा है, लाहौर, पसरूर, चुनिया, अफरीवाला के एचक्यूएम मिसाइल सर्विलांस रडार स्टेशन नष्ट कर दिए गए। वायु सेना अड्डे चकलाला में हों, सरगौदा, रहीमयार खान, कराची के वायु सेना अड्डों का नुकसान किया गया। लड़ाकू और अवाक्स विमान नष्ट कर दिए गए। सीटू प्रणाली का नुकसान किया गया। वायु रक्षा समन्वय को पंगु बनाया गया। नौ आतंकी, जिनमें जैश-ए-मोहम्मद से ले कर लश्कर के ठिकानों को तबाह किया गया। 26/11 के हमलों के बाद जब कांग्रेस इंतज़ार करती रही कि शायद दुनिया की कोई और ताकत आपको परमिशन देगी। We will not wait for the permission. We will strike with precision. हमने किसी का इंतज़ार नहीं किया। हमने आतंकवादियों को उनके घर में घुस कर मारा है। चाहे वह एयर स्ट्राइक की बात हो, सर्जिकल स्ट्राइक की बात हो या ऑपरेशन सिंदूर की बात हो। यही नहीं, इन अटैक्स में हमने पाकिस्तान एयरफोर्स का लगभग 20 प्रतिशत इन्फ्रास्ट्रक्चर ध्वस्त कर दिया है। 11 एयरफोर्स कैंप्स को हमने मात्र तीन घंटों में नेस्तनाबूद कर दिया। पहली बार है कि दुनिया की किसी न्यूक्लियर कंट्री के एयरफोर्स कैंप्स को नष्ट करने का काम किया तो भारतीय सेना ने वह भी कर के दिखाया है।

यही नहीं, 26/11 के हमले के समय जिस स्थान से उन आतंकवादियों को ट्रेनिंग दी जाती थी, उन ठिकानों को भी हमने ध्वस्त किया। मोस्ट वांटेड टैररिस्ट्स को भी हमने मारा और उनके आकाओं को भी मौंत के घाट उतारने का किया तो भारतीय सेना ने किया। केवल आतंकियों को ही नहीं, पाक फौलारी एयरबेस में 50 से ज्यादा लोग मारे गए, जिनमें पाकिस्तान स्कवाड्रन लीडर उस्मान यूसुफ और चार एयरमेन को भी मौत के घाट उतारने काम भारतीय सेना ने किया।

यही नहीं, आपने तो उदार दिल दिखा कर इंडस वॉटर ट्रीटी कर ली थी, जो पाकिस्तान की चार लाख एकड़ ज़मीन को सींचता है और भारत का 80 प्रतिशत पानी वहां पर चला जाता है। 23 करोड़ पाकिस्तानियों को पीने की पानी की व्यवस्था वहां से मिलती है। लेकिन मोदी जी ने कहा कि water and blood cannot flow together. Terror and talk cannot go together. हमने इंड्स वॉटर ट्रीटी को सस्पेंड कर दिया है। जो आप इतने सालों तक नहीं कर पाए, उसको नरेंद्र मोदी जी सरकार और नरेंद्र मोदी जी ने कर के दिखाया है। यही नहीं ऑपरेशन सिंदूर में विश्व ने भारतीय

सेना का शौर्य देखा और हथियारों की मारक क्षमता को भी देखा है। Made in India weapons have won the battlefield validation and India has displayed its cutting-edge defence technology to the world. हमारी मारक क्षमता और टैक्नोलॉजिकल सुपिरियोरिटी ने पाकिस्तान और चीन सहित अन्य देशों को भी चौंका दिया। आपमें से विपक्ष के कुछ सांसदों ने भी कहा कि दूसरी तरफ चीन भी था, तुर्किए भी था, पाकिस्तान भी था। अरे! यह स्पष्ट उदाहरण आप सबके लिए है कि चाहे चीन था, तुर्किए था या पाकिस्तान था, अकेला भारत और भारतीय सेना तीनों पर भारी पड़ी है। यह दिखता है कि मेक इन इंडिया प्रोडक्ट्स भी कैसे भारी पड़े हैं।

इतना ही नहीं, मैं कहूंगा कि India?s operations during Operation Sindoor reflects 21st century evolution of aerial decoys and physiological dominance. This is just not warcraft. It is mind craft. India has displayed a textbook case of aerial combat.

इस कार्यवाही को सैन्य इतिहास में टेक्स्टबुक प्रिसीशन वारफेयर कह रही है। थाइलैंड एयरफोर्स यूनिवर्सिटी इसे सैन्य रणनीति की टेक्स्टबुक में शामिल करने की बात कह रही है। दुनिया इसे टेक्स्टबुक सेंटर टेक्स्टबुक काउंटर टेरेरिज्म डॉक्ट्रिन के रूप में देख रही है। एक ऑपरेशन सिंदूर से आज दुनिया भर में पता चल गया कि भारत की ताकत क्या है? आज के वारफेयर में भारत की नई टेक्नोलोजी ने कैसे काम किया है? आप पूछ रहे थे पिछले दस सालों में क्या हुआ? दीपेन्दर हुड्डा जी कह रहे थे कि भारतीय सेना के डिफेंस के बजट को क्या हुआ? माननीय निर्मला सीतारमण जी यहां पर हैं, रक्षा मंत्री जी हैं, पूर्व रक्षा मंत्री भी हैं, आज वित्त मंत्री हैं। राजनाथ सिंह जी हैं, रक्षा मंत्री हैं। आपके समय में वर्ष 2013-14 में ढाई लाख करोड़ रुपये बजट था, जो मोदी सरकार में ढाई लाख करोड़ से बढ़ाकर छ: लाख इक्यासी हजार करोड़ कर दिया है।

हमारी सरकार ने छह लाख 81 हज़ार करोड़ रुपये का बजट कर दिया है। दोगुने से ज्यादा कर दिया है, तीन गुना कर दिया है और आप अपने गिरेबान में झांक कर देखिए। आपने दस सालों तक सेना को बुलेटप्रूफ जैकेट्स तक नहीं दी। नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने मात्र तीन सालों में दो लाख बुलेटप्रूफ जैकेट मेक इन इंडिया के माध्यम से बना कर दी हैं। आपने 30 सालों में वन रैंक - वन पेंशन नहीं दिया। नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने वन रैंक ? वन पेंशन की मांग को भी पूरा किया है। यही नहीं, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि अटल जी की सरकार में देखिए क्या था। आपकी सरकार के समय सन् 1948 की, 1962 की, 1965 की और 1971 की लड़ाइयां हुईं, लेकिन सेना के जवानों का पार्थिव शरीर उनके घरों तक नहीं जाता था। जब अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार बनी तब जा कर पार्थिव शरीरों को उनके घरों तक पहुंचाने का काम किया गया। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने, भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने किया।

मैं तो हिमाचल प्रदेश से आता हूँ। हिमाचल प्रदेश छोटा राज्य है, लेकिन सेना में उसका बड़ा योगदान है। अगर देश को पहला परमवीर चक्र विजेता किसी ने दिया तो हिमाचल प्रदेश से मेजर सोमनाथ शर्मा को दिया है। कारगिल युद्ध

में अगर 52 शहादत सबसे ज्यादा हुई तो हिमाचल प्रदेश से हुई। चार परमवीर चक्र विजेता हुए तो उसमें से दो कैप्टन विक्रम बत्रा और राइफलमैन संजय कुमार हिमाचल प्रदेश से हुए हैं।

माननीय सभापति जी, मैं इतना कहना चाहता हूँ कि आज नरेंद्र मोदी जी की सरकार में हमने अपना एक्सपोर्ट 34 गुना बढ़ा दिया है। जो 686 करोड़ रुपये से बढ़ कर लगभग 24 हज़ार करोड़ रुपये हो गया है। हमारी डिफेंस मैनुफैक्चरिंग, डिफेंस प्रोडक्शन एक लाख करोड़ रुपये एक साल की पार कर गई है। हमने 193 नए कॉन्ट्रेक्ट्स, 2 लाख, 9 हज़ार, 50 करोड़ रुपये के एक साल में कर के दिखाए और सौ देशों को डिफेंस प्रोडक्ट्स भारत देने का काम करने जा रहा है।

यही नहीं, लेकिन आपको दर्द तो होगा ही, क्योंकि जब मैं आपके सामने सवाल खड़ा कर रहा हूँ तो आपके पास उसका कोई जवाब नहीं है। मैं आपसे इतना जरूर पूछना चाहता हूँ कि आखिरकार जब सेना की और सैन्य क्षेत्र में हमारी उपलब्धि की बात आती है तो आपके होंठ उनकी तारीफ करते हुए सिल क्यों जाते हैं? देश ने कितने युद्ध देखे, लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि इस लड़ाई में भारत ने न एक सैनिक खोया, न एक सैनिक शहीद हुआ, न युद्ध हुआ, लेकिन फिर भी हमारी विजय हुई। शोर भी नहीं हुआ, सिंहनाद की गूंज उठी है, यह भारत ने कर के दिखाया है। मोदी जी की नीति और सेना की रणनीति काम आई है। प्रधान मंत्री मोदी जी के बारे में एक बात कहूंगा कि वे मुख्य मंत्री नहीं थे, उस समय हिमाचल प्रदेश के प्रभारी थे। करगिल के युद्ध में वे उस समय भी सेना के जवानों का हाल पूछने करगिल गए थे। जब से वे प्रधान मंत्री बने हैं, हर दिवाली सेना के जवानों के साथ मनाने का काम प्रधान मंत्री मोदी जी ने किया है। सेना को सशक्त भी किया। मैं एक बात कहूंगा कि एक ओर भारत और भारत की सेना पाकिस्तान को कड़ा जवाब दे रही थी, लेकिन दूसरी ओर आप लोग क्या कर रहे थे? राहुल गांधी जी क्या कर रहे थे? सबूत मांग रहे थे और साथ ही साथ कवर फायर भी दे रहे थे। कवर फायर किसको दे रहे थे? यह आपको पूछना पड़ेगा। आपने कहा कि हमने सरेंडर कर दिया। हमने स्पष्ट किया है कि जब तक हमने ऑपरेशनल और मिलिट्री ऑब्जेक्टिव पूरा नहीं किया, तब तक हमने सीज़फायर नहीं किया था। तीसरे पक्ष की मध्यस्थता को हमने पहले ही नकार दिया था। यही नहीं, एक बात तो मैं आपको स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि आज भारत का दूसरा सबसे लंबे समय तक प्रधान मंत्री के पद पर रहने वाला कोई व्यक्ति है तो उनका नाम नरेंद्र मोदी जी है। वर्ष 2001 से ले कर 2025 तक मुख्य मंत्री से ले कर प्रधान मंत्री तक 25 सालों में एक दिन की भी छुट्टी लिए बिना देश के लिए हर पल जीने का काम करने वाले नरेंद्र मोदी हैं। आपने भारत की सेना पर प्रश्न चिन्ह खड़ा किया है। मैं इतना कहूंगा कि हमारा दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। हम दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था हैं। दुनिया के सबसे लोकप्रिय प्रधान मंत्री नेता हमारे पास हैं। भारत को झुकाने वाला कोई ?माई का लाल? पैदा नहीं हुआ है।

भारत को कोई झुका सके, इतना किसी में दम नहीं,

भारत से विश्व है, हम किसी से कम नहीं, हम किसी से कम नहीं।

सभापति महोदया, भारत ढाई मोर्चे पर लड़ाई लड़ रहा था। दो मोर्चों के बारे में सबको पता है, लेकिन यह जो आधा मोर्चा है, उस आधे मोर्चे में ? भी है। ?क्या है, उसके बारे में मैं बताऊँगा। ? (व्यवधान) आप पिछले ढाई महीने से सोशल मीडिया में देख रहे होंगे कि बड़े संयोजित तरीके से ? ने भारतीय सेना और भारत के प्रधान मंत्री जी के खिलाफ घृणा से भरे अपमानजनक कार्टून्स बनाए। इसी कांग्रेस पार्टी ने, ? कहने का काम किया। ? (व्यवधान) ये अभी भी हंसते हैं। राहुल गांधी जी को सदन में खड़े होकर शर्म से पूरे देश से और भारतीय सेना से माफी मांगनी चाहिए। आप ? कहते हैं। आप बाटला हाउस कांड में शहीद होने वाले इंस्पेक्टर मोहन चन्द शर्मा को श्रद्धांजली तक नहीं दे पाते हैं, लेकिन आपकी पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष आतंकवादियों के मरने पर वहां पर आंसू बहाने चली जाती है।

यह कांग्रेस है, जो भारतीय सेना के साथ नहीं है, बल्कि उसके खिलाफ हथियार उठाने वाले आतंकवादियों के लिए आंसू बहाती है। देश ने आपका असली चेहरा देखा है। इससे बड़ा पाप और क्या हो सकता है कि आपने भारत को अपमानित और पराजित करने वाला राष्ट्र साबित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आपने देश की जनता का मनोबल तोड़ने का कार्य किया। आपने इसमें कोई कसर नहीं छोड़ी। ? (व्यवधान)

मणिक्कम टैगोर जी, आप सुनिए। इतिहास नरेन्द्र मोदी जी को उनके धैर्य और धीरता के लिए याद रखेगा और ? को उनके धोखे और धूर्ता के लिए धिक्कारेगा। मैं आपको आपके अपने नेता की बात बताता हूँ। उनको देश की जनता ने दो बार लीडर ऑफ अपोजिशन बनने के लायक भी नहीं समझा। एक बार तो अमेठी की जनता ने हरा दिया और अगर रो-धोकर लीडर ऑफ अपोजिशन बन भी गए तो मैं कहना चाहता हूँ कि अब वे एलओपी से ? बन गए हैं। ? (व्यवधान)

किरेन जी पूछ रहे हैं कि ? क्या है तो मुझे पार्लियामेंट्री अफेयर्स मिनिस्टर को बताना पड़ेगा। एलओपी, लीडर ऑफ अपोजिशन से एलओबी, ? हैं। उनके एजेंडे पर केवल भारत का विरोध है, भारतीय सेना का विरोध है और भारत के प्रधान मंत्री जी का विरोध करना ही लिखा हुआ है। इसलिए आज से उनको एलओबी कहना शुरू करना पड़ेगा।

मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि पता नहीं, वे कांग्रेस के पोस्टर बॉय बन पाए या नहीं बन पाए, लेकिन ? बन गए हैं। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति महोदया, आज सदन को ?ऑपरेशन सिंदूर? पर चर्चा करनी थी, लेकिन कांग्रेस के नेताओं में होड़ लगी थी कि कौन पाकिस्तान का सबसे सगा, सबसे प्रिय उभरकर सामने आएगा और एक पूर्व गृह मंत्री ने कल जो इंटरव्यू दिया है, उस इंटरव्यू में साफ देखने को मिलता है और वे कहते हैं कि अगर इसमें पाकिस्तान का हाथ नहीं दिखता है तो आप कैसे कह सकते हैं कि पाकिस्तान से टेररिस्ट आए थे?

ये लोग कभी हिंदू आतंकवाद कहते हैं, कभी पाकिस्तान को बचाने के लिए आते हैं। कांग्रेस पार्टी में पाकिस्तान के इतने बड़े-बड़े एडवोकेट हैं कि पाकिस्तान अपनी पैरवी बाद में करता है, कांग्रेस के नेता उनकी पैरवी करने के लिए पहले

खड़े हो जाते हैं। मैं इतना जरूर कहूंगा कि पाकिस्तान सेना और पाकिस्तान सरकार लश्कर-ए-राहुल के बयानों को अपने पक्ष में इस्तेमाल कर रही है।

यही नहीं पाकिस्तान सेना के प्रोपेगेंडा विडियो में कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के बयान को लेकर पूरी दुनिया भर में दिखाया जा रहा है। मुझे पहले लगता था कि इनको मोदी जी से दिक्कत है, लेकिन अब मुझे पूर्ण विश्वास है कि इनकी दिक्कत मातृभूमि से भी है। कहने को तो आईएनसी है, लेकिन अब इनके बयानों और इनके तरीकों से यही लगता है कि ये अब?* बन गई है। क्योंकि पाकिस्तान द्वारा फैलाये गए झूठे नैरेटिव और हार के पीछे आप छुप रहे हैं। कांग्रेस आइडिया ऑफ डिप्लोमेसी यही रहा है। माननीय सभापति जी, मैं जो भी कह रहा हूं, उसको ऑथेंटिकेट करने के लिए तैयार हूं। कांग्रेस आइडिया ऑफ डिप्लोमेसी क्या था? इनका डिप्लोमेसी सिर्फ डोजियर तैयार करने और डिनर खिलाने का था। डिसीजन करने का नहीं था, नहीं तो 26/11 के हमले के बाद ये शायद कुछ कार्रवाई करते, परंतु इन्होंने कुछ नहीं किया। ये पाकिस्तान को उनकी भाषा में जबाव देते, पर इन्होंने नहीं दिया। राहुल गांधी जी क्या करते रहें, यह मैं आपसे पूछना चाहता हूं? पूरे ऑपरेशन सिंदूर में श्रीमान राहुल गांधी जी की सबसे ज्यादा रुचि यह जानने में थी कि भारत के कितने विमान मार गिराये गए। उनका एक बयान भी ऐसा नहीं है, जहां उन्होंने कभी यह जानने की कोशिश की हो कि हमारी सेना ने, हमारी वायु सेना ने पाकिस्तान में कितनी तबाही मचाई है? पाकिस्तान के कितने आतंकवादियों को मारा है? पाकिस्तान के कितने आतंकवादी ठिकानों को तबाह किया है? उनके कितने डिफेंस सिस्टम को खत्म किया है? उनके कितने एयरबेस उड़ाये हैं? पाकिस्तान को कितनी हानि पहुंचाई है? इसमें राहुल जी का कोई इंट्रेस्ट नहीं था। उनका मात्र इंट्रेस्ट था कि भारत के कितने विमान गिराये गए। आखिर वे यह जानकारी किसके साथ साझा करना चाहते थे? जिनके हाथ रक्षा दलाली में रंगे रहे हों, मुझे पता नहीं आप किसके लिए दलाली करना चाहते हैं। मैं तो इतना ही कहूंगा :

?जुबां पर पाकिस्तान, दिलों में साजिश पलती है,

ऐसे लोगों की वजह से ही तो चिताएं जलती हैं।

देश को लूट कर जो अपने महल बनाते हैं,

वे इतिहास में गद्दार कहलाते हैं।?

ऑपरेशन सिंदूर पर मैं कहूंगा कि हमारी सेना ने जो किया, वह दुनिया ने देखा। लेकिन उसके ठीक बाद प्रधान मंत्री मोदी जी आदमपुर एयरबेस पर गए और अपनी सेना का मनोबल बढ़ाने का काम भी किया। फेक प्रोपेगेंडा चलाया जा रहा था कि आदमपुर एयरबेस खत्म कर दिया गया है। अगर खत्म हो गया होता, तो वहां प्रधान मंत्री जी कैसे उतरते? एस-400 पीछे खड़ी दिखती थी। आपकी आंखों में, आपके चश्में में नहीं दिख रही होगी, लेकिन दुनिया ने देखा है। यही नहीं मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि न्यू रूल ऑफ इंगेजमेंट में हमने तय कर दिया है कि कोई भी आतंकवादी घटना को ऐन एक्ट ऑफ वार माना जाएगा।

मैडम, मुझे जो टाइम पार्टी ने दिया है उसमें से पांच-सात मिनट और लूंगा। किरण जी भी यहां पर हैं। न्युक्लियर ब्लैकमेल की जब बात चलती है, उसमें अटल बिहारी बाजपेयी ने भी स्पष्ट कर दिया था और नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने तो कह ही दिया है कि हमने एस्केलेशन नहीं की, हमने सिर्फ आतंकवादी ठिकानों पर प्रहार किया, लेकिन जब पाकिस्तान ने हमारे सेना या सिविलियन ठिकानों पर प्रहार करने का प्रयास किया, तो हमने ऐसा जवाब दिया है कि पाकिस्तान सदा याद रखेगा।

जहां तक सिंधु डैम की बात है, इंडस वाटर ट्रीटी को हमने सस्पेंड किया है। आपके कुछ नेताओं ने, जो आपके गठबंधन की सरकार में थे। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान को पानी दे देना चाहिए, लेकिन प्रधान मंत्री मोदी जी ने कहा कि सिंधु नदी का पानी और खून एक साथ नहीं बह सकते। तुम हमारा खून बहाओगे, तो हम तुम्हें पानी नहीं पिलायेंगे। मैं इतना जरूर कहूंगा कि पाकिस्तान जितना चाहे सिर पटक ले, नाक रगड़ ले, सिंधु डैम के गेट नहीं खुलेंगे।

आदरणीय सभापति जी, जो प्रतिनिधि मंडल माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी ने दुनिया भर में भेजे, उन सात प्रतिनिधिमंडल में से एक में मुझे भी जाने का मौका मिला। सुप्रिया जी हमारा नेतृत्व कर रही थीं। मैं सदन में एक बात जरूर कहना चाहता हूं कि ये जो प्रतिनिधि मंडल थे, ये किसी दल या किसी विचारधारा का प्रतिनिधित्व नहीं कर रहे थे। हम राष्ट्र का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। हमारे मत अलग हो सकते हैं। हम में मत-मतांतर हो सकता है। हम में मत भिन्नता हो सकती है। मन का भेद हो सकता है, लेकिन जब राष्ट्र का प्रश्न हो तब हम एक हैं। हम एक मत हैं। हम भारत के पक्ष में हैं। हम सभी के लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। मैं कह सकता हूं कि सातों के सातों प्रतिनिधि मंडलों में किसी भी दल का कोई भी सांसद होगा, उसने दलगत राजनीति से ऊपर उठकर देश की बात की। मैं आज पूरे सदन की ओर से मैं उनका धन्यवाद करता हूं। उनको नमन करता हूं।

मैडम, मैं पांच मिनट में समाप्त कर दूंगा।

माननीय सभापति : आप एक मिनट में अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : महोदया, मेरे दो पॉइंट इम्पोर्टेंट हैं और इनको लेना जरूरी है। एक है कि हमने क्या हासिल किया और दूसरा सरेंडर का विषय है।

हम अंतरराष्ट्रीय मंच पर किसी का साथ लेने नहीं गए थे। भारत यह बताने गया था कि भारत अपने दम पर आतंकवादी के आकाओं को मुंहतोड़ जवाब दे सकता है और हमने मुंहतोड़ जवाब दे दिया है। हम फर्स्ट हेण्ड इनफोर्मेशन देने गए थे, किसी का सहयोग मांगने नहीं गए थे। 193 देशों में से 190 देशों ने एक साथ इन आतंकवादी हमलों की निंदा की है। यह नरेन्द्र मोदी जी की छवि को दिखाता है। यही नहीं मुस्लिम देशों ने भी पाकिस्तान को अलग-थलग करने का काम किया। आतंकवाद के खिलाफ एक वैश्विक माहौल बनाया।

मैं यह कहना चाहता हूं कि इस समय में कांग्रेस का जो रवैया रहा है, वह सबसे ज्यादा निराशाजनक, अपमानजनक और आपत्तिजनक था। सेना और सरकार पर हमला करने में कांग्रेस कहीं पीछे नहीं रही। लेकिन, भारत में नरेन्द्र मोदी जी की सरकार में हम लगातार आगे बढ़े हैं, वहीं एक फेक नरेटिव कांग्रेस के नेता द्वारा चलाया जा रहा है ? सरेंडर, सरेंडर।

माननीय सभापति जी, अगर पिछले 78 साल का हिसाब लिया जाए तो कांग्रेस ने कितने ब्लंडर और सरेंडर किए हैं, यह देश को मैं आज बताना चाहता हूं। मैं दो मिनट में यह बताऊंगा।

वर्ष 1948 में कश्मीर जैसे विषय को संयुक्त राष्ट्र में ले जाकर सरेंडर किसने किया!

अनेक माननीय सदस्य : कांग्रेस ने!

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : वर्ष 1950 से 60 के दशक में अक्साई चिन को बंजर जमीन कहकर चीन की झोली में डालने का ब्लंडर किसने किया!

अनेक माननीय सदस्य : कांग्रेस ने!

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : वर्ष 1954 में तिब्बत के अधिकार को छोड़कर चीन के कब्जा करने को स्वीकार किसने किया!

अनेक माननीय सदस्य : कांग्रेस ने!

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : वर्ष 1958 में मून-नेहरू समझौते के तहत बेरूबारी को पूर्व पाकिस्तान में स्थांतरित करने को सरेंडर किसने किया!

अनेक माननीय सदस्य : कांग्रेस ने!

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : वर्ष 1950 में पंजाब के सरजा माजरा, रख हरजीत सिंह और पठानके, सुलेमानके, चक लोदी को पाकिस्तान को सौंपकर सरेंडर किसने किया!

अनेक माननीय सदस्य : कांग्रेस ने!

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : वर्ष 1960 में सिंधु जल संधि के तहत पाकिस्तान को 174 मिलियन डॉलर, आज के 14 हजार करोड़ रुपये के बराबर, यह सरेंडर किसने किया!

अनेक माननीय सदस्य : कांग्रेस ने!

माननीय सभापति : माननीय सदस्य, प्लीज़ अपना भाषण कम्प्लीट कीजिए।

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : पाकिस्तान ने पीओके में 5180 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र चीन को सौंपने का काम किसने किया और चुप रहा!

अनेक माननीय सदस्य : कांग्रेस ने!

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : वर्ष 1974 में इंदिरा गांधी ने एक समझौते के तहत कच्चातिवू द्वीप श्रीलंका को सौंप दिया। यह सरेंडर किसने किया!

अनेक माननीय सदस्य : कांग्रेस ने!

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : संयुक्त राष्ट्र की सिक्योरिटी काउंसिल की सीट चीन को सरेंडर किसने की!

अनेक माननीय सदस्य : कांग्रेस ने!

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : भारत के हितों को किसने बेचा!

अनेक माननीय सदस्य : कांग्रेस ने!

माननीय सभापति : माननीय सदस्य श्री एस. वेंकटेशन जी।

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : वर्ष 1962 के युद्ध में अमेरिका से एयरफोर्स सपोर्ट की मांग कर सरेंडर किसने किया!

अनेक माननीय सदस्य : कांग्रेस ने!

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : वर्ष 1965 में पाकिस्तान से जंग जीतकर वर्ष 1968 में 828 स्कवेयर वर्ग किलोमीटर पाकिस्तान को किसने सरेंडर किया!

अनेक माननीय सदस्य : कांग्रेस ने!

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : वर्ष 1970 की जंग में पाकिस्तान के 93 हजार सैनिक भारत के 56 सैनिक लिए बिना।

माननीय सभापति : माननीय सदस्य श्री एस. वेंकटेशन जी।

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : माननीय सभापति जी, अभी कांग्रेस का सरेंडर पूरा नहीं हुआ है। कांग्रेस ने बहुत सरेंडर किया है और ब्लेंडर भी बहुत किए हैं। ? (व्यवधान)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : पाकिस्तान के 93 हजार सैनिकों को भारतीय सेना ने नील डाउन करवाया था। मुर्गा बनाया था, लेकिन इंदिरा गांधी ने सरेंडर किया। अपने 54 भारतीय सैनिकों को लिए बिना पाकिस्तान के आगे सरेंडर किसने किया? कांग्रेस ने किया। ? (व्यवधान) ताशकंद समझौते में हाजी पीर दरगाह जैसे अति महत्वपूर्ण रणनीतिक क्षेत्र को

पाकिस्तान को वापस देकर किसने सरेंडर किया? कांग्रेस ने किया। पाकिस्तान को न्यूक्लियर टेक्नोलॉजी ऑफर कर दुश्मन से हाथ मिलाकर सरेंडर किसने किया? कांग्रेस ने किया। वर्ष 1984 में इंदिरा गांधी ने पाकिस्तान के क्वेटा परमाणु संयंत्र पर हमला करने से इन्कार कर दिया। उस समय सरेंडर किसने किया? कांग्रेस ने किया। रोनाल्ड रीगन अमेरिकी राष्ट्रपति ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : श्री सु. वेंकटेशन जी।

? (व्यवधान)

SHRI S. VENKATESAN (MADURAI): Hon. Chairperson Madam, *Vanakkam*.

The entire nation is against the Pahalgam attack. Every life that was lost resulted in pain and suffering in our minds. We the Opposition parties have been trying so hard with a great sense of responsibility for having a discussion in this august House on the retaliation executed by this Government after this Pahalgam attack. This effort did not start today or yesterday. The Opposition parties have been doing this for the last two months or so with a sense of utmost responsibility. But the Government has been displaying irresponsibility to the core. I wish to register that such an act has taken place in this august House some time ago.

Hon. Union Minister of Defence initiated this Discussion. The Government has repeated what it said during the Uri attack in the year 2016 and Balakot attack in the year 2019. After you spoke in length about all these issues, how this attack could take place in Pahalgam? Only after 1 hour and thirty minutes of the attack, the Government could receive information or extend any possible help. What a shameful incident is this? Three tier security system has completely failed. Army has failed; CRPF has failed and the Jammu & Kashmir State police has even failed. It is the failure of all these three Forces. Who will take responsibility for this? Whether it is the Official or the Minister concerned? Who will be held responsible? You often say that, from Pandit Nehru to Dr. Manmohan Singh, all should be held responsible for all that happened before you came to power. We want to ask that now whom you will make responsible for this serious lapse?

At the time of Pahalgam attack our Prime Minister was in Saudi Arabia, he after cutting short his travel plan, immediately returned to India. The entire nation thought that Prime Minister

would go to Pahalgam where the cowardly attack took place. But as expected, he went directly to Bihar for addressing an election rally. We have our ?nation and its interest? in our hearts. But the nation is continuously witnessing that you have only ?election? in your hearts. Not only that, since then we had been asking for convening a Special Session of Parliament. But what Prime Minister said? He called this Parliament as the temple of democracy. We are just asking you to enter this temple. We are having a Prime Minister who is afraid of entering a temple. Is it right? Is it justifiable? We wanted you to come for a special darshan, the Special Session of Parliament, time and again. But Prime Minister goes to Bihar to address the election rally there. He said that the retaliation will be unimaginable. We were expecting that an unimaginable attack would be there. It happened. But it was the US President Trump who stole the show. He executed an unimaginable attack.

We the Opposition parties are having discussion in this House on whether it is the Union Home Ministry or the External Affairs Ministry which has failed completely on this issue. India could not stop IMF from giving loans to Pakistan. There are 25 countries in the managing board of IMF. Not even one country has voted in favour of India. We have to say that you have isolated India in the world arena.

Similarly, you were non-committal on the issue of Palestine; you did not sign on the joint declaration of SCO on the issue of condemning the attack on Iran; and you did not react on what Trump said about India. We are duty-bound to criticize here that all these measures taken by you have portrayed India as a coward nation in front of the world countries.

Shri Anurag Thakur who spoke before me in this House said that all-Party delegations were sent to the countries of the world to explain India?s viewpoint. Hon. MPs from the Opposition parties were also part of this Delegation. The beauty of this is, whoever you called them as anti-nationals in the past, were also part of this Delegation of all Parties. Because for us, the nation is of prime importance. Even one or two Muslim MPs took place in every delegation. After BJP came to power, this was the first instance where Muslim MPs were given prominent representation. Even that was provided by our Opposition parties.

Our respected Hon. Prime Minister came to Tamil Nadu yesterday and recalled the glory of Chola Dynasty and compared Operation Sindoor with that of war waged by the Cholas. I am a student of History. I am a writer who knows History. In that background I say that Chola Dynasty has the distinction of the only dynasty led by King Rajaraja the great and King Rajendra Chola who were victorious beyond seas. Do you know the reason behind their victory? Whether it was Rajaraja the great or the Rajendra Chola, they ended the wars that were started by them. No other king or the king of a neighbouring nation was allowed to end those wars initiated by these Chola Kings. But ?Operation Sindoor? started by Shri Modi was ended by US President Trump. This was stated by the US President himself 25 times. If a king of a neighbouring country stated that he had ended the war initiated by King Rajaraja the great or the Rajendra Chola, then they would have killed that king of the neighbouring country for his false claims.

Even today when our Hon. Minister of Defence while initiating this Discussion referred this Operation Sindoor to Ram?s invasion to Sri Lanka which led to the killing of Ravana. Another Minister compares this Operation Sindoor by Prime Minister with that of Lord Krishna using his Sudarshan Chakra to cut the head of Sishupal. You are using Lords like Krishna and Rama to conceal your failures. Can there be a stooping to such low levels? Whether this will not affect the sentiments of the believers of God? Will that not be affecting the sentiments of Hindus? We are asking these questions with pain in heart.

Hon. Defence Minister, not even once in his speech, even by default, did not mention about Colonel Sophia Quereshi and the ill-treatment faced by her. You have not condemned what was said by your party MP, Vijay Shah about Colonel Sophia. A horseman named Adil Shah sacrificed his life in saving the tourists during the Pahalgam attack. You did not utter a single word about the valour displayed by Adil Shah. Why is it so? Not only this one Adil Shah. There are hundreds and thousands of Adil Shahs in the Kashmir Valley. The people of Kashmir have time and again proved this to you. But you did not utter a single word about the unity of the people of Kashmir. We are pained to say that in the name of terrorism, you cannot aggravate the issue of communal differences. This is the message that India want to say loud and clear. This is India. You cannot disintegrate or create hatred in this India. We will definitely win over you.

Thank you, *Vanakkam*.

श्री दिलेश्वर कामैत (सुपौल) : माननीय सभापति जी, 22 अप्रैल 2025 का दिन भारत के इतिहास में एक दर्दनाक अध्याय के रूप में दर्ज हो चुका है। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम स्थित बैसारन वैली में आतंकवादियों द्वारा की गई हिंसा ने पूरे राष्ट्र की आत्मा को झकझोर दिया। उस दिन 26 निर्दोष नागरिक की निर्मम हत्या हुई। यह हमला केवल निर्दोष नागरिकों की जान लेने तक सीमित नहीं था बल्कि यह हमला उन परिवारों पर भी था जिनके सपने एक ही पल में उजड़ गए। उन परिवारों की महिलाओं के सुहाग का सिंदूर छीन लिया गया। इसी पीड़ा और आक्रोश के बीच यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस आतंकी हमले का मुंहतोड़ जवाब देने का निर्णय लिया और इस सैन्य कार्रवाई को नाम दिया - 'ऑपरेशन सिंदूर'। यह नाम केवल एक सैन्य कोड नहीं था बल्कि उन शहीद परिवारों के प्रति हमारी गहरी संवेदना और आतंकवाद के विरुद्ध राष्ट्र के दृढ़ संकल्प का प्रतीक है।

?ऑपरेशन सिंदूर? 7 मई 2025 की रात ठीक 1 बजकर 5 मिनट से 1 बजकर 30 मिनट तक मात्र 25 मिनट में पूर्ण हो गया। भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के अंदर मौजूद आतंकवादी संगठनों के नौ ठिकानों पर सटीक और निर्णायक हवाई हमले किए। ?ऑपरेशन सिंदूर? में हमारी सेना की रणनीतिक सूझबूझ, सटीकता और आधुनिक सैन्य क्षमताओं का अद्भुत प्रदर्शन हुआ। इस कार्रवाई में राफेल जेट विमानों ने फ्रांस निर्मित स्कैल्प मिसाइलों के माध्यम से दुश्मन के प्रशिक्षण शिविरों को निशाना बनाया। इसके अतिरिक्त स्वदेश निर्मित ब्रह्मोस क्रूज मिसाइलों ने आतंकवाद ठिकानों को ध्वस्त किया। पहली बार हमारी सेना ने सीमा पार ऑपरेशन स्काई स्ट्राइकर कामिकेज़ ड्रोन्स का सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया। हमारे स्वदेशी आकाश एयर डिफेंस सिस्टम ने हवाई सुरक्षा में अभेद्य कवच बनकर देश की रक्षा की। यह ऑपरेशन भारत के रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की आत्मनिर्भरता और तकनीकी उत्कृष्टता का शानदार प्रमाण है।

?ऑपरेशन सिंदूर? के लक्ष्य अत्यंत सावधानी से चुने गए थे जिनमें सात ठिकाने पीओके के अंदर और दो पाकिस्तान की अंतर्राष्ट्रीय सीमा के भीतर थे। इन ठिकानों में आतंकी प्रशिक्षण शिविर, हथियारों के गोदाम और आतंकवादियों के कम्युनिकेशन हब शामिल थे। प्रारंभिक रिपोर्ट के अनुसार इस ऑपरेशन में 48 आतंकवादी मारे गए जिनमें जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा के 12 प्रमुख आतंकी कमांडर शामिल थे। यह कार्रवाई इतनी सुनियोजित और सटीक थी कि इसमें किसी भी आम नागरिक को नुकसान नहीं पहुंचा।

विपक्ष द्वारा इस ऑपरेशन को लेकर कुछ सवाल उठाए गए। लोकतंत्र में यह आवश्यक है कि विपक्ष की चिंताओं का सम्मानपूर्वक जवाब दिया जाए। पहला आरोप सुरक्षा चूक का था। गृह मंत्रालय ने इस पर तत्काल कार्यवाही करते हुए एक व्यापक आंतरिक सुरक्षा समीक्षा शुरू की। डीआरडीओ के साथ मिलकर एआई आधारित निगरानी प्रणाली और स्मार्ट फैंसिंग के विकास हेतु 500 करोड़ रुपये का अतिरिक्त बजट भी आबंटित किया।

दूसरा आरोप पाकिस्तान की भूमिका के संबंध में था। मैं सदन को आश्वस्त करना चाहता हूँ कि एनआईए, रॉ और फाइनेंशियल इंटेलीजेंस यूनिट द्वारा एकत्रित सबूतों ने पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठनों की भूमिका स्पष्ट रूप से

प्रमाणित कर दी है। फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की समितियों ने भी इन तथ्यों की पुष्टि की है। तीसरा आरोप नुकसान छुपाने का था। मैं पूरे सम्मान के साथ कहना चाहता हूँ कि ?ऑपरेशन सिंदूर? में हमारे दो बहादुर सैनिक हवलदार रमेश सिंह और नायक विक्रम ठाकुर ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। सरकार ने उनके परिवारों को तत्काल 50 लाख रुपये की आर्थिक सहायता दी और जीवन भर की पेंशन प्रदान की।

?ऑपरेशन सिंदूर? ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा और आत्मसम्मान को मजबूत किया है। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और इजरायल जैसे मित्र देशों ने संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 51 के अंतर्गत आत्मरक्षा के अधिकार के तहत की गई हमारी कार्रवाई का खुलकर समर्थन किया है।

21.00 hrs

एफएटीएफ ने भी पाकिस्तान पर आतंकवादी वित्तपोषण को रोकने हेतु दबाव बढ़ाया है।

राष्ट्र के अन्दर भी इस ऑपरेशन ने एकता और दृढ़ता की भावना को बढ़ाया है। सरकार ने युवाओं के लिए इंफॉर्मेशन वॉरियर्स प्रोग्राम प्रारंभ किया है, जिसके अंतर्गत 10 हजार युवा साइबर मिसइंफॉर्मेशन के विरुद्ध प्रशिक्षित हो रहे हैं। पंजाब के फिरोजपुर जिले के 14 वर्षीय बालक शिवन सिंह, जिन्होंने आतंकवादी हमले के दौरान तीन लोगों की जान बचाई, को शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया है। शहीद परिवारों के बच्चों को मुफ्त शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर प्रदान किये जा रहे हैं।

माननीय सभापति महोदया, अक्तूबर, 2024 में सरकार के कैबिनेट सुरक्षा समिति ने वर्ष 2029 तक 52 विशेष रक्षा-सैटेलाइट लांच करने की योजना को स्वीकृति दी है। इसके साथ ही, एक व्यापक सैन्य अंतरिक्ष सिद्धांत को अंतिम रूप दिया जा रहा है। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ ने अप्रैल, 2025 में सार्वजनिक रूप से यह भी स्पष्ट किया था कि सेना अब युद्ध के मैदान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस संचालित ड्रोन और रियल-टाइम निगरानी प्रणाली के उपयोग पर विशेष जोर दे रही है। इसके अलावा, संयुक्त राष्ट्र पर्यवेक्षकों के साथ मिलकर सीज़फायर निगरानी तंत्र को मजबूत बनाने के लिए भी सरकार द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं।

महोदया, ऑपरेशन सिंदूर भारत की संकल्प शक्ति, वीरता और संयम की ऐतिहासिक गाथा है। आइए, हम एकजुट होकर आतंकवाद के विरुद्ध इस लड़ाई में दृढ़ता से खड़े रहें और मानवता तथा शांति के आदर्शों का भी सम्मान करें।

मैं भारतीय सैनिकों के प्रति आभार प्रकट और उनको नमन करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ।

धन्यवाद।

SHRI M. MALLESH BABU (KOLAR): Thank you, hon. Chairperson, for giving me an opportunity to speak on such an important topic. Operation Sindoor was a pivotal moment showcasing India's resolve against terrorism and the bravery of its Armed Forces. This operation was a response to the horrific Pahalgam terrorist attack which claimed innocent lives and aimed to disturb the nation's unity.

Under the hon. Prime Minister Modi ji?s leadership and dedication shown by the hon. Home Minister Amit Shah ji and the hon. Defence Minister Raj Nath Singh ji, the Government of India made it clear that terrorism and its sponsors would be treated alike. India would no longer differentiate between non-State actors and the State that shelters them. The hon. Prime Minister Modi ji emphasized that there would be no safe havens for terrorists targeting India. The Government outlined a firm policy that any terrorist attack on India would be met with a fitting reply. India will not tolerate nuclear blackmail and will respond with precision strikes against terrorist hideouts. India's position is clear. Terror and talks cannot coexist, nor can terror and trade. Water and blood cannot flow together.

As the hon. Prime Minister emphasized, this operation was not only strategically successful but was also powered by weapons designed and produced in India. The destruction of terrorist hideouts was executed with precision using this home-grown system. It underlines the fact that our defence manufacturing ecosystem is now world-class and fully capable of safeguarding the nation. Let us not forget that when our jawans are in the line of fire, India speaks with one voice. I urge the Opposition, let us debate, let us differ, but let us not divide the spirit of national unity.

Operation Sindoor has reignited a spark in the hearts of our youth, our farmers, our scientists and our border villages that India will protect its own, come what may. The morale of the Indian Armed Forces is at an all-time high. Our global image is more robust than ever before. Our hon. External Affairs Ministers worked round-the-clock to ensure that global partners were kept informed, support was garnered, and misinformation was countered effectively. We did not act in haste, we acted with strategic foresight and political maturity. In the world of international relations, perception is power, and today the world sees India as a nation that is peace-loving, but not passive, firm, but not fragile, and resolute, but not reckless. I urge the Opposition to join

us in displaying political maturity, debate our policies, critique our methods, but never undermine the spirit of national unity and sovereignty.

As I conclude, I stand here not just as a Member of this august House, but as a proud son of *Bharat Mata*, echoing the sentiments of 140 crore Indians who saw in Operation Sindoor a reflection of their aspirations, their concerns, and their faith in this Government. On behalf of Janta Dal (Secular) Party and our leader Shri H. D. Devegowda ji and Shri H. D. Kumaraswamy ji, we always stand with the Government's decision. Jai Hind!

श्री राजा राम सिंह (काराकाट) : सभापति महोदया, पहलगाम के आतंकवादी हमले में मेरे संसदीय क्षेत्र के एक नौजवान की भी हत्या हुई थी, मैं उस समय उनके घर गया था। मैं उन सबके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनको नमन करता हूं। इसके साथ ही साथ पुंछ और राजौरी में जो नागरिक मारे गए थे, मैं उनके प्रति भी सम्मान जाहिर करता हूं।

मैं इस सदन के माध्यम से यह बताना चाहता हूं कि इस दौरान कश्मीरियों ने जो भाव दिखाए हैं, उन्होंने पहले भी कई घटनाओं में ऐसे भाव दिखाए हैं। एक बस का ड्राइवर आतंकवादियों के हमले से यात्रियों को बचाकर ले जा रहा था। देश ने तमाम घटनाओं के बावजूद भी शांति और भाईचारा बनाकर रखा है। आतंकवादियों की कुछ मंशा थी, कुछ गैर-जिम्मेवार पत्रकार और कुछ नेताओं ने पूरे देश में इस अवसर का इस्तेमाल किया और ध्रुवीकरण करने की भी कोशिश की थी। मैं इंडिया गठबंधन के उन तमाम लोगों को भी धन्यवाद देना चाहता हूं, जिनकी वजह से देश में भाईचारा और एकता बनी रही, बची रही और शांति भी बनी रही। मैं साथ ही साथ बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी को याद करता हूं, जिन्होंने संविधान में लिखा था कि हमें न्यू कॉमन सेंस का निर्माण करना होगा। यह देश में धर्म, जाति, भाषा और लिंग के आधार पर नागरिकों के बीच भेदभाव नहीं करता है। वह जो कॉमन सेंस पैदा हुआ है, जिसने भी इस दौरान जितना उत्पात मचाने की कोशिश की है, मैं इस मंच और सदन के माध्यम से देश की इस भावना और गंगा-जमुना तहज़ीब को सैल्यूट करना चाहता हूं।

जब पहलगाम हमला हुआ था, तब आतंकवादी कहां से आए और फिर कहां चले गए? मुंबई हमले की बात हो रही है, लेकिन मुंबई हमले के दौरान कुछ शहादतें हुई थीं। पुलिस वालों ने गोलियां भी चलाई थीं, लेकिन वहां 2,000 पर्यटक एकदम बेसहारा थे। आप ज़रा उनके मन में झांककर देखिए कि उस वक्त उनको कैसा महसूस हो रहा होगा। ये कहते हैं कि कश्मीर में विभिन्न तरह की मिलिट्री और पैरामिलिट्री फोर्सेज़ तैनात हैं। उनकी संख्या लगभग 7,00,000 है।

वे लोग एक घंटे तक पर्यटकों को मारते रहे और लोग बिल्कुल बेसहारा थे। इस देश में क्या हो रहा है? आज जम्मू-कश्मीर एक केन्द्र शासित प्रदेश है। मैं तो यह कहूंगा कि अगर इस तर्क के आधार पर जम्मू-कश्मीर का राज्य का दर्जा छीना गया था, तो अब वह केन्द्र शासित प्रदेश है, इसलिए इस तर्क के आधार पर उसका केन्द्र शासित प्रदेश का दर्जा भी खत्म होना चाहिए। जम्मू-कश्मीर का राज्य का दर्जा बहाल किया जाना चाहिए।

मनोज सिन्हा जी इतने दिनों के बाद कुर्सी पर बैठे-बैठे जवाबदेही ले रहे हैं। वे कह रहे हैं कि हां, हमारी जवाबदेही है। आप कुर्सी पर बैठे-बैठे जवाबदेही मत लीजिए। कायदे से वह जवाबदेही गृह मंत्रालय की है। अगर आप नैतिकता कुबूल करते हैं, आपके अंदर यह भाव जाग रहा है कि हम इस घटना के नैतिक रूप से जवाबदेह हैं, तो आप पद से हटिए। चाहे गृह मंत्री जी हों, चाहे जम्मू-कश्मीर के एलजी साहब हों या अन्य कोई हो। मैं आपके माध्यम से यह मांग करता हूं।

महोदया, आज हमारे सामने एक बात आई कि विदेश नीति के मामले में दुनिया के देशों से अलगाव है। आप पड़ोसी देशों के साथ मैत्री कायम रखिए, मेरा सवाल उससे संबंधित नहीं है। मेरा सवाल यह है कि गांधी जी, भगत सिंह और अंबेडकर जी के इस देश में जो राष्ट्रवाद खड़ा हुआ था, तो पूरे ब्रिटिश शासन के खिलाफ वह साम्राज्यवाद विरोध के आधार खड़ा हुआ था। अभी एक ट्रेड डील पर बात हो रही थी, तब यह बात उभरकर सामने आई है कि अमेरिका धीरे-धीरे ईस्ट इंडिया कंपनी की जगह ले रहा है। वह कभी हमें टैरिफ के लिए धमकाता है, कभी हमारे प्रवासी मजदूरों को हथकड़ी-बेड़ी में भेज देता है। वह कभी कहता है कि युद्ध उसने रुकवाया। किसी भी विषय पर सरकार का पब्लिकली कोई स्टेटमेंट नहीं आया है। इसलिए, यहां तो आप सफाई दे रहे हैं, लेकिन, देश इससे संतुष्ट नहीं है। देश को सच बात चाहिए। सच बात यह है कि आज उस अमेरिकन इम्पीरियलिज्म के सामने आपका एक शब्द नहीं चल रहा है, एक बात भी नहीं बोल रहे हैं, एक अवसर पर भी आप मुंह नहीं खोल रहे हैं।

सारी चीजों को एकदम सरेंडर कर दिया गया है। फिलीस्तीन की बात ऐसे ही नहीं उठ रही है। भारत को अमेरिका या ब्रिटिश के खिलाफ लड़ने की ताकत कहां से मिलती थी? दुनिया के बहुत सारे छोटे-छोटे उत्पीड़ित राष्ट्र, उनकी भावनाओं के साथ हम खड़े होते थे। आज फिलीस्तीन में लाखों की संख्या में इज़रायल द्वारा मौतें हो रही हैं। यदि हम इस पर नहीं खड़े होंगे, तो दुनिया के अन्य देश भी इसको देखते हैं और महसूस करते हैं कि भारत आज न्याय के साथ नहीं खड़ा है, उत्पीड़ित के साथ नहीं खड़ा है। इसलिए, अगर हमें निश्चित रूप से साम्राज्यवादी ताकतों के खिलाफ, इस हिंसा और नफरत के खिलाफ, आतंकवाद के खिलाफ खड़ा होना है, तो हमें भी दुनिया में अपना सपोर्ट बढ़ाना पड़ेगा।

जो देश कल तक हमारे साथ होते थे, आज वे हमें आंख दिखाते हैं। कोई देश हमारे साथ नहीं खड़ा है। दुनिया में भी यही स्थिति बन रही है। ?ज्यों-ज्यों दवा की, मर्ज बढ़ता गया?। आप विश्व गुरू बनने चले हैं और दुनिया में कोई देश हमारे साथ नहीं है। वह बात आई है, ठीक है, हमले के समय साथ दिया, लेकिन युद्ध के समय साथ नहीं दिया। दुनिया के किसी भी देश ने साथ नहीं दिया। यह बात भी समझिए कि टेररिस्ट अटैक के समय हमारे साथ उसकी सहानुभूति रही। यह बिलकुल ठीक है। लेकिन, जब युद्ध की तरफ चीजें बढ़ने लगीं, तो दुनिया ने अपने आप को विदड्रॉ कर लिया। अत: इस बात को भी समझना जरूरी है।

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

डॉ. राजकुमार सांगवान (बागपत) : सभापति महोदया, धन्यवाद। आपने मुझे ?ऑपरेशन सिंदूर? पर हो रही चर्चा में बोलने का अवसर दिया है।

सभापति महोदया, मैं आज इस सदन के माध्यम से ?ऑपरेशन सिंदूर? पर बोलते हुए गर्व और सम्मान का अनुभव कर रहा हूं। यह केवल एक सैन्य ऑपरेशन नहीं था। यह भारत की संप्रभुता, सुरक्षा और संकल्प का प्रतीक है। यह उन निर्दोष 26 नागरिकों को श्रंद्धाजलि देने का संकल्प था, जो 22 अप्रैल, 2025 को पहलगाम में हुए आतंकी हमले में मारे गए। यह ऑपरेशन जम्मू और कश्मीर में सक्रिय आतंकी नेटवर्क के खिलाफ एक सुनियोजित, सटीक और निर्णायक कार्रवाई थी।

सभापति महोदया, इस ऑपरेशन में सेना, एनआईए, आईबी और जम्मू कश्मीर पुलिस के बीच अभूतपूर्व समन्वय देखा गया। 72 घंटों के भीतर 40 से अधिक संदिग्ध गिरफ्तार हुए और 18 से अधिक आतंकियों को निष्क्रिय किया गया। ऑपरेशन के दौरान स्थानीय नागरिकों को सुरक्षित रखते हुए आतंकियों के गढ़ में घुसकर कार्रवाई की गई। सरकार की स्पष्ट नीति, आतंकवाद पर जीरो टॉलरेंस, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार ने शुरू से ही साफ कर दिया है कि आतंकवाद और उसके समर्थकों को बख्शा नहीं जाएगा।

सभापति महोदया, अनुच्छेद-370 हटाने के बाद आतंकियों की काफी अधिक संरचना टूट चुकी है। ?ऑपरेशन सिंदूर? इसी नीति का विस्तार है जहां कूटनीति, खुफिया तंत्र और सैन्य कौशल का एक साथ उपयोग हुआ है। ?ऑपरेशन सिंदूर? से बौखलाए पाक की गोलाबारी में जिन वीर जवानों ने अपने प्राणों की आहुति दी, उन्हें यह सदन नमन करता है। यह ऑपरेशन दिखाता है कि भारत आज सिर्फ जवाब नहीं देता, बल्कि पलटकर निर्णायक कार्रवाई भी करता है।

?ऑपरेशन सिंदूर? केवल एक नाम नहीं, यह कश्मीर की वादियों के साथ देश में गूंजती हुई राष्ट्रभक्ति की पुकार है। यह आतंक को चीरते हुए भारत की हुंकार है। हम इस सदन में यह संकल्प दोहराते हैं कि हर नागरिक सुरक्षित होगा, हर आतंकी भयभीत होगा और हर भारतवासी गौरवांवित होगा।

माननीय सभापति महोदय, जब हम ?ऑपरेशन सिंदूर? की चर्चा करते हैं, तो यह केवल एक सैन्य प्रतिक्रिया की बात नहीं, यह भारत की स्वदेशी सैन्य ताकत और ?आत्मनिर्भर भारत? की रक्षा नीति की सबसे बड़ी सफलताओं में से एक है।

मैं आज इस सदन को यह बताना चाहता हूं कि इस ऑपरेशन में हमारी भारतीय सेना ने जिन हथियारों को प्रयोग किया, उनमें से अधिकतर पूर्णत: स्वदेशी, यानी देश में ही विकसित और निर्मित थे। ?ऑपरेशन सिंदूर? सिर्फ एक जवाब नहीं था, बल्कि यह स्वदेशी ताकत से दिया गया वह प्रहार था, जिसने दुनिया को दिखाया कि अब भारत सिर्फ खरीददार नहीं, निर्माता और निर्णायक शक्ति बन चुका है।

आज जब कोई जवान गोली चलाता है, तो वह सिर्फ एक फायर नहीं होती, ?वह मेक इन इंडिया? की गर्जना भी होती है। मेरा विपक्ष से अनुरोध है कि कृपया देश की सुरक्षा को राजनीति की जुबान में न तौलिए। हम सबका कर्तव्य है

कि जब आतंक के विरुद्ध कार्रवाई हो, तो हम एकजुट रहें, न कि प्रश्नचिह्न खड़ा करें। ?ऑपरेशन सिंदूर? कोई चुनावी एजेंडा नहीं, बल्कि भारत की आत्मा की रक्षा का संकल्प है। मैं एक बात ज़रूर कहना चाहूँगा। अभी जब अनुराग ठाकुर जी बोल रहे थे तो उन्होंने कहा कि शहीद सैनिक के पार्थिव शरीर को बॉक्स में लाने का फैसला आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी सरकार का था। ? (व्यवधान) धर्मेन्द्र जी, मैं उसी बात पर आ रहा हूं। आप मेरी बात सुनिए। ताबूत में लाने का फैसला अटल बिहारी वाजपेयी सरकार का था। जब आदरणीय मुलायम सिंह यादव जी रक्षा मंत्री थे, तब सैनिकों के पार्थिव शरीर को एसएसपी और डीएम के माध्यम से ससम्मान उनके घर तक पहुंचाने का फैसला आदरणीय मुलायम सिंह यादव जी का था, लेकिन ताबूत में लाने का फैसला अटल बिहारी वाजपेयी सरकार का था। ? (व्यवधान) आज सैनिकों के सम्मान की बात हो रही है, आज ऑपरेशन सिंदूर की बात हो रही है, हमारी भारतीय सेना के गौरव की बात हो रही है, लेकिन ?ऑपरेशन सिंदूर? पर प्रश्नचिह्न खड़ा करने वालों के साथ आप भी खड़े हैं। मुलायम सिंह यादव जी ने सैनिकों को सम्मान दिया था। सैनिकों के सम्मान के खिलाफ और ?ऑपरेशन सिंदूर? के खिलाफ जो सदन में चर्चा करा रहे हैं, आप उनके साथ बैठे हैं। आप तो कम से कम इधर आ जाइए।

महोदया, मैं एक बात और कहना चाहता हूं। मेरी लोक सभा क्षेत्र के एक अग्निवीर सैनिक ललित कुमार शहीद हुए हैं। आतंकियों द्वारा बिछाई गई बारूदी सुरंग दुर्घटना में उनका निधन हुआ। जब उनका पार्थिव शरीर आया, तो तमाम सैन्य अधिकारी उनके पार्थिव शरीर को लेकर आए थे। मैंने उनकी आँखों में आतंकवादियों के खिलाफ गुस्सा देखा। पाकिस्तान, जो आतंकियों को पनाह दे रहा है, उसके खिलाफ उनकी आँखों में गुस्सा देखा। जब उसके पार्थिव शरीर को मुखाग्नि दी गई, उस समय सैनिकों ने कहा कि पाकिस्तान, जो आतंकियों को पनाह दे रहा है, हम न आतंकियों को छोड़ेंगे और न पनाह देने वालों को बख्शेंगे। हम उनको सबक सिखाएँगे। अभी ?ऑपरेशन महादेव? चल रहा है। आज ही की घटना है। हमारी भारतीय सेना ने तीन आतंकियों को आज ही मारा है। उन्होंने जो कल कहा था, वह आज करके दिखाया है। हम भारतीय सेना के ऊपर और ?ऑपरेशन सिंदूर? पर राजनीति करने का काम कर रहे हैं। यह काम न हो। भारतीय फौज ने हमारे देश को आज गर्व से ऊपर उठाने का काम किया है, लेकिन उस पर प्रश्नचिह्न उठा रहे हैं। यह बड़ा दुर्भाग्य है। मैं विपक्ष से अनुरोध करूँगा और इधर के बैठने वाले लोगों से भी अनुरोध करूंगा कि कम से कम हम सब ?ऑपरेशन सिंदूर? पर तो एकजुट खड़े हों, भारतीय फ़ौज के साथ तो खड़े हों। आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने आतंकवाद को कुचलने का दृढ़ संकल्प लिया है। हम उनके इस फ़ैसले के साथ खड़े रहें। हम एक मुद्दे पर तो साथ रहें।

मैडम, आपने मुझे बोलने का मौक़ा दिया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI SAPTAGIRI SANKAR ULAKA (KORAPUT): Thank you, Madam Chairperson for giving me this opportunity to speak on a very, very important topic.

First of all, I would like to offer my deepest condolence to the families which lost their loved ones in the Pahalgam incident. At the same time, I would like to congratulate the Armed Forces

for their valour, courage and successful completion of Operation Sindoor. पहलगाम में जो घटना घटी थी, उसके तीन-चार दिन पहले हमारी रूरल डेवलपमेंट एंड पंचायती राज कमेटी पहलगाम गई थी। वहां पर पहलगाम और अनंतनाग में मनरेगा से जो काम हुआ है, ?प्रधानमंत्री आवास योजना? में जो घर बने हैं, ?प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना? में जो सड़कें बनी हैं, हम उनका जायजा कर रहे थे। दो-तीन दिन पहले की बात है और 22 तारीख से पहले हमारी टीम वहां गई थी। उस समय हमने चीफ सेक्रेटरी से बात की थी, तो उन्होंने कहा कि हम आपकी मीटिंग अटैंड नहीं कर पाएंगे, क्योंकि प्रधानमंत्री मोदी जी जम्मू में वंदे भारत ट्रेन का शिलान्यास करने के लिए आ रहे हैं। उसके बाद हमें बताया गया कि वह नहीं आ पा रहे हैं। हमने कहा - ठीक है। जब हम पहलगाम पहुंचे, तो पता चला कि प्रधानमंत्री मोदी जी जम्मू नहीं गए।

हमें बताया गया कि वेदर कंडीशन ठीक नही थी, इसलिए प्रधान मंत्री जी का दौरा कैंसिल हो गया। उस वक्त ऐसा माहौल था कि हमने डीएसपी से भी पूछा था कि पहलगाम में माहौल कैसा है? सब बोल रहे थे कि आर्टिकल 370 एबरोगेशन के बाद सब ठीक है, सब चंगा है। जब कमेटी वहां जाती थी तो हम लोगों को पहले बुलेट प्रूफ गाड़ी मिलती थी, लेकिन अभी नॉर्मल कारें थीं। It was all well. अचानक दो-तीन दिन के बाद इतनी बड़ी घटना घटी। जहां हम लोग रुके हुए थे, वहां से बेसरन वैली मुश्किल से 8-10 किलोमीटर दूर थी। हमें पता चला कि वहां पर 10 किलोमीटर तक कोई सीसीटीवी कैमरा नहीं है और पुलिस का बंदोबस्त नहीं है। सारी पुलिस गायब थी। यह इतनी बड़ी जो चूक हुई है, मैं इसे अपनी इंटेलिजेंस का फेलियर भी कहूंगा या फिर सरकार को मालूम था कि ऐसी कुछ घटना घट रही है और वह अपने एरोगेंस के लिए इस चीज को दबाने की कोशिश की कि नहीं, सब ठीक है। कुछ न कुछ प्रॉब्लम थी और यह सबसे बड़ा इंटेलिजेंस का फेलियर है। ?ऑपरेशन सिंदूर? क्यों हुआ? पहलगाम में जो टूरिस्ट्स थे, उनकी हत्या की गई, कोल्ड-ब्लडेड मर्डर किया गया और उसी के बदले में हम लोगों ने ?ऑपरेशन सिंदूर? किया है। इसमें तीन कड़ियां हैं? एक तो होम मिनिस्ट्री, अमित शाह जी जो इंटेलिजेंस देखते हैं, एक्सटर्नल अफेयर्स मिनिस्टर जयशंकर जी और डिफेंस मिनिस्ट्री। आर्म्ड फोर्सेस ने अपना काम किया। यह ऑपरेशन बहुत अच्छा था। हम उनको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहते हैं, लेकिन एक बात समझ में नहीं आई। जब हम लोग ?ऑपरेशन सिंदूर? के माध्यम से इतने एडवांटेज पॉजीशन में थे तो अचानक से सीज-फायर क्यों हुआ? डोनाल्ड ट्रंप, जो यूएस के प्रेजीडेंट हैं, वे एक ट्विट करके बोलते हैं कि हमने सीज-फायर कर दिया। इंडिया-पाकिस्तान को ट्रेड टॉक्स का लालच देकर हमने यह बंद करवा दिया।

मैडम, मैं एक बात बोलना चाहता हूं। This is very demoralizing for the army and military forces. एमईए वाले बता रहे हैं कि 22 अप्रैल से 17 जून तक प्रधान मंत्री मोदी जी और राष्ट्रपति ट्रंप की एक भी फोन कॉल नहीं हुई तो ये आकर क्यों नहीं बोलते हैं कि हमने फोन नहीं किया? Why does he not call his bluff? कुछ न कुछ तो दाल में काला है। पूरी दाल ही काली है। अभी यहां पर स्टेटमेंट दे रहे हैं। Why can Prime Minister Modi Ji not give a statement? प्रधान मंत्री जी विदेश में थे। जैसे ही घटना घटी, तो वे सुनकर वापस आ गए। हमें लगा कि यह अच्छी बात है कि प्रधान मंत्री जी जो विदेशी दौरे पर बार-बार जाते रहते हैं, अभी वे वापस आ गए। हमें लगा कि वे शायद

पहलगाम जाएंगे, जम्मू जाएंगे, कश्मीर जाएंगे, लेकिन वे बिहार गए। पंचायती राज मंत्री जी बता रहे थे कि पंचायती राज दिवस था और उसके लिए वे गए हुए थे। उन्होंने बिहार जाकर जो-जो स्टेटमेंट दी, जितने टूरिस्ट्स हैं, जो शहीद हुए हैं, they are martyrs. जो विडो हैं, मैं उनका टेलीविजन पर इंटरव्यू देख रहा था। They need ?martyr? status. अगर वे पहलगाम जाते, हॉस्पिटल जाते तो उनका एक अलग प्रभाव होता। हमें तो मोदी जी से उम्मीद नहीं है कि वे यह करेंगे। अगर वे ऐसा करते तो अच्छा होता।

राज नाथ सिंह जी ने बताया कि आपको क्या सवाल पूछना है, यह हम बताएंगे। हम अपोजिशन में हैं और हम सरकार से सवाल पूछेंगे। क्या वह भी आप ही बताएंगे कि क्या सवाल पूछना है? जो इंडो-चीन वार हुआ था, उन्होंने वर्ष 1962 का जिक्र किया था। उस समय भाजपा तो नहीं थी, उस समय जनसंघ था। उनके सदस्य क्या क्वेश्चन पूछ रहे हैं, उसकी कहानी मैं बताता हूं। 36 साल के अटल बिहारी वाजपेयी जी नेहरू जी के पास गए थे। उन्होंने कहा कि इंडो-चाइना जो वार है, उस पर हम चर्चा करना चाहते हैं। पंडित नेहरू जी ने तुरंत माना था और सेशन बुलाया था। यह नहीं बोला था कि पार्लियामेंट की जो प्रोसीडिंग होगी, वह गुप्त रहेगी। इस तरह से नहीं कहा था। He had given the freedom that they would have a discussion. वाजपेयी जी ने क्या पूछा? उन्होंने गवर्नमेंट से पूछा, पंडित नेहरू जी सदन में थे। दु:ख की बात है कि प्रधान मंत्री मोदी जी यहां नहीं हैं। मुझे उम्मीद है कि वे सुन रहे होंगे और वे जवाब देंगे। वर्ष 1962 में पंडित नेहरू जी सदन में थे। वाजपेयी जी पूछते हैं। We are told that the enemy took us by surprise. But why were we surprised? Why was a surprise not ours? Was there any shortage of signals or signs? यह उनका सवाल था।

उनका दूसरा सवाल था? This is not the failure of the army. This is the failure of the administration, and above all, the failure of the political leadership.

उनका तीसरा सवाल था? Today, by hiding the truth and pointing a rosy picture, the Government is only inviting suspicion. This is not the time to cover up. This is the time to stand up and own up. Only then will the nation rise again.

उनका अगला सवाल था? Our goal must be greater to ensure that such aggression never happens again. We must build such strength that no one dares to look at India with ill intent again. Let us not seek peace if we are not prepared for war. Peace is respected only when the enemy fears your strength. ये सब सवालों का पंडित नेहरू जी ने सदन में जवाब दिया।?(व्यवधान)

मैम, अभी भाषण शुरू हुआ है। नेहरू जी ने कभी यह नहीं कहा कि आप ये पूछ नहीं सकते। राजनाथ सिंह जी ने बताया है कि हनुमान जी लंका जलाए, हमने भी वैसा ही काम किया है। मैं राजनाथ सिंह जी को बताना चाहता हूं कि हनुमान जी ने फोन करके नहीं कहा कि मैं लंका जलाने के लिए आ रहा हूं। यहां पर अपने विदेश मंत्री जी ने फोन

करके कहा कि मैं लंका में आग लगाने जा रहा हूं, यह कैसी बात है। यह पूरा डेप्लोमैसी फेल हुआ है। जयशंकर जी भी बता रहे थे कि टू फ्रंट लड़ाई जो पाकिस्तान-चाइना से है, यह 60-65 सालों से चल रही है। वे क्या कर रहे थे? वे फॉरेन सेक्रेट्री भी थे, सरकार में थे, हम लोगों के यूपीए के समय में वे ऑफिसर भी थे। वे एक डिसेंट नोट दे देते कि यह ठीक नहीं हो रहा है। अभी प्रॉब्लम है कि we have united Pakistan and China. We did not fight Pakistan; we fought China. Why is that we cannot accept that?

आज की डेट में हम पूछ रहे हैं कि कितने जेट्स गए हैं, तो हम लोगों के पास 35 राफेल्स हैं, लेकिन कितने जेट्स गए हैं, यह नहीं बोल रहे हैं। सब भारत के गए हैं। आप यह बताइए कि आपने पाकिस्तान के कितने जेट्स को उड़ाया है? हम सेलेब्रेट करेंगे। जो फॉरेन पॉलिसी है, it has five main principles, namely, non-aggression, non-interference, equality, peaceful coexistence, and mutual respect. यह पंचशील डॉक्ट्रिन में शुरू हुआ था। नेहरू जी ने इसे शुरू किया था। फिर शिमला एग्रीमेंट हुआ। कश्मीर के इश्यू के लिए बायलेट्रल डिसकशन होगा। There was Gujral doctrine also. जितने एक्सपर्ट्स हैं, they used the Gujral doctrine. This had improved the relations with Bangladesh, Nepal and Sri Lanka. एक्ट ईस्ट पॉलिसी, इस तरह के बहुत सारे हैं, जिसमें एक महत्वपूर्ण पॉलिसी स्ट्रैटजिक ऑटोनॉमी 2.0 डॉ. मनमोहन सिंह जी ने शुरू किया था, Connect Central Asia Policy, लेकिन आज की डेट में Operation Sindoor has exposed our foreign policies. We stand isolated in the world. प्रधान मंत्री मोदी जी ने 350 करोड़ रुपए चार सालों में खर्च किया है, जो हर देश घूमते हैं। ऐसा एक भी देश नहीं है, जो हम लोगों के पीछे खड़ा हुआ है। ब्रिक्स, क्वाड एंड जी-20 की बात की गई है। When Modi ji hugs Xi Jinping in BRICS, then pleads with Biden in QUAD and hosts Putin at G20, the world sees confusion; this is not a strategy. अभी मोदी सरकार के जो 11 साल है, उसके बारे में खुद राजनाथ सिंह जी ने कहा है कि ultimately the result matters. 11 सालों की जो मोदी डिप्लोमैसी है, not a single country called Pakistan a terrorist State. No country stood up and gave a clear statement in India?s favour. Kuwait has lifted visa restrictions on Pakistan. Iran, the UAE and other Gulf countries are signing MoUs with Pakistan.

रशिया हम लोगों का मित्र था, पाकिस्तान को 2.6 बिलियन डालर्स स्टील मिल के लिए, they are sponsoring now. Colombia offered condolences for people killed in Pakistan after India?s counterstrike. The G7 almost excluded Narendra Modi ji from inviting him to G7. But at the last moment, he got the invitation. Even during the G20 Summit, hosted on Indian soil, there was no diplomatic breakthrough. It was only photo-ops. In our neighbourhood, the Maldives, अभी वे बता रहे थे कि मालदिव से रिश्ता अच्छा हो गया है, वहां मोदी जी गए हैं, लेकिन दो साल पहले क्या हुआ था? They started their own parallel tourism. Maldives and Sri Lanka have leased key strategic assets to Beijing, giving

China a stronger foothold in the Indian Ocean. Nepal redrew its map to include Indian territory. The OIC and countries in West Asia have repeatedly criticised India over Kashmir and the treatment of Muslims. Saudi Arabia even put India on its visa-ban list of 14 countries. Platforms like SCO and BRICS, where India once held influence, are now seen as mouthpieces for Chinese interests. Pakistan chairs the UNSC Taliban Sanctions Committee and is vice-chair of the Counter-Terrorism Committee. अपना डेलिगेशन जाने के बाद हुआ है। Pakistan secured one billion dollars from IMF, 800 million dollars from ADB, and has a 40-billion-dollar partnership with the World Bank. At the United Nations, we failed to get even one clear statement naming Pakistan for the Pahalgam attack. यह क्या डिप्लोमैसी है? कोई पाकिस्तान को नहीं कहता है कि they are responsible for the Pahalgam attack. China has strengthened its alliance with Pakistan diplomatically and militarily. And finally, there is Donald Trump. वह 26 बार बोल चुका है कि मोदी जी और पाकिस्तान के बीच में ट्रेड टॉक्स का लालच देकर सुलह कर दिया है ? शेम। मोदी जी आएं और बोले कि डोनाल्ड ट्रम्प झूठ बोल रहा है। वह क्यों नहीं बोल रहे हैं? आज फिर से बताया, हमेशा से बोलते आ रहे हैं।

Madam, this foreign policy has been built over decades through statesmanship and farsightedness. We had Non-Aligned Movement during the Cold War and it has developed and evolved. ग्यारह साल में फॉरेन पॉलिसी का तहस-नहस कर दिया, जिसे मैंने आपको गिनाया। This is really sad and it has put us on the spot.

Madam, now, I am going to conclude my speech. After hugging Nawaz Sharif and hosting Xi Jinping, Modi faced Uri, Pulwama, Galwan, and Pahalgam. There was no diplomatic isolation of Pakistan. The FATF grey listing happened due to the efforts of the UPA. Despite the loss of lives in Ladakh, the PM claimed, ?No one has entered our territory?. यह बात भी आप याद रखो कि प्रधानमंत्री जी ने बोला है कि लद्दाख में कोई घुसपैठ नहीं हुआ है।

The whole country has put its faith and we deserve straight answers. But the families who lost their loved ones on a holiday and got bodies back deserve them first. They need to have answers. They believed your promise of a ?Naya Kashmir?. नया कश्मीर, सारे टूरिस्ट्स ने नए कश्मीर पर भरोसा किया। They trusted your claims of safety and strength. Today, you owe them the truth. We do not need slogans. We do not need hug diplomacy. We do not need selfies. We need proper External Affairs policy to take this country to a place where people who respect us can live in a good and free world.

Do not hide behind headlines and hashtags. Tell this House and tell those families what had happened; why it had happened; and who is accountable. Thank you, Madam.

श्री असादुद्दीन ओवैसी (हैदराबाद) : चेयरपर्सन साहिबा, मैं शुरूआत में अपनी तरफ से ताज़ीयत पेश करना चाहूंगा, उन 26 लोगों को, जिनका नाम पूछकर और मुसलमान नहीं होने के नाते गोली मारकर कत्ल कर दिया गया। मैं ताज़ीयत पेश करना चाहूंगा, मौलाना इकबाल को, जो पूंछ के मदरसे जिलाउल उलूम के मुदरिस थे, उस पांच साला लड़की मरियम का, जिसकी पाकिस्तान की सेलिंग से पेट फट गया, मैं ताज़ीयत पेश करना चाहूंगा ज़एन अली और उरवा फातिमा को, इन जुड़वा भाई-बहनों को, जिनकी उम्र चौदह साल थी, लांस नायक दिनेश कुमार, बीएसएफ सब-इंसपेक्टर मोहम्मद इम्तियाज, मैं कश्मीर की आवाम का शुक्रियादा करना चाहूंगा कि उन्होंने पहलगाम के वाकये के बाद मस्जिदों से मज़म्मत का ऐलान किया बगैर किसी के बोलने पर, रोड पर निकल कर पाकिस्तान से आये हुए दहशतगर्दों की मजम्मत की। मैं मुसल्ला अफवाज़ को मुबारकबाद देता हूं कि उन्होंने बहादुरी के साथ एक अज़ीम कुर्बानी पेश की, ऑपरेशन सिंदूर में भारत को कामयाबी दिलाई। मैं मुसल्ला अफवाज़ ने पहले नौ दहशतगर्द ठिकानों पर निशाना बनाया।

मेरी नज़र में दहशतगर्दी के दिल पर हमला हुआ, वह बहावलपुर का था। छह एयरफील्ड, तीन हैंगर, दो रनवे हमने तबाह किया। ऑपरेशन सिंदूर की कामयाबी की अह्म वजह यह थी कि मुल्क में इंतेहाद और इतेफाक पैदा हो गया, एक यूफोरिया पैदा हो गया था। मगर अफसोस कि हुकूमत ने उसका फायदा नहीं उठाया। मैं आज भी जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं कि पाकिस्तानी फौज, आईएसआई और डीप स्टेट का हयाती मकसद हमेशा से यही है कि भारत को कमजोर किया जाए। अगर हमें इन ताकतों को कमजोर करना है तो देश में इतेहाद और इतेफाक को बरकरार रखना पड़ेगा। अगर हम बुलडोजर के जरिए या फिर लिसानी जब्र के जरिए या मजहबी फिरकापरस्ती के जरिए अख्लियतों को निशाना बनाएंगे तो खुदा न खास्ता पड़ोसी मुल्क की दहशतगर्द तंजीमें कामयाब न हो जाएं।

मैडम, मैं आपके सामने यह भी कहना चाहूंगा कि इतेहाद और इतेफाक इस मुल्क में जब मजबूत होगा तो हमको बैनल व ख्वामी सतह पर दिखाने की जरूरत नहीं होगी। मैं आपकी तरफ से हुकूमत से चंद सवालात करना चाहूंगा कि वजीरे आज़म ने कहा कि खून और पानी एक साथ नहीं बह सकता। आतंकवाद और बातचीत एक साथ नहीं हो सकती। मेरा सवाल आपके जरिए से वजीरे आज़म और हुकूमत से है, जिन इंसानों को बैसरन की वादी में मारा गया था, क्या आपका जमीर इस बात की इज़ाजत देता है कि आप ट्रेड बंद कर दिए, पाकिस्तान का एयरक्राफ्ट हमारे एयर स्पेस में नहीं आ सकता, उनकी कश्ती हमारे पानी में नहीं आ सकती, डायरेक्ट और इन डायरेक्ट ट्रेड खत्म हो चुका है, आपका जमीर जिंदा क्यों नहीं है, किस सूरत से आप पाकिस्तान से क्रिकेट मैच खेलेंगे। जब हम पानी नहीं दे रहे हैं, 80 फीसद पाकिस्तान का पानी हम रोक रहे हैं।

यह कह कर कि पानी और खून नहीं बहेगा, लेकिन आप क्रिकेट मैच खेलेंगे। मैडम, मेरा जमीर तो गंवारा नहीं करता कि मैं उस मैच को देखूंगा। महोदया, क्या इस हुकुमत में इतनी हिम्मत है कि उन 25 मरने वालों को फोन करके

कहे कि देखो, हमने ऑपरेशन सिंदूर में बदला ले लिया है और अब तुम पाकिस्तान का मैच देखो। यह बहुत अफसोस की बात है। पहलगाम किसने किया और इसकी एकाउंटेबिलिटी किस पर है? हमारी साढ़े सात लाख फौज और सैंट्रल पैरामिलिट्री फोर्स है। कहां से ये चार चूहे घुसकर हमारे भारत के नागरिकों को मार सके। इसकी एकाउंटेबिलिटी किस पर फिक्स होगी। यदि एलजी पर एकाउंटेबिलिटी फिक्स होगी तो एलजी को बरतरफ़ कीजिए, यदि आईबी पर आती है तो एक्शन लीजिए, पुलिस पर आती है तो एक्शन लीजिए। आप यह समझ रहे हैं कि ऑपरेशन कर दिया और हम खामोश होकर एकाउंटेबिलिटी भूल जाएंगे, लेकिन ऐसा नहीं है। आपको एकाउंटेबिलिटी फिक्स करनी पड़ेगी।

मैडम, डिटरेंस क्या है? आपने सर्जिकल स्ट्राइक की, आपने बालाकोट किया। इसके बाद पहलगाम हुआ तो आपकी डिटरेंस क्या है? आपकी डिटरेंस की पॉलिसी नाकाम साबित हुई। कश्मीर की पालिसी नाकाम साबित हुई। आपने धारा-370 हटा दी। आपने एक रियासत को यूटी बना दिया और उसके बावजूद भी दहशतगर्द वहां पहुंच गए और मुझे अफसोस इस बात का है कि पाकिस्तान को हम जानते हैं। पाकिस्तान और इजराइल दुनिया में फेल्ड स्टेट्स है और पाकिस्तान के आर्मी चीफ को जिससे हमारे स्ट्रेटेजिक रिलेशन हैं, जिसे हम अपना दोस्त कहते हैं, उस देश का प्रेजिडेंट उस शख्स को बुलाकर अपने साथ खाना खिलाता है, जिसके भाषण से हमारे लोग मारे गए थे, तो क्या आपकी खारिजा पालिसी कामयाब हुई? आप देख लीजिए। हमारे देश में कैसी तनजीम है जिसका ऊजूद नफरत की बुनियाद पर और मजहबी अजबियत को फैलाने को बनाया गया, उनको सैक्युलरिज्म और सोशलिज्म से तकलीफ है, मगर हमारे संविधान के प्रिएम्बल में लब्ज सोर्वियन है जिसका मतलब है कि हम स्वयं अख्तियार है और हम हाकिमेआला हैं। हम अपने मुल्क के मुकदर का फैसला करेंगे। एक गोरा वाइट हाउस में बैठ कर भारत के सीज फायर का क्या ऐलान करेगा? क्या यह आपका नेशनलिज्म है? मुझे इसका अफसोस होता है।

महोदया, मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि यदि एक चच्चा सैम ऐलान कर रहे हैं तो हमारी फौज पर क्या असर पड़ रहा होगा। हमारे पायलटों पर क्या असर पड़ेगा जो नहीं मालूम कितनी ऊपर से भारत की हिफाजत कर रहे हैं। नेवी का सिपाही जो समुद्र में खड़ा हुआ है, उसे यह नहीं मालूम कि मेरे प्रधान मंत्री ने ऐलान नहीं किया, बल्कि एक गोरे ने ऐलान किया है। आप बताएं कि उसे कैसा लगेगा? मेरा हुकुमत से सवाल यह भी है कि हम अमेरिका के लिए एडवेर्सेरियल कंट्री नहीं हैं, हम दोस्त हैं। स्ट्रैटजिक रिलेशनशिप हैं। हमने क्या-क्या एग्रीमेंट साइन नहीं किया? क्या ये दोस्ती निभा रहे हैं। मैं एक हिस्टोरिकल एग्जाम्पल दे रहा हूं। ख्रुश्चेव ने दबाव डाला, लेकिन टीटो ने कहा, मैं नहीं मानता, मैं एनएएम जॉइन करूंगा। फ्रांस और यूएसए। डी गॉल पर जब यूएसए ने दबाव डाला तो डी गॉल ने कहा कि तुम दोस्त हो। मगर हमारी खारिजा पॉलिसी आजादी है। गुजराल साहब, जिनके बारे में कहते थे कि सबसे कमजोर वजीरे आजम थे। उन्होंने बहादुरी का मुजाहिरा किया और रीफ्यूलिंग नहीं करने दी। वियतनाम 20 साल तक यूएसए से लड़ा लेकिन झुका नहीं और हम उनको बोल भी नहीं पा रहे हैं। हम अमेरिका के दुश्मन मुल्क नहीं हैं। यह समझने की जरूरत है। वजीरे खारिजा ने कहा कि वह चीन गए। डिप्टी चीफ ऑफ स्टाफ ने कहा कि चीन के इक्यूपमेंट एक लाइव लैब था उनके लिए। क्या आपने चीन से कहा कि आपने पाकिस्तान को हथियार क्यों दिए? आपने नहीं कहा। मैडम, आप जानती हैं कि रक्षा मंत्री

ने कहा- swift and proportionate. इंडोनेशिया मिलिट्री अटाशे ने कहा कि हमको कहा गया कि मत मारो। हम सेल्फ डिफेंस में भी क्या पाकिस्तान को नहीं मार सकते थे। अगर आप ट्रंप के बयान को गलत कह रहे हैं कि पांच एयर क्राफ्ट नहीं गिरे और मैं आपकी बात का यकीन करता हूं। आप हमारे पायलट्स को कमेंड कीजिए। आप हमारे पायलट की तारीफ कीजिए, लेकिन आप वह भी नहीं करना चाहते हैं। मैं हुकुमत से जानना चाहता हूं कि क्या फ्रांस ने हमें सोर्स कोड नहीं दिया, जिसकी वजह से हमारे एयरक्राफ्ट्स को क्या नुकसान हुआ? मुस्तकबिल ओ हथियार खरीदेंगे तो क्या आप सोर्स कोड हासिल करेंगे। मेरे सवाल का जवाब हुकुमत दे कि हमारे पास सैंक्शंड स्कवाड्रन 42 है। 60 साल के बाद सिर्फ 29 काम कर रहे हैं। पाकिस्तान के पास 25 हैं। चीन के पास 50 से ज्यादा हैं। 11 साल से आप सरकार में हैं। सबमरीन नहीं है। थर्ड एयरक्राफ्ट केरियर कहां पर है, आप बताइए? एफएटीएफ में लाना पड़ेगा। आप अगर विश्व गुरू हैं तो हम आपको चैलेंज कर रहे हैं कि जी-7 कंट्रीज़ को, जीसीसी को और चाचा सैम को राजी करवाइए कि पाकिस्तान को एफएटीएफ में दोबारा लाया जाए।

मैडम, ऑल पार्टीज़ मीटिंग हुई। देखिए, केंद्र सरकार और राज्य सरकार में कितना काँट्राडिक्शन है। ऑल पार्टीज़ मीटिंग में मैं था। केंद्र सरकार ने कहा कि नहीं, बैसारन मीडोज़ पर तो कोई जा ही नहीं सकता, इजाजत लेनी पड़ती है। बाद में हमें मालूम हुआ कि सिवाय बारिश और स्नो के मीडोज़ साल भर खुला रहता है। यह काँट्राडिक्शन है। मैं आपके ज़रिए से हुकूमत से मुतालिबा करता हूं कि कौमी सिक्योरिटी, यानी नैशनल सिक्योरिटी को, खारजा पॉलिसी यानी फॉरेन पॉलिसी को राजनीति का मुद्दा मत बनाइए। यह हमारे मुल्क के मुफाद में नहीं होगा। हमारे मुल्क के इत्तेहाद, यक जहती को आप वोट का जरिया मत बनाइए।

मैडम, मैं आखिरी बात पूछना चाहता हूं। क्या चीन ने हमसे कहा था कि सीज़ फायर कर लो? पाकिस्तान ने हमारे पायलट्स की बातों को कैसे सुना कि हमारा कम्यूनिकेशन इनक्रिप्ट नहीं है? अंत में, मैं एक शेर से अपनी बात को खत्म करूंगा कि ?

?अपने ही हाथों से सर अपना कटाना है हमें।

मादर-ए-हिंद पर भेंट चढ़ाना है हमें।।

किस तरह मरते हैं अहरार-ए-वतन भारत पर।

यह तमाशा है, जो दुनिया को दिखाना है हमें॥?

यह मैं भारत की उस बहादुर फौज के नाम पर करता हूं, मुसल्लह अफवाज के नाम पर करता हूं। यह शेर कहने वाला बीजेपी का कोई व्यक्ति नहीं था। यह शेर कहने वाले का नाम ?शेर? था- शहीद अशफाक उल्ला खान। मैं फिर हुकूमत से कह रहा हूं कि पाकिस्तान टेरेरिज्म करेगा। आप तैयार हो जाइए। चीन से कितना इम्बैलेंस हो रहा है, कितना ट्रेड का इम्बैलेंस हो रहा है। जब गलवान की घटना हुई, उस वक्त भी ट्रंप ने कहा कि मैं बात करूंगा। हमने कहा कि नहीं

बात करेंगे। जरूरत नहीं है। आज ट्रंप हमसे पहले बोलता है। इज्जत-ए-नब्ज़ भी कोई चीज होती है। कोई यहां रहेगा, कोई वहां रहेगा, मगर इख्तेदार में इकबाल होना चाहिए। बदबख्ती की बात यह है कि आपने इकबाल को खो दिया। बहुत-बहुत शुक्रिया।

]جناب اسدالدین اویسی (حیدرآباد): محترمہ چیرمین صاحبہ، میں شروعات میں اپنی طرف سے تعزیت پیش کرنا چاہوں گا، ان 26 لوگوں کو جن کا نام پوچھ کر اور مسلمان نہیں ہونے کے ناطے گولی مار کر قتل کر دیا گیا۔ میں تعزیت پیش کرنا چاہوں گا، مولانا اقبال کو جو پونچھ کے مدرسے ضیاءالعلوم کے مدرس تھے، اس پانچ سالہ لڑکی مریم کا، جس کی پاکستان کی شیلنگ میں پیٹ پھٹ گیا، میں تعزیت پیشن کرنا چاہوں گا زین علی اور اروا فاطمہ ان جڑوا بھائی بہنوں کا جن کی عمر 14 سال تھی، لانس لائک دنیش کمار، بی۔ایس۔ایف۔ سب ۔ انسپیکٹر محمد امتیاز، میں کشمیر کی عوام کا شکریہ ادا کرنا چاہوں گا کہ انہوں نے پہلگام کے واقعہ کے بعد مسجدوں سے مذمت کا اعلان کئیے بغیر کسی کے بولنے پر روڈ پر نکل کر پاکستان سے آئے ہوئے دہشت گردوں کی مذمت کی۔ میں مسلح افواج کو مبارکباد دیتا ہوں کہ انہوں نے بہادری کے ساتھ ایک عظیم قربانی پیش کی، آپریشن سندور میں بھارت کو کامیابی دلائی، مسلح افواج نے پہلے 9 دہشت گرد ٹھکانوں پر نشانہ بنایا۔

میری نظر میں دہشت گردی کے دل پر حملہ ہوا، وہ بھاولپور کا تھا، 6 ائر فیلڈ، 3 ہینگر، 2 رنوے کو ہم نے تباہ کیا۔ آپریشن سندور کی کامیابی کی اہم وجہ یہ تھی کہ ملک میں اتہاد اور اتفاق پیدا ہو گیا، ایک یوفیریا پیدا ہو گیا تھا، مگر افسوس کہ حکومت نے اس کا فائدہ نہیں اُٹھایا۔ میں آج بھی ذمہ داری کے ساتھ کہہ رہا ہوں کہ پاکستانی فوج، آئی۔ایس۔آئی۔ اور ڈیپ اسٹیٹ کا حیاتی مقصد یہی ہے کہ ہمیشہ بھارت کو کمزور کیا جائے۔ اگر ہمیں ان طاقتوں کو کمزور کرنا ہے تو دیش میں اتہاد اور اتفاق کو برقرار رکھنا پڑے گا۔ اگر ہم بلڈوزرکے ذریعہ یا پھر لسانیِ ضبر کے ذریعہ یا مذہبی فرقہ پرستی کر کے اقلیتوں کو نشانہ بنائیں گے تو ہم خدا نہ خواستہ ان پڑوسی ملک کی دہشت گرد تنظیمیں کامیاب نہ ہو جائیں۔

میڈم، میں آپ کے سامنے یہ بھی کہنا چاہوں گا کہ اتہاد اور اتفاق اس ملک میں جب مضبوط ہوگا تو ہم کو بین الاقوامی سطح پر دکھانے کی ضرورت نہیں ہوگی۔ میں آپ کی طرف سے حکومت سے چند سوالات کرنا چاہوں گا کہ وزیرِ اعظم نے کہا کہ خون اور پانی ایک ساتھ نہیں بہہ سکتا، آتنک واد اور بات چیت ایک ساتھ نہیں ہو سکتی۔ میرا سوال آپ کے ذریعہ سے وزیرِ

اعظم اور حکومت سے ہے، جن انسانوں کو بیسرن کی وادی میں مارا گیا تھا، کیا آپ کا ضمیر اس بات کی اجازت دیتا ہے کہ آپ ٹریڈ بند کر دئیے، پاکستان کا ائرکرافٹ ہمارے ائر اسپیس میں نہیں آ سکتا، ان کی کشتی ہمارے پانی میں نہیں آ سکتی، ڈائریکٹ اور ان ڈائریکٹ ٹریڈ ختم ہو چکا ہے، آپ کا ضمیر ذندہ کیوں نہیں ہے، کس صورت سے آپ پاکستان سے کرکٹ میچ کھیلیں گے۔ جب ہم پانی نہیں دے رہے ہیں، 80 فیصد پاکستان کا پانی ہم روک رہے ہیں۔

یہ کہہ کر کہ پانی اور خون نہیں بہے گا، لیکن آپ کرکٹ میچ کھیلیں گے۔ میڈم میرا ضمیر تو گوارا نہیں کرتا کہ میں اس میچ کو دیکھوں گا ۔ محترمہ، کیا اس حکومت میں اتنی ہمت ہے کہ ان 25 مرنے والوں کو فون کرکے کہے کہ دیکھو کہ ہم نے آپریشن سندور کا بدلہ لے لیا ہے اور اب تم پاکستان کا میچ دیکھو۔ یہ بہت افسوس کی بات ہے۔ پہلگام کسنے کیا اور کس کی اکاوُنٹیبلیٹی کس پر ہے؟ ہماری ساڑھے سات لاکھ فوج اور سینٹرل پیلا ملٹری فورس ہے۔ کہاں سے یہ چار چوہے گھُس کر ہمارے بھارت کے ناگرکوں کو مار سکے۔ اس کی اکاوُنٹیبلیٹی کس پر فِکس ہوگی۔ اگر ایل۔جی۔ پر اکاوُنٹیبلیٹی فِکس ہوگی تو ایل۔جی۔ کو برطرف کیجئے، اگر آئی۔بی۔ پر آتی ہے تو ایکشن لیجیئے۔ پولس پر آتی ہے تو ایکشن لیجیئے۔ آپ یہ سمجھ رہے ہیں کہ آپریشن کردیا اور ہم خاموش ہوکر اکاوُنٹیبلیٹی بھول جائیں گے، لیکن ایسا نہیں ہے۔ آپ کو اکاوُنٹیبلیٹی فِکس کرنی پڑے گی۔

میڈم، ڈیٹرینس کیاہے؟ آپ نے سرجیکل اسٹرائک کی، آپ نے بالا کوٹ کیا۔ اس کے بعد پہلگام ہوا تو آپ کی ڈیٹرینس کیا ہے؟ آپ کی ڈیٹرینس کی پالیسی ناکام ثابت ہوئی، کشمیر کی پالیسی ناکام ثابت ہوئی۔ آپ نے دھارا 370 ہٹا دی آپ نے ایک ریاست کو یو۔ٹی۔ بنا دیا، اس کے باوجود بھی دہشت گرد وہاں پہنچ گئے اور مجھے افسوس اس بات کا ہے کہ پاکستان کو ہم جانتے ہیں۔ پاکستان اور اسرائیل دنیا میں فیلڈ اسٹیٹس ہیں۔ اور پاکستان کے آرمی چیف کو، جس سے ہمارے اسٹریٹجِک ریلیشن ہیں، جسے ہم اپنا دوست کہتے ہیں، اس دیش کا پریذیڈینٹ اس شخص کو بلا کر اپنے ساتھ کھانا کھلاتا ہے، جس کے بھاشن سےہمارے لوگ مارے گئے تھے، تو کیا آپ کی خارجہ پالیسی کامیاب ہوئی؟ آپ دیکھ لیجیئے۔ ہمارے ملک میں ایک ایسی تنظیم ہے جس کا وجود نفرت کی بنیاد پر اور مذہبی عصبیت کو پھیلانے کے لئے بنایا گیا ہے۔ ان کو سیکولرزم اور سوشلزم سے تکلیف ہے، مگر ہمارے آئین کے پریمبل میں لفظ سوورن ہے جس کا مطلب ہے کہ ہم خود مختار ہیں اور ہم ہی حاکمِ اعلیٰ ہیں۔ ہم اپنے ملک کے مقدر کا فیصلہ کریں

گے۔ ایک گورا وہائٹ ہاؤس میں بیٹھ کر بھارت کے سیز فائر کا کیا اعلان کرے گا؟ کیا یہ آپ کا نیشنلزم ہے؟ مجھے اس کا افسوس ہوتا ہے۔

محترمہ، میں آپ سے پوچھنا چاہتا ہوں کہ اگر یہ چچا سیم اعلان کر رہے ہیں تو ہماری فوج پر کیا اثر پڑ رہا ہوگا؟ ہمارے پائلٹوں پر کیا اثرف پڑے گا جو نہیں معلوم کتنی اوپر سے بھارت کی حفاظت کر رہے ہیں۔ نیوی کا سپاہی جو سمندر میں کھڑا ہوا ہے، اسے یہ نہیں معلوم کہ میرے پردھان منتری نے اعلان نہیں کیا، بلکہ ایک گورے نے اعلان کیا ہے۔ آپ بتائیں کہ اسے کیسا لگے گا؟ میرا حکومت سے سوال یہ بھی ہے کہ ہم امریکہ کے لئے ایڈورشیل کنٹری نہیں ہیں، ہم دوست ہیں۔ اسٹریٹجِک ریلیشنشِپ ہے۔ ہم نے کیا کیا ایگریمینٹ سائن نہیں کیا؟ کیا یہ دوستی نبھا رہے ہیں۔ میں ایک تاریخی ایکزامپل دے رہا ہوں۔ خروشیو نے دباوُ ڈالا لیکن ٹیٹو نے کہا کہ میں نہیں مانتا، میں این۔اے۔ایم۔ جوائن کروں گا۔ فرانس اور یو۔ایس۔اے۔ نے ڈی گال پر جب دباوُ ڈالا تو ڈی۔ گال نے کہا کہ تم دوست ہو۔ مگر ہماری خارجہ پالیسی آزادی ہے۔ گجرال صاحب، جن کے بارے میں کہتے تھے کہ سب سے کمزور وزیرِ اعظم تھے۔ انہوں نے بہادری کا مظاہرہ کیا اور ریفیولِنگ نہیں کرنے دی۔ ویتنام 20 سال تک یو۔ایس۔اے۔ سے لڑا لیکن جھُکا نہیں اور ہم ان کو بول بھی نہیں پا رہے ہیں۔ ہم امریکہ کے دشمن ملک نہیں ہیں۔ یہ سمجھنے کی ضرورت ہے وزیرِ خارجہ نے کہا کہ وہ چین گئے۔ ڈپٹی چیف آف اسٹاف نے کہا کہ چین کے ایکوِپمینٹ ایک لائیو لیب تھا ان کے لئے۔ کیا آپ نے چین سے کہا کہ آپ نے پاکستان کا ہتیار کیوں دئیے؟ آپ نے نہیں کہا۔ میڈم، آپ جانتی ہیں کہ رکشا منتری نے کہا کہ Swift and Proportionate۔ انڈونیشیا ملٹری اٹاشئے نے کہا کہ ہم کو کہا گیا کہ مت مارو۔ ہم سیلف ڈیفینس میں بھی کیا پاکستان کو نہیں مار سکتے تھے۔ اگر آپ ٹرمپ کے بیان کو غلط کہہ رہے ہیں کہ پانچ ائر کرافٹ نہیں گرے اور میں آپ کی بات کا یقین کرتا ہوں، آپ ہمارے پائلٹس کو کمینڈ کیجیئے۔ آپ ہمارے پائلٹس کی تعریف کیجیئے، لیکن آپ وہ بھی نہیں کرنا چاہتے ہیں۔ میں حکومت سے جاننا چاہتا ہوں کہ فرانس نے ہمیں سورس کوڈ نہیں دیا، جس کی وجہ سے ہمارے ائرکرافٹس کو کیا نقصان ہوا؟ مستقبل میں آپ ہتیار خریدیں گے تو کیا آپ سورس کوڈ حاصل کریں گے۔ میرے سوال کا جواب حکومت دے کہ ہمارے پاس سینکشنڈ اسکواڈرنڈ 42 ہے۔ 60 سال کے بعد صرف 29 کام کر رہے ہیں۔ پاکستان کے پاس 25 ہیں۔ چین کے پاس 50 سے زیادہ ہیں 11 سال سے آپ سرکار میں ہیں۔ سب مرین نہیں ہے۔ تھرڈ ائرکرافٹ کیریر کہاں پر ہے، آپ بتائیئے؟ ایف۔اے۔ٹی۔ایف۔ میں لانا پڑے گا۔ آپ اگر وِشو گرو ہیں تو ہم آپ کو چیلینج کر رہے ہیں

کہ جی-7 کنٹریز کو، جی-سی-سی- کو اور چاچا سیم کو راضی کروائیے کہ پاکستان کو ایف-اے-ٹی- ایف- میں دوبارہ لایا جائے۔

میڈم، آل پارٹی میٹنگ ہوئی- دیکھیئے، مرکزی سرکار اور راجیہ سرکار میں کتنا کانٹریڈیکشن ہے- آل پارٹی میٹنگ میں میں تھا- کیندر سرکار نے کہا کہ نہیں، بیسارن میڈوز پر تو کوئی جا ہی نہیں سکتا، اجازت لینی پڑتی ہے- بعد میں ہمیں معلوم ہوا کہ سوائے بارش اور اسنو کے میڈوز سال بھر کھُلا رہتا ہے- یہ کانٹریڈیکشن ہے- میں آپ کے ذریعہ سے حکومت سے مطالبہ کرتا ہوں کہ قومی سیکیوریٹی، یعنی نیشنل سیکیوریٹی کو، خارجہ پالیسی کو راجنیتی کا مُدعہ مت بنائیے- یہ ہمارے ملک کے مفاد میں نہیں ہوگا- ہمارے ملک کے اتہاد، یکجہتی کو آپ ووٹ کا ذریعہ مت بنائیے-

میڈم، میں آخری بات پوچھنا چاہتا ہوں، کیا چین سے ہم سے کہا تھا کہ سیز فائر کرلو؟ پاکستان نے ہمارے پائلٹس کی باتوں کو کیسے سُنا کہ ہمارا کمیونیکیشن نہیں ہے؟ آخری میں، میں ایک شعر سے اپنی بات ختم کروں گا کہ .

اپنے ہی ہاتھوں سے سر اپنا کٹانا ہے ہمیں

مادرِ ہند پر بھیٹ چڑھانا ہے ہمیں

کس طرح مرتے ہیں ابرارِ وطن بھارت پر

یہ تماشہ ہے، جو دنیا کو دِکھانا ہے ہمیں-

یہ میں بھارت کی اس بہادر فوج کے نام پر کرتاہوں، مسلح افواج کے نام پر کرتا ہوں، یہ شعر کہنے والا بی-جے-پی- کا کوئی انسان نہیں تھا- یہ شعر کہنے والا -شیر تھا- شہید اشفاق اللہ خان- میں پھر حکومت سے کہہ رہا ہوں کہ پاکستان ٹیررزم کرے گا- آپ تیار ہو جائیے- چین سے کتنا امبیلینس ہو رہا ہے، کتنا ٹریڈ کا امبیلینس ہو رہا ہے- جب گلوان کی گھٹنا ہوئی،اس وقت بھی ٹرمپ نے کہا کہ میں بات کروں گا، ہم نے کہا کہ نہیں بات کریں گے- ضرورت نہیں ہے- آج ٹرمپ ہم سے پہلے بولتا ہے، عزت نفس بھی کوئی چیز ہوتی ہے- کوئی یہاں رہے گا، کوئی وہاں رہے گا، مگر اقتدار میں اقبال ہونا چاہئیے- بد بختی کی بات یہ ہے کہ آپ نے اقبال کو کھو دیا- بہت بہت شکریہ ---]

ADV. FRANCIS GEORGE (KOTTAYAM): Madam Chairperson, I rise today not to indulge in blame, but to raise questions that this Republic must not shy away from. The gruesome attack in Pahalgam on 22nd April 2025, which saw the targeted killing of 26 unarmed civilians, most of them pilgrims, is not merely a lapse but a loud alarm. The attackers are now confirmed as Pakistani nationals and members of Lashkar-e-Taiba?s proxy, the Resistance Front who operated freely for nearly 20 minutes in a supposed high-security zone. Despite having a supposedly seamless 24X7 aerial surveillance grid, this infiltration went undetected. How, why, and who is accountable?

While our Armed Forces responded with valour through Operation Sindoor, and managed to neutralise key terror camps and destroy a Pakistani UAV hangar in Sukkur, we must ask ourselves why we were reacting in the first place. Why did we not prevent it?

Madam, we have to think about our defence failures and strategic gaps. Pakistan today operates approximately 200 medium-altitude, long-endurance combat drones, many of them Chinese-made Wing Loong II platforms, capable of delivering guided munitions over 4,000 square kilometres. In contrast, India's drone inventory comprises mostly unarmed Herons, and we operate zero armed UCAVs on the frontline.

Our AI budget per service is only Rs. 100 crore, roughly $12 million as compared to China's estimated $1.6 billion annual investment in AI-powered military capabilities. This is not a gap but, it is a chasm.

The Defence Acquisition Council may have cleared the procurement of 87 armed drones, but delivery is expected no sooner than 2028. Is our adversary going to wait for us to catch up? India must quadruple its AI and drone investments immediately and establish a Joint Unmanned Command by 2026.

Madam, there is a serious manpower crisis in our Forces. Our Army has a staggering shortfall of 1,00,000 personnel, and a 16.7 per cent officers? posts vacant. The Indian Air Force faces a deficit of nearly 600 pilots, compounded by decade-long delays in inducting basic trainers. These are not minor HR problems. These are capacity breakdowns. I propose that there

should be an incentivised retention scheme, AI specialisation stipends, and an immediate overhaul of the permanent commission structure.

Regarding intelligence and surveillance failures, we cannot put the blame of every breach on rogue actors when foreign militants can camp in Baisaran meadows and kill civilians without interception. Satellite reconnaissance, drone ISR, and ground intel, none of it functioned cohesively. We need a Kashmir Threat Fusion Centre integrating NTRO, DIA, and R&AW into a real-time AI-enabled threat response cell.

Regarding strategic communications and transparency, Operation Sindoor did bring a certain amount of tactical success. But the truth has a way of surfacing. While the official narrative denied aircraft losses, satellite imagery, international intelligence leaks, and even our own Defence Attache's seminar notes revealed the truth. We lost three Rafales, one Sukhoi Su-30MKI, and one MiG-29. All were shot down in our own territory. When Government denials are contradicted by the foreign media and allied nations, we do not appear strong. We rather appear dishonest. This erodes credibility and gives space to hostile disinformation both abroad and within. Let us enact a Defence Transparency Charter mandating truthful public briefings within 48 hours of battlefield developments.

A few minutes ago, the hon. Foreign Minister was speaking eloquently. The diplomatic dimension reveals further cracks. Pakistan's appointment as Vice-Chair of the UN Security Council's Counter-Terrorism Committee and the Chair of the Taliban Sanctions Committee is an international embarrassment and a glaring indictment of our foreign policy. How can a State that sponsors terror be given such prominence on global platforms, while India's voice is muted or doubted? It forces a hard question. Why are we failing to build coalitions and credibility? There is a saying ? ?Every nation has an army?. But in the case of Pakistan, army has the nation. And here is the most glaring failure ? the so-called "Trump mediation." This was a purely bilateral issue between India and Pakistan. So, why did we allow a foreign leader, President Donald Trump, to publicly claim that he mediated the ceasefire, even declaring "he stopped a nuclear war"? Our official denial was weak and reactive but allowed this narrative to gain traction. Is this not a diplomatic humiliation or a vacuum in crisis communication that invited foreign

opportunism? If we cannot own our story in moments of crisis, how will the world respect our sovereignty or our resolve?

Why do so many countries temper or withhold condemnations of Pakistan? The answer lies in our own credibility ? the reluctance to share facts timely and transparently, the denials that unravel at the international stage. Credibility is not merely about strength; it is about trust. Without trust, alliances falter, and adversaries gain ground.

Let me speak about our media. During Operation Sindoor, we saw Indian newsrooms amplify false reports of Pakistani aircraft being downed, while simultaneously parroting Government denials about our own losses. Some went as far as to claim that Indian Forces had ?taken over Karachi port? and ?captured key Pakistani cities?. Those claims were so wildly detached from reality that they undermined the credibility of our actual military achievements. Only when foreign outlets presented satellite imagery and independent confirmations did our narrative shift. This is not patriotism. This is abdication. Why did this happen? It is because opaque briefings encouraged speculation. Media houses fear losing access more than they fear losing credibility. I call upon this House to empower an independent Defence Media Ombudsman under the Press Council Act with powers to sanction falsehoods and reward accurate reportage.

I would like to tell the Government that the question is not to weaken the Republic. To demand reform is not to disrespect our Forces. It is to honour them. We salute the courage of our soldiers, our pilots, and our intelligence personnel. But it is our duty in this House to ensure that their bravery is matched by our preparedness. I would like to emphasise that the ruling dispensation should not let them down. We must modernise our Forces. We must tell the truth. We must rebuild diplomatic capital. We must never again let Pakistan or any other State use our silence to gain credibility at our expense.

Let the memory of the lives lost in Pahalgam not be confined to condolence resolutions. Let it be the turning point for bold and bipartisan defence reform.

SHRI ANURAG SINGH THAKUR : Madam Chairperson, through you, I would like to request the hon. Member to authenticate whatever he has said or the allegations he has made?

(*Interruptions*) Kindly authenticate that. ? (*Interruptions*) Earlier, both the hon. Defence Minister and the hon. Minister of External Affairs have given the details regarding this. ? (*Interruptions*) So, kindly authenticate whatever you have said; otherwise, it should be considered off the record. ? (*Interruptions*)

एडवोकेट चन्द्र शेखर (नगीना) : सभापति महोदया, धन्यवाद।

?आओ, झुककर सलाम करें उनको, जिनके हिस्से में यह मुकाम आता है,

बहुत खुशनसीब होते हैं वे लोग, जिनका लहू देश के काम आता है।?

महोदया, सबसे पहले मैं, ?ऑपरेशन सिन्दूर? में हमारे देश की सेना ने जो पराक्रम दिखाया, शौर्य दिखाया, उसके लिए उनको सैल्यूट करता हूं, ?जय भीम? करता हूं। पहलगाम हमले में हमारे जो निर्दोष नागरिक शहीद हुए या सीज़फायर के बाद अन्य लोग जो शहीद हुए, उन सभी लोगों के लिए प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवारों को कुदरत दुख सहने की शक्ति दे।

महोदया, मेरे सरकार से कुछ सवाल हैं। क्या सरकार यह स्पष्ट कर सकती है कि आतंकियों को भारतीय क्षेत्र में प्रवेश और पहलगाम जैसे पर्यटन महत्वपूर्ण स्थल तक पहुंचने में किसने मदद की? क्या सुरक्षा एजेंसियों को इस हमले की पहले से कोई खुफिया इनपुट प्राप्त हुई थी? यदि हाँ, तो उन पर क्या कार्रवाई हुई?

पहलगाम हमले में शहीद हुए नागरिकों और स्थानीय ड्राइवर माज़िद खान के परिजनों को सरकार द्वारा क्या मुआवजा और सहायता दी गई? क्या सरकार पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विशेष स्टैण्डर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीज़र लागू कर रही है? क्या भारत सरकार ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर यह मांग रखी है कि जब तक पाकिस्तान आतंकवाद पर कठोर कार्रवाई नहीं करता, तब तक उसे किसी प्रकार की आर्थिक सहायता न दी जाए?

?ऑपरेशन सिन्दूर? के बाद जब पाकिस्तान ने जवाबी हमले किए, तो 21 भारतीय नागरिक शहीद हुए। यहाँ तक कि हमारे गुरुद्वारों को भी निशाना बनाया गया। तब सरकार ने सीज़फायर की अनुमति क्यों दी? क्या यह भारत की कूटनीतिक कमजोरी को नहीं दर्शाता?

सभापति महोदया, मुज़फ्फरनगर में हमारे जिला सचिव भाई कामिल के परिवार के दो बच्चे भी इस हमले में शहीद हुए थे।

क्या सरकार यह मानती है कि टी.आर.एफ. द्वारा इस हमले में खास तौर पर हिन्दू पर्यटकों को निशाना बनाना भारत में सांप्रदायिक द्वेष को बढ़ावा देने का प्रयास था? यदि हाँ, तो इसे रोकने हेतु सरकार ने क्या रणनीति बनाई?

सरकार उस मुस्लिम पोनी ऑपरेटर को क्या सम्मान देगी, जिसने अपनी जान देकर तीर्थयात्रियों की रक्षा की? क्या उसे ?शहीद? घोषित किया जाएगा?

पाकिस्तान को हाल ही में आई.एम.एफ. द्वारा 2 अरब डॉलर से अधिक की सहायता राशि दी गई है। क्या भारत ने औपचारिक रूप से आई.एम.एफ. और अन्य वैश्विक संस्थाओं के समक्ष आपत्ति दर्ज करायी है? क्या सरकार ने इसकी जांच की है कि आई.एम.एफ. या अन्य विदेशी मदद का कोई हिस्सा कहीं आतंकवादी गतिविधियों में उपयोग तो नहीं हो रहा है?

क्या सरकार यह स्वीकार करती है कि पहलगाम हमले में खुफिया तंत्र पूरी तरह विफल रहा? यदि हाँ, तो कौन ज़िम्मेदार है और उनके विरुद्ध क्या कार्रवाई होगी?

क्या सरकार यह स्पष्ट कर सकती है कि इतने भारी सुरक्षा प्रबंधों के बावजूद टी.आर.एफ. जैसे आतंकी संगठन के सदस्य भारत में प्रवेश कैसे कर जाते हैं? क्या सरकार बताएगी कि पहलगाम जैसे संवेदनशील क्षेत्र में सुरक्षा समीक्षा अंतिम बार कब की गई थी और उसमें क्या कमियां चिह्नित की गयी थीं?

प्रधान मंत्री जी ने इस हमले के बाद पहलगाम का दौरा क्यों नहीं किया जबकि देशभर में भावनात्मक उबाल था? क्या सरकार ने शहीद हुए नागरिकों के परिजनों को आर्थिक मदद व स्थायी सहायता योजना प्रदान की? यदि हाँ, तो उसका विवरण सदन में प्रस्तुत करें।

महोदया, सरकार के लोग सेना के सम्मान की बात करते हैं। इस घटना के बाद सेना के जवान अमरनाथ यात्रा की ड्यूटी पर जा रहे थे। उनको वहां जाने के लिए ऐसी रेल दी गयी, जिसकी हालत बड़ी खराब थी। सेना के जवानों ने मना कर दिया और कहा कि हम इस रेल में में नहीं बैठेंगे और चार दिन बाद उसे बदलनी पड़ी।

आप इस सरकार के नेताओं की भाषा देखिए। कर्नल सोफिया कुरैशी के बारे में किस तरह के शब्द यूज किए गए। इन पर भी हमें चिंता करनी चाहिए।

महोदया, देश की सेना के लिए मेरी मांग है कि सेना और अर्द्धसैनिक बलों के वेतन को टैक्स मुक्त किया जाए। उन्हें ?बैटल ऑफ ऑनर? से सम्मानित किया जाए। इस समय ऐसा ही विषय चल रहा है। देश की सेना पर हमें गौरव है। जिस तरह से आतंकवादी गतिविधियाँ बढ़ी हैं, मेरी मांग है कि ?बैटल ऑफ ऑनर? से सम्मानित चमार रेजिमेंट को बहाल किया जाए। इसके साथ ही गुर्जर रेजिमेंट, मेहत्तर रेजिमेंट और यादव रेजीमेंट बनाए जाएं। देश का जो कमेरा और किसान हैं, उनके अंदर देशप्रेम का जज्बा बहुत जबरदस्त है। अगर इनको मौका मिलेगा तो पाकिस्तान छोड़िए, शायद चीन की भी हिम्मत नहीं होगी कि वह हमारे देश के ऊपर आँख उठा कर देख ले।

महोदया, बाबा साहेब अंबेडकर कहते थे कि हम ?प्रथम और अंतिम? भारतीय हैं। भारत के आन पर जब आंच आती है तो जिस तरह इस बार प्रदर्शन हुआ, देश एकजुट रहा, चाहे पक्ष हो या विपक्ष हो, सब लोग एकजुट रहे, ऐसे ही हमें

एकजुट रहना चाहिए। अगर हम एकजुट रहेंगे, तभी आतंकवादियों से लड़ पाएंगे।

महोदया, वर्ष 1965, 1971 और 1999 के युद्ध में किसी भी अरब देश ने पाकिस्तान का साथ नहीं दिया था, लेकिन आज एक भी अरब देश हमारे फेवर में नहीं खड़ा है। क्या हमें अपनी फॉरेन पॉलिसी पर नहीं सोचना चाहिए? आज ऐसी कौन सी बात हो गई है? हमारी जो लोकल राजनीति है, कहीं इसके चक्कर में हमारे मित्रों के मन में पीड़ा तो नहीं पहुंच रहा है? पाकिस्तान ने कहा और आपने मान लिया तथा सीजफायर कर दिया।

आज मैंने रक्षा मंत्री जी के भाषण को सुना। उन्होंने पाकिस्तान के बारे में कहा कि महाराज, हम हाथ जोड़ते हैं, आप छोड़ो। उन्होंने कहा और आपने मान लिया। फिर उसके बाद 10 तारीख को दोबारा ड्रोन उड़े। उस घटना में 15 लोग शहीद हुए और 43 लोग घायल हुए। हम अपने आम नागरिकों को क्यों नहीं सुरक्षा दे पा रहे हैं? मैंने रक्षा मंत्री को सुना था। वे कह रहे थे कि ?ऑपरेशन सिन्दूर? खत्म नहीं हुआ है, बल्कि इसे रोका गया है। इसका मतलब है कि हमें अभी भी खतरा है और दोबारा हमला हो सकता है। आज भी पाकिस्तान अपने हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। हम अपने आम नागरिकों और सेना के जवानों के जीवन को खतरें में क्यों डाल रहे हैं? क्या हमें इसका पुख्ता और परमानेंट इंतजाम नहीं करना चाहिए?

महोदया, मैंने सरकार को कई बार सुना है। सरकार के लोग अखंड भारत की बात करते हैं। पीओके लेने के लिए इससे अच्छा मौका आपको कहां मिलता? हमारे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पीओके लेने की बात बार-बार कहते हैं। वे चुनाव के समय कह रहे थे कि पीओके इस बार भारत की तरफ होगा। सरकार बन गई, क्योंकि जनता ने उनको मौका दे दिया। आज पीओके कहां है, आप इस बार पीओके क्यों नहीं ले कर आए? इस बार आप पहली सीढ़ी चढ़ गए थे। जिस तरह से मीडिया ने माहौल बनाया था, उससे ऐसा लगा कि पूरा पाकिस्तान हमारे कब्जे में होगा। देश की सेना ने जो हिम्मत जुटायी थी, अगर उसमें सरकार मदद करती तो माननीय नरेन्द्र मोदी जी इस बार पाकिस्तान के भी प्राइम मिनिस्टर होते। हमारी फाइनैंस मिनिस्टर अभी यहां बैठी हुई हैं, वह भी पाकिस्तान के फाइनैंस मिनिस्टर होती, क्योंकि इस तरह के हालात बने हुए थे। ऐसा मौका चुकना नहीं चाहिए था। इस बार आप पीओके ले लेते, इससे अच्छा मौका कैसे मिलता, क्योंकि पूरा देश एकजुट था। ? (व्यवधान)

महोदया, मैं अपनी बात एक मिनट में ही खत्म करूंगा। अभी पूरा देश एकजुट था। इससे अच्छा मौका कहां था? अब अमेरिका में बैठ कर कोई देश का फैसला करे, यह देश की गरिमा और संप्रभुता पर बहुत बड़ा हमला है। इसको हमें समझना चाहिए। भारत दुनिया में इकलौता ऐसा देश है, जिसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता है। यहां के 140 करोड़ देशवासी एकजुट खड़े हैं। हम सब को जवाब दे सकते हैं।

महोदया, मैं अपनी बात खत्म करते हुए कहना चाहता हूं कि अभी अमरनाथ की यात्रा शुरू होने वाली है। यह यात्रा अगस्त के फर्स्ट वीक में होगी।? (व्यवधान) नहीं-नहीं, अभी यह यात्रा चल रही है। अनुराग भाई, मैंने आपको बोलने का मौका नहीं दिया। आप मेरे ऊपर नराजगी मत डालिए। आप उनसे लड़िए। मुझे उसमें कुछ नहीं कहना है।

अमरनाथ की यात्रा खत्म होने वाली   है। वहां सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम होने चाहिए। दोबारा ऐसी कोई घटना नहीं होनी चाहिए।

महोदया, अंत में, मैं कहूंगा कि आम लोगों की जान भी गई हैं। क्या सरकार ने उन परिवारों को मुआवजा दिया है? क्या उनके जीवन का कोई मूल्य नहीं है, जिन्होंने अपना परिवार, अपना बेटा, अपना पति और घर का कमाने वाले व्यक्ति को खोया? आज उनका भी अधिकार बनता है। क्या सरकार ने उनको मुआवजा दिया? इस बात की जानकारी भी सरकार को सदन के पटल पर रखनी चाहिए। मैं भारतीय सेना को धन्यवाद दूंगा। उनके लिए पूरे भारत का प्यार है। पाकिस्तान और आतंकवादियों का भरसक प्रयास था कि यहां सांप्रदायिकता का माहौल बन जाए, लेकिन देशवासियों ने समझदारी दिखायी। कश्मीरियों को भी मैं बहुत धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने कोशिश की कि किसी भी तरह से कश्मीर के ऊपर जो इतना बड़ा इल्जाम लगा, उसमें कश्मीरी शामिल न हो। ऐसे आतंकवादियों पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। अभी पता लगा है कि ?ऑपरेशन महादेव? हुआ है। यह भी पता चला कि वे तीनों आतंकवादी मारे गए हैं। मैंने अखबार में यह भी पढ़ा था कि जो मुख्य आरोपी था, वह कुछ दिन पहले पाकिस्तान में था। क्या यहां कोई पिकनिक चल रही है कि कोई उधर भी चला जाता है और इधर भी आ जाता है। बॉर्डर पर ऐसी स्थिति क्यों है? इस बारे में देश को बताना चाहिए
।

महोदय, मैं आपको धन्यवाद देना चाहूंगा। मैं भारत की महान सेना की मंगल कामना करता हूं। जय भीम, जय भारत।

-

-

<u>22.00 hrs</u>

SHRI N. K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): Thank you very much, Madam Chairperson. First of all, on behalf of my Party RSP, I strongly condemn the heinous terrorist attack in Pahalgam killing 26 innocent Indian tourists including a Nepali national.

It is an undisputed fact that the massacre was with the aid and support of Pakistan and The Resistance Front (TRF), a local outfit of Lashkar-e-Taiba. On 16 April, 2025, the Pakistan Army Chief, General Asim Munir delivered a highly provocative and communal speech advocating the two-nation theory. Just six days after the hatred communal provocative speech, the terrorists attacked in Pahalgam taking the lives of 26 innocent people. Further, it is well evident that Pakistan?s terror sponsorship has become more evident when the Pakistan Army

has accorded military funeral to the dead terrorists and the terrorist leaders have openly appeared in platforms with the political leaders. All this goes to show that Pakistan is using its soil to promote terrorism, and that is to be abolished or finished by galvanising global support as far as India is concerned.

I have no words to appreciate and congratulate the Indian Armed Forces in their precise and decisive attack on the terrorist camps in Pakistan and also in the Pakistan-occupied J&K, and targeting and destroying nine terrorist camps on Pakistan?s soil without even crossing the Line of Control.

We salute the Indian Armed Forces in having a successful Operation Sindoor. Operation Sindoor is conceived as a punitive and targetted campaign to dismantle the terror infrastructure across the Line of Control and deeper inside Pakistan. India?s retaliatory action in response to the Pahalgam terrorist attack was based on meticulous planning and intelligence-led approach which ensured minimal collateral damages. It is significant to note that no women or children were targetted reflecting the Indian Army?s strict commitment to ethical conduct.

In response to Operation Sindoor, Pakistan initiated series of retaliatory drone and UCAV attacks targeting Indian air base and logistic infrastructure. These attempts were neutralised by India?s comprehensive and multi-layered air defence architecture. Operation Sindoor not only reaffirmed India?s military capabilities and technological superiority, but also showcased restraint in warfare. Operation Sindoor was well planned, well executed and well coordinated, and we were able to give a strong message to the whole nation of zero-tolerance against terrorism. Actually, I agree that it is absolutely a total success.

But when we talk about the success stories of Operation Sindoor, we should critically analyse the failures that we have faced during Operation Sindoor and Pahalgam terrorist attack. I would like to flag three major failures or shortcomings on the part of the Government. First, it is intelligence failure. Most of the hon. Members have already stated about this issue, but the most unfortunate Pahalgam attack took place when the US Vice-President was on an official visit to India, and the military as well as the State intelligence miserably failed in combatting this terrorist

activity in Pahalgam. It is a total failure of intelligence both military as well as State intelligence groups.

The second failure is the tactical failure. Immediately after the Pahalgam attack, India had declared that it would pursue the perpetrators of the Pahalgam attack of 22 April to the ends of the earth. The words used were ?to the ends of the earth?. The Resistance Front claimed responsibility of the attack. The Indian investigating agencies had already identified four persons who were responsible and said that the leaders of the Pakistan-based LeT had masterminded the attack. This was also admitted. It is quite unfortunate that none of the perpetrators or the alleged masterminds were either injured or killed. TRF has not been eliminated even after Operation Sindoor.

The third failure is the most important issue, which I would like to mention here, which is the failure of Indian foreign policy. The foreign policy of this Government during the last 11 years has failed to convert India?s military gains into a sustained diplomatic advantage over Pakistan. That is a major allegation which I would like to make. Key international developments subsequent to the Pahalgam attack reveals a pattern of strategic setbacks, raising questions about the foreign policy of this Government. The hon. Prime Minister's grand claim that India, as Vishwaguru is a teacher to the whole world, and Vishwamitra, a friend of the world, has become meaningless when it is tested by a crisis. This is point number one.

Pakistan chairing the UN Security Council?s Taliban Sanction Committee and being the vice-chair of the Counter-terrorism Committee is a diplomatic blow to India, and this development not only undermines India's efforts to portray Pakistan as the epicenter of terrorism, but also raises concerns that Pakistan could use its position to push anti-India narratives in the international forum.

Trump has claimed that he mediated ceasefire between India and Pakistan. Consecutively, the President of America, Mr. Donald Trump is claiming that the ceasefire has happened because of his personal involvement. It is against the long-standing foreign policy of India that there will be no third-party involvement in resolving the India-Pakistan dispute. Even the Russian

President, Mr. Vladimir Putin, has also endorsed that this has happened because of the involvement of Mr. Donald Trump, the President of America.

The third point is this. Pakistan is securing loans from ADB, IMF and the World Bank. Most of the Members have said that. I am not going to explain it.

The fourth point is regarding the diplomatic setback at the UN. India totally failed in its efforts to secure explicit condemnation of Pakistan-based groups for the Pahalgam attack. Pakistan, with the support of China, managed to block a reference to specific perpetrators in UN Security Council statements, diluting India's claims.

My fifth point is regarding the strengthening of ties between China and Pakistan. Shri Rahul Gandhi, in the last Session, has very clearly cautioned the Government that there is a nexus between China and Pakistan, it is going to be a powerful bloc in this area and that has to be taken care of. It was explicitly explained by Sri Rahul Gandhi. Unfortunately, the Government has not taken care of it. Now, practically we have seen China has provided military and diplomatic backing to Pakistan including critical defence systems. China publicly endorsed Pakistan's sovereignty and territorial integrity at the time of Operation Sindoor. The full support and endorsement from China reflect the nexus between China and Pakistan. That is a threat to our national security as far as India is concerned.

The last point is regarding the failure to secure international support in condemnation of Pahalgam attack. Despite high-profile efforts, The Indian Government failed to secure explicit international condemnation of Pakistan for its alleged role in the Pahalgam attack and subsequent escalation. No significant country unambiguously supported Indian actions, neither in the neighbourhood nor in the wider world. While many countries condemned the terror attack in general terms, none directly censured Pakistan or supported India's call for blacklisting Pakistan at forums like Financial Action Task Force. The fact of the US President repeatedly claiming that the ceasefire is due to his personal involvement and he declared the ceasefire more than one hour before India and Pakistan publicly acknowledged is an insult to India's sovereignty and India's independent character.

Madam, when we talk about all these successful achievements of Operation Sindoor, the entire Opposition was with the Government as far as Operation Sindoor is concerned. So, I would like to caution the Government that we have to review the foreign policy of this Government. This Government has to restore the glorious past history of the foreign policy of our country. ? (*Interruptions*)

I am concluding with two sentences. Let us not confuse retaliation with resolution. In the name of national security, Government is losing the trust of the people in Jammu and Kashmir. Therefore, I urge upon the Government not to just settle by celebrating the victory brought by the Armed Forces. The Government shall galvanize the global diplomatic efforts and support to hold the terrorists accountable so as to protect the security of our country.

With these words, I conclude. Thank you very much.

DR. THOL THIRUMAAVALAVAN (CHIDAMBARAM): Hon. Chairperson Madam Vanakkam. Thank you for giving me an opportunity to take part in this Discussion. Twenty-six innocent civilians lost their lives in the Pahalgam attack. I strongly condemn this attack and convey my heartfelt condolences to the bereaved families of those 26 persons. There is no information on what was the compensation provided to the families of each of these victims. There is no information on whether government jobs were extended to the kith and kin of those who died in this attack. Therefore at the outset, I urge that adequate compensation should be provided to the affected families besides providing them employment. We can take pride if that attack was prevented. We can appreciate the Government if it had prevented this Pahalgam attack. But this attack took place snatching away 26 precious lives. At this juncture you are taking pride in talking about surgical strikes and retaliation by this Government. I do not understand as to what is there for taking pride. India is a big country. When compared to Pakistan, we are strong enough and India is several times stronger than that country. Pahalgam attack is a striking example to show that they can intrude into our territory and execute attacks on us even though we are a big country with a population of 140 crore people. This is another threat. This is a challenge made to the internal security of our country. This is a threat to the protection of the people of our country. It is a failure of the Intelligence department. This is utter failure of the Defence Ministry and that of the Government in power. We have to take this as a critical appraisal by ourselves. Only then

we can create an opportunity to strengthen ourselves once again. This shows that our foreign policy has even failed. This attack is clearly showing that our stand on Kashmir has also failed. Government said that abrogation of Article 370 would lead to Kashmir becoming a free land, with no terrorism, and complete freedom for the people to roam anywhere and giving boost to tourism sector. Article 370 was abrogated. But what has happened? This attack in Pahalgam has taken place only after the abrogation of Article 370. People travelled to Kashmir with the hope that Indian Government would protect them. But how this cross-border terrorism took place? Why could not you stop this cross-border terrorism? People went to Pahalgam with the hope that our soldiers are working day and night along the border providing protection to them. Why there were no soldiers present at the place where this attack took place in Pahalgam. Only the horseman who fought against the terrorists was killed. But no soldier from the Army or the Armed forces was killed in this attack. This raises serious questions in our minds. Government?s standpoint on Kashmir has therefore completely failed. Accepting the failure on the part of Government in abrogating Article 370, I urge upon the Government that the Statehood should be granted to Jammu & Kashmir once again as it was before. After this terrorist attack, the tourism industry in Kashmir is very much affected. This State earns more revenue only through tourism. As a matter of compensation, I urge upon the Union Government to provide a special package to Jammu Kashmir in order to compensate the losses faced due to the recent attack in Pahalgam. While making an audit of our Indian Airforce, the Parliamentary Standing Committee on Defence in the year 2023-24 said that there were no adequate number of fighter planes with the Indian Airforce. It gave several recommendations including modernisation of Indian Airforce, besides increasing the number of pilots in the Airforce. But till now the Government has not taken any action on the recommendations of the Standing Committee on Defence. Pakistan claims that a Rafale aircraft was shot down by them. We talk of surgical air strikes on Pakistan. We take pride in saying that we destroyed the camps and hiding places of terrorists in Pakistan. Pakistani Government too says the same statement. Pakistan claims that they have attacked places like Srinagar, Jammu, Poonch, and Bhatinda. They even claim that they had shot down two Rafale aircrafts of our side. We do not know which is true. If two Rafale aircrafts were shot down by them and if it is true, then there should an enquiry on the corrupt practices followed in procuring these Rafale aircrafts for our Defence. Government should give up depending on only Russia for military equipment.

Government should come forward to have agreements with many trustworthy nations of the world aimed at increasing the number of drones with us and to improve upon the technology used by us. Our image in the world arena is affected. How many nations have condemned this Pahalgam attack? What is stand of the USA? Pakistani Army Officer was given a grand party in the USA. What is the meaning? Trump openly says that India is immaterial for them. He claims to have stopped Indo-Pak war and not as claimed by the Indian Government. What is our stand against the USA which is questioning the sovereignty of our country? They sent back Indian immigrants who were illegally settled in the USA with cuffs on hands and legs like animals. We have not condemned USA even once. This shows how weak our foreign policy is. Not only that. I wish to conclude by saying that we have completely failed in our foreign policy and we are least bothered about the unity and integrity of the people of our country. On the basis of religion, we are trying to spread and increase hatred on Muslims and Christians. It is clearly evident in the international arena that we do not have unity. Government should undertake positive measures aimed at protecting the unity of our country and its people. It should give up hatred politics. Particularly as a politics of identifying itself against the Muslims, this Government is taking action against Turkey. It has not taken any action against China. This shows that we are displaying Muslim hatred even in our foreign policy.

Madam, just give me a minute. Politics on the basis of religion remains a potential threat to the security of our nation. We should give up this hatred politics. This Government should improve the unity of the people of this country. In the foreign policy, we should not depend on a single country, rather we should have harmony with all the countries of the world. Thank you so much for this opportunity. Thank you. Vanakkam.

श्री दिलीप शइकीया (दारंग-उदालगुड़ी) : धन्यवाद सभापति महोदया। भारत में जो ?ऑपरेशन सिंदूर? अभियान चलाया गया था, उस विषय पर आज सदन में चर्चा चल रही है। मैं इसमें कुछ विषय रखना चाहता हूं। सबसे पहले मैं उन 26 भारतीयों को इस सदन के माध्यम से पुन: एक बार श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। 22 अप्रैल को पहलगाम में जो बर्बरता हुई थी, मैं उस घटना की भी फिर से एक बार निंदा करता हूं। आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के डिसाइसिव लीडरशिप में भारत के तीनों सेना बल के अतुलनीय साहस, शौर्य और वीरता के कारण ?ऑपरेशन सिंदूर? में भारत को एक बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। इस सफलता के कई विषयों के बारे में मैं इस सदन के माध्यम से भारत की जनता से कहना चाहता हूं कि यह भारत अजेय है। यह भारत अपराजेय है।

भारत की तरफ कोई भी आंख उठाकर देखेगा तो भारत चुप नहीं बैठेगा। आज का समय है जब आदरणीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का सुशासन है। तीनों सैन्य बलों ने जो बहादुरी ?ऑपरेशन सिंदूर? के माध्यम से दिखाई है, इसके लिए मैं सैन्य बलों को नमन करते हुए, सैल्यूट करते हुए भारत रत्न, सुधाकंठ, असम के सुसंतान डॉ. भूपेन हजारिका की एक पंक्ति उनके सम्मान में बोलना चाहता हूं।

Prati jowan roktore bindu ,

Hol xahokhor anonto xindhu ;

Xei xahokhor durjeyo lohore ,

Jasil ei pratigya joyore II

भारत की सेना की और हर भारतीय की यह जय की प्रतिज्ञा थी। हमने ?ऑपरेशन सिंदूर? में विजय हासिल की। हम जानते हैं कि हमारा देश वर्ष 1947 में आजाद हुआ था। आजादी के तुरंत बाद वर्ष 1947-48 में पाकिस्तान ने भारत पर हमला कर दिया। वर्ष 1965 के बाद वर्ष 1971, इसके बाद वर्ष 1999 में हमला हुआ और अब वर्ष 2025 में हमले के बाद ?ऑपरेशन सिंदूर? हुआ।

भारत ने सभी युद्धों में विजय हासिल की। अपोजिशन बैंच के कुछ बंधु पाकिस्तान के साथ हुई लड़ाई का क्रेडिट लेना चाहते हैं। वे क्रेडिट लें, इसमें हमें कुछ आपत्ति नहीं है, लेकिन वर्ष 1947 की लड़ाई में भारत ने कश्मीर की 1/3 जमीन खो दी, इसका जवाब अपोजिशन कांग्रेस के पास है। भारत ने कश्मीर की 1/3 जमीन खोई, क्या इसका जवाब कांग्रेस इस सदन में दे सकती है? उस लड़ाई में भारत ने जो खोया है, क्या उसके लिए कांग्रेस दुख व्यक्त कर सकती है? क्या भारत की जनता के प्रति माफी मांग सकती है? कांग्रेस का इतना साहस नहीं है।

मैडम, वर्ष 1965 में वार हुई। वर्ष 1971 में जो वार हुई, वह सबसे महत्वपूर्ण है। वर्ष 1971 में पाकिस्तान के साथ लड़ाई हुई और बांग्ला देश बना। भारत की सेना ने, भारत के उस समय के शासक ने और सबने उस लड़ाई में जीतने के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया, हम लड़ाई जीते और हमने 90,000 आर्मी को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। वर्ष 1971 में बांग्लादेश बना और आज बांग्लादेश पूरे भारत के लिए विशेषकर पूर्वोत्तर भारत के लिए सिरदर्द बन गया है। वर्ष 1971 के बाद बांग्लादेशी घुसपैठियों के कारण पूरे भारत विशेषकर पूर्वोत्तर भारत में असम, मेघालय, वैस्ट बंगाल और बिहार जैसे राज्यों में बड़ा डेमोग्राफिक चेंज हो रहा है। आज इस डेमोग्राफिक चेंज के कारण असम, बंगाल, बिहार में एक के बाद एक जिले में मेजोरिटी लोग माइनोरिटी बन रहे हैं। बांग्लादेश बना और बांग्लादेश बनने के बाद भारत को जो नुकसान सहना पड़ रहा है, उसकी जिम्मेदार अगर कोई है तो कांग्रेस पार्टी है। कांग्रेस पार्टी के उस समय के शासन, उस समय के शासक ने बांग्लादेश माइग्रेंट्स को वोटर लिस्ट में शामिल करने, राशन कार्ड देने और जमीन का पट्टा देने का पाप किया है, अपराध किया है। यह कांग्रेस गवर्नमेंट ने किया है। इसकी भी जिम्मेदारी कांग्रेस को लेनी पड़ेगी।

मैडम चेयरपर्सन, आज एलओपी नहीं हैं और डेप्युटी एलओपी भी बाहर हैं। जब डेप्युटी एलओपी भाषण दे रहे थे, तो पाकिस्तान की मीडिया में उनका न्यूज़ दिखाया जा रहा था। मैं उसका फोटो भी दे सकता हूँ। यदि आप मांगेंगी, तो पूरा फोटो, पूरा रिकॉर्ड का डाटा मैं आपके सामने जमा कर सकता हूँ।

पाकिस्तानी मीडिया क्या बोल रहा है? वह कह रहा है कि भारत की संसद का हाल देखिए, भारत के सांसदों ने, भारत के प्रधानमंत्री, भारत की सामरिक शक्ति के खिलाफ, उसके विरोध में, उसको नकारने का प्रयास हमारे विरोधी दल के सांसद यहाँ पर कर रहे हैं। मैडम, क्या यह देश के लिए दुख का विषय नहीं है? क्या यह देश के लिए सोचने का विषय नहीं है? हमारे देश की संसद में आज क्या हो रहा है, सांसद क्या वक्तव्य दे रहे हैं, यह पाकिस्तान की मीडिया में आ रहा है। हमारे डेप्युटी एलओपी भाषण देकर गये हैं। मैं डेप्युटी एलओपी को बोलना चाहता हूँ कि डेप्युटी एलओपी के विरोध में असम सरकार ने एसआईटी का गठन किया है। मुझे यह बोलना नहीं चाहिए, लेकिन आज मुझे बोलना पड़ेगा, क्योंकि इसी कारण से एसआईटी बनायी गई है।... ? (व्यवधान) यह डबल स्टैंडर्ड नहीं चलेगा। ? (व्यवधान)

<u>22.28 hrs</u>

At this stage, Shri Amrinder Singh Raja Warring and some other hon. Members came and stood on the floor near the Table.

-

मैं यह तथ्य के आधार पर बोल सकता हूँ। कांग्रेस पार्टी के डेप्युटी एलओपी के खिलाफ असम गवर्नमेंट ने जो एसआईटी का गठन किया है, उसका भी परिणाम 10 सितम्बर को आएगा।? (व्यवधान)

मैडम चेयरपर्सन, हाउस को ऑर्डर में लाइए।? (व्यवधान) ऐसा नहीं चलेगा।? (व्यवधान) वे भाषण झाड़कर चले गए। हमने उनको पूरा सुना।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : यदि कोई ऐसा विषय होगा, तो उसे रिकॉर्ड से निकाल दिया जाएगा। आप लोग बैठिए।

? (व्यवधान)

श्री दिलीप शइकीया : यह डबल स्टैंडर्ड नहीं चलेगा।? (व्यवधान) मैडम चेयरपर्सन, पहले हाउस को ऑर्डर में लाइए।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : अगर ऐसा कोई विषय होगा, तो उसे सदन की कार्यवाही से निकाल दिया जाएगा।

? (व्यवधान)

माननीय सभापति : प्लीज, आप लोग अपनी-अपनी सीट्स पर बैठ जाइए।

? (व्यवधान)

श्री दिलीप शइकीया : मैडम, इन लोगों को मिर्ची लगेगी, इनको मिर्ची जरूर लगेगी क्योंकि यह सत्य है। जो सत्य बोलता है, वह उनको सहन नहीं होता है।? (व्यवधान) जो सच है, वह कांग्रेस पार्टी को हजम नहीं होता है।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : अगर ऐसा कोई शब्द आया है, तो उसे कार्यवाही से निकाल दिया जाएगा।

? (व्यवधान)

श्री दिलीप शइकीया : मैडम चेयरपर्सन, यह बात इनको हजम करनी है।? (व्यवधान) ये लोग जब बोल रहे थे, तो हम पूरी तरह से सुन रहे थे।? (व्यवधान) सत्य को सुनने का भी साहस होना चाहिए। ? (व्यवधान) सत्य को सुनने की क्षमता रखें।? (व्यवधान) जो सत्य है, उसे कोई मिटा नहीं सकता है।? (व्यवधान) जो सत्य है, वह हमेशा सत्य ही रहता है। उसे कोई मिटा नहीं सकता है।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : अगर रिकॉर्ड में कोई ऐसा शब्द है, तो उसे कार्यवाही से निकाल दिया जाएगा।

? (व्यवधान)

श्री दिलीप शइकीया : आपके समय में क्या हुआ? आपको शर्म आनी चाहिए।? (व्यवधान) जब आपकी पहली सरकार बनी, तो कश्मीर का वन-थर्ड लैंड पाकिस्तान ऑक्युपाइड कश्मीर बन गया। वह पीओके बन गया है।? (व्यवधान) आपको शर्म करनी चाहिए। आप लोगों को क्यों शर्म नहीं है? ? (व्यवधान) आपको शर्म करनी चाहिए।? (व्यवधान) मैं बोल रहा हूँ। आप लोग बैठिए। आप लोगों को बोलना है।? (व्यवधान) इस तरह से वेल में आने से और प्रोटेस्ट करने से सत्य ढक नहीं जाएगा।? (व्यवधान) सत्य, सत्य ही रहेगा।? (व्यवधान) मैडम, ऐसा नहीं होता है।? (व्यवधान)

सभापति महोदया, यह इनकी आदत है। देश के खिलाफ कुछ यूनिवर्सिटी बनी है। उस यूनिवर्सिटी के कुछ फैन्स भी हैं। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : माननीय सदस्यगण, कृपया आप लोग अपनी-अपनी सीट्स पर जाकर बैठिए। अगर ऐसा कोई शब्द बोला गया है, तो उसे कार्यवाही से निकाल दिया जाएगा। कृपया आप अपनी-अपनी सीट्स पर जाकर बैठिए।

? (व्यवधान)

श्री दिलीप शइकीया : सभापति महोदया, उस यूनिवर्सिटी के फैन्स भी हैं, यह वहां दिखाई देता है। ? (व्यवधान) मैं फिर से एक बात बोलना चाहता हूं। आप थोड़ा-सा हजम कीजिए। हमने भी हजम किया है। देश के स्वार्थ और भारत के हित में कभी कुछ सच भी हजम करना सीखना चाहिए। ? (व्यवधान)

<u>22.31 hrs</u>

At this stage Shri Amrinder Singh Raja Warring, Sushri Praniti Sushilkumar Shinde and some other hon. Members went back to their seats.

-

सभापति महोदया, मैं फिर से एक बार आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की जो विजनरी लीडरशिप है, भारत के सैन्य बल की जो शक्ति और सामर्थ्य है, मैं उसको सैल्यूट करता हूं। मैं कांग्रेस पार्टी और विपक्ष के लोगों से विनती करता हूं कि आप लोग भी सुनिए। ? (व्यवधान) अगर वॉक आउट करना है, तो कीजिए कोई इश्यू नहीं है। आज जो पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर है, वह जल्द ही भारत का हिस्सा बनेगा। आप कान खोलकर सुन लीजिए। वह जल्द ही भारत का हिस्सा बनेगा। आपकी मंशा भारत के टुकड़े करने की है। उस मंशा को भाजपा और नरेन्द्र मोदी जी की सरकार कभी वास्तव में स्वीकार नहीं करेगी। पाकिस्तान के पास जो हिस्सा है, भारत में उसका विलय होगा। यह हर भारतवासी का संकल्प है। ? (व्यवधान)

महोदया, मैं इकबाल साहब की एक कविता सुनाकर अपनी बात को समाप्त करूंगा। भाइयों, आप भी सुन लीजिए ।

?सारे जहां से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा,

हम बुलबुले हैं इसकी, ये गुलसितां हमारा? ।

आप लोग भी हमारे साथ शामिल हो जाइए। आपको उस तरफ ज्यादा दिनों तक बैठने की जरूरत नहीं है। आपको बहुत सालों तक उधर बैठना पड़ेगा। आपको कम से कम 20-25 साल तक तो बैठना ही पड़ेगा। आप लोग जल्दी ही हमारी तरफ आ जाइए, तो हम सब लोग एक साथ भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने का प्रयास करेंगे।

श्री हनुमान बेनीवाल (नागौर) : सभापति महोदया, मैं सबसे पहले आपको धन्यवाद दूंगा कि आज आपने सदन में पहलगाम में आतंकवादी हमले के बाद हुए ?ऑपरेशन सिंदूर? पर विशेष चर्चा रखी है और उस चर्चा में मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया है।

महोदया, जिस तरह से वाद-विवाद चल रहा था, यह अच्छी बात नहीं है। यह सदन लगातार पांच दिनों तक बाधित रहा है। पूरा देश यह देख रहा है। उसका क्या कारण था? अगर यही होना था, तो पहले दिन ही यह होना चाहिए, ताकि सदन पांच दिनों तक बाधित न होता। पूरे देश के जवान, किसान और हर व्यक्ति हमसे जवाब मांग रहा है। वे कह रहे हैं कि आप दिल्ली में हैं, क्या आपने सदन में हमारा मामला उठाया या नहीं? आपने बेरोजगारी, किसान और जवानों का मामला उठाया या नहीं?

निश्चिच रूप से मैं अध्यक्ष जी, पक्ष और विपक्ष के सभी नेताओं को धन्यवाद दूंगा, क्योंकि आज सदन ऑर्डर में है। आज इस महत्वपूर्ण विषय अर्थात् ?ऑपरेशन सिंदूर? पर हर भारतीय के मन में यह भावना थी कि ?ऑपरेशन सिंदूर? पर

खुले रूप से चर्चा होनी चाहिए। आज इस सदन के विद्वान सदस्यों ने अपनी-अपनी बात रखी है।

सभापति महोदया, निश्चित रूप से 22 अप्रैल, 2025 को पहलगाम में 26 लोगों से धर्म पूछकर उनकी हत्या की गई थी, वह एक निंदनीय कृत्य था। उस पल जिसने भी टेलीविजन और सोशल मीडिया पर उस खबर को देखा था, हर घर में रुदन था, बच्चे, महिलाएं और बूढ़े सभी एक ही बात कह रहे थे कि बहुत गलत हुआ है। हम आज भी सुरक्षित नहीं हैं। मोदी जी ने 11 सालों तक सुरक्षा की गारंटी के नाम पर हमसे वोट लिया है, उन्होंने यह बात कही थी कि अगर एनडीए की सरकार बनेगी, तो हम शहादत नहीं होने देंगे, हिन्दुस्तान सुरक्षित होगा। ? (व्यवधान)

22.34 hrs (Shri Dilip Saikia *in the Chair*)

महोदय, उस हमले में 26 लोगों की निर्मम हत्या कर दी गई थी। कुछ महिलाओं की नई-नई शादी हुई थी, उनके सामने उनके पति की हत्या कर दी गई थी। यह एक घृणित कृत्य था। पाकिस्तान द्वारा जिन आतंकवादियों को पनाह दी जाती है, जिस आतंकवाद का पोषण पाकिस्तान कर रहा है, उसी के आतंकवादियों द्वारा पहलगाम के अंदर यह दहशतगर्दी की गई।

सभापति महोदय, दुर्भाग्य से हमारे सिस्टम के अंदर भी कोई चूक रही होगी। पहलगाम अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर नहीं है, लेकिन, वहां तक ये आतंकी कैसे पहुंचे? क्या अपना खुफिया तंत्र इतना कमजोर हो चुका है? अगर पहलगाम के अंदर इतनी बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं, तो आपके सुरक्षा के क्या इंतजाम थे? आप 15-20 लोग लगा सकते थे। हमला होने के कितनी देर बाद लोग वहां पहुंचे? स्थानीय लोगों ने मदद की। आपकी मिलिट्री के लोग बहुत लेट पहुंचे। यह निश्चित रूप से बहुत बड़ा दुर्भाग्य था। पूरा देश उस दिन रोया था और मोदी जी से बार-बार यही कह रहा था अब कब जगोगे, कब उठोगे? आप तो कह रहे थे कि पीओके पर कब्जा कर लेंगे। आपको 303 सीटें दीं, आपको 350 सीटें दीं, अबकि बार भी एनडीए को 300 पार कराया। आखिर कब करोगे? आपका तो नारा ही यही था कि जब हमारी सरकार आएगी, तो हम पाक अधिकृत कश्मीर पर कब्जा करेंगे।

सभापति महोदय, इन्होंने लगातार वर्ष 2014, वर्ष 2019 और वर्ष 2024 के अंदर यह बात कही थी। हर हिंदुस्तानी के मन के अंदर एक ही बात थी कि अबकी बार पाकिस्तान का इलाज हो जाएगा। निश्चित रूप से इज़रायल जैसे छोटे देश भी हैं, जो अपनी लड़ाई खुद के दम पर लड़ रहे हैं। वहीं 140 करोड़ की आबादी का भारत देश, जिसकी सेना विश्व के अंदर सबसे मजबूत सेना है। जब भी सेनाओं की बात आती है, तो कारगिल युद्ध के दौरान 20,000 फीट ऊंची पहाड़ियों पर अगर 50 किलो गोला-बारूद और एके-47 लेकर विकट परिस्थितियों के अंदर पहाड़ी पर चढ़कर किसी ने लड़ाई लड़ी, तो हिंदुस्तान की सेना ने लड़ी। ? (व्यवधान) जाट रेजिमेंट के हमारे जवानों ने लड़ी, यह अमेरिका के अखबारों के अंदर छपा था।

सभापति महोदय, बहुत बड़ा दुर्भाग्य है कि 22 अप्रैल को घटना घटित हुई और 8 मई की रात को ऑपरेशन सिंदूर की शुरुआत हुई। यह दो दिन तक चला। आपने कहा कि पाकिस्तान घुटनों के बल आ गया। देश के मीडिया ने यह कहा कि कराची पहुंच गए, लाहौर पर कब्जा कर लिया, इस्लामाबाद पर झंडा फहराने वाले हैं, तो हमें लगा कि हो गया काम, पाकिस्तान तो सुबह तक आ जाएगा। ? (व्यवधान) आपने नाम भी ?सिंदूर? रखा। ऐसा लग रहा था कि भारत पाकिस्तान की मांग में सिंदूर भर रहा है। जब सिंदूर नाम रखा, तो बिलकुल ऐसा ही यह लग रहा था। ? (व्यवधान) खुद तो आपने आधा घंटे तक भाषण दे दिया और मुझे आप जाने के लिए कह रहे हैं? ? (व्यवधान) आप कमाल कर रहे हैं। ? (व्यवधान) हमारे हिंदू धर्म के अंदर सिंदूर का मतलब है कि महिलाएं अपने पति को अपना सिंदूर मानती हैं और वे सिंदूर से अपनी मांग भरती हैं कि यह मेरा पति है। ? (व्यवधान) सिंदूर तो भारत ने पाकिस्तान की मांग में भर दिया, पाकिस्तान तो भारत की पत्नी हो गई। अब बस विदाई बाकी है, आप पाकिस्तान को लेकर आ जाओ। ? (व्यवधान) हो गया सारा काम। ? (व्यवधान)

सभापति महोदय, मेरा कहना यह है कि हमने इस सदन के अंदर चर्चा की। सारी बातें वाद-विवाद, हंसी-मजाक भी चली और आरोप-प्रत्यारोप भी चले। लेकिन, जिस तरह के आरोप, अब तो आप सभापति की चेयर पर बैठे हैं। आपके पूरे आरोप शायद इन्होंने सुने नहीं, लेकिन, मैंने सुन लिए थे और समझ लिए थे। मैं दोबारा नहीं बताऊंगा कि आपने क्या कहा था।

सभापति महोदय, दुर्भाग्य यह है कि हिंदुस्तान के अंदर आतंकवाद नया नहीं है। पहले भी लगातार आतंकवाद था, चाहे कांग्रेस की सरकार रही हो या बीजेपी की सरकार रही हो। आतंकी तो लोक सभा के अंदर घुस गए थे। यदि आतंकी लोक सभा के अंदर थोड़ा सा आगे आ जाते और उस समय के हमारे पार्लियामेंट सिक्योरिटी के जवान शहादत नहीं देते, तो कितने एमपीज़ मारे जाते। ? (व्यवधान)

सभापति महोदय, क्या हो गया? ? (व्यवधान) आप मेरी बात सुनिए। आप 10.30 ? 11 बजे बुलवा रहे हैं, खबर तो अखबार में छपनी नहीं है, यह तो तय है। सिर्फ सोशल मीडिया से ही काम निकलेगा। ? (व्यवधान) हम ही यहां बैठे हैं, इसका मतलब है कि हम मजबूत लोग हैं, जो सेना के सम्मान के लिए रात के बारह तक भी हाउस के अंदर बैठे हुए हैं। ? (व्यवधान) अभी हाउस में सांसदों की 150 से ज्यादा संख्या नहीं होगी, लेकिन, हम सेना के सम्मान के लिए यहां बैठे हैं। ? (व्यवधान)

सभापति महोदय, मेरे दो-तीन प्रमुख विषय हैं। एक विषय है कि घुसपैठ कैसे हुई? इस मामले की जांच होनी चाहिए कि आखिर घुसपैठ कैसे हुई? उसकी जांच क्या रही? ऐसा नहीं हो कि सबकुछ ठीक है, भाषण दिया और चलते बने। देश जानना चाहता है। आज यह सोशल मीडिया का जमाना है, प्रत्येक व्यक्ति को जानने का अधिकार है।

आप जो अग्निवीर योजना लाए, उसके आने के बाद सेना का मनोबल गिर गया। मेरी यह मांग रहेगी, मिनिस्टर लोग यहां बैठे हैं, कि आप इस अग्निवीर योजना को समाप्त करें, क्योंकि अगली बार अगर कोई बात हो गई, तो ?

(व्यवधान) मैं सही कह रहा हूं, आपको पता ही नहीं है। ? (व्यवधान) आप कौन सा सेना में जाते हो? ? (व्यवधान) मैं तो उस जाति से आता हूं, जिस जाति से सबसे ज्यादा लोग सेना के अंदर जाते हैं और सबसे ज्यादा शहादत देते हैं। ? (व्यवधान) व्यापारी लोगों को क्या पता सेना क्या होती है। ? (व्यवधान)

मेरी मांग है कि अग्निवीर योजना को समाप्त करके पूर्व की भांति सेना भर्ती रैलियां कराई जाएं। इस विषय पर प्रधानमंत्री जी जब जवाब दें, तो बताएं कि इसका नाम ?सिंदूर? क्यों रखा, सिंदूर कहां भरा, यह बात भी पूरी तरह प्रधानमंत्री जी के जवाब में आनी चाहिए। ? (व्यवधान)

हम सेना को सल्यूट करते हैं और सीज़फायर के बाद जो लोग मारे गए, उनको भी हम नमन करते हैं और श्रद्धांजलि देते हैं। ? (व्यवधान)

धन्यवाद।

SHRI BALASHOWRY VALLABHANENI (MACHILIPATNAM): Sir, at the outset on behalf of my party and My party President, Shri Pawan Kalyan Garu, hon. Deputy CM of Andhra Pradesh, I express my deepest condolences to the families who lost their loved ones in the tragic terrorist attack on 22nd April in Pahalgam. No words can truly capture the depth of this loss. This was not just an attack on individuals; it was an attack on humanity. With immense pride and honour, I salute the bravery and precision of our Defence Forces, who launched Operation Sindoor, and the NDA Government for the bold step.

With reference to the great Hindi poet, Dinakar ji, Pawan Kalayan Garu quoted his two lines:

?वीरता जहाँ पर नहीं, पुण्य का क्षय है,

वीरता जहाँ पर नहीं, स्वार्थ की जय है।?

And we showed our bravery teaching our enemy in his own language. Sir, it was a well-planned mission targeting nine major terrorist camps with minimal collateral damage. Our intention was to only destroy terrorist camps. This operation was a shining example of coordination among India's Armed Forces under the decisive leadership of our hon. Prime Minister, Shri Narendra Modi. I also appreciate the Government of India for taking bold steps

including the suspension of the Indus Waters Treaty which governs the distribution of water between India and Pakistan.

Such actions will strengthen India's efforts to isolate Pakistan globally for its continued patronage of terrorism showing no regard for international peace. The international community stood by India in the aftermath of this heinous attack. The UK Foreign Secretary, Mr. David Cameron, stated ?India has every reason to be outraged?. Russia called for peace but clearly condemned all forms of terrorism. The nations including Israel, the USA, Saudi Arabia, and the UAE expressed their strong support for India's position. The United Nations also condemned the attack. In a firm statement, the UN stressed the need to hold the perpetrators, organisers, financiers, and sponsors of these reprehensible acts of terrorism accountable and bring them to justice. India's mature and strategic response backed by international support, including from the European Union, demonstrates the strength of our democracy and our commitment to global peace and security.

श्री उमेषभाई बाबूभाई पटेल (दमन और दीव) : माननीय महोदय जी, मैं आज ?ऑपरेशन सिन्दूर? पर अपने विचार साझा करने के लिए खड़ा हुआ हूँ। ?ऑपरेशन सिन्दूर? की कामयाबी के लिए सर्वप्रथम, मैं हमारी सेना को एवं हमारे देशवासियों को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। ?ऑपरेशन सिन्दूर? को सफल बनाने के लिए हमारी सेना को मैं दिल की गहराइयों से नमन और वंदन करता हूँ। ?ऑपरेशन सिन्दूर? में शहीद हुए वीरों एवं पहलगाम के आतंकी हमले में मारे गए सभी निर्दोष एवं मासूम लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि परमात्मा परमेश्वर उन सभी की आत्मा को परम शांति प्रदान करें।

हमारी भारत की भूमि हमेशा से वीरों एवं वीरांगनाओं की भूमि मानी गई है। हमारी भारत भूमि हमारे कोली समाज की झलकारीबाई, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाओं की अदम्य साहस, शूरवीरता एवं पराक्रम की साक्षी रही है। इस बार भी हमारी सरकार ने फिर से हमारी बेटी कर्नल सोफिया कुरैशी व विंग कमांडर व्योमिका सिंह और उनकी टीम के जरिये वही साहस, वीरता एवं पराक्रम से दुनिया को परिचित कराया है। ?ऑपरेशन सिन्दूर? से दुनिया को पता चला है कि हमारी बेटियाँ भी हमारे बेटों से कम नहीं है। मेरा तो मानना यह है कि हमारी बेटियाँ तो बेटों से भी आगे हैं।

महोदय, हमारे भारत ने कभी भी किसी पर युद्ध थोपा नहीं है। हमारा देश कभी भी युद्ध का पक्षधर नहीं रहा है, बल्कि हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति ?वसुधैव कुटुम्बकम? को मानने वाली है। हमारा भारत हमेशा से अमन और शांति का प्रहरी रहा है, किंतु जब-जब किसी ने गुस्ताखी कर हमारी भारतमाता को लहुलुहान करने की कोशिश की है, तब-तब हमने एकजूट होकर उनको मुंहतोड़ जवाब दिया है, जिसका इतिहास साक्षी रहा है। चाहे वर्ष 1947-48 हो, चाहे

वर्ष 1965 या 1971 हो या फिर वर्ष 1999 का कारगिल का युद्ध हो या फिर 29 सितंबर, 2016 का सर्जिकल स्ट्राइक हो, गुस्ताखी करने वाले को हमने हर बार उनकी औकात दिखाते हुए उनको घर में घुसकर मारा है। इतना ही नहीं, वर्ष 1971 में पाकिस्तान के दो टुकड़े कर बांग्लादेश बना डाला था।

अब फिर से पाकिस्तान का कायमी इलाज करने का वक्त आ गया है। पीओके हमारा था, है और हमें जल्द से जल्द इसे अपने साथ ले लेना चाहिए। पाकिस्तान के टुकड़े-टुकड़े कर पाकिस्तान के हर प्रांत को आज़ाद देश बना देना चाहिए जैसे हमने बांग्लादेश बनाया था। जिसकी शुरुआत पाकिस्तान से आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे बलूच लोगों को उनकी आज़ादी में खुला सहयोग देकर बांग्लादेश की तरह बलूचिस्तान को भी आज़ाद कराकर एक बलूचिस्तान देश बनाकर की जानी चाहिए। पाकिस्तान को ऐसे ही सबक मिलेगा।

साथ ही हमें यह भी याद रखना चाहिए कि इस युद्ध में कौन-कौन से देश हमारे साथ थे और कौन-कौन से देश पाकिस्तान के साथ थे, जिन्होने हमारे विरुद्ध पाकिस्तान का साथ दिया है। उनके खिलाफ भी हमें कड़ा रुख अपनाने की जरूरत है। पाकिस्तान की कोई औकात नहीं है कि वह हमारे साथ उलझने की हिमाकत करे, लेकिन चाइना उसे चाबी भरता रहता है। इस वक्त भी हमने देखा है कि तुर्की एवं चाइना ने खुलकर पाकिस्तान का सहयोग किया है और वे पाकिस्तान के साथ खड़े रहे हैं। पाकिस्तान का साथ देने वाले तुर्की एवं चाइना जैसे देशों के साथ व्यापार सहित हर प्रकार के संबंध पूरी तरह से समाप्त कर दिए जाने चाहिए।

माननीय महोदय, मैं एक बार फिर से ?ऑपरेशन सिन्दूर? की कामयाबी के लिए अपने देश की वीर सेना एवं भारत सरकार को शुभकामनाएँ तथा आभार व्यक्त करता हूँ। क्योंकि हमने सिर्फ पाकिस्तान को ही नहीं हराया, बल्कि हमने तुर्की एवं चाइना जैसे देशों को भी ?ऑपरेशन सिन्दूर? के माध्यम से धूल चटाई है, जो पाकिस्तान का कन्धा इस्तेमाल कर हमारे विरुद्ध लड़ रहे थे।

मैं आपका भी आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर प्रदान किया। धन्यवाद।

श्री आगा सैय्यद रूहुल्लाह मेहदी (श्रीनगर) : ऑनरेबल चेयरपर्सन सर, मैं सबसे पहले जम्मू-कश्मीर की अवाम की तरफ से उन सभी घरवालों को इस मुल्क के शहरियों को ताजियत पेश करना चाहता हूं, जिनका बेगुनाह खून बहाया गया और बेगुनाहों का कत्ल किया गया। उम्मीद है कि खुदा उनके कातिलों को कैफर-ए-किरदार तक पहुंचाये और जल्द ही पहुंचाये। जम्मू-कश्मीर की अवाम और कश्मीर की अवाम बिल-ख़ुसूस इस दहशदगर्दी के वाक्या से उसी हद तक नफरत करते हैं तथा जाहिर भी किया। जिस हद तक इस ऐवान ने आज जाहिर किया, बल्कि उससे ज्यादा जम्मू-कश्मीर ने इस दहशदगर्दी का एहसास किया। यही वजह है कि कश्मीर की अवाम उस वाक्या के बाद ही मस्जिदों से बाहर आई, दुकानें बंद की, तिजारते बंद की, बिजनैस बंद किया, रूटीन लाइफ बंद की। इस कत्ले नाहक के खिलाफ सरापा एहतेजाज हो रहा है, क्योंकि जम्मू-कश्मीर की अवाम और कश्मीर की अवाम बिल-खुसूस खून के बहने को जानती हैं, कत्ल होने को

जानती है। उन घरों में क्या बीतती है, उस एहसास को समझती है। इसलिए बिला शर्त-उ-शुरूर इंसानियत के हवाले से, हम शहरी होने के हवाले से, बेगुनाहों होने के हवाले से, जम्मू-कश्मीर की अवाम ने जिम्मेदारी का एहसास किया और जिम्मेदारी निभाई। इस वाक्या के खिलाफ सड़कों पर निकले, दहशदगर्दी के खिलाफ सड़कों पर निकले।

अफसोस इस बात का है कि इस मुल्क में इंस्टीट्यूशंस ने, चाहे वह गवर्नमेंट हो, चाहे वह मीडिया हो, चाहे मुख्तलिफ एजेंसीज़ हो, पाकिस्तान के साथ जंग छेड़ने से पहले जम्मू-कश्मीर की अवाम के साथ, कश्मीर की अवाम के साथ कैसे जंग छेड़े? जब भी इस तरह के वाक्यात होते हैं, चाहे पहलगाम में हो, चाहे पुलवामा में हो, चाहे उरी में हो, तो आप यह देख लीजिए कि बाकियों के साथ जंग बाद में छेड़ी जाती है, पहले कश्मीर की अवाम के साथ जंग छेड़ी जाती है।

पुलवामा का वाक्या हुआ, धारा 370 हटाई गई। आपने इसे गैर-जम्हूरी तरीके से हटाया, इसे नाजायज तरीके से हटाया। आज भी पुलवामा के हवाले से कश्मीर के लोगों को जो पुलवामा से श्रीनगर ट्रैवेल करते हैं, उनको हर रोज गुलामी का एहसास कराया जाता है। हर पांच किलोमीटर के बाद, हर रोज उनकी गाड़ियों को रोका जाता है। बाकियों के साथ जंग बाद में छेड़ी गई, लेकिन पहले कश्मीर के अवाम के साथ जंग छेड़ी गई। दो हजार से भी ज्यादा जवानों को बंद किया गया। किसी कानून का लिहाज रखे बगैर, किस कानून के तहत दो हजार से ज्यादा लोगों को, हमारे बच्चों को दूसरे दिन से उठाए गए, उनको बदनाम किया गया, जेलों में रखा गया। मीडिया, सोशल मीडिया पर कश्मीर के लोगों को बदनाम किया गया। कश्मीर के लोगों को इस हद तक बदनाम किया गया कि 11 से ज्यादा वायलेंस के केसेज हैं। उत्तर प्रदेश में तीन केसेज, उत्तराखंड में तीन केसेज, पंजाब, दिल्ली और हिमाचल प्रदेश में, जहां पर 100 से ज्यादा कश्मीर के लोगों को, उनमें कुछ छात्र थे, वे ताजिर थे, वे बिजनेसमैन थे, उनको पीटा गया, उनको मारा गया। उनको भगाया गया, उनको हॉस्टल्स से भगाया गया, सड़कों से हटाया गया।?(व्यवधान)

आप बात करने दीजिए। आप घंटों तक बोलते रहें।?(व्यवधान) क्या किसी ने सुबह से लेकर अभी तक यह बात ऐवान में कही है कि बाकियों के साथ जंग बाद में छेड़ी गई, बाकियों तरफ मिसाइल्स और बम्स बाद में फेके गए, इस सानेह के बाद कश्मीर के 13 बेगुनाह घरों में यह कह कर ब्लास्ट किया गया कि वे सस्पेक्ट्स के घर हैं। शायद ही वे मुल्जिम हो सकते हैं। वहां 13 घर ब्लास्ट किए गए, यह किस कानून के तहत हुआ? क्या जम्मू-कश्मीर आपके लिए एक जमीन है? यहां के लोग बदकिश्मती से आपके हाथ में आए हैं जिनका कोई कानूनी और आइनी हक नहीं होना चाहिए? क्या कोई कानून है, जिस कानून के तहत उनको इंसाफ की नजर से देखा जाए, बराबरी की नजर से देखा जाए। इस मुल्क का कौन-सा कानून कहता है कि सस्पेक्ट की बुनियाद पर।?(व्यवधान) आप बैठ जाइए। आप बात करने दीजिए।?(व्यवधान) इस मुल्क का कौन-सा कानून है। जब एक दहशतगर्दी का वाक्या हो और दूसरे दिन हमारे फोर्सेज उठे, रैंडम्ली घरों को चुनें और कहें कि ये सस्पेक्ट्स के घर हैं और ब्लास्ट किया जाए। 12 घरों को ब्लास्ट किया गया। हमारे 2000 से ज्यादा जवान बंद हैं।?(व्यवधान) इसमें गलत क्या है? आपके लिए यह कश्मीर है? आप घरों को ब्लास्ट करें और कहें कि इसमें गलत क्या है? आप बेगुनाहों को बंद करें और यह कहें कि गलत क्या है, तो यह है आपकी हकीकत।?(व्यवधान)

माननीय सभापति : माननीय सदस्य, आप चेयर को एड्रेस कीजिए।

?(व्यवधान)

श्री आगा सैय्यद रूहुल्लाह मेहदी : यही चेहरा दुनिया को दिख रहा है तो यहां पर ढोंग क्यों है??(व्यवधान) जम्हूरियत की ढोंग क्यों है? यही हकीकत है।?(व्यवधान) हम कश्मीरियों का कत्ल करने के लिए हैं।?(व्यवधान)

माननीय सभापति : बहुत-बहुत धन्यवाद।

?(व्यवधान)

माननीय सभापति : श्री पप्पू यादव जी।

?(व्यवधान)

श्री राजेश रंजन (पूर्णिया) : सभापति महोदय, मैं वाद-विवाद में नहीं जाउंगा, मैं सबसे पहले अपने पराक्रमी सेना के लिए बोलूंगा, जिन्होंने अद्वितीय पराक्रम दिखाया, भले ही हमारी नीति ने उनके पराक्रम को लक्ष्य तक नहीं पहुंचाया। हम सभी का जीवन मन, धन सेना के प्रति आजीवन और उनके परिवार के प्रति समर्पण है। जो भाई-बहन, परिवार के लोगों ने देश के 26 शहीद को हमने खोया, हृदय की गहराइयों से उनका श्रद्धांजलि देता हूं। इसके साथ ही कश्मीर के आवाम को जिन्होंने आजाद हिन्दुस्तान में हमेशा हर मोर्चे पर शहादत दी है। मैं उस परिवार को, उन पिट्ठू भाइयों को, उस घोड़े वाले, जिन्होंने पहलगाम में हमारे बच्चों को हिफाजत की, उनको दिल की गहराइयों से सदन और देश, हम सब उनके प्रति कृतज्ञ हैं।

पुलवामा क्यों हुआ? पुलवामा के बाद उरी से लेकर पहलगाम तक छोटी-बड़ी लगभग 23 से 24 बड़ा हमला हुआ। ग्यारह साल नरेन्द्र भाई मोदी जी प्रधानमंत्री रहे। धारा 370 का ढ़िढोरा पीटा गया और यह कहा गया कि धारा 370 को खत्म करने के बाद आतंकवादी कमजोर हो जाएंगे और खत्म हो जाएंगे। धारा 370 हटाए जाने के बाद भी आतंकवादी हमला बढ़ा, हमारे सैनिकों की शहादत हुई और भारत के स्वाभिमान और सम्मान पर ठेस पहुंचा। मेरा सवाल सरकार से है कि तीन क्विंटल बारूद पुलवमा में कैसे आया। पुलवामा की घटना के बाद आप एक नया चुनाव भी लड़ लिए। भगवान का तो राजनीतिकरण होता ही है, जब आप राष्ट्रवाद की बात करते हैं तो आपको मानवतावाद की पहले बात करनी पड़ेगी।

?संगच्छध्वं संवदध्वं

सं वो मनांसि जानताम्

देवा भागं यथा पूर्वे

सञ्जानाना उपास

समानी व आकूति: समाना हृदयानि व: |

समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति?

इसी में भारत की पूरी संस्कृति है, सनातन परंपरा है, वसुधैव कुटुम्बकम, पूरा सर्व धर्म समभाव, सार्वभौमिकता है । इससे हमारा भारत पूरी दुनिया में गौरान्वित होता है । हम नेता और पार्टी के लोग किसी भी छोटी-बड़ी घटना का राजनीतिकरण करते हैं । मुझे दुख इस बात का है कि हम संविधान की सोवरन की बात नहीं कर पाते । हम संविधान की बात पर आते हैं तो वन जस्टिस की बात नहीं होती ।

मान्यवर, यह देश तीन क्विंटल बारूद के बारे में जानना चाहता है कि उसके बाद क्या हुआ? पुलवामा पर चुनाव लड़ लिए, लेकिन पुलावामा की घटना जिन लोगों ने की, हमारे भारत में भी लोग गद्दार थे, क्या उनके बारे में सदन में कभी चर्चा होगी । जैसे नोटबंदी की चर्चा नहीं हुई, जीएसटी की चर्चा नहीं हुई । हम इंटेलिजेंस फेलयर की बात करते हैं, पुलवामा में इंटेलिजेंस फेलयर था, हमारे सैनिक को सब कुछ पता था, आपने उसे दबाने का प्रयास किया । हमारे सैनिक दुनिया से लड़ सकते हैं, पाकिस्तान की बात मत कीजिए । मंत्री जी कह रहे थे कि पाकिस्तान हमारे सामने कुछ भी नहीं है । आप उठते, सोते पाकिस्तान, कब्रिस्तान, श्मशान, ईद, बकरीद, तलाब, एनआरसी के अलावे पाकिस्तान और जिन्ना जितना आपने किया, उतना हम सनातन कर लिए होते तो हमारी किस्मत चमक गई होती ।

<u>23.00 hrs</u>

सभापति जी, पाकिस्तान की बात करके आप राजनीति को जिंदा रखते हैं क्योंकि आपकी दुकान सिर्फ पाकिस्तान से चलती है । जिस दिन आप हिंदू-मुसलमान करना बंद कर देंगे, उस दिन आप एक सीट नहीं जीत पाएंगे । पहलगाम के बाद आपने राजनीति की और भावनात्मक ?सिंदूर? के नाम को ले आए । मैं पहला सवाल आपसे पूछता हूं कि हमारे सैनिक डेढ़ सौ-दो सौ मीटर की दूरी पर थे । उन्हें खबर नहीं थी कि पहलगाम में यह घटना होने वाली है । हमारी पुलिस फोर्स को पता नहीं था, हमारी इंटेलीजेंस को पता नहीं था और पता नहीं दिल्ली से किसके आर्डर थे जिससे पहलगाम को खोला गया । यह बात जानना सबसे महत्वपूर्ण है । इंटेलीजेंस क्या गृह मंत्री जी देखते हैं? क्या गृह मंत्री जी को किसी बात की जानकारी नहीं थी?

सभापति जी, मैं आपको नेपाल से दूरी और चीन की घुसपैठ की बात करूंगा । वर्ष 2015 में कथित ब्लोकेड के बाद नेपाल की भारत विरोधी भावना बढ़ी । नेपाल ने भारत से दूर होकर चीन से सैन्य और आर्थिक समझौता किया । नेहरू जी और राजीव गांधी जी के समय नेपाल भारत का मित्र था । मालदीव में इंडिया और पर्यटन बहिष्कार, वर्ष 2023-24 में भारत विरोधी बयान, भारतीय सेना की वापसी, मालदीव ने चीन की गोद में जगह बनाई और भारत मौन रहा । इंदिरा गांधी जी के समय भारत-मालदीव समुद्री संरक्षक, बीएसएफ गोलीबारी, बांग्लादेश और भारत विरोधी बातें, भारत

के खिलाफ जनभावना बढ़ी, चीन ने वहां बंदरगाह परियोजना शुरू की। वर्ष 1971 में इंदिरा गांधी जी ने बांग्लादेश बनवाया। श्रीलंका ने राष्ट्रीय अनुबंध रद्द किए, नए राष्ट्रपति ने भारत समर्थित समझौता रद्द किया। ईरान से रिश्तों में गिरावट, चाबाहार पोर्ट परियोजना धीमी हो गई। राजीव जी और इंदिरा जी के समय ईरान भरोसेमंद साझेदार था। एसएआरसीसी, बीआईएम, एसटीसी निष्क्रिय हुआ। तुर्की के साथ टकराव और व्यापारिक गिरावट आई।

महोदय, मैं अपनी बात समाप्त करते हुए कहना चाहता हूं कि इजराइल को छोड़कर पहली बार आजाद हिंदुस्तान में रूस ने भारत का सपोर्ट नहीं किया। हम चीन की सभी चीजों को इम्पोर्ट करते हैं लेकिन चीन हमारी जमीन को हथियाता है। चीन से बात करने की हमारी हिम्मत नहीं होती है।

***m55 SHRI DURAI VAIKO (TIRUCHIRAPPALLI):** Hon Chairman Sir, Vanakkam. It was a cowardly and shameful terrorist attack that took place in Pahalgam. We witnessed ?An India? although it was injured it was not bowing down. We witnessed ?An India? even if it was attacked, it was not tired. We were saddened together on that day. But we stood united. We shed our blood together. Leaving aside all the differences on the basis of caste, religion and creed, without caring about his own life, one person protected the lives of many tourists by treating them as his brothers and fighting against the terrorists. As a Tamil and as an Indian, I salute that ? all humane? brother of Kashmir for sacrificing his own life for the sake of our country. I pay a royal salute to the Indian soldiers and Indian Airforce, who in a successful retaliatory measure, through ?Operation Sindoor? attacked the Pakistani support bases and terrorist camps of Pakistan. At the same time, we cannot ignore an important question raised before us. With Kashmir having a thick security cover of paramilitary forces, local police and intelligence personnel, how this terrorist attack could take place in an organised manner without being sensed by us prior the attack. Every route and every hilltop of this Kashmir?s Baisaran Valley has been under careful surveillance all the time.

There were reports claiming that terrorists were attacking and killing our innocent citizens without any hurdle for 20 minutes. Who should be held responsible for this? Even though, this is not the time to say accusations, I raise this question as this is time for introspection. Whether the duty of our Indian intelligence personnel was up to the mark? Whether the intelligence inputs were seen as exaggeration or perceived as wrong? This Government has not answered these questions so far. These questions are not for the erason to blame anyone. We are duty-bound to provide justice to those who lost their lives and protection to those who are alive. This discussion

should not end here. Beyond our boundaries, at a distant unreachable place, these terrorists are roaming scot-free. Till the time we make them bow before law and put behind bars; till the time our people are provided complete protection, our duty will neither be completed nor will come to an end. Our people do not have threats

only from the terrorists supported by Pakistan but from different parts of the world. Recently a couple met me in Tamil Nadu. They cried and tried to touch my feet. But I could not wipe away the tears rolling down from their eyes. They had sent their son named Kishore Saravanan to learn Medicine in Russia. But Kishore was arrested along with another person in May, 2023 by mistake, in Russia. All that happened after his arrest, was illegal and inhuman. He was forcibly taken to a Russian military camp. He was physically and mentally tortured to agree to sign and work with Russian Army. He was forcibly sent to the warfront between Russia and Ukraine. I met Hon. Minister for External Affairs Shri S. Jaishankar and submitted a letter demanding for ensuring the safe release of Kishore Saravanan citing all these details. Not only this student, several other Indian students who went for pursuing education and other Indian citizens who went for jobs or employment in Russia, are suffering in that country.

As per the report of NDTV in Jan 2025, and as per the data of the External Affairs Ministry, so far 126 Indian citizens are misguided and forcibly inducted into the Russian Army and their lives are at stake. Already 12 of them have died and 16 of them are missing. Another 18 persons are struggling in the warfront. There is a need for us to maintain smooth relationship with Russia. I do not deny this. As against the subsidized fuel that Russia supplies to us, can we put one of our Indian citizen?s life in to danger. The Union Government, Hon. Prime Minister and Hon. External Affairs Minister, I hold your hands and make a fervent appeal with tears in eyes, that you should strongly condemn this injustice faced by Indians. I urge that Indians, without their consent, should not not be used by Russia in their war against Ukraine. Not only Kishore Saravanan, so many human lives who are in the hold of Russian Army should be brought back to India safely at the earliest. Thank you. Vanakkam.

माननीय सभापति : श्री धर्मेन्द्र यादव जी ।

श्री धर्मेन्द्र यादव (आज़मगढ़) : सभापति महोदय, आपने इस बहुत महत्वपूर्ण चर्चा पर बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मैं समझता हूं कि ?ऑपरेशन सिंदूर? चलाने की आवश्यकता इसलिए हुई, क्योंकि पहलगाम अटैक हुआ। पूरा देश सबसे पहले इस बात को जानना चाह रहा है कि आखिर यह अटैक हुआ क्यों? आखिर इंटेलिजेंस फेल्योर इतनी अधिक कैसे हुई? घटना के कई महीनों बाद लेफ्टिनेंट गवर्नर साहब कहते हैं कि मेरी गलती है। हालांकि यह केवल उनकी गलती नहीं है, यह गलती लेफ्टिनेंट गवर्नर साहब से लेकर दिल्ली के गृह मंत्रालय तक की है। अत: मैं सरकार से यह पूछना चाहता हूं कि क्या कार्रवाई की गई? अत: इस मौके पर सबसे पहले देश के 26 लोग, जो शहीद हुए, उनको मैं श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं। सेना की वीरता, बहादुरी, पराक्रम की जितनी भी प्रशंसा की जाए, मैं समझता हूं कि सदन के पास वे शब्द नहीं हैं जो उनकी बहादुरी की तारीफ कर सकें।

इसलिए क्योंकि श्रद्धेय नेताजी ने रक्षा मंत्री रहते हुए सेना के मनोबल को बढ़ाने के लिए जो काम और प्रयास किया था, वह अविस्मरणीय है, उसे कभी कोई भूल नहीं सकता है, विशेषकर सैनिक लोग। उन्होंने रक्षा मंत्री रहते हुए कहा था कि हमारे देश के सैनिक इतने बहादुर हैं कि जब-जब लड़ाई सेना को लड़नी पड़ी तब-तब हमारे देश को कभी हार का सामना नहीं करना पड़ा। वहीं श्रद्धेय नेताजी ने इस बात को भी कहा कि जब-जब देश के नेतृत्व को वार्ता की जरूरत पड़ी तब-तब अक्सर हम वार्ता में हारे हैं। जहाँ हमारे इतने पराक्रमी सैनिक हैं, इतना सफल सिंदूर ऑपरेशन हुआ कि किसी को हवा भी नहीं लगी और सारे आतंकी ठिकाने पूरी तरह से नेस्तनाबूद भी किए। जहाँ पूरे 140 करोड़ देशवासी, चाहे हिन्दू हों, मुस्लिम हों, सिख हों, ईसाई हों, बौद्ध हों, पारसी हों, जैनी हों, देश के एक-एक नागरिक ने इस घटना के बाद सेना के साथ, देश और प्रधानमंत्री जी के साथ रहने का फैसला लिया और पूरे देश के लोगों ने कहा कि प्रधानमंत्री जी आगे बढ़ो, पूरा देश आपके साथ है। जहाँ पूरे देश की इतनी बड़ी ताकत साथ में हो, जहाँ इतनी बहादुर और पराक्रमी सेना हो, वहाँ पर सेना की जीत को, सेना का जो सफल ऑपरेशन हुआ, उस सफल ऑपरेशन को किस तरह से दूसरे देश के बैठे हुए राष्ट्रपति, अमेरिका के राष्ट्रपति दावा करते हैं कि हमने व्यापार के दबाव में सीजफायर करा दिया है। मैं समझता हूँ कि यह हमारे देश के लिए शर्म की बात है। हमारे प्रधानमंत्री जी घोषणा करते, कोई दिक्कत नहीं थी। जहाँ चुनाव के समय ... पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर को हम छीनकर लाएंगे, एक हेमराज जवान के बदले हम उनके 10-10 जवानों को मारकर आयेंगे, इस तरह के जज्बाती नारे देने वाले हमारे माननीय प्रधानमंत्री, उनकी पूरी पार्टी और सरकार, वहीं पर आप सोचिए कि हमारे देश की अखंडता और संप्रभुता आज कहाँ खड़ी है कि लगातार एक बार, दो बार, तीन बार नहीं, अमेरिका के राष्ट्रपति ने 26 बार इस बात की घोषणा की है कि पाकिस्तान और भारत के बीच सीजफायर कराने वाले हम हैं। यह हमारे 140 करोड़ देशवासियों के लिए शर्म का विषय है। सरकार इस पर पूरी तरफ से मौन है।? (व्यवधान) वैसे तो लंबे-लंबे भाषण दिए, सरकार की तरफ से एक भी व्यक्ति ने, माननीय प्रधानमंत्री जी से लेकर, उनके मंत्रियों और उनकी पार्टी के लोगों तक, उनकी सरकार के किसी भी अधिकारी ने आज तक अमेरिका के राष्ट्रपति को कंडम नहीं किया है।? (व्यवधान) इसलिए मैं इस मौके पर कहना चाहता हूँ, पार्लियामेंट में कहना चाहता हूँ कि पूरा देश आपके साथ खड़ा है।? (व्यवधान) पूरा देश आपके साथ खड़ा है।? (व्यवधान) आप उनकी बात को कंडम क्यों नहीं करते हो? ? (व्यवधान)

महोदय, आज मैं सत्ता पक्ष के लोगों का भाषण सुन रहा था। मैंने सत्ता पक्ष के लोगों का भाषण सुना। वे इस तरह की बातें कर रहे हैं, जैसे विपक्ष के लोगों ने समर्थन न दिया हो। पहलगाम की घटना के पहले दिन से पूरा का पूरा विपक्ष, हमारे नेता आदरणीय अखिलेश यादव जी, कांग्रेस पार्टी के लीडर ऑफ अपोजिशन राहुल जी से लेकर पूरा विपक्ष और विपक्ष ही नहीं, पूरे देश का जनमानस जब साथ खड़ा हो तो आज आप ऐसे भाषण दे रहे हो कि जैसे केवल सत्ता पक्ष के लोगों ने युद्ध जीत लिया हो। यह युद्ध भारत देश की सेना ने जीता है। यह युद्ध हमारे 140 करोड़ लोगों की जो ताकत है, उस ताकत ने जीता है।

महोदय, इसलिए मैं सदन में खड़े होकर कहना चाहता हूँ कि किसी को यह अधिकार नहीं है, हमारे देश का जो नागरिक नहीं है, हमारे देश के जो लोग नहीं हैं, चाहे वह अमेरिका हो या दुनिया का कोई भी देश हो, किसी को यह अधिकार नहीं है कि वह यह बात कहे कि भारत का समझौता हमने कराया है। नेहरू जी की आप लोग दिन भर खड़े होकर आलोचना करते हो, लेकिन मैं फख्र के साथ कहता हूँ कि चाहे नेहरू जी रहे हों, चाहे लोहिया जी रहे हों, चाहे उस समय के कांग्रेसी रहे हों, चाहे समाजवादी रहे हों,... ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आपका धन्यवाद।

? (व्यवधान)

श्री धर्मेन्द्र यादव : महोदय, आज इस मौके पर मैं कहना चाहता हूँ।? (व्यवधान) आप आज तक उनकी आलोचना नहीं कर पाए हैं।? (व्यवधान) आप आलोचना नहीं कर पाए हैं।? (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: The unparliamentary word used by him must be expunged.

? (*Interruptions*)

श्री धर्मेन्द्र यादव : आप आलोचना नहीं कर पाए हैं।? (व्यवधान) आज जाकर कर रहे हो।? (व्यवधान) आप नहीं कर पाए हो।? (व्यवधान) आप अमेरिका के राष्ट्रपति की आलोचना अभी तक नहीं कर पाए हो।? (व्यवधान) हम लोग वह लोग हैं, हम वो समाजवादी लोग हैं, नेताजी के रक्षा मंत्री के कार्यकाल में चीन एक किलोमीटर घुसा था, चार किलोमीटर घुसने का काम समाजवादियों ने करके दिखाया था।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : मैडम, एक्सपंज कर दिया है।

? (व्यवधान)

श्री धर्मेन्द्र यादव : समाजवादी लोग घबराने वाले नहीं हैं।? (व्यवधान) पूरा देश आपके साथ है। ? (व्यवधान) आप जवाब क्यों नहीं दे रहे हो? ? (व्यवधान) पूरा देश साथ है।? (व्यवधान) देश के 140 करोड़ लोग आपके साथ हैं।?

(व्यवधान)

माननीय सभापति : माननीय सदस्य श्री जुगल किशोर जी।

? (व्यवधान)

माननीय सभापति : मैडम, इन्होंने जो अनपार्लियामेंटरी वर्ड्स यूज किए हैं, उन्हें हमने एक्सपंज कर दिया है।

अब इनकी बात रिकॉर्ड में नहीं जायेगी।

? (व्यवधान)*?*

THE MINISTER OF FINANCE; AND MINISTER OF CORPORATE AFFAIRS (SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN): It should be removed. ? (*Interruptions*) Remove that line. Please say that. ? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON : Yes, I will remove the sentence.

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: He should not say that. ? (*Interruptions*) And it should be removed from the records. ? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Yes, it is expunged from the records.

? (*Interruptions*)

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: It is completely wrong. ? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Shri Jugal Kishore ji.

? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Hon. Member, please be seated.

? (*Interruptions*)

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: I wish to say that he has not listened to the Foreign Minister when he spoke. He has not listened to the Defence Minister when he spoke. And above all, while conceding that अच्छा किया, हमने जीता, मगर, he says wrong things that we have not done right. So, I think, his speech should be removed from the records. आगे ये कन्सीड करने के जैसा बोल रहे हैं, पीछे ये ?असत्य? बोल रहे हैं।? (व्यवधान)

So, you should remove it from the records. ? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Remove the sentence from the records.

? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Hon. Member, please behave yourself.

? (*Interruptions*)

माननीय सभापति : धर्मेन्द्र यादव जी, आपकी कोई बात रिकॉर्ड में नहीं जाएगी, प्लीज़, आप बैठिए।

? (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Dharmendra Yadav ji, please behave yourself. Please be seated.

? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Dharmendra Yadav ji, please be seated.

? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Dharmendra Yadav ji, please do not behave like this.

? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Shri Jugal Kishore ji.

श्री जुगल किशोर (जम्मू) : आदरणीय सभापति जी, आज ?ऑपरेशन सिन्दूर? के सफल अभियान पर यहां पर जो चर्चा हो रही है, उसमें आपने मुझे भाग लेने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपके प्रति आभार प्रकट करना चाहता हूं।? (व्यवधान)

महोदय, सबसे पहले मैं उन शहीदों को नमन करना चाहता हूं, जिन्होंने पहलगाम नरसंहार में अपनी शहादत दी है। इसके साथ-साथ जम्मू-कश्मीर में चाहे जम्मू हो, पुंछ हो, राजौरी हो या भारत-पाक सीमा पर अन्य जगहों पर पाकिस्तान की गोलाबारी में जिन लोगों की शहादत हुई, जिन्होंने अपनी जानें गंवाईं, मैं उनको भी नमन करना चाहता हूं। मैं भारतीय सेना के वीरों को नमन करना चाहता हूं, जिन्होंने ?ऑपरेशन सिन्दूर? अभियान को सफल बनाया और पाकिस्तान को धूल चटाने का काम किया।

महोदय, ?ऑपरेशन सिन्दूर? भारत की ओर से 6/7 मई की रात में पाकिस्तान और पी.ओ.के. में आतंकी ठिकानों के खिलाफ चलाया गया। यह एक सैन्य अभियान था। यह 22 अप्रैल, 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम नरसंहार के विरोध में था। वहां पर जो आतंकी हमला हुआ, जिसमें 26 भारतीय नागरिकों ने अपनी जानें गंवाई और वहां पर्यटकों की जघन्य हत्या की गयी, यह उसका जवाब था। मैं उसे नरसंहार ही कहूंगा।

महोदय, पाकिस्तान ने अपनी हार को देखते हुए इस दौरान सिविलियंस पर और रिहायशी एरियाज़ में गोलाबारी करने का जो निर्णय लिया, वह बहुत ही निंदनीय था। मैं कहना चाहता हूं कि पहलगाम में हमारे देश के नागरिक छुट्टियां बिताने गए थे और अपने परिवारजनों के साथ गए थे। उस समय उनका परिवार भी साथ था। उनका धर्म पूछकर उनकी हत्या की गयी और उनके परिवार के सदस्य रोते-बिलखते रहे, लेकिन उनके सामने ही उन्हें गोलियों से भून दिया गया।

महोदय, देश के 26 निहत्थे लोगों की हत्या कर दी गई। यह घटना बहुत ही निंदनीय थी। यह कोई साधारण घटना नहीं थी। यह एक नरसंहार था। इसे हमारा देश बर्दाश्त नहीं कर सकता था। यह घटना सहन करने योग्य नहीं थी। देश के प्रति अपनी प्राण न्योछावर करने वाले लोगों के प्रति हमने अपनी संवेदना प्रकट की है। जम्मू-कश्मीर के कोने-कोने में भी वहां के लोगों ने इस दहशतगर्दी का विरोध किया। वहां पाकिस्तान के विरोध में धरने-प्रदर्शन हुए और जुलूस भी निकाले गए। उन्होंने मांग की कि पाकिस्तान के विरूद्ध कड़ी से कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए।

महोदय, देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी जी के ऊपर लोगों का विश्वास था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी जी ने देश को भरोसा भी दिलाया। उन्होंने कहा कि इस नरसंहार का बदला जरूर लिया जाएगा। इसका परिणाम ?ऑपरेशन सिन्दूर? के रूप में हुआ। पाकिस्तान में आतंकवादियों के प्रशिक्षण शिविरों और उनके आकाओं के ठिकानों को ध्वस्त करने का काम भारतीय सेना ने ?ऑपरेशन सिन्दूर? के माध्यम से किया।

महोदय, मैं बताना चाहता हूं कि जम्मू-कश्मीर में, विशेष तौर पर जम्मू, पुंछ, राजौरी शहरों में भी पाकिस्तान ने कई तरह के हमले किए। वहां ड्रोन और मिसाइल के माध्यम से अटैक किया गया। हमारी जो भारतीय सेना थी, उन्होंने अपने डिफेंस सिस्टम के माध्यम से सभी हमलों को विफल कर दिया। इससे पाकिस्तान अपने मंसूबों में विफल रहा। मैं कहना चाहता हूं कि पाकिस्तान ने अपनी हार को देखते हुए जम्मू, पुंछ और राजौरी के कई रिहायशी इलाकों में गोलाबारी की। इसमें मंदिर, मस्जिद और गुरूद्वारे को निशाना बनाया गया। उसमें आम नागरिकों की भी शहादत हुई।

महोदय, मैं आदरणीय गृह मंत्री जी के प्रति भी आभार प्रकट करना चाहता हूं। आदरणीय गृह मंत्री जी घटना स्थल पर पहुंचे। जो लोग गोलाबारी में मारे गए और जो घायल लोग थे, उनके परिवारों से भी गृह मंत्री जी मिले। इसके अलावा, वहां के पीड़ित लोगों को राहत भी दी गई। वहां पर जो नुकसान हुआ था, उसकी भरपाई करने की भी माननीय गृह मंत्री जी ने घोषणा की। जिन्होंने अपने परिवार को खोया था, उनके प्रति संवेदना प्रकट की गई और उनके परिवार के एक सदस्य को नौकरी देने का काम किया।

महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि अभी यहां पर सीजफायर की बात की गई। यहां पर कांग्रेस के कुछ सदस्यों ने सीजफायर की चर्चा की। यूपीए और कांग्रेस के सरकार में जिस प्रकार से सीजफायर का उल्लंघन होता था, उसका जीता-जागता प्रमाण अभी भी मौजूद है। भारत-पाक की सीमा पर आपने देखा होगा कि वहां हमेशा गोलाबारी होती थी। वहां हमारे पशु - मवेशी मारे जाते थे, लेकिन उस समय पाकिस्तान को जवाब नहीं दिया जाता था। आज हम देख रहे हैं कि जब भी पाकिस्तान की तरफ से गोलाबारी होती है, उसका जवाब दिया जाता है। भारत-पाक की सीमा पर हमारे जो किसान रहते हैं, आज वे अमन और चैन से भारत-पाक सीमा पर रह रहे हैं। इसके साथ ही मैं कहना चाहता हूं कि आप भी पीओके की बात कर रहे हैं, हम भी इसकी बात कर रहे हैं। यह हमारे लिए एक मुसीबत के रूप में खड़ी है। यह मुसीबत कांग्रेस की ही देन है। कांग्रेस के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू जी की देन है। अगर उन्होंने उस समय सीजफायर की घोषणा नहीं की होती तो पूरा का पूरा पीओके जो आज पाकिस्तान के पास है, वह भारत के पास होता। मैं इन्हीं शब्दों के साथ उन शहीदों को नमन करते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूं। आपने मुझे मौका दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री बृजेन्द्र सिंह ओला (झुन्झुनू) : सभापति महोदय, 22 अप्रैल से ले कर आज तक हमारे जितने भी लोगों ने अपनी शहादत दी है, चाहे वे पहलगाम के हों, चाहे हमारी सेना के हों, चाहे हमारे सिविलियन भाई हों, उन सबको मैं अपनी तरफ से श्रद्धांजलि देता हूँ और आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए।

महोदय, पुलवामा में घटना हुई, यह पूरी तरह से इंटेलिजेंस फेल्योर है। माननीय प्रधान मंत्री जी का कार्यक्रम 19 अप्रैल का था। इनपुट था कि ऐसी घटना हो सकती है। उसके बाद भी घटना हुई। चाहे वहां जो भी जिम्मेदार थे, उन सबकी यह भयंकर भूल थी। चूंकि जम्मू-कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश है, एलजी ने कहा है कि जो भी लैप्सेज़ रहे हैं, उनकी मैं जिम्मेदारी लेता हूँ। पर चूंकि केंद्र शासित प्रदेश है, तो आप भारत सरकार, एलजी के पीछे छुप कर इस घटना से बच नहीं सकते हैं। इस घटना के जो जिम्मेदार हैं, उनको जिम्मेदारी माननी पड़ेगी, तय करनी पड़ेगी। हमारे समय में जब भी ऐसी कोई घटना हुई तो उस पर एक्शन लिया गया। यदि कोई मंत्री जिम्मेदार थे, तो उनको हटाया। कोई अधिकारी जिम्मेदार थे, तो उनके खिलाफ कार्रवाई की गई। यह बहुत दुर्भाग्य की बात है कि इतना समय गुज़रने के बाद भी कोई भी पहलगाम के लिए जिम्मेदारी नहीं तय की गई है। हमारी सेना ने पराक्रम दिखाया। हम उसके सामने नतमस्तक हैं। मैं उस राज्य से आता हूँ, जहां से सबसे ज्यादा सैनिक भारतीय सेना में हैं और उस जिले से आता हूँ, जिसके सबसे अधिक सैनिक भारतीय सेना में हैं। सबसे अधिक उन्होंने शहादत दी है, चाहे सन् 1947 की लड़ाई हो, चाहे सन् 1965 की लड़ाई हो, चाहे सन् 1971 की लड़ाई हो या, चाहे सन् 1999 की लड़ाई हो। हमारे गृह मंत्री जी ने कहा, हमारे हिमाचल से आने वाले माननीय अनुराग जी ने कहा कि एक भी सैनिक की शहादत नहीं हुई है। मैं जिस जिले से आता हूँ, वहां के सुरेंद्र सिंह की इसी एक्शन में शहादत हुई है। मैं उसको भी श्रद्धांजलि देता हूँ। पर मैं इनको भी कहता हूँ कि आप भी अपने रिकॉर्ड को दुरुस्त कर लें। मैंने रक्षा मंत्री जी का भाषण सुना। इस सदन में आने के बाद भी सुना। उससे पहले हम जब विधान सभा के सदस्य थे, तब भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर भी सुनते थे, दूसरे माध्यमों से भी सुनते थे। ऐसा नीरस

और ऐसा सारहीन भाषण मैंने आदरणीय रक्षा मंत्री जी का कभी नहीं सुना। उन्होंने अपनी बात पेश की, किसी बात पर उन्होंने क्लियरटी की नहीं, कोई जिम्मेदारी उन्होंने ली नहीं। उन्होंने कहा कि सन् 1965 में शास्त्री जी ने काम किया, हमने वह निर्णायक लड़ाई जीती थी। पर सन् 1971 में इंदिरा जी का नाम लेना उन्होंने उचित नहीं समझा। पता नहीं आप लोगों को क्या हो जाता है कि नेहरू जी और इंदिरा जी का नाम आते ही आप अपना संतुलन खो देते हैं। इंदिरा जी ने सन् 1971 में एशिया का भूगोल बदल दिया, जो आप आज तक नहीं बदल पाए। उस समय के जो डॉक्यूमेंट्स हैं, अमेरिका के राष्ट्रपति और इंदिरा जी के बीच में बात होने के वे क्लासिफाइड डॉक्यूमेंट्स थे, उनको अब नॉन-क्लासिफाइड कर दिया है। उसमें उन्होंने निक्सन को कहा कि हम विकासशील देश हैं, पर हम अपनी रीढ़ पर खड़ा होना जानते हैं और हम खुद लड़ेंगे। हम किसी दबाव में नहीं आए। इंदिरा जी ने निक्सन को कहा कि हम विकासशील देश हैं। हो सकता है कि हम धनवान नहीं होंगे, परंतु हमें अपनी रीढ़ की हड्डी पर खड़ा होना आता है, हम लड़ेंगे।

उन्होंने धमकी दी कि हम सातवां बेड़ा भेज देंगे। सातवां बेड़ा हिंद महासागर में आया और उसके बाद 93 हजार सैनिकों ने सरेंडर किया। उसके बाद हम वह युद्ध जीते और बांग्लादेश को एक अलग देश बनाया। आज उसी अमेरिका के राष्ट्रपति जी 26 बार कह रहे हैं कि युद्ध मैंने रुकवाया है, मैंने व्यापार की धमकी दी, मैंने दूसरे तरीके से बात की। मैं अभी भाषण दे रहा हूँ तो हो सकता है कि कोई न कोई कह दे कि युद्ध हमने रुकवाया है। सिर्फ एक दिन विदेश मंत्री जी ने एक छोटा सा वक्तव्य दिया कि ऐसी कोई बात नहीं है। गवर्नमेंट की तरफ से हाइएस्ट लेवल पर आज तक कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

आज रक्षा मंत्री जी भी बोले हैं, लेकिन उन्होंने भी उनका डायरेक्ट नाम नहीं लिया है। विदेश मंत्री जी भी बोले हैं। विदेश मंत्री जी ने यह कहा कि वेन्स ने हमें कहा कि आप पर बहुत भारी हमला होगा। उनकी क्या ताकत है, जो हमारे देश में आकर, हमारे प्रधान मंत्री जी को और हमारे रक्षा मंत्री जी को उन्होंने यह कहा कि आप पर पाकिस्तान हमला करेगा। उनकी ऐसी क्या ताकत है, जो हमें दूसरा देश गाइड करेगा? हमारी हमेशा से यह नीति रही है कि हम तीसरी ताकत को हमारे यहां पर हस्तक्षेप नहीं करने देंगे। शिमला समझौते में भी यह बात थी कि हमारे जितने भी द्विपक्षीय समझौते हैं, समस्याएं हैं, उनको हम स्वयं हल करेंगे।

अमेरिका के राष्ट्रपति कहते हैं कि मैं कश्मीर के मुद्दे पर भी मध्यस्थता करूंगा। क्या आपने उनसे कहा है? हम आपसे जवाब चाहते हैं। क्या आपने उनको यह अधिकार दिया है कि वे मध्यस्थता करेंगे? एक समय हमारी विदेश नीति थी, चूँकि नेहरू जी का नाम आते ही आपको तकलीफ होती है। नेहरू जी से लेकर, चाहे वाजपेयी जी रहे, चाहे मोरारजी देसाई रहे, चाहे देवगौड़ा जी रहे, चाहे इंद्रकुमार गुजराल जी रहे, चाहे चन्द्रशेखर जी रहे या चाहे वी. पी. सिंह जी रहे, सभी के समय एक जैसी विदेश नीति कंटिन्यूटी में चल रही थी। उस समय हमारा विदेश नीति पर कोई मतभेद नहीं था। वर्ष 2013 के बाद आपने ऐसी स्थिति उत्पन्न की कि आज हमारे साथ एक भी पडोसी देश नहीं है। छोटे से छोटा देश भी हमारे साथ नहीं है।

पिछले एक साल पहले मालदीव ने हमारी सेनाएं हटा दी। उसने कहा कि आप अपनी सेना को यहां से विथ्ड्रा कर लीजिए और वहां पर इंडिया आउट का नारा दिया गया। अब प्रधान मंत्री जी वहां पर जाकर आए हैं। आपके यहां से एक सज्जन व्यक्ति बोल रहे थे कि मालदीव हमारे पास है। वह हमारा हो गया है। हमारे साथ एक भी पडोसी देश नहीं है। 48 मुस्लिम देश हैं।

इंदिरा गांधी जी के समय में, यूपीए के समय में जब भी कोई कॉन्फ्लिक्ट हुआ तो 45 देश हमारे साथ थे। रूस हमेशा हमारे साथ रहा। उसने हमारे लिए बार-बार वीटो भी किया। अभी अनुराग जी लिस्ट गिना रहे थे कि कांग्रेस में समय में यह हुआ, वह हुआ। मैं आपको बताता हूँ कि उरी हमला, कारगिल, पुलवामा हमला, अमरनाथ हमला, पठानकोट हमला, संसद पर हमला, अक्षरधाम हमला, कंधार हमला, सब बीजेपी के राज में हुए। कंधार हमले के बारे में बताऊँ तो आपके विदेश मंत्री स्वर्गीय जसवंत सिंह जी ने प्लेन के पायलट के बारे में इतनी ज्यादा भद्दी बातें कही कि आप सुन नहीं सकते और आप हमें कहते हैं कि हमारी पार्टी ने क्या किया है।

हमारी पार्टी ने आजादी दिलाई, हमारी पार्टी ने देश को बनाया, हमारी पार्टी ने देश को आगे बढ़ाया। आप कहते हैं कि हम चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था है तो फिर हमारी आर्मी के जनरल यह क्यों कहते हैं कि हम कल के हथियारों से आज नहीं लड़ सकते हैं? वे ऐसा क्यों कहते हैं कि ऑर्डर तो बहुत गए, लेकिन हमारे पास कुछ नहीं आया? हमारे देश के जवान त्रस्त क्यों हैं? आप उनका बजट क्यों नहीं बढ़ा रहे हैं? आपकी चौथी इकोनॉमी होगी, लेकिन आप आर्मी को तो बजट दीजिए। आपके पास 126 रफाल आने थे। लेकिन, आपके पास 35 रफाल आए। दो स्कवाड्रन आने थे। आप कब तक लाएंगे। पाकिस्तान और हम वायुसेना के मामले में एक से हैं। हमें चीन के हिसाब से तैयारी करनी है कि चीन के पास कितने हैं? इस बार भी हमारी सेना ने कहा कि हमें तीन देशों से लड़ना पड़ा। आपको सुरक्षा का सारा परिदृश्य ध्यान में रखकर जवाब देना पड़ेगा और जवाबदारी लेनी पड़ेगी। आप यह नहीं कह सकते हैं कि यह कांग्रेस ने कर दिया। आप 11 साल से सरकार में हैं। आपने क्या किया? एक दशक में तो देश का बहुत बदलाव हो सकता है। आप डिफेंस की फैक्ट्रियों का निजीकरण कर रहे हैं।

माननीय सभापति : माननीय सदस्य, आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री बृजेन्द्र सिंह ओला : रिसर्च पर जो पैसा लगना चाहिए, उसको आप कम कर रहे हैं। आईटी में 80 परसेंट इक्विपमेंट चीन के पाकिस्तान के पास थे। उस लेवल पर तैयारी आप लोगों ने दस साल में क्यों नहीं की? सेना के हाथ आपने क्यों बांध रखे थे? हमने कभी भी सेना के हाथ नहीं बांधे। हमने सेना को पूरी छूट दी थी। सेना ने इस युद्ध में सफलता पायी है ।

श्री मोहम्मद हनीफ़ा (लद्दाख) : सर, पहलगाम में हुए बुजदिलाना दहशतगर्दी हमले पर इजहारे अफसोस करता हूं, जिसने पूरे मुल्क को हिलाकर रख दिया है। इस हमले में मासूम शहरियों को निशाना बनाया गया। मैं उन परिवारों को ताजिया पेश करता हूं। यह हमला सिर्फ तहशतगर्दी की एक कार्यवाही नहीं थी, बल्कि यह हिन्दुस्तान के उस नजरिए पर हमला

था जो कि एक सैक्यूलर, पुरअमन और मुत्तहद कौम परमदमी है। यह पाकिस्तान की पुश्पनाही रखने वाले दहशतगर्दों का एक बुजदिलाना और शर्मनाक काम था जिसका मकसद खौफ, दहशत और अफरा-तफरी फैलाना था। लेकिन इस हमले ने हमारी कौम को मजीद मुत्तहद किया है। ऐसे नाजुक वक्त में हमारे हौसले और अज्म को मजीद मजबूत किया है।

इसके साथ मैं अपने पूरे खुलूस दिल से अपने मुसल्लाह आवाज, हमारे फौज, फिजाहिया और बहरिया को सलाम पेश करता हूं जिन्होंने ऑपरेशन सिंदूर के जरिए इस हमले का भरपूर जवाब दिया। इस ऑपरेशन की दस्तगी, हमआंगी और तेजी देखने में आयी, वह मुल्क के लोगों के लिए बाइज़े फक्र है। सिर्फ चंद मिनटों में पाकिस्तान और मकबूजा कश्मीर में मौजूद कई दहशतगर्द लॉन्च पैड को मुकम्मल तौर पर तबाह किया गया। इसमें सबसे ज्यादा काबीले तहसीम बात यह है कि ऑपरेशन किसी शहरी के जानी नुकसान के बगैर मुकम्मल किया गया। यह ऑपरेशन अमन के दुश्मनों के लिए एक वाजे और दो टूक पैगाम है कि हिन्दुस्तान के सब्र को कमजोरी न समझा जाए। हमारी सरजमीं पर किया गया कोई भी हमला सख्त और मुनासिब जवाब का सबब बनेगा।

मैं जम्मू-कश्मीर की आवाम के इस्तेमाई हौसले और जुल्फ को भी दिल की गहराइयों से अखराज ए तहजीब पेश करना चाहता हूं। परी वादी ए कश्मीर में पहलगाम हमले पर मुकम्मल तौर पर बंद का ऐलान किया। कश्मीरी आवाम में मुत्तासिरी के हक में मजबूती से आवाज बुलंद की और दो टूक पैगाम दिया यहां दहशतगर्दी बर्दाश्त नहीं किया जाएगा, न हमारे नाम पर और न ही हमारी सरजमीं पर। उनका यह एहतजाज, यह हौसला, इस ऐवान में सराहनीय जानत की लायक है। सर, मैं करगिल जैसी सरजमीं से ताल्लुक रखता हूं जो कुर्बानी और बहादुरी की अलामत है, जो अमन की कीमत और इसके दर्द से बखूबी वाकिफ हैं। मैं मुत्तासरीन इन अहलखाना और अपनी बहादुर फौज के साथ पूरी कुव्वत से खड़ा हूं। सर, मैं जंग बंदी के कुछ ही रोज बाद मुत्तासिर इलाकों में पहुंचा। खास तौर पर पुंछ जो सरहद पार गोलाबारी से सबसे ज्यादा मुत्तासिर हुआ था। ताकि वहां के सूरतेहाल का जायजा ले सकूं।

सर, बतौर रुक्ने पार्लियामेंट मैं लद्दाख की नुमाइंदगी करता हूं और पुंछ के अपने हालिया दौरे के मुशाहिदात के बुनियाद पर मैं इस मुआजिज एवान के रूबरू पुरजोर मुतालिबा करता हूं कि सरहदी इलाकों के इन खामोश मगर पुरअजम आवाम इंसानी जरूरी और बुनियादी ढांचे पर पूरी तवज्जो दी जाए। ये वो लोग हैं जो हमारे मुल्क की खामोश फ्रंट लाइनर हैं। लद्दाख और जम्मू कश्मीर के जो लोग लाइन ऑफ कंट्रोल, एलएसी और इंटरनेशनल बॉर्डर के करीब आबाद हैं, वे सरहद पार गोलाबारी या ड्रोन हमलों के दौरान मुसलसल खतरे के जद में रहते हैं। जब दुश्मन की तरफ से गोलाबारी शुरू होती है तो ख्वातीन, बच्चों और बुजुर्गों तक को खुले आसमान तले पनाह लेने पर मजबूर होना पड़ता है। हमें फौरी तौर कम्यूनिटी और घरेलू बंकर्स की तामील की फिक्र करनी चाहिए। मैं ऑनरेबल होम मिनिस्टर जनाब अमित शाह जी और ऑनरेबल डिफेंस मिनिस्टर राजनाथ सिंह जी से मोतबाना गुज़ारिश करता हूं कि इस अहम मसले को तरजीह बुनायादों पर उठाया जाए और तमाम हिस्साद और खतरे से दो-चार इलाकों में कंक्रीट बंकर की तामील मिशन मोड पर शुरू की जाए।

सर, यह एक हकीकत है कि सरहदी इलाकों बशमूल, पुंछ में मौजूदा बेशतर अस्पतालों में अमले की शदीद कमी है । सभी साजो-सामान नाकाफी हैं और ट्रॉमा सेंटर जैसी बुनियादी सहूलियत दस्तियाब नहीं है । जब कोई हमला होता है या किसी हादसे और हगांमी सूरत-ए-हाल का सामना होता है तो अक्सर मरीजों को गोल्डन आवर के दौरान बरवक्त इलाज मयस्सर नहीं आ पाता है । उसके कारण कई जानों का जाया होता है । उन्हें बचाया जा सकता है । कुछ समय जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के तमाम सरहदी इलाकों में अस्पतालों की बुनियादी ढांचे को पूरी तरह से अपग्रेड करने की अशद जरूरत है । तमाम इलाकों में माहिर डॉक्टरों, पैरा मेडिकल अमले और हंगामी इन्खला के मंसूबे के साथ मोबाइल मेडिकल यूनिट तैनात की जाए ।

सर, करगिल का इलाका हर साल शदीद बर्फबारी और शकुर की बंदीश के बाईस मुल्क के बाकी हिस्सों से कट जाता है । उसकी वजह से मरीज श्रीनगर, जम्मू, दिल्ली या चंडीगढ़ तक इलाज के लिए सफर नहीं कर पाते हैं । खासकर, वे अफराद जो माशी तौर पर कमजोर हैं और फजाई सफर का खर्च बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं, उनका मुक्कमल तौर पर जिला अस्पताल करगिल पर ही इहिसार हैं । साथ ही साथ करगिल के सरहदी इलाके के लोग भी उसी अस्पताल पर ही मुनहसिर हैं । जहां इस वक्त सिर्फ 75 बेड की सहूलियत दस्तियाब है । जो रोज ब रोज बढ़ती हुई तिबी जरूरियात के लिए नाकाफी है । यह सुरत-ए-हाल हर साल हजारों जानों को खतरे में डालती है । लिहाजा फौरी जरूरत है कि मौजूदा 75 बेडेड पर मुशतमिल अस्पताल को अपग्रेड करके एक मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल और एडवांस ट्रॉमा सेंटर की सहूलियत से लैस किया जाए ।

सर, वह परिवार जिन्होंने पहलगाम हमले या सरहद पार गोलाबारी के दौरान अपने प्यारे को खोए हैं, जिनमें बेवाएं और वे बच्चे, जो अपने वालदेन से महरूम हो गए हैं, वे हमारी फोरी तौर पर हमदर्दी के मुस्तहिक हैं । उन मुतासिर परिवार को माली इमदाद, स्कॉलरशिप, काउंसली स्किल ट्रेनिंग और इंश्योरेंस जैसी सहूलियत फराहम की जानी चाहिए । मैं हुकूमत से मीदबाना गुजारिश करता हूं कि पहलगाम हमले और ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सरहद पार गोलाबारी में जा बहक होने वाले अफराद को शहीद का दर्जा दिया जाए ।

सर, पुंछ के अपने हालिया दौरे दौरान जब मेरी मुलाकात सरहद पार गोलाबारी से मुतासिरा से हुई तो मैंने महसूस किया कि हालाकती की एक बड़ी वजह मौकामी आबादी में जंगी हालात से निपटने के बारे में आगाही का फुकदान है । ज्यादातर जान का नुकसान उस वक्त हुआ जब शदीद गोलाबारी के दौरान लोग खौफ के मारे घरों से बाहर निकल आए । लिहाजा हमें सरहरदी इलाकों में बाकायदा मौक ड्रील और कम्युनिटी एलर्टनेस कंपेनिंग मुनकद करनी होगी, ताकि मुकामी लोग ऐसे खतरनाक मौके पर फोरी और दुरुस्त रद्दे अमल सीख सकें ।

सर, हमारे मुशल्लह अफवाज़ ने ऑपरेशन सिंदूर की नज़्म व ज़ब्त और अखलाकी कुव्वत का मजाहिरा किया है । वह काबिल-ए-फख्र है । हमारे जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के अवाम ने अपनी दुआओं और पुरामन एहतजाज के जरिए इस सच्चाई की दोबारा तस्दीक की है कि नफरत कभी इतिहाद को शिकस्त नहीं दे सकती है । अब यह हमारे पार्लियामेंट

और हुकूमत की जिम्मेदारी है कि उस ग़युर आवाम को इज्जत, बुनियादी ढांचे और मवाके के सब मुकम्मल हिमायत फराहम करे।

सर, सरहद के लोग महज बाशिंदे नहीं बल्कि हमारे दिफा के सफे अव्वल के शहरी हैं। हमें चाहिए कि इनके हौसले को फरामोश न करें और इनके हुकूक में मजीद ताखीर न करें।

आइए आज इस अहद की तज्दीद करें कि कोई भी हमला चाहे वह कितना ही संगीन क्यों न हो, हमारे कौमी थक जहती को कमजोर नहीं कर सकते हैं और हमारे सरहदों पर बसने वाले हर शहरी हमारे मुकम्मल हिमायत और तहफ़ुज़ मुस्तहिक है। शुक्रिया।

جناب محمد حنیفہ (لدّاخ): سر، میں پہلگام میں ہوے بزدلانا [دہشت گری حملے پر اظہارِ افسوس کرتا ہوں، جس نے پورے ملک کو ہلا کر رکھ دیا ہے۔ اس حملے میں معصوم شہریوں کو نشانہ بنایا گیا۔ ان میں پریواروں کو تعزیت پیش کرتا ہوں۔ یہ حملہ صرف دہشت گردی کی کاروائی نہیں تھی، بلکہ یہ ہندوستان کے اس نظریہ پر حملہ تھا جو کہ ایک سیکولر، پُر امن اور متحد قوم پر مبنی ہے۔ یہ پاکستان کی پُشت پناہی رکھنے والے دہشت گردوں کا ایک بزدلانا اور شرمناک کام تھا۔ جس کا مقصد خوف، دہشت اور افراتفری پھیلانا تھا۔ لیکن اس حملے نے ہماری قوم کو مزید متحد کیا ہے۔ ایسے نازک وقت میں ہمارے حوصلے اور عزم کو مزید مضبوط کیا ہے۔ اس کے ساتھ میں اپنے پورے خلوص دل سے اپنی مسلح افواج، ہماری فوج، فضائیہ اور بہریہ کو سلام پیش کرتا ہوں۔ جنہوں نے آپریشن سندور کے ذریعے اس حملے کا بھرپور جواب دیا۔ اس آپریشن جو دستگی، ہم آہنگی اور تیزی دیکھنے میں آئی وہ ملک کے لوگوں کے لئے باعث فخر ہے۔ صرف چند منٹوں میں پاکستان اور مقبوضہ کشمیر میں کئی دہشت گرد لانچ پیڈ کو مکمل طور پر تباہ کیا گیا۔ اس میں سب سے زیادہ قابلِ تحسین بات یہ ہے کہ آپریشن کسی شہری کے جانی نقصان کے بغیر مکمل کیا گیا۔ یہ آپریشن امن کے دشمنوں کے لئے ایک واضح اور دو ٹوک پیغام ہے کہ ہندوستان کے صبر کو کمزوری نہ سمجھا جائے۔ ہماری سرزمین پر کیا گیا کوئی بھی حملہ سخت اور مناسب جواب کا سبب بنے گا۔ میں جموں کشمیر کی عوام کے اجتمائی حوصلے کو بھی دل کی گہرائیوں سے خراجِ تحسین پیش کرتا ہوں۔ وادی کشمیر میں پہلگام حملے پر مکمل طور پر بند کا اعلان کیا گیا۔ کشمیری عوام نے متاثرین کے حق میں مضبوطی سے آواز بلند کی اور دو ٹوک پیغام دیا کہ یہاں دہشت گردی برداشت نہیں کی جائے گی، نہ ہمارے نام پر اور نہ ہی ہماری سرزمین پر۔ ان کا یہ احتجاج یہ ، حوصلہ اس ایوان میں سراہنیتا کے لایق ہے۔ سر، میں کارگل جیسی سرزمین سے تعلق رکھتا ہوں جو قربانی

متاثرین میں ہے۔ واقف بخوبی سے درد کے اس اور قیمت کی امن جو ہے، علامت کی بہادری اور ہوں۔ کھڑا سے قوت پوری ساتھ کے فوج بہادر اپنی اور خانہ اہلِ کے ان اور

سر، میں جنگ بندی کے کچھ ہی روز بعد متاثر علاقوں میں پہنچا۔ خاص طور پر پونچھ جو سرحد پارگولی باری سے سب سے زیادہ متاثر ہوا تھا۔ تاکہ وہاں کے صورتِ حال کا جائزہ لے سکوں۔ سر، بطور رکن پارلیمنٹ میں لداخ کی نمائندگی کرتا ہوں اور پونچھ کے اپنے حالیہ دورے کے مشاہدات کی بنیاد پر اس معزز ایوان کو روبرو پرزور مطالبہ کرتا ہوں کہ سرحدی علاقوں کے ان خاموش مگر پرامن عوام کی انسانی ضروریات اور بنیادی ڈھانچہ پر پوری توجہ دی جائے۔ یہ وہ لوگ ہیں جو ہمارے ملک کی خاموش فرنٹ لائنر ہیں۔ لدّاخ اور جموں کشمیر کے جو لوگ لائن آف کنٹرول، ایل۔اے۔سی۔ اور انٹر نیشنل بارڈر کے قریب آباد ہیں، وہ سرحد پار گولی باری یا ڈرون حملوں کے دوران مسلسل خطرے کے زد میں رہتے ہیں۔ جب دشمن کی طرف سے گولی باری شروع ہوتی ہے تو خواتین، بچوں اور بزرگوں تک کو کھُلے آسمان تلے پناہ لینے پر مجبور ہونا پڑتا ہے۔ ہمیں فوری طور پر کمیونیٹی اور گھریلوں بنکرز کی تعمیل کی فکر کرنی چاہئیے۔ میں آنریبل ہوم منسٹر جناب امت شاہ جی اور آنریبل ڈیفینس منسٹر جناب راجناتھ سنگھ جی سے مودبانہ گزارش کرتا ہوں کہ اس اہم مسئلے کو ترجیحی بنیادوں پر اُٹھایا جائے اور تمام حساس اور خطرے سے دو چار علاقوں میں کنکریٹ بنکر کی تعمیل مشن موڈ پر شروع کی جائے۔

جناب، یہ ایک حقیقت ہے کہ سرحدی علاقوں بشمول پونچھ میں موجودہ بیشتر اسپتالوں میں عملے کی شدید کمی ہے۔ سبھی ساز و سامان نا کافی ہیں، اور ٹروما سینٹر

جیسی بنیادی سہولیت دستیاب نہیں ہے۔ جب کوئی حملہ ہوتا ہے یا کسی حادثہ اور ہنگامی صورتِ حال کا سامنا ہوتا ہے تو اکثر مریضوں کو گولڈن آور کے دوران بروقت علاج میسر نہیں ہو پاتا ہے، اس وجہ سے کئی جانیں ضائع ہو جاتی ہیں۔ انہیں بچایا جا سکتا ہے۔ کچھ وقت جموں کشمیر اور لدّاخ کے تمام سرحدی علاقوں میں اسپتالوں کی بنیادی ڈھانچہ کو پوری طرح سے اپگریڈ کرنے کی اشد ضرورت ہے۔ تمام علاقوں میں ماہر ڈاکٹروں، پیرا میڈیکل عملے اور ہنگامی انخلاء کے منصوبے کے ساتھ موبائل میڈیکل یونٹ تعینات کی جائے۔

سر، کارگل کا علاقہ ہر سال شدید برفباری اور شکور کی بندش کے باعث ملک کے باقی حصوں سے کٹ جاتا ہے۔ اس کی وجہ سے مریض سری نگر، جموں، دہلی یا چندی گڑھ تک علاج کے لئے سفر نہیں کر پاتے ہیں۔ خاص کر وہ افراد جو معاشی طور پر کمزور ہیں اور فضائی سفر کا خرچ برداشت نہیں کر سکتے ہیں، ان کا مکمل طور پر ضلع اسپتال کارگل پر ہی انحثار ہے۔ ساتھ ہی ساتھ کارگل کے سرحدی علاقے کے لوگ بھی اسی اسپتال پر ہی منحثر ہیں۔ جہاں اس وقت صرف 75 بیڈ کی سہولیت دستیاب ہے۔ جو روز بروز بڑھتی ہی طبی ضروریات کے لئے نا کافی ہے۔ یہ صورتِ حال ہر سال ہزاروں جانوں کو خطرے میں ڈالتی ہے۔ لہٰذا فوری ضرورت ہے کہ موجودہ 75 بیڈڈ پر مشتمل اسپتال کو اپگریڈ کرکے ایک ملٹی اسپیشیلیٹی اسپتال اور ایڈوانس ٹروما سینٹر کی سہولیت سے لیس کیا جائے۔

سر، وہ پریوار جنہوں نے پہلگام حملے یا سرحد پار گولی باری کے دوران اپنے پیاروں کو کھویا ہے، جن میں بیوائیں اور وہ بچے، جو اپنے والدین سے محروم ہو گئے ہیں، وہ ہماری فوری طور پر ہمدردی کے مستحق ہیں۔ ان متاثر پریوار کو مالی امداد، اسکالرشِپ، کاؤنسلی اسکِل ٹریننگ اور انشیورینس جیسی سہولیت فراہم کی جانی چاہئیں۔ میں حکومت سے مودبانہ گزارش کرتا ہوں کہ پہلگام حملے اور آپریشن سندور کے دوران سرحد پر گولی باری میں جاں بحق ہونے والے افراد کو شہید کا درجہ دیا جائے۔

سر، پونچھ کے اپنے حالیہ دورے کے دوران جب میری ملاقات سرحد پار گولی باری سے متاثرین سے ہوئی تو میں نے محسوس کیا کہ حلاکتوں کی ایک بڑی وجہ مقامی آبادی میں جنگی حالات سے نپٹنے کے بارے میں آگاہی کا فقدان ہے۔ زیادہ تر جان کا نقصان اس وقت ہوا جب شدید گوری باری کے دوران لوگ خوف کے مارے گھروں سے باہر نکل آئے ۔ لہٰذا ہمیں سرحدی علاقوں میں باقائدہ ماک ڈرل اور کمیونیٹی الرٹنیس کیمپیننگ منعقد کرنی ہوگی، تاکہ مقامی لوگ ایسے خطرناک موقع پر فوری اور درست ردِّ عمل سیکھ سکیں۔

سر، ہمارے مسلح افواج نے آپریشن سندور کی نظم و ضبط اور اخلاقی قوت کا مظاہرہ کیا ہے۔ وہ قابلِ فخر ہے۔ ہمارے جموں کشمیر اور لدّاخ کی عوام نے اپنی دعاؤں اور پر امن احتجاج کے ذریعے اس سچائی کی دوبارہ تصدیق کی ہے کہ نفرت کبھی اتحاد کو شکست نہیں دے سکتی ہے۔ اب یہ ہمارے پارلیمینٹ اور حکومت کی ذمہ داری ہے اس غیور عوام کو عزت، بنیادی ڈھانچے اور موقع کے سب مکمل حمایت فراہم کرے۔

سر، سرحد کے لوگ محض باشندے نہیں بلکہ ہمارے دفاع کے صفِ اول کے شہری ہیں، ہمیں چاہیے کہ ان کے حوصلوں کو فراموش نہ کریں اور ان کے حقوق میں مزید تاخیر نہ کریں۔

آئیئے آج اس عہد کی تجدید کریں کوئی بھی حملہ چاہے وہ کتنا ہی سنگین کیوں نہ ہو، ہمارے قومی یک جہتی کو کمزور نہیں کر سکتے ہیں اور ہماری سرحدوں پر بسنے والے ہر شہری ہمارے مکمل حمایت اور تحفظ کے مستحق ہیں۔ شکریہ]

श्री राजकुमार रोत (बांसवाड़ा) : धन्यवाद सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया। मैं इस सदन में पहलगाम हमले में हताहत हुए हमारे 26 नागरिक और ?ऑपरेशन सिंदूर? के जाबाज वीर शहीदों को नमन करता हूं। हम सेना के इस पराक्रम की सराहना करते हैं और इस देश के सामने जो विपरीत परिस्थिति आई, उस दौरान इस देश की समस्त राष्ट्रीय पार्टियां और क्षेत्रीय पार्टियां एक मंच पर खड़ी हुई तथा मजबूती के साथ पाकिस्तान को जवाब देने के लिए खड़ी हुई थीं, उसके लिए मैं सभी को धन्यवाद देना चाहता हूं। पाकिस्तानी आतंकी ने हमारे देश में घुसकर एक घंटे तक तांडव मचाया। हमारे 26 निर्दोष नागरिक को मार दिया और हमने कह दिया कि ऑपरेशन सिंदूर के नाम से पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दिया। लेकिन, हकीकत जो सामने आई है और आज जो हमने जवाब सुना, उससे लगता है कि झूठी तसल्ली देकर देश को गुमराह करने का काम किया गया है। हमारे देश के अंदर घुसकर लोगों को तड़पा-तड़पाकर मारने का काम किया गया और हम कह रहे हैं कि हमने पाकिस्तान में जाकर 100 आतंकियों को मार गिराया। अच्छी बात है 100 नहीं बल्कि 1000 आतंकियों को मार गिराना चाहिए।

सबको मुंह तोड़ जवाब देना पड़ेगा। यह जवाब नहीं आया कि पांच लोग कहां से आए? कैसे गए? उन्होंने एक घंटे तक तांडव किया और धर्म पूछकर मारने की बात की, कलमा पढ़ाकर मारने की बात की, वे पकड़े गए या नहीं? मारे गए या नहीं? इसका जवाब सदन और देश जानना चाहता है लेकिन यह जवाब नहीं आया है।

आप दावा करते हैं कि 56 इंच का सीना है। पाकिस्तान के अंदर, घर में घुसकर मारेंगे लेकिन वे हमारे घर के अंदर घुसकर मारकर गए और हम आज तक पांच लोगों को पकड़ नहीं पाए हैं। आपके कुछ ? मीडिया, सोशल मीडिया हैं, देखा गया कि सीरिया और इज़रायल के वीडियो देश में चलाए गए, देश की जनता को गुमराह किया, हमने पाकिस्तान के अंदर यह हाल कर दिया है, इस तरह के झूठे वीडियो चलाए। हद तो तब हो गई जब नेशनल मीडिया दिखाने लगा कि हमने कराची पर कब्जा कर लिया, अलाहाबाद पर कब्जा कर लिया। कानून मंत्री जी, मैं भी विचार कर रहा था कि कराची पर कब्जा हो गया है तो हमारा जो राज्य प्रस्तावित है, उसे सिंध तक लेकर चलेंगे। ऐसा कुछ नहीं हुआ, सुबह उठकर देखा कि डोनाल्ड ट्रम्प ने 26-27 ट्वीट कर दिए, ?? (व्यवधान)

संस्कृति मंत्री; तथा पर्यटन मंत्री (श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत) : ? आप यह मत बोलिए। ? (व्यवधान)

श्री राजकुमार रोत : जब हम सरकार की आलोचना करते हैं, सरकार की कमियों को गिनाते हैं तो बीजेपी के लोग कहते हैं कि ये देशद्रोही हैं, देश विरोधी हैं। क्या सरकार की कमियां गिनाना देश विरोधी होता है? जब हम बात करते हैं तो कहते हैं कि सेना विरोधी हैं। भाजपा या सरकार सेना नहीं है, भाजपा या सरकार देश नहीं है। सुनने, समझने और सुधार करने की बात हमारे अंदर होनी चाहिए, सत्ताधारी लोगों को यह समझना होगा। हम कोशिश करते हैं कि सरकार को हकीकत बताएं।

आज देखा जा रहा है ? ?नमस्ते ट्रम्प?। ट्रम्प ने 26 से 27 बार ट्वीट किया। क्या इसका जवाब हमने दिया? आज तक इसका जवाब नहीं दिया गया? हम ?नमस्ते ट्रम्प? कार्यक्रम करा रहे हैं। हम ?डियर डोनाल्ड ट्रम्प? करके गले लगा रहे हैं। पाकिस्तान, जो देश हमारा दुश्मन है, असिम मुनीर को बुलाकर लंच करवा रहे हैं और हम ?डियर डोनाल्ड ट्रम्प? करके गले लगा रहे हैं। यह हकीकत है, हमें इसे स्वीकार करना पड़ेगा। पाकिस्तान को मुंह तोड़ जवाब तो देना है, लेकिन ट्रम्प के जो ट्वीट आए हैं, उनका भी जवाब देना पड़ेगा। देश के अंदर उद्योगपतियों को जमीन देने के उद्देश्य से सैंकड़ों आदिवासियों को मार दिया गया। वह पावर, वह ताकत और 56 इंच का सीना पाकिस्तान को दिखाने की जरूरत है। आज देश की जनता जानना चाहती है कि हम विश्व गुरु हैं या डोनाल्ड ट्रम्प हमारा गुरु है जो हमें बार-बार आदेश दे रहा है, बार-बार ट्वीट कर रहा है? देश की जनता अब नौटंकी नहीं चाहती, देश की जनता चाहती है कि मजबूत नीतियां बनें। देश की जनता सिर्फ तस्वीर नहीं चाहती, देश की जनता चाहती हैं कि हम ताकतवर बनें।

हमारे बड़े भाई अनुराग जी कह रहे थे कि धर्म पूछकर मारा। ये जो पाकिस्तानी नकारा लोग आए थे, उन्होंने धर्म पूछकर मारा, कलमा पढ़ाकर मारा, लेकिन देश के अंदर सरकारें बुलडोजर धर्म पूछकर चला रही हैं। देश के अंदर सरकारें जाति और वर्ण पूछकर पीड़ितों को मुआवजा दे रही हैं। यह जो हो रहा है, गलत हो रहा है।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप समाप्त कीजिए।

? (व्यवधान)

श्री राजकुमार रोत : मैं अंत में एक मिनट में अपने वक्तव्य का समापन करना चाहता हूं। ? (व्यवधान)

पुलवामा हमले के बाद पाकिस्तान को एमआईएफ ने एक अरब डॉलर दिए, एडीबी ने 80 मिलियन डॉलर दिए, विश्व बैंक ने 108 डॉलर दिए। विदेशी लोग इतना कुछ दे रहे हैं।

अंत में, मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि हम अपने देश के साथ मजबूती से खड़े हैं।

माननीय सभापति: बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री विशालदादा पाटील जी।

श्री विशालदादा प्रकाशबापू पाटील (सांगली) : माननीय सभापति जी, मैं सबसे पहले पहलगाम आतंकी में शहीद हुए सभी लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं। मैं देश के सैनिकों को सैल्यूट करता हूं, उनकी सराहना करता हूं कि उन्होंने यह ऑपरेशन पूरा किया। इसमें दो सरप्राइस एलीमेंट्स थे, उन्हें पता था कि हम हमला करने वाले हैं और उसके बावजूद हम हमला कर पाए और हमने उनके आतंकवादी अड्डों पर अटैक करने में सफलता प्राप्त की। सरप्राइस क्यों नहीं था? यह बोला गया है कि उन्हें पहले बताया गया था कि हम अटैक करने वाले हैं। मुझे गर्व है कि मैं इतने बहादुर सैनिकों के देश से हूं। मुझे आर्मी, नेवी और एयरफोर्स पर पूरा विश्वास है। जब वे ऐसा कहते हैं, तो I trust them. When they say that they have achieved what they wanted to achieve, I believe them. जब वे कहते हैं कि यह जरूरी नहीं है कि कितने फाइटर जेट्स गिराए गए, तो मैं उन पर विश्वास रखता हूँ। मैं भी मानता हूँ कि शायद यह जरूरी नहीं है। पाकिस्तान के एयर स्पेस में जाकर आतंकी अड्डों को तबाह करना और कोई नुकसान न होना, शायद मुमकिन नहीं था, यह हम भी समझते हैं। कहते हैं कि "गिरते हैं शहसवार ही मैदान-ए-जंग में, वो तिफ़्ल क्या गिरे जो घुटनों के बल चले।"

इसलिए अगर पाकिस्तान कहता है कि हमारा कुछ गिरा नहीं, तो ठीक है, वह डरकर चाइना के पीछे छिप गया था, हम वहाँ जाकर उनको मार पाए, तो कुछ नुकसान हुआ होगा। The performance of the defence services has given a lot to gloat to the Defence Minister of this country. They have earned it for you. But what have you provided for them?

सर, डिफेंस के बजट में साढ़े नौ फीसदी की वृद्धि की गई है। लेकिन ये सारी वृद्धि सिर्फ सैलरी और पेंशन में चली गई।

पार्लियामेंट्री स्टैंडिंग कमेटी कहती है कि डिफेंस में बजट का कम से कम तीन फीसदी खर्च होना चाहिए था। अभी यह दो फीसदी के आसपास है। उसमें 50 फीसदी बढ़ाने की जरूरत है।

Sir, the IFS had sanctioned 42 squadrons. But currently, only 29 squadrons are functioning effectively because there are a lot of pending regiments with ageing aircrafts. The records shows, वर्ष 1965 से भी, आज लोएस्ट एयरक्राफ्ट की फ्लीट वहाँ पर उपलब्ध है। So, have we achieved a deterrent?

सर, सरकार कहती है कि पूरा फ्रीडम दिया गया। Group Captain Shiv Kumar says that political decisions have hampered the political establishment.

सर, सीज़फायर क्यों किया गया? सीज़फायर किया गया। आप क्रोनोलॉजी समझें। क्रोनोलॉजी यह है कि ट्रम्प चाचा बोलते हैं कि हमने सीज़फायर करवा दिया। हमारा देश कहता है कि सीज़फायर हमने कर दिया। इसके बावजूद, पाकिस्तान हम पर अटैक करता रहा। फिर भी हम चुप बैठे रहे। इसलिए क्रोनोलॉजी यह है कि सीज़फायर हमने करवाया, उन्होंने करवाया, पाकिस्तान ने करवाया, या किसने करवाया?

Sir, let us get to the main thing. Let us leave Defence aside. What has the Home Ministry achieved? क्या पड़ोसी मुल्क से यहाँ आकर हमारे भाइयों को मारकर चले गये। हमारे पास कोई इंटेलिजेंस नहीं था। अगर हमारे पास इंटेलिजेंस था, तो कोई कार्रवाई क्यों नहीं की गई? इसके बावजूद कि हमें पता था, तो लोग कैसे हमारे यहाँ आ पाए? क्या एक सौ दिनों के बाद भी उन आतंकियों का न मिलना, यह सरकार का फेल्योर नहीं है?

सर, मैं भाजपा के खिलाफ चुनकर आया हूँ। जब यह कहा गया कि यूक्रेन का युद्ध हमारे प्रधानमंत्री जी ने रुकवाया, तो मुझे भी बहुत गर्व महसूस हुआ। मैं भी बहुत खुश हुआ। लेकिन आश्चर्य यह है कि जब हम खुद का युद्ध नहीं रोक पाए, तो हमें अमेरिका के पास जाना पड़ा, ऐसा वे कहते हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है। Sir, the fact is that the entire Opposition has supported this Government in the entire issue. हमने किसी का इस्तीफा नहीं मांगा, हमने किसी से तकरार नहीं की। हम बोले कि आप जो करेंगे, हम पूरी तरह से आपके साथ रहेंगे।

सर, विदेश जाने के लिए हर दल के लोग आए और विदेशों में जाकर देश का नारा हमने लगाया, तो भी आज सरकार के पूरे भाषण में केवल यही था कि नेहरू के काल में यह हुआ, इंदिरा जी के काल में यह हुआ और कांग्रेस ने यह किया। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है।

इस सदन में, एक सौ दिनों के बाद, वहाँ पर अपोज़ नहीं किया, एक सौ दिनों के बाद क्या यह पूछना गलत है कि क्या-क्या हुआ था, कमियाँ क्या थीं, गलतियाँ क्या हुई थीं?

सर, क्या यह देशद्रोह है, अगर हम पूछें कि क्या हो रहा है? हमारी बहनों का सिन्दूर उजाड़ने वालों को पकड़कर भारत लाने की मांग करना क्या गलत है?

The Opposition had stood by the Government. The entire nation had stood by them. But now, the nation wants justice. We will keep questioning you. We will support you. We will stand by you. उन आतंकवादियों को पकड़कर यहाँ लाकर उन्हें सजा देना सरकार का कर्तव्य है और आपको यह करना चाहिए।

धन्यवाद।

श्रीमती कमलजीत सहरावत (पश्चिम दिल्ली) : सभापति जी, आज आपने मुझे ?ऑपरेशन सिंदूर? की विशेष चर्चा पर बोलने का मौका दिया है, यह मेरे लिए गौरव के क्षण हैं।

सर्वप्रथम, पहलगाम में हमारे जिन परिवार के भाइयों के साथ यह कायराना हरकत की गई है, जिनको जान से मारा गया है, मैं अपने उन भाइयों को श्रद्धांजलि देते हुए, हमारी सेना के शौर्य को सलाम करती हूं। आज सदन में आदरणीय रक्षा मंत्री श्री राज नाथ सिंह जी ने विस्तृत रूप से बताया है कि किस तरह से तीनों सेनाओं और इंटेलिजेन्स एजेन्सियों के कोऑर्डिनेशन से हम इस ऑपरेशन को सफलतापूर्वक पूरा कर पाए हैं। पहले से तय कर दिया गया था कि

आतंकवाद की नर्सरी की नष्ट करेंगे। स्पष्ट रूप से आइडेन्टीफाइड टारगेट्स, वेल कैल्कुलेटेड रिजल्ट्स मिला है, मैं इसके लिए सेना को बहुत-बहुत बधाई देती हूं।

सभापति जी, हमने कायराना हरकत नहीं की, बल्कि हमने चेतावनी देकर हमला किया। प्रधानमंत्री जी ने भी कह दिया था कि इस बार जब हम जवाब देंगे, तो कल्पना से भी परे होगा। यह कह दिया गया था कि हम सीमा भी पार नहीं करेंगे, कब्जा भी नहीं करेंगे। क्या छः और सात तारीख की रात को पाकिस्तान सो पाया होगा? 22 अप्रैल को कायराना हरकत हुई और 22 मिनट्स में उसका जवाब दे दिया गया। देश में बनी हुई ब्रह्मोस मिसाइल बहुत महत्वपूर्ण रही है।

आदरणीय रक्षा मंत्री जी ने बताया है कि नौ स्थानों पर निशाना लगाया गया, जिसमें 100 से अधिक आतंकवादी मारे गए हैं, लेकिन उन्होंने यह भी बताया कि सेना को साक्ष्य जुटाने पड़े थे। सेना ने वहां अपना ऑपरेशन पूरा करने के बाद साक्ष्य जुटाए थे। क्या यह विपक्ष और देश के उन लोगों के समक्ष सवाल नहीं है? सेना को पता था कि उनसे सवाल पूछे जाएंगे, इसलिए सेना के जवानों को अपनी जान पर खेलकर, ऑपरेशन के बाद साक्ष्य भी जुटाने पडते हैं। यह इस देश की बदनियति है कि यहां पर ऐसे लोग रहते हैं, जो सेना से सवाल करते हैं।

सभापति जी, स्पष्ट रूप से बताया गया कि पाकिस्तान के डीजीएमओ ने भारत के डीजीएमओ से बात की थी। उन्होंने घुटने टेके, तब इस ऑपरेशन को बंद किया गया था। ये पूछते हैं कि आपने ऑपरेशन क्यों बंद किया था। यह भारत की संस्कृति है। पोरस ने सिकंदर को 18 बार हराया था। सिकंदर ने माफी मांगी और पोरस ने उसे माफ कर दिया था। यही हमारे देश की पहचान है।

?नदी कब अपना रास्ता यूं ही मोड़ती है, अपने होने का सुबूत और निशान छोड़ती है,

मर जाती है, मिट जाती है, वह कौम, जो अपनी पहचान छोड़ती है?।

हम जिंदा कौम हैं, इसलिए हमने उनकी माफी को स्वीकार किया। ये सवाल उठाते हैं कि आपने ?ऑपरेशन सिंदूर? नाम क्यों रखा था? ये कह रहे हैं कि हम भावनाओं से खेल रहे हैं।

सभापति जी, मैं आपके माध्यम से इनका ज्ञान बढ़ाना चाहती हूं। सिंदूर मात्र लाल रंग का एक मिश्रण नहीं है। अगर हम सिंदूर को केमिकल रिएक्शन में देखें, तो वह एचजीएस है, जोकि मरक्यूरिक सल्फाइड है। मरक्यूरिक सल्फाइड पारे और सल्फर से बना हुआ मिश्रण होता है, जो इस बात का संकेत देता है कि अगर सावधानी से इस्तेमाल नहीं किया, तो जान चली जाएगी। यह जो हमारा लाल रंग है, पाकिस्तान ने हमारे लाल रंग को समझा नहीं, इसीलिए उन्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ी है। उन्होंने धर्म देखकर छांटा, मारा और हमने कर्म देखकर छांटा और मारा। इस कहते हैं कि ?टिट फॉर टैट?, जो आज भारत की पॉलिसी है।

आदरणीय रक्षा मंत्री जी ने दो बार कहा कि आप सेना के लिए तालियां बजाइए, लेकिन विपक्ष और कांग्रेस पार्टी के सदस्यों ने एक बार भी ताली नहीं बजाई। मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहती हूं कि यह कांग्रेस पार्टी की रणनीति में

बहुत बड़ी चूक हुई है। आज देश इस बात को देख रहा है। राहुल गांधी जी को सोचना चाहिए।

?ज़िंदगी में होते नहीं सभी फैसले सिक्का उछाल के,

ये ज़िंदा कौम का मामला है, जरा दिल संभाल के?।

गौरव गोगोई जी कहते हैं कि आप हिन्दू-मुस्लिम मत करिए। जब हम कहते हैं कि आतंकवादी कौन हैं, तब गोगोई जी कहते हैं कि वे मुस्लिम हैं। ये कैसे आतंकवादियों को मुस्लिम कहते हैं? हम यह सवाल तो उनसे पूछना चाहते हैं, जो हमसे सवाल उठाते हैं। आप पूछ रहे थे कि हम पीओके कब लेंगे। हम पूछ रहे हैं कि आपने पीओके दिया ही क्यों था? आज आपको पीओके लेने की चिंता है, तो आपके पूर्वजों ने वह दिया ही क्यों था? आपने तो जम्मू-कश्मीर को भी भारत से अलग कर दिया था। यह तो आदरणीय प्रधानमंत्री जी का जज्बा और साहस है कि वर्ष 2019 के अगस्त माह में उन्होंने अनुच्छेद 370 और 35ए को समाप्त करके, भारत के संविधान के नासूर को निकाला और बाबा साहेब की आत्मा को शांति देने का काम किया है।

24.00 hrs

?पल भर की गलती का सदियां भरती हैं हर्जाना?। इस देश ने लंबा हर्जाना भरा है। पंजाब का आतंकवाद भी आपकी देन था। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : माननीय सदस्या, आप एक मिनट के लिए रुकिए।

माननीय सदस्यगण, मेरे पास शेष स्पीकर्स की लिस्ट है। यदि सभा की सहमति है, तो शेष स्पीकर्स का वक्तव्य पूरा होने तक सदन का समय बढ़ाया जाए। अभी छ: वक्ता शेष हैं।

अनेक माननीय सदस्य : जी, हां।

माननीय सभापति : आप सबके कोऑपरेशन के लिए धन्यवाद।

? (व्यवधान)

श्रीमती कमलजीत सहरावत : सभापति महोदय, इंटरनेशनल फंडिंग कैसे हुई, इसको लेकर सवाल उठाए गए। लेकिन, हमारे आदरणीय विदेश मंत्री जी ने बताया कि किस तरह से इनके बोये हुए कांटों को आज भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को काटना पड़ रहा है। श्री राहुल गांधी जी चाईना के एबेंसेडर को बुलाकर उनसे सलाह लेते हैं।

आदरणीय सभापति जी, यह कितने शर्म की बात है। ऐसे ही लोगों के लिए कहा गया है ?

सांप को भी अब आदमी कहना ही पड़ेगा,

आज के दौर में यह सब सहना ही पड़ेगा,

बिल बनाने की तो इनको जरूरत ही नहीं,

आस्तीनों के सांपों को आस्तीनों में ही सहना पड़ेगा।

श्री कल्याण बनर्जी जी ने कहा कि 99 पर विजयी हो गए। अरे दादा, सामने वाले मैदान छोड़कर भाग गए, तो हम क्या करते? अकेले कैसे खेलते? आप चार लोग बाहर से आने वालों पर सवाल करते हैं। जब मेडिकल कॉलेज की हमारी बहन के साथ गलत घटना होती है, तो आप अपने स्टेट के अंदर अपराधियों को ढूंढ़कर एफआईआर नहीं करवा पाते हैं।

प्रधानमंत्री जी का धन्यवाद। वर्ष 2008 के मुंबई ब्लास्ट के मास्टरमाइंड तहव्वुर राणा को आप भारत लेकर आए। हमने देखा कि किस तरह से टीवी पर आतंकवाद के जन्मदाता अल्लाह से मौत मांग रहे थे। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : अब आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

? (व्यवधान)

श्रीमती कमलजीत सहरावत : आदरणीय सभापति महोदय, मेरा समय मेरी पार्टी की तरफ से है। मुझे अपनी बात पूरी कर लेने दीजिए, यह मेरा आपसे निवेदन है। यह मेरी भावना भी है। मैं एक महिला हूं, जिन महिलाओं के साथ यह घटना हुई, इसलिए, मैं अपनी बात रखना चाहती हूं।

श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा जी ने यहां पर एक बात रखी कि रक्षा बजट में कटौती हुई है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2018-19 में यह 2.4 प्रतिशत था और 2024-25 में यह 1.89 प्रतिशत हो गया। लेकिन, उन्हें पता नहीं चला कि भारत की इकोनॉमी बढ़ गई है। जब यह 2.4 प्रतिशत था, तब रक्षा पर खर्च की जाने वाली राशि 2.95 लाख करोड़ रुपए थी। जब यह 1.89 प्रतिशत हो गया, तो राशि बढ़कर 6 लाख करोड़ रुपए हो गई। ये गलत आंकड़े पेश करते हैं। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : माननीय सदस्या, अब आप अपनी बात समाप्त कीजिए। आपका समय समाप्त हो गया है।

? (व्यवधान)

माननीय सभापति : श्री गुरजीत सिंह औजला जी।

? (व्यवधान)

श्रीमती कमलजीत सहरावत : आदरणीय सभापति महोदय, मुझे सिर्फ दो मिनट और दे दीजिए। ? (व्यवधान) मैं अपनी बात समाप्त करती हूं। प्रधानमंत्री जी ने पीएम बनते ही कहा था कि न आंख झुकाकर बात करेंगे, न आंख उठाकर बात करेंगे, हम आंख मिलाकर बात करेंगे। ?ऑपरेशन सिंदूर? ने इस बात को तय किया है। ? (व्यवधान) मैं अपनी आखिरी

बात कहकर अपनी वाणी को विराम दूंगी कि इस देश का दुर्भाग्य है कि हमें ?ऑपरेशन सिंदूर? पॉज़ करना पड़ा, यह स्टॉप नहीं है, क्योंकि आप सबकुछ बदल सकते हैं, लेकिन पड़ोसी नहीं बदल सकते हैं। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : श्री गुरजीत सिंह औजला जी ? आप स्टार्ट कीजिए।

? (व्यवधान)

श्री गुरजीत सिंह औजला (अमृतसर) : सभापति जी, थैंक-यू। आपने मुझे बोलने का मौका दिया है। आज बहुत महत्वपूर्ण विषय ?ऑपरेशन सिंदूर? पर चर्चा हो रही है। 22 अप्रैल को जब पहलगाम में टेरिरिस्ट्स ने अटैक किया, तो उसमें हमारे 26 नागरिक शहीद हो गए, उनका कत्ल कर दिया गया। उस समय पूरे देश में शोक की लहर छा गई थी और पूरा देश चिंता में था।

सभापति महोदय, उस आतंकवादी हमले की मैं निंदा भी करता हूं और शहीद हुए लोगों को श्रद्धांजलि देता हूं। उस आतंकवादी हमले के बाद देश इस सदमे में था कि आतंकवादी आए कैसे, आतंकवादी घुसे कैसे, यह हमला कैसे हुआ? इससे पहले बालाकोट अटैक हुआ था। इस सबकी जिम्मेदारी गृह मंत्री पर आती है। लेकिन, गृह मंत्री जी ने कोई जवाब नहीं दिया कि आतंकवादी कैसे आए, कहां गए, 100 दिनों के बाद भी आतंकवादी नहीं मिले।

सर, आतंकवादी हमले के समय पीएम साहब सऊदी अरब में थे। जब बड़ा दुख होता है, तो घर के सबसे बड़े मुखिया का फ़र्ज़ बनता है कि परिवार के साथ बैठकर दुख कम करे, लेकिन यह आतंकवादी हमले में भी राजनीति खोजते हैं। प्राइम मिनिस्टर साहब 24 अप्रैल को बिहार में जाकर पंचायती राज दिवस मना रहे हैं। उन्होंने यह नहीं सोचा कि यह दिवस तो हर साल आएगा, लेकिन इतना बड़ा आतंकी हमला हुआ है, तो क्यों न उनके साथ बैठा जाए। ऐसा नहीं हुआ। उसके बाद पूरा देश, हमारे लीडर ऑफ अपोज़ीशन राहुल गांधी जी, विरोधी पार्टियां देश के साथ खड़ी हुईं और कहा कि आप जो भी करेंगे, हम देश के साथ खड़े हैं। हमारी फौज ने 7 मई को पाकिस्तान के आतंकवादी ठिकानों के ऊपर हमला किया गया। मैं अपनी आर्मी को सैल्यूट करता हूं। आर्मी ने बहुत महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाते हुए उन ठिकानों को तबाह किया। जब लड़ाई होती है, तो कुछ न कुछ नुकसान होता है। इसकी बहुत चर्चा हुई कि यह नुकसान हो गया, वह नुकसान हो गया, लेकिन उस नुकसान के बावजूद हमारी फौज ने अच्छा काम किया। क्या हम यह मान सकते हैं कि कोई चूक हुई और राफेल गिरने की बात आई। इसे हम नहीं मानते हैं और हमारी फौज भी नहीं मानती है। मेरी प्रधानमंत्री जी और डिफ़ेंस मिनिस्टर राजनाथ सिंह जी से गुज़ारिश है कि आप 35 राफ़ेल की परेड कराकर पूरे विश्व को दिखा दीजिए कि ये देश को भ्रम में डाल रहे हैं। डोनाल्ड ट्रंप, जो आपके मित्र हैं, वह भी कह रहे हैं कि पांच विमान गिरे हैं। आप उनको भी दिखा दीजिए कि हमारा कोई विमान नहीं गिरा है और 35 के 35 राफ़ेल हमारे पास हैं।

सर, जंग चल रही थी और जंग का माहौल था। मैं बॉर्डर शहर अमृतसर से आता हूं। वहां से ड्रोन अटैक हो रहे थे, मिसाइल अटैक भी हुआ था। मैंने वहां पहुंचकर भी देखा। हमारे फौज पूरी ताकत से लगी हुई थी। आपके कहने के

मुताबिक पाकिस्तान घुटने टेक चुका था, लेकिन अचानक 10 मई को ट्रंप जी सीज़फ़ायर का ट्वीट करते हैं और कहते हैं कि सीज़फ़ायर हो गया तथा हम भी कहते हैं कि सीज़फ़ायर हो गया। सीज़फ़ायर कैसे हो गया? पूरा देश खड़ा है और इसके बारे में पूरा देश जानना चाहता है। कोई भी लड़ाई हो, उसके बाद टॉक होती है और कोई एग्रीमेंट लिखा जाता है, लेकिन इसमें कोई एग्रीमेंट नहीं हुआ। अब तक जितने भी युद्ध हुए हैं, चाहे अक्टूबर, 1947 से 1949 तक युद्ध चला, 1962 का युद्ध चीन के साथ हुआ, अगस्त से सितंबर, 1965 का युद्ध पाकिस्तान के साथ हुआ, उस वक्त भी ताशकंद एग्रीमेंट हुआ। जब 1971 में इंदिरा गांधी जी ने पाकिस्तान के दो टुकड़े करके बांग्लादेश बनाया, उस वक्त भी शिमला एग्रीमेंट हुआ था। यह पहली जंग है, जो तीन दिन में खत्म हुई, लेकिन उसका कोई एग्रीमेंट नहीं है और प्राइम मिनस्टिर ने कोई जवाब नहीं दिया। यह जंग डोनाल्ड ट्रंप, जो इनके मित्र हैं और हाउडी मोदी करते हैं, उनके कहने से हो रहा है। इधर इनके साथी लोग कहते हैं कि यह नहीं हुआ है, लेकिन उनको कुछ कहने के लिए तैयार नहीं हैं, क्योंकि वहाँ पर बिज़नेस एग्रीमेंट है।

मैं कहता हूं कि पाकिस्तान ने भी रोका। जब पाकिस्तान का युद्ध हुआ था, यह भी मानेंगे कि भुज में 5 लाख एकड़ में अदानी का सोलर प्लांट लग रहा था। जब वहां अटैक करने की बात हुई, तो उसी समय सीज़फ़ायर हो गया। ये लोग उसके ऊपर चर्चा नहीं करेंगे। मैं कहना चाहता हूं कि हमें अपनी आर्मी पर गर्व है। आर्मी के सीडीएस ने बोला कि हमारे साथ चीन लड़ रहा था, लेकिन चीन को लाल आंखें दिखाने के बजाय चीन के साथ व्यापार करते हैं। चीन पैसा कमाता है, पाकिस्तान को देता है और पाकिस्तान आतंकवाद फैलाता है। आतंकवाद से सबसे ज्यादा पीड़ित हम लोग हैं, पंजाब पीड़ित है। तीन लाख लोग आतंकवाद में मारे गए हैं। वर्ष 1947 के बाद जितने पंजाबी, सिख भाई, जितने भी भारतीय वहां रहे, पाकिस्तान ने सारी माइनॉरिटी को खत्म कर दिया। इसके बाद भी वह नहीं रुका। उसने आतंकवाद पूरे पंजाब में फैलाया। एक लाख से ज्यादा लोग पंजाब में मारे गए, चाहे वह आतंकवादी पंजाबी थे, चाहे सिविलियन मरे, चाहे आर्मी वाले मरे, चाहे पुलिस के लोग मरे, वे सभी पंजाब के थे। पाकिस्तान वहां भी नहीं रुका। पंजाब के दो लाख लोग नशे में मारे गए और ड्रग्स से मारे गए।

मैं हमेशा कहता हूं कि आप टेररिज्म की बात करते हो, आप ड्रग को एज ए टेररिज्म लीजिए। यह पूरे बॉर्डर स्टेट का मसला है। वहां दो लाख लोग मरेंगे। मेरी रिक्वैस्ट है कि अभी भी पाकिस्तान नहीं रुक रहा है। अभी पाकिस्तान द्वारा 18 हैंड ग्रेनेड अमृतसर के पुलिस स्टेशन पर फेंके गए हैं। मैं कहना चाहता हूं कि पाकिस्तान को कैसे सबक सिखाया जाएगा? ये कहते हैं कि हमने उसको घुटने पर ला दिया है। मैं चार-पांच वाक्य कहना चाहता हूं। चाहे उरी का हमला हो, पठानकोट का हमला हो, पुलवामा का अटैक हो या पहलगाम में जो अटैक हुआ है, मैं कहना चाहता हूं कि इन्होंने सिर्फ सर्जिकल स्ट्राइक की है। जब पाकिस्तान घुटने पर था तो इनकी क्या मजबूरी थी कि पाकिस्तान को इन्होंने सही तरीके से जवाब नहीं दिया? क्या बिजनेस इतना जरूरी हो गया है कि पूरे देश के गौरव का मामला हो और ये लोग उसको जवाब न दे? इन्होंने मिलिट्री का पोलिटिसाइज किया है, राजनीतिकरण किया है। यह पहली बार है कि मिलिट्री के अफसर, एनआईए के ऊपर सोशल मीडिया में आकर बयान दे रहे हैं। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री गुरजीत सिंह औजला : सर, मैं अमृतसर में था। मैं तीन दिन लगातार अमृतसर में था। वहां अटैक हुए, लेकिन मिलिट्री के अफसर को कहने की क्या जरूरत थी, उससे क्यों बयान दिलाया गया कि हरमिंदर साहब के ऊपर अटैक हो रहा था। उसमें से ये क्या राजनीति खोजना चाहते हैं?

माननीय सभापति : आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री गुरजीत सिंह औजला : सर, मैं कहता हूं कि ये राजनीति माफीवीर की कर रहे हैं और हम राजनीति शूरवीर की करते हैं। जिस परिवार ने दो प्राइम मिनिस्टर खोये ? श्री राजीव गांधी जी, श्रीमती इंदिरा गांधी जी और जिस कांग्रेस पार्टी ने पंजाब में सीएम खोया, अब उसको आपके सर्टिफिकेट की जरूरत है? आप नेहरू जी के ऊपर चले जाते हो, आप कांग्रेस के पीछे चले जाते हो। ... चाइना का 44 इंच का सीना होगा, मेरे ख्याल से जनरल मुनीर का ज्यादा से ज्यादा 45 इंच का सीना होगा। ... आप उनके ऊपर अटैक क्यों नहीं करते हैं? मेरी आपसे यह रिक्वैस्ट है। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सौमित्र खान जी।

? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप 30 सैकेंड में अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री गुरजीत सिंह औजला : सर, मैं शॉर्ट में अपनी बात कहना चाहता हूं। देखिये, आप मिलिट्री को, आर्मी को समय पर हथियार नहीं देंगे, आप समय पर उसकी खरीद नहीं करेंगे। ? (व्यवधान) हमारे चीफ एयर मार्शल एपी सिंह जी ने बोला कि हमें तीन-तीन, चार-चार साल ? (व्यवधान) सर, मेरा माइक बंद न करायें। हमें तीन-तीन, चार-चार साल उसे बियर करने में लग जाते हैं। क्योंकि जब देश बचेगा, मिलिट्री स्ट्राँग होगी तो आप भी बचेंगे और हम भी बचेंगे।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सौमित्र खान जी।

? (व्यवधान)

श्री गुरजीत सिंह औजला : सर, मैं एक मिनट में अपनी बात कनक्लूड कर रहा हूं। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : श्री सौमित्र खान जी, आप अपनी बात शुरू कीजिए।

SHRI SAUMITRA KHAN (BISHNUPUR): Thank you, Chairperson Sir. Today, Operation Sindoor stands as a symbol, an ideal, and a resolution. The resolution was undertaken by our country's army, and its name was announced by the Prime Minister, Narendra Modi. The incident that occurred in Pahalgam on April 22 is unprecedented, not only in India but also in the entire world. People were asked about their religion. Women became widows solely on the basis of religion. This is an indication of depravity and a condemnable incident. Today, under the orders of the Prime Minister and the leadership of our army, our forces entered Pakistan at 1:20am on May 7 and destroyed terrorist hideouts?an unprecedented action. Today, we can assert that with Prime Minister Narendra Modi in office, Pakistan-occupied Kashmir (POK) should be reclaimed. We can say that Article 370 has been abrogated. On the other hand, Congress effectively gave away Pakistan-occupied Kashmir. Today, it is deeply saddening and painful that two women from West Bengal have lost their husbands and become widows in the Pahalgam massacre. Today, Kalyanda spoke at length about four terrorists who remained at large following the Pahalgam incident. I want to inform him that two terrorists have been apprehended, and the remaining two militants have been killed in the operation. Today, I can definitely say that India is a country where sovereignty still exists because of the unity of our Indians. We are definitely together and will continue to fight together. Unfortunately, some opposition leaders demanded proof of these actions, which is truly shameful. I just want to say that today, Pakistani people are being smuggled into West Bengal. Why is this happening? If we remain united, we can undoubtedly advance our country. About this Operation Sindoor, I want to say that more than 100 terrorists have been killed by our country's army and the air force. They have entered the militant camps and dismantled the adversary. I must state that Kalyanda never speaks for the country; instead, his party, the All India Trinamool Congress, discusses 'Azad Kashmir'. How did this narrative surrounding 'Azad Kashmir' arise? This is, in fact, Pakistan-occupied Kashmir, which Congress handed over to Pakistan. Finally, I would like to thank you for allowing me to speak. As a Bengali, I have only one request, that a regiment be created in the name of Netaji Subhas Chandra Bose, where we Bengalis can be united. Thank you.

श्री मनोज कुमार (सासाराम) : सभापति महोदय, आपने मुझे अति महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का मौका दिया है, इसके लिए मैं आपको बहुत धन्यवाद देता हूं।

सभापति महोदय, मैं सबसे पहले उन लोगों के प्रति संवेदना और शोक व्यक्त करता हूं, जो पहलगाम और ?ऑपरेशन सिंदूर? में शहीद हुए, जिन्होंने अपनी जान को न्यौछावर किया, मैं ईश्वर से उनके परिवार के लिए प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उनको ताकत दे, ताकि वे दु:ख को सहें और इस मुसीबत की घड़ी से निकलें।

मैं कांग्रेस पार्टी और आदरणीय राहुल गांधी जी को भी धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे इस विषय पर बोलने का मौका दिया है। हमारा मुख्य सवाल यह है कि इंटेलिजेंस फेल्योर हुआ। देश के एक अरब, 44 करोड़ लोग सवाल पूछ रहे हैं। हम लोग जनता के द्वारा चुन कर यहां आते हैं। हम क्षेत्र में रहते हैं, जमीन पर रहते हैं और जब हम गांव-गांव जाते हैं, तो जनता हमसे सवाल पूछती है। हम उन सवालों को सदन में रखते हैं।

महोदय, मैं देख सकता हूं कि सेना के कुछ ऑफिसर्स भी यहां बैठे हुए हैं। आप सबको मालूम होगा कि जब सेना यह कहते हुए आगे बढ़ रही थी कि

हाथों में तिरंगा थाम लिया, जय हिंद का नारा गूंज उठा।

पीछे मुड़ कर कभी नहीं देखा, मां जब भी तेरा नाम लिया।

एक अरब, 44 करोड़ जनता 26 लोगों के बारे में पूछ रही है। एक आदरणीय मंत्री महोदय बता रहे थे और कुछ माननीय सांसद महोदय बता रहे थे कि लोगों ने उनको धर्म पूछ कर मारा। लोगों के पैंट उतरवाए गए। महोदय, मैं आपके माध्यम से इस सरकार से पूछना चाहता हूं कि 40-50 मिनट तक इन दरिंदों ने दहशत फैलायी और हमारे 26 लोगों को मारा। वहां पर उस घड़ी हमारी बहनों का सिंदूर उजड़ रहा था, सिंदूर खत्म हो रहा था, वे उनके पति को उनके सामने मार रहे थे, तो बहुत सारी पत्नियों ने कहा कि हमारे पति को मार रहे हो तो हमें भी मार दो, हमें भी समाप्त कर दो। लेकिन इन आतंकियों, दहशतगर्दों ने यह कह कर उन्हें छोड़ा कि हम तुम्हें इसलिए छोड़ रहे हैं कि जाओ, अपने देश को बताओ, अपने प्रधान मंत्री को बताओ। उनकी क्या औकात थी, क्या ताकत थी, यह पूरे भारत देश की जनता पूछ रही है? इसका जवाब कब मिलेगा?

महोदय, हम सदन में पहली बार चुन कर आए हैं। आदरणीय रक्षा मंत्री जी ने भी अपनी बात रखी। देश जानना चाह रहा था कि आखिर जिन आतंकवादियों ने 26 लोगों को मारा, 26 लोगों को खत्म किया, क्या हमने उनको मारा, क्या हमने उनको समाप्त कर दिया? आपने बिहार की धरती पर कहा था, बिहार की 14 करोड़ की जनसंख्या से वायदा किया था, आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने मधुबनी की धरती से घोषणा की थी कि मैं आतंकवादियों को मिट्टी में मिला दूंगा। आज बिहार की जनता और भारत के लोग पूछ रहे हैं कि उन पांच लोगों का क्या हुआ? हमारी स्थिति मजबूत थी, हमारी सेना आगे बढ़ रही थी। इस बार हम आतंकवादियों को मिटाने वाले थे तो कौन सा पहाड़ टूट गया, क्या हो गया, क्यों ?ऑपरेशन सिंदूर? रुक गया और हमारे सैनिक वापस लौट गए?

महोदय, आज बार-बार लोगों ने कहा कि ?ऑपरेशन सिंदूर? पर चर्चा कराइए, जब बात इंटेलिजेंस फेल्योर की होती है तो कांग्रेस का नाम लेते हैं, जब आतंकवादी की बात करते हैं तो कांग्रेस का नाम लेते हैं। जब हम बात आतंकवादियों को मिटाने की करते हैं तो आप कांग्रेस को कोसते हैं। कांग्रेस पार्टी और आदरणीय राहुल गांधी जी ने हर बार मीडिया के सामने भी बोला और विपक्षी पार्टी के जितने भी माननीय नेता हैं, जितने भी सांसद थे, हम सभी लोगों ने सरकार को सपोर्ट किया। हम लोगों से जहां भी पूछा गया, हम लोगों ने कहा कि हम सरकार के साथ हैं और सरकार को मजबूती से बढ़ना चाहिए। हम सेना को सैल्यूट करते हैं और सरकार को आगे बढ़कर इस बार आतंकवादियों को खत्म करना चाहिए। लेकिन क्या हुआ? सात लोगों की एक अलग कमेटी बनी, जिसे प्रदेश में भेजा गया।

महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से पूछना चाहता हूं, जो प्रदेश में अलग-अलग कमेटी गई क्या कोई भी वहां का रिस्पान्सिबल व्यक्ति कमेटी से मिला? कमेटी की क्या रिपोर्ट है, हम लोग उस रिपोर्ट के बारे में जानना चाहते हैं। देश जानना चाहता है, जो लोग विदेश में गए थे, प्रदेश में गए थे।

भारत में एक और योजना चलायी गयी, खासतौर पर बिहार में कुछ लोग ने डिबिया में सिंदूर लेकर गांव-गांव गये, घर-घर गये और महिलाओं को कहा कि आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने सिंदूर भेजा है। हमने ?ऑपरेशन सिंदूर? में आतंकवादियों को मिटा दिया है इसलिए आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने बहन और माताओं के लिए सिंदूर भेजा है। सभी माताओं और बहनों ने घर से बाहर निकल कर कहा कि हमारा पति हमारे लिए सिंदूर देने के लायक है, तुम कौन हो हमें सिंदूर देने वाले।

उसके बाद हमने देखा और सुना तो पता चला कि इस योजना के बारे में किसी को पता नहीं है। ऐसे-ऐसे हुआ। आप सभी को मालूम होगा कि ट्रम्प साहब ने 26 बार सीज फायर के बारे में कहा कि हमने मध्यस्थता करायी, हमने युद्ध विराम कराया। देश यह भी पूछना चाहता है कि क्या भारत को ट्रम्प चलाएंगे?

आप कांग्रेस पार्टी का मॉडल पूछ रहे हैं, बहुत सारे लोगों ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने ये किया, कांग्रेस पार्टी ने वो किया। युद्ध के बारे में क्या किया, सभी को मालूम है, पूरी दुनिया को 1971 की कहानी मालूम है कि किस प्रकार से 90 हजार पाकिस्तानी सैनिकों ने घुटना टेका। हमारे सैनिकों के पास आकर कहा कि हम आत्मसमर्पण करते हैं, अब हमारे पास बल नहीं है, अब हमारे पास युद्ध लड़ने की ताकत नहीं है। वह मॉडल हमने पेश किया, कांग्रेस पार्टी ने पेश किया। आप हमारे ऊपर हमेशा सवाल उठाते हैं।

श्री आनंद भदौरिया (धौरहरा) : सभापति महोदय, इधर उधर की बात न बात कर, ये बता कि पहलगाम क्यों हुआ? मुझे दहशतगर्दों से रंज है पर तेरी रहबरी पर भी सवाल है। मैं इंडिया गठबंधन के नेता माननीय अखिलेश जी, राहुल गांधी और समेत विपक्ष के सभी नेताओं को बधाई दूंगा कि उन्होंने इस फैसला कुंज जंग में सरकार के साथ चट्टान के साथ खड़ा रहकर अपना समर्थन देने का काम किया है।

मैं अपने देश की बहादुर फौज और अपने वीर सैनिकों का अभिनंदन करना चाहूंगा जिन्होंने दुश्मन देश की छाती पर चढ़कर आतंकी ठिकानों को तहस-नहस करने का काम किया है। साथ ही साथ पहलगाम में हुए खुफिया तंत्र की विफलता पर, विदेश नीति की विफलता पर तथा डोनाल्ड ट्रम्प की बेलगाम बयानबाजी पर चुप्पी साधने पर भारतीय जनता पार्टी सरकार की कड़ी भर्त्सना भी करना चाहूंगा। पहलगाम में जो दुखद घटना हुई, वह देश के माथे पर कलंक का टीका है। देश जानना चाहता है कि जिन्होंने हमारी बहनों के माथे का सिंदूर उजाड़ा और कहा कि मोदी जी को जाकर बता देना, उन कायरों का क्या हुआ? उनकी चुनौती को स्वीकार करके आर-पार की लड़ाई लड़नी चाहिए थी। रक्षा मंत्री जी फिर चाहे पैंसिल टूटती या पैन टूटता, कहीं यह समुद्र सभी को बहा न ले जाए।

?ये खेल बंद करो कश्तियां बदलने का,

रात नाम नहीं लेती ढलने का,

यही तो वक्त था सूरज तेरे निकलने का?

आपने ऑपरेशन से पहले विपक्षी नेताओं से बात की थी तो फिर सीज फायर से पहले विपक्ष को विश्वास में क्यों नहीं लिया? आगाज अच्छा था लेकिन अंजाम समर्पण वाला था। कोई कह रहा था और लम्बी-लम्बी फेंक रहा था कि एक फोन पर रूस और यूक्रेन का युद्ध विराम हो गया लेकिन हमें क्या पता था कि सात समुद्र पार हमसे भी लम्बी-लम्बी फेंकने वाला बैठा है जो यह कह रहा है कि हमने एक फोन करके भारत और पाक के युद्ध को रुकवाने का काम कर दिया। रक्षा मंत्री जी कह रहे थे कि क्या शेर और मेंढक की लड़ाई होती है? यदि मेंढक से लड़ने में पसीना आ गया तो सोचिए जो पीछे से लड़ रहे थे, उनसे यदि सामने से लड़ना होगा तो क्या होगा? मैं इस मौके पर श्रद्धेय नेता आदरणीय मुलायम सिंह यादव जी के उन शब्दों को याद करता हूं कि यदि युद्ध होगा तो दुश्मन की जमीन पर होगा। यदि इस लाइन से भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने प्रेरणा ली होती, तो शायद इतनी फजीहत न हुई होती।

सभापति जी, सरकार की विदेश नीति घोषणाओं और भाषणों तक सीमित रह गई है। पाकिस्तान और चीन की बढ़ती नजदीकी को आपने नज़रअंदाज किया। यह समय है कि सरकार आत्म मंथन करे। विपक्ष कोई दुश्मन नहीं है बल्कि लोकतंत्र का अभिन्न स्तम्भ है। हम इस सरकार से जवाब चाहते हैं कि क्या खुफिया एजेंसियों की जवाबदेही तय की गई? क्या डोनाल्ड ट्रम्प की टिप्पणी पर कोई अधिकारिक विरोध दर्ज किया गया? क्या भविष्य में इस तरह के हमलों से बचने के लिए कोई नया रोड मैप तैयार किया गया है? देश को भावनात्मक भाषण नहीं बल्कि ठोस रणनीति चाहिए। राष्ट्रवाद का दिखावा नहीं, राष्ट्रीय सुरक्षा का ठोस ढांचा चाहिए।

आपने बोलने का समय दिया, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

*m71**श्री अमरिंदर सिंह राजा वारिंग (लुधियाना) :** सभापति जी, आपने मुझे गंभीर चर्चा पर अपनी बात रखने का समय दिया, इसके लिए आपका आभारी हूं। मैं सबसे पहले अपनी तरफ से उन भाइयों को श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं,

जिन्होंने पहलगाम में अपनी जान दी। जिन्होंने इस देश के लिए अपने प्राण दिए, मैं उन लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं। मैं आशा करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि दोबारा ऐसा कभी न हो कि हमारे देश में किसी व्यक्ति को जान देनी पड़े। मैं अपने जवानों के लिए भी कुछ शब्द कहना चाहता हूं। उन जवानों के लिए जिन्होंने इस देश की रक्षा और एकता-अखंडता के लिए हमेशा बार्डर पर तैनात होकर हमारे देश की रक्षा करने का काम किया है। मैं उनके लिए दो शब्द लिखे हैं।

?भारत मां की शान के लिए मिट जाते हैं हम।

तिरंगे में लिपट, ताबूतों में बंद हो, कंधों पर आते हैं॥

गांव, शहर, गलियों में, फूलों की बारिश में नहाते हुए।

यूं ही हंसते-हंसते भारत मां पर मिट जाते हैं हम।।?

महोदय, हमें अपनी सेना पर कोई शक नहीं है। हमें गर्व है कि हमारे पास इतनी अच्छी और मजबूत सेना है, जो दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब दे सकती है। आज मैं तमाम वक्ताओं को सुन रहा था। ऐसा लग रहा था कि पूरे के पूरे विपक्ष को सत्तापक्ष इस नजरिए से देखकर बात कर रहा था कि हमने कहीं न कहीं ?ऑपरेशन सिंदूर? का विरोध किया है। जब देश की बात आई, जब हमें बुलाया गया, तो पूरा विपक्ष, चाहे कोई व्यक्ति हो, इस देश की धरती पर पैदा होने वाला हर व्यक्ति पूरे जोश से देश की सरकार के साथ खड़ा हुआ, देश के आदरणीय प्रधान मंत्री जी के साथ खड़ा हुआ और कहा कि इस वक्त न कोई सवाल है, न कोई जवाब है, हम आपके साथ हैं। हुआ क्या? पहलगाम, पुलवामा हमला क्यों होता है? इसकी क्या वजह है? इसका गुनहगार कौन है? क्या यह इंटेलिजेंस फेल्योर नहीं है?

महोदय, आदरणीय गृह मंत्री अमित शाह जी 8 अप्रैल, 2025 को जम्मू-कश्मीर जाते हैं और सिक्योरिटी के बारे में जांच-पड़ताल करते हैं। या तो इंटेलीजेंस ने कोई इत्तला नहीं दी या फिर उनके पास सूचना नहीं थी, लेकिन इसकी जिम्मेदारी तो किसी न किसी को लेनी होगी। कौन जिम्मेदारी लेगा, कौन माफी मांगेगा? पुलवामा हमला, पहलगाम हमला हुआ, इनकी जिम्मेदारी लेनी होगी। अगर मैं उनकी जगह पर होता, तो तुरंत माफी मांगते हुए गृह मंत्री होने के नाते इस्तीफा दे देता। यह इंटेलिजेंस फेल्योर है। आपकी वजह से निहत्थे 25-26 लोगों की जान गई है। अगर आप 11 साल से इस देश की इंटेलीजेंस नहीं संभाल सकते, तो देश की 140 करोड़ आबादी वाले देश को संभालने की आपमें क्षमता नहीं है।

महोदय, मेरे और भी कई सवाल हैं। पहला सवाल, आपने 7 मई को डायरेक्शन दिया। आपने कहा कि हम पाकिस्तान के आतंकवादी ठिकानों पर हमला करेंगे। आप बार-बार यह क्यों पूछते हैं कि पेन टूटा और पेंसिल टूटी? आप यह पूछें कि हमारा ऑपरेशन सफल हुआ या नहीं हुआ? हमारा परिणाम कैसा था? हमें शक है। वास्तव में क्या हुआ, यह

मैं आपसे और सरकार से जानना चाहता हूं। जब 7 मई को पाकिस्तान से विदेश मंत्री जी ने यह कह दिया कि हम आपके आतंकवादी ठिकानों पर हमला करने जा रहे हैं। एक तरफ आप कहते हैं कि पाकिस्तान आतंकवादियों की नर्सरी है। आज ये शब्द रक्षा मंत्री जी ने कहे। इसके बावजूद पाकिस्तान, जो दुश्मनों को पाल रहा है, उनको आप इत्तला देते हैं। पाकिस्तान ने तो नहीं इत्तला दी कि हम पुलवामा अटैक, पहलगाम अटैक करने वाले हैं। उन्होंने तो नहीं बताया, लेकिन आपने उनको पहले ही बता दिया। यह कहकर आप क्या समझाना चाहते हैं? आज देश के रक्षा मंत्री श्री राजनाथ मंत्री जी ने कहा कि हमने 100 से ज्यादा आतंकवादियों को मारा है, गिनती और बढ़ी है, लेकिन 100 लोग मरे हैं।

आपको लगता है कि पाकिस्तान ने उन आतंकवादी संगठनों को बताया नहीं होगा कि आज हमला होने वाला है, आप चले जाइए। उन्होंने उन्हें बताया होगा। उन्होंने उन्हें जरूर बताया होगा। आपने आगे क्या किया, यहीं तक नहीं, आपने अपनी सेना को, अपनी बहादुर सेना को यह कहा, जब 7 मई एक से डेढ बजे, जब 22 मिनट का वह ऑपरेशन चला तो आपने अपनी सेना को यह कहा कि आपको केवल आतंकवादी संगठनों पर हमला करना है। आप कहीं सिविलियन पर और कहीं भी पाकिस्तान की आर्मी के मुख्यालय पर किसी प्रकार का कोई हमला नहीं करेंगे। इसी की वजह से हमारे पाँच एयरक्राफ्ट गिरे। आपने सेना को, देश को दिया, लेकिन आपने हमारी सेना के हाथ-पाँव बाँधकर एयरक्राफ्ट पर बिठाया। वे मजबूर थे, वे लाचार थे, जब पाकिस्तान रिटेलिएट कर रहा था, हम क्या करें, इसलिए उसका नतीजा निकला।? (व्यवधान)

साहब, अभी तो दो मिनट हुए हैं। मेरे दस मिनट हैं। आप बेल क्यों बजा रहे हैं? ? (व्यवधान) उसका यह नतीजा हुआ, मैं पंजाब से आता हूँ, पंजाब में भिसियाना एयर फोर्स स्टेशन के पास आपका एक लड़ाकू विमान, जिसका नाम राफेल है, मैं उसकी फोटो लेकर आया हूँ, वहाँ उसकी टेल गिरी। मैं वहाँ पर गया, उसके ऊपर बीएस001 लिखा था। यह बीएस001 आपका राफेल एयरक्राफ्ट पहले दिन नीचे गिरा। इसके गिरने पर एक व्यक्ति की मौत हुई और 9 लोग जख्मी हुए। यह मीडिया में आया, एसएमओ ने बताया और आपके आदरणीय एयर मार्शल भारती जी, उन्होंने भी यह माना, लेकिन उन्होंने कहा कि यह अनआइडेंटिफाइड एयरक्राफ्ट है। एक एयरक्राफ्ट गिरता है, आपने उसको अनआइडेंटिफाइड एयरक्राफ्ट का नाम देकर देश की जनता को मूर्ख बनाने का काम किया और यहीं तक नहीं,? (व्यवधान)

माननीय सभापति : अब आप समाप्त कीजिए।

श्री अमरिंदर सिंह राजा वारिंग :अभी समाप्त कैसे कर दें, दिलीप जी साहब आप हमसे नाराज लगते हैं। मेरा समय 10 मिनट है। आपको आदरणीय मंत्री साहब ने कह दिया कि इनको बिठाइए।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : सुनिए जी, अब आप अपनी बात समाप्त कर दीजिए। आप अंतिम वाक्य बोल दीजिए।

? (व्यवधान)

श्री अमरिंदर सिंह राजा वारिंग : सर, अभी तीन मिनट हुए हैं। डसॉल्ट कंपनी के सीईओ, राफेल जहाँ बनता है, उन्होंने यह माना है कि एक टेक्निकल वजह के कारण एक राफेल गिरा है। आपने वह भी नहीं बताया कि टेक्निकल वजह क्या थी?? (व्यवधान)

माननीय सभापति : श्रीमती लवली आनंद जी। आपके 10 मिनट हो गए हैं।

? (व्यवधान)

श्री अमरिंदर सिंह राजा वारिंग : सर, यह बहुत ज्यादा है। आप बोलने ही नहीं देते हैं। नहीं-नहीं, अभी 10 मिनट कहाँ हुए हैं।? (व्यवधान) आदरणीय दिलीप जी, मुझे एक मिनट का समय और दीजिए।

माननीय सभापति : लवली आनंद जी, एक मिनट रूकिए।

आप आधा मिनट में अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री अमरिंदर सिंह राजा वारिंग : सर, क्या 10 मिनट हो गए हैं?? (व्यवधान)

महोदय, आप गलत कर रहे हैं। हमारे अभी तक चार मिनट ही हुए हैं।? (व्यवधान) इस तरह से मैं कैसे बोल पाऊँगा? ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आपने 9 मिनट पूरे कर लिए हैं और यह आपका 10वाँ मिनट चल रहा है। आप 10 मिनट के अंदर अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री अमरिंदर सिंह राजा वारिंग : साहब, डसॉल्ट कंपनी के सीईओ ने कहा कि टेक्निकल वजह से हमारा एक राफेल गिरा है, लेकिन आज तक यह नहीं बताया गया कि राफेल गिरा है या नहीं गिरा है। फिर आपके दोस्त ट्रंप ने भी यह कह दिया कि हिन्दुस्तान के पाँच फाइटर जहाज गिरे हैं। यह आपको मानना होगा। आप अपनी रणनीति बनाते रहे। आप गुजरात मॉडल पेश करते रहे, आप जिस प्रकार से इस देश के अंदर नोटबंदी लेकर आए, जिस प्रकार से आपने जीएसटी लागू किया, जिस प्रकार से आप तीन काले कानून लेकर आए, उसी प्रकार से आपने देश की सेना को आदेश दिया कि आप लोग किसी प्रकार का कहीं और न करें।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीय सदस्या लवली आनंद जी।

श्रीमती लवली आनंद (शिवहर) : सभापति महोदय, मुझे इस विशेष चर्चा में बोलने का अवसर देने के लिए मैं आपको हृदय से धन्यवाद देती हूं। सबसे पहले, मैं हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और हमारे तीनों सेना के वीर जवानों को हृदय से धन्यवाद देती हूँ, जिन्होंने आतंकवाद के खिलाफ इस निर्णायक और ऐतिहासिक कार्रवाई को अंजाम दिया। मैं ?

ऑपरेशन सिन्दूर? पर इस विशेष चर्चा का पूर्ण समर्थन करती हूँ। यह एक ऐसी कार्रवाई है, जिसने न केवल भारत की ताकत को दुनिया के सामने प्रदर्शित किया, बल्कि यह भी दिखाया कि हमारी सेना देश की सम्प्रभुता और सम्मान की रक्षा के लिए पूरी तरह सक्षम है।

हमारे नेता और बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी ने ?ऑपरेशन सिन्दूर? के बाद कहा था कि आतंकवाद के विरुद्ध पूरा देश एकजुट है और भारतीय सेना के साहस और पराक्रम पर पूरे देश को गर्व है।

माननीय प्रधान मंत्री जी, आपकी दूरदर्शिता और अदम्य नेतृत्व ने इस ऑपरेशन को सम्भव बनाया। आपकी अटल प्रतिबद्धता ने हमें यह विश्वास दिलाया कि हमारे राष्ट्र के हर इंच की रक्षा की जाएगी और आपने यह साबित कर दिया कि भारत किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए सक्षम है।

00.41 hrs (29.07.2025) (Hon. Speaker *in the Chair*)

माननीय रक्षा मंत्री जी, आपके कुशल मार्गदर्शन और रणनीतिक सोच ने हमारी सेनाओं को वह शक्ति और दिशा प्रदान की, जिनकी उन्हें सबसे अधिक आवश्यकता थी। आपने यह सुनिश्चित किया कि हमारे जवानों को सर्वोत्तम उपकरण और समर्थन मिले, ताकि वे अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूरी बहादुरी और प्रभावशीलता के साथ कर सकें।

माननीय गृह मंत्री जी, आपकी निगरानी में आंतरिक सुरक्षा के मोर्चे पर भी अभूतपूर्व समन्वय और समर्थन देखने को मिला। ?ऑपरेशन सिन्दूर? केवल सीमाओं पर लड़ा जाने वाला युद्ध नहीं था, बल्कि हमारे देश के भीतर भी शांति और व्यवस्था कायम रखने का एक प्रयास था, जिसमें यह भूमिका अमूल्य रही। इसमें यह बताया गया कि हमारी जो बहनें, हमारी जो बेटियां सुहागन थीं, उनके सिन्दूर को उजाड़ा गया, उनके सुहाग को लूटा गया, लेकिन हमारे देश के प्रधान मंत्री जी ने जवाब दिया। ?ऑपरेशन सिन्दूर? के नाम से हमारी सेना के जवानों ने जवाब दिया। जहां-जहां आतंकवादी ठिकाने थे, वहां-वहां हमला किया, उन आतंकवादियों का ?ऑपरेशन? किया। इसलिए उसका नाम ?ऑपरेशन सिन्दूर? पड़ा। मैं ऐसे जवानों को फिर से धन्यवाद देती हूं, आभार व्यक्त करती हूं। हमारे जो 26 देशवासियों, नागरिकों की हत्या हुई है, जो शहीद हुए हैं, उनके प्रति भी मैं सच्ची श्रद्धांजलि देती हूं और कहना चाहती हूं कि उनके परिवारों को भगवान यह सहन करने की शक्ति दे।

मैं कहना चाहूंगी कि 7 मई, 2025 को शुरू हुआ ?ऑपरेशन सिन्दूर? विश्व इतिहास में एक मील का पत्थर है। यह पहली बार है जब किसी देश ने संयमित तरीके से, बिना पाकिस्तानी सेना या नागरिकों को कोई नुकसान पहुँचाए, केवल आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया। यह बदला था, 22 अप्रैल 2025 को पहलगाम में हुए आतंकी हमले का, जिसमें 26 हिंदू पर्यटकों को बेरहमी से मारा गया।

माननीय सभापति महोदय, भारतीय वायुसेना द्वारा राफेल जेट्स, स्कैल्प मिसाइलों, और ब्रह्मोस क्रूज मिसाइलों का उपयोग 9 ठिकानों पर किया गया और हमने बहावलपुर में जैश-ए-मुहम्मद के मुख्यालय, मुरिदके में लश्कर-ए-तैयबा

के गढ़, और मुज़फ्फराबाद के आतंकी गढ़ों को पूरी तरह नष्ट कर दिया।

?ऑपरेशन सिन्दूर? एक सन्देश था, बॉर्डर पार बैठे पाकिस्तान को, जो पिछले 70 वर्षों से लगातार भारत में अशांति फैलाने की कोशिश कर रहा था। हमने दुनिया को यह भी दिखा दिया कि हम युद्ध में भी शराफत रखते हैं। हमने न किसी पाकिस्तानी नागरिक पर और न ही उनकी सेना पर हमला किया। लेकिन, पाकिस्तान ने क्या किया, यह देखने की बात है। उन्होंने हमारे मंदिरों और गुरुद्वारों पर बम फेंके, महिलाओं, बच्चों और निर्दोष लोगों को मारा, ड्रोन से हमला किया। हमने हर हमले का जवाब दिया।

माननीय अध्यक्ष महोदय, एक महिला सांसद होने के नाते मेरे लिए देश की करोड़ों महिलाओं के लिए यह एक गर्व का क्षण था, जब कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने ?ऑपरेशन सिन्दूर? की सफलता पर देश को संबोधित किया। उन्होंने बताया कि भारत ने कैसे दुश्मन के घर में घुस कर उसे सबक सिखाया। हमारी सरकार ने रक्षा बजट और स्वदेशी उत्पादन को बढ़ाया।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात को एक शायरी के साथ समाप्त करना चाहूंगी?

?हम वो नहीं, जो ज़ख्मों पर सिर्फ मरहम लगाते हैं,

हम अब ज़ख्म देने वाले का वज़ूद मिटाते हैं,

तुम्हारे हर प्रहार का अब हिसाब होकर रहेगा,

यह नया भारत है, यहां इंसाफ होकर रहेगा।?

जय हिन्द, जय भारत। बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI SHAFI PARAMBIL (VADAKARA): Hon. Speaker Sir, I thank you for giving me this opportunity. I pay my tributes to the 26 innocent souls who lost their lives in a heinous act of violence by Pakistan-based terror outfit in Pahalgam. They were not just victims. They are martyrs of the nation which refuses to bow to terror. Let us also salute the Indian Armed Forces for their bravery and valour. The terrorists asked their religion before pulling the trigger on them. This was not just a terror attack on individuals. It was an assault on the very soul of our nation, an attempt to fracture our unity and sow the seeds of division. Yet, in the face of this tragedy, the bravery of the victims, the resilience of their families and the unity of our nation and its people shone through.

Sir, I recall meeting with Arathi, the brave daughter of ?Mother India? who lost her father Ramchandran in this terror attack. How did Congress and the Opposition respond to Pahalgam? Rahul Gandhi Ji gave his first statement that the whole country is united against terrorism and we offer unconditional support to the Government. Our President Kharge Ji also mentioned that this is not the time for partisan politics but for collective resolve to ensure justice. Our resolution stated that Pakistan must be taught a lesson, the perpetrators must face consequences. We attended the all-party meeting but the Prime Minister did not attend that.

We have been getting lessons from BJP on patriotism. They talk about 26/11. After the 26/11 attack, on 28th November 2008, the then Gujarat Chief Minister rushed to the Oberoi Trident, which is the terror site, gave media bites, publicly criticizing then Government for political gain. The next day, on 29th November, keeping the State elections in mind, they gave an advertisement in national media with words ?brutal terror strikes at will; weak Government unwilling and incapable to fight terror; vote BJP?. This was the third day after 26/11. Now they are giving us lecture on patriotism.

Leave that. What did our PM do now? Coming back from Saudi Arabia, we did not see any meeting in Delhi or any press briefing or any explanation to the Parliament or at any other place. He directly went to Bihar to attend an election rally. This is not patriotism, this is election-ism that leads BJP to win. We are not in queue to get our patriotism certificate signed by BJP or RSS. There have been attacks against LoP even in this House. He does not need patriotism lessons from Anurag Thakur Ji or no Indian does. That would be a disgrace, I must say. Who released Pakistan poster boy Masood Azhar, listed as a global terrorist on December 21st 1999 in Kandahar, and who then founded and became part of Jaish-e-Mohammed, planned Parliament attack, Pathankot attack and Pulwama attack? We all remember ... and the support given by BJP to them. Do you know that ... who told after Pahalgam attack that widows of those killed in Pahalgam attack lacked the spirit of a warrior. ... who referred to Colonel Sofia Qureshi along with Vyomika Singh, a decorated Army officer who led public briefings on Operation Sindoor, as coming from the terrorist community, calling her their sister? He still continues as Minister in that Government. Do you know that ... told that the country?s Army and soldiers are bowing down at

Prime Minister?s feet. You know Himanshi Narwal. What wrong did she do to this country? She was widowed just one week after her marriage. She asked for peace and justice. She asked this country to be united. But she was abused on social media. She was cyber-lynched; she was trolled and even her patriotism was questioned. We all know that this is not the first incident after this Government came to power. Since 2014, we have seen so many incidents. After Prime Minister?s visit to Lahore in 25th December 2015, within seven days, we were at receiving end at the Pathankot Airbase.

Our seven security personnel were killed. On 18th September, 19 Army soldiers were killed. On 29th November, 2016, seven soldiers were killed in Nagrota. In Pulwama, 40-plus CRPF personnel were killed. Those who gave us lectures on patriotism must recall the bravery of Indira Gandhi ji who wrote to the then US President, Richard Nixon on 15th December, 1971 stating that as a developing country, we have our backbone straight, enough will and resource to fight atrocities. It has been some time since any nation sitting three or four thousand miles away could give orders to Indians on what to do as they wish. Mrs. Gandhi neither bowed, nor became afraid. She showed the whole world that protecting India?s borders and respecting them was above any international interest.

The External Affairs Minister said that the Indian Government already informed the Pakistani Forces prior to the launch of Operation Sindoor that they would be targeting terrorist infrastructure. Is this a foreign policy or a forewarning policy? The Defence Minister today also said that none of our key assets were damaged. The Chief of Defence Staff, Anil Chauhan ji told that we lost a few jets in the Bloomberg TV Interview. For whom is he supressing the facts? So, taking all this into consideration, we could say that it is the public demand and not a rhetoric. Families? demand is disclosure and not silence. We deserve to know to know the truth. ? (*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, मैं आप सभी माननीय सदस्यों को धन्यवाद देता हूँ कि आप सभी माननीय सदस्यों इस महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा के लिए इतनी देर रात तक बैठे। माननीय गृह मंत्री जी सहित कई मंत्रीगण भी यहां उपस्थित रहे। सभी माननीय सदस्यों का इतनी देर रात तक महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा के लिए धन्यवाद।

सभा की कार्यवाही आज प्रात: 11 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

? (व्यवधान)

00.52 hrs (29.07.2025)

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock

on Tuesday, July 29, 2025/Sravana 7, 1947 (Saka).

---

* Not recorded as ordered by the Chair.

.

* Not recorded as ordered by the Chair.